व॰ ग॰ अफ़नास्येव, म॰ फ़॰ मकारोवा, ल॰ म॰ मिनायेव

# वैज्ञानिक समाजवाद के मूलतत्व



प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक. राजवल्लभ ओझा

सम्पादक: नरेश वेदी

В Г Афанасьев, М Ф. Макарова, Л. М. Минаев
«ОСНОВЫ НАУЧНОГО СОЦИАЛИЗМА»

*на языке хинди*

## विषय-सूची

विविध

६

# भूमिका

इस समय उत्पादन, तकनीक और विज्ञान का विकास अभूतपूर्व गति से हो रहा है। उनके विकास का स्तर इतना ऊचा है कि प्रकृति की शक्तियो पर अश्रुतपूर्व नियन्त्रण स्थापित करके मानवजाति अपनी सभी भौतिक और बौद्धिक आवश्यकताओ को पूर्णतया पूरा करने की स्थिति मे आ गई है। विशेषज्ञो ने हिसाब लगाया है कि यदि वर्तमान उत्पादन-क्षमताओ तथा वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियो का सब के हित मे समुचित उपयोग किया जाये, तो हमारी वदान्य धरती पर १० अरब से अधिक लोग सुखपूर्वक रह सकते है, जबकि इस समय तो दुनिया की आबादी ३ अरब से कोई बहुत अधिक नही है।

तब इस स्थिति का दायित्व किस पर है कि पूजीवादी दुनिया मे दस व्यक्तियो मे से केवल एक को पर्याप्त भोजन सुलभ है और दुनिया की प्रायः आधी प्रौढ आबादी पढ-लिख भी नही सकती? इसका दायित्व किस पर है कि मुट्ठी भर लोगो के हितार्थ चलाये जानेवाले निरर्थक युद्धो मे अपरिमित रक्त बहाया जा चुका है और आज भी बहाया जा रहा है; कि पृथ्वी पर विनाश का एक भयानक परमाणविक बादल मडराया है, जो मानवजाति के ऊपर अपनी काली छाया डाल रहा है; कि विनाशक तापनाभिकीय युद्ध की तैयारी मे भारी धन-राशि फूकी जा रही है? प्रकृति की महानतम सृष्टि, मानव, जो अत्यत विविध सृजनात्मक गुणो से सुसम्पन्न है, क्यो दुनिया के अधिकाश भाग मे न केवल इन गुणो को प्रदर्शित करने की सभावनाओ से वचित है, बल्कि शोषण तथा सामाजिक अन्याय से उत्पीडित एव दलित है, रोगग्रस्त है और भूखो मर रहा है, बेकारी,

गरीबी और बढती महगाई से सतप्त रहने को लाचार है? अपनी सभ्यता की डीग मारनेवाले कई देशो मे काली चमडी मनुष्य की हीनता की द्योतक क्यो मानी जाती है? इसका दायित्व किस पर है कि मानवजाति का अधिकाश भाग उपनिवेशवाद की जजीरो मे जकडा हुआ था और आज भी करोडो लोग उसके जुए तले कराह रहे है?

इन सभी बातो का दायित्व पूरी तरह से पूजीवाद के ही ऊपर है, जिसने धनी और निर्धन के बीच जमीन-आसमान का अन्तर पैदा कर दिया है और युद्ध, औपनिवेशिक लूट और नसलवाद को अधिकृत नीति बना लिया है। पूजीवाद ही चन्द इजारेदारो की स्वार्थपूर्ति के लिए दुनिया के विपुल भौतिक तथा मानवीय साधनो का दुरुपयोग करता है। वह मेहनतकश व्यक्ति की अवमानना करता है और विज्ञान तथा तकनीक की उपलब्धियो का अक्सर उसके विरुद्ध उपयोग करता है।

धरती की विपुल सपदा, वृहत उत्पादन-क्षमता और आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक की भव्य उपलब्धियो को सभी मनुष्यो के हित मे इस्तेमाल करने के लिये सर्वप्रथम उचित सामाजिक परिस्थितिया पैदा करना आवश्यक है। इसके लिये कुत्सित पूजीवादी प्रणाली का उन्मूलन और ऐसे नये समाज की स्थापना जरूरी है, जो सबसे बढकर मनुष्य की नानारूप अभिरुचियो, गुणो और आवश्यकताओ का ही ध्यान रखेगा, अपने सारे साधनो का इस्तेमाल लोगो के जीवन को सुखी तथा स्वतंत्र बनाने और रहन-सहन की सच्ची मानवीय परिस्थितियो को पैदा करने के लिये करेगा, मानवजाति को युद्ध की आशंका से सदा के लिये मुक्ति देगा और सभी भौतिक एव मानवीय साधनो की बरबादी तथा उनके दुरुपयोग को समाप्त करेगा।

ऐसे नये समाज को समाजवादी समाज कहा जाता है और इस समाज के विज्ञान को—इसके उदय एवं विकास की बुनियादी अवस्थाओ और उसके सृजन के तरीकों के विज्ञान को—वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त कहते हैं। सक्षेप मे, वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त हमारी इस अद्भुत दुनिया के सभी लोगो के जीवन को सुखी एव आनन्दप्रद बनाने, मनुष्य को शोषण तथा उत्पीडन से मुक्त करने और उसके सर्वतोमुखी विकास की सर्वाधिक अनुकूल परिस्थितिया पैदा करने का विज्ञान है।

परन्तु समाजवाद के निर्माण तथा मनुष्य की प्रगति के लिए उपयुक्त

परिस्थितिया पैदा करने के पहले पुरानी सामाजिक व्यवस्था–पूजीवाद–का विनाश आवश्यक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त मे क्रान्तिकारी ढग से पूजीवाद का विनाश और इसके साथ मेहनतकश मानव की मुक्ति के लिए पूर्वापेक्षित दशाए पैदा करना–दोनो ही बातें शामिल हैं। वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त पूजीवाद मे निहित वस्तुगत नियमितताओ तथा अतर्विरोधो के कारण उसके विनाश की ऐतिहासिक अनिवार्यता, उसकी जड काटनेवाली क्रान्तिकारी शक्तियो की क्रियाशीलता को प्रमाणित करता है और यह सिद्ध करता है कि पुराने, पूजीवादी समाज के उन्मूलन के लिए समाजवादी क्रान्ति और सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व अपरिहार्य हैं।

यही विज्ञान प्रस्तुत पुस्तक का विषय है।

विकसित पूजीवादी देशो के मेहनतकशो के लिए समाजवाद महान सभावनाए प्रस्तुत करता है, क्योकि यह उन्ह इजारेदारी के जुए, बेकारी, भविष्य मे विश्वास के अभाव और सम्भव तापनाभिकीय विनाशकारी युद्ध मे मृत्यु के भय से मुक्त कर सकता है। केवल समाजवाद वर्तमान भौतिक तथा बौद्धिक सस्कृति की अपार सम्पदा को मेहनतकश लोगो के लिए उपलब्ध करवा सकता है और शोषण से मुक्त लोगो मे सहयोग एव पारस्परिक सहायता के वास्तविक मानवीय सम्बन्धो को कायम करके उन्हे अपने समाज और अपनी नियति का वास्तविक नियामक बना सकता है।

समाजवाद उन राष्ट्रो की नियति के लिए विशेषकर महत्त्वपूर्ण है, जिन्ह साम्राज्यवाद ने पराधीन बना लिया था, परन्तु जो अब अपने आर्थिक और सास्कृतिक पिछडेपन को दूर करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। इन देशो के अधिकाधिक मेहनतकश अपने समाज के आमूल रूपान्तरण के सुगमतम रास्ते के रूप मे समाजवाद की ओर उन्मुख होते जा रहे हैं।

क्या जिन देशो मे प्राक्-पूजीवादी उत्पादन सम्बन्ध अभी कायम हैं, जहा बडे पैमाने का उद्योग बिलकुल ही नही है या लगभग नही के बराबर है, जहा मजदूर वर्ग का अभाव है, जिसका ऐतिहासिक ध्येय मानवजाति को मुक्त करना है, और जहा की आबादी लगभग पूरी तरह से छोटे-छोटे किसानो और कबायलियो की है, क्या वहा पूजीवादी दौर से गुजरे बिना समाजवाद का निर्माण करना सभव है?

वैज्ञानिक समाजवाद का कहना है कि हा, ऐसा हो सकता है, सर्वाधिक पिछडे हुए देश के लोगो क लिए भी अब पूजीवाद की अवस्था से गुजरे बिना समाजवाद का निर्माण करना सभव हो गया है। समूचे तौर पर मानव समाज के विकास मे पूजीवाद एक अनिवार्य तथा अपरिहार्य अवस्था रही है, किन्तु प्रत्येक पृथक देश के विकास मे नही। सारी दुनिया म समाजवाद की विजय के लिये सभी देशा मे पूर्णतया विकसित पूजीवादी सामाजिक सम्बन्धा का होना कतई आवश्यक नही है। लेनिन ने लिखा था – 'चूकि बडे पैमाने का उद्योग विश्वव्यापी स्तर पर अस्तित्वमान है, इसलिय इसम तनिक भी सदेह नही हो सकता कि समाजवाद की ओर सीधे सक्रमण सभव है।'* विकासमान देश विकास की पूजीवादी अवस्था से गुज्रे बिना समाजवादी पथ पर अग्रसर हो सकते है वशर्ते कि उन्ह विजयी मजदूर वर्ग और समाजवादी देशो का समर्थन प्राप्त हो।

राष्ट्रो के समाजवाद मे सक्रमण – मानवजाति के जीवन के इस महान मोड – की विशेपता है विभिन्न देशो के मेहनतकशो द्वारा एक दूसरे की सहायता और उनके द्वारा शोषण पर आधारित सम्बन्धो, अर्थात् प्रभुत्व तथा अधीनता के सम्बन्धो का पूर्णतया परित्याग। देर या सवेर, दुनिया के सभी देशो मे समाजवादी प्रणाली कायम होकर रहेगी और इस प्रकार वे सभी राष्ट्र एक नया समाज गठित करेगे, जिन्ह साम्राज्यवाद ने पिछडेपन के गर्त मे डाल रखा है।

इस समय, जब दुनिया के एक वडे भाग मे पूजीवाद का उन्मूलन हो चुका है और उसका पूर्णत खात्मा निश्चित है, पूजीवादी पथ को अपनाने का अर्थ है देश के विकास की सभावनाओ को सीमित करना, आगे की जगह पीछे देखना। सामाजिक समस्याओ का जन हित मे प्रभावकारी समाधान ही जीवन की माग है। परन्तु क्या सामाजिक असमानता और मुट्ठी भर लोगो द्वारा समाज के अधिकाश लोगो के शोषण की वृद्धि और जीवन-स्तर को ऊचा उठाने से उनके इनकार को ऐसा

---

*व्ला० इ० लेनिन, सोवियता की नौवी अखिल रूसी काग्रेस। जनतत्र की गृह-नीति और विदेश नीति के बारे म।

समाधान कहा जा सकता है? वर्तमान युग म प्रगति की एक ही दिशा है और वह है समाजवाद की ओर।

समाजवाद की ओर अग्रसर होने के लिए वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त का अध्ययन करना आवश्यक है—इस कारण और भी अधिक कि समाजवाद अब केवल विज्ञान और सिद्धान्त ही नही, बल्कि प्रत्यक्ष वास्तविकता है।

सोवियत सघ मे समाजवाद का निर्माण हो चुका है और अन्य कई देशो मे जड पकड चुका है। इसी कारण इस क्षेत्र मे उनके सचित अनुभव पर इस पुस्तक मे विशेष ध्यान दिया गया है। इस अनुभव का अध्ययन समाजवादी पथ पर अग्रसर होनेवाले राष्ट्रो के लिए बहुत उपयोगी होगा और इससे उनके सम्मुख प्रस्तुत कुछ जटिल समस्याओ के समाधान मे सहायता मिलेगी। किन्तु इससे उन्हे लाभ तभी हो सकता है जब वे इसे विवेकपूर्ण तथा सृजनात्मक ढग से अपनायेंगे और अपने विकास की विशिष्ट परिस्थितियो को ध्यान मे रखेंगे। समाजवादी देशो के अनुभव म वैज्ञानिक समाजवाद के बुनियादी क्रान्तिकारी सिद्धान्तो को व्यावहारिक रूप दिया गया है, परन्तु जैसा कि लेनिन ने लिखा है, यह स्मरण रखना जरूरी है कि इन "बुनियादी क्रातिकारी सिद्धान्तो को विभिन्न देशो की विशिष्ट परिस्थितियो के अनुसार ढालना जरूरी है।"*

समाजवाद के सफलतापूर्वक निर्माण के लिये वैज्ञानिक समाजवाद के बुनियादी सिद्धान्तो के प्रति निष्ठा और प्रत्येक देश की विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियो मे उनका युक्तिसगत उपयोग दोनो अपरिहार्य है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की तीसरी काग्रेस। २८ जून को इतालवी प्रश्न पर भाषण।

# वैज्ञानिक समाजवाद का उदय और विकास

वैज्ञानिक समाजवाद का पूर्ववर्ती काल्पनिक समाजवाद था। काल्पनिक समाजवाद वैज्ञानिक नही था, क्योकि वह सामाजिक विकास को नियत्रित करनेवाले नियमो के सज्ञान पर आधारित नही था। फिर भी काल्पनिक समाजवाद मे वैज्ञानिक ज्ञान के ऐसे तत्त्व निहित थे, जिन्हे वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवत्तको ने मीमासापूर्वक ग्रहण और उपयोग किया था। इसी कारण वैज्ञानिक समाजवाद का अध्ययन शुरू करने के पहले, चाहे सरसरी तौर पर ही सही, काल्पनिक समाजवाद के बारे मे कुछ जान लेना आवश्यक है।

## १ वैज्ञानिक समाजवाद के निकटतम पूर्ववर्ती

१६वी–१८वी सदियो मे पश्चिमी यूरोप के कई देशो मे सामतवाद का स्थान पूजीवाद ने ग्रहण किया। इससे उत्पादन, तकनीक और प्राकृतिक विज्ञान के तीव्र विकास को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। दस्तकारो की कर्मशालाओ तथा मैनुफैक्चर का स्थान फैक्टरियो, मिलो और खानो ने और मनुष्य की पेशियो, पानी तथा हवा की ऊर्जा का स्थान भाप और बाद मे बिजली की शक्तिशाली ऊर्जा ने ले लिया। सापेक्षिक रूप से अत्यत अल्पकाल--दो अथवा तीन सदियो–के भीतर ही पूजीवादी व्यवस्था के अन्तगत उत्पादन के विकास के क्षेत्र मे मानवजाति के समस्त पूर्ववर्ती इतिहास की तुलना मे कही अधिक सपन्न किया गया। परन्तु पूजीवाद

ने मेहनतकश मानव की दशा को जरा भी बेहतर नही बनाया शोषण उतना ही निर्मम तथा बर्बर रहा जितना दास-स्वामित्व तथा सामती व्यवस्थाओ के अन्तर्गत था और इस कारण और भी अधिक कि सामतवाद के अवशेप बने रहे। फलत जन असतोप बढता गया तथा वर्ग-सघर्ष तीव्र होता गया। इन सामाजिक परिवर्तनो से समाज का बौद्धिक जीवन प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। समाजवादी सिद्धान्त प्रकाश मे आये, जो विद्यमान सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ जनता के विरोध को अभिव्यक्त करते थे। उनका मुख्य अन्तर्य था मानवतावाद--मनुष्य के प्रति सम्मान और सुचिन्ता।

काल्पनिक समाजवाद विकास की एक लम्बी तथा जटिल प्रक्रिया से होकर गुजरा। सबसे पहले काल्पनिक समाजवादियो मे से एक थे अग्रेज राजनेता और दार्शनिक टामस मूर (१४७८--१५३५)। बाद मे इतालवी ताम्माजो कम्पनेला (१५६८--१६३६), फासीसी जान मेलियर (१७०६--१७८५) तथा फासुआ बाब्योफ (१७६०--१७६७) और रूसी क्रान्तिकारी जनवादी अलेक्सान्द्र हर्ज़ेन (१८१२--१८७०) एव निकोलाई चेर्निशेव्स्की (१८२८--१८८६) ने काल्पनिक समाजवाद के विचारो को विकसित किया।

परन्तु वैज्ञानिक समाजवाद के प्रत्यक्ष पूर्ववर्ती थे १९वी सदी के महान काल्पनिक समाजवादी सेट-साइमन, फूरिये और ओवेन। उन्होने शोषक वर्गो के सिद्धान्तकारो के विचारा को अस्वीकार किया, जिनका मत था कि मानवजाति सदा परस्पर-विरोधी वर्गों मे, धनिका और निर्धनो मे, श्रम करनेवालो तथा श्रम न करनेवालो मे विभाजित रहेगी और पूजीवाद सामाजिक सगठन का यथासभव सर्वोत्कृष्ट रूप है। काल्पनिक समाजवादियो का विचार था कि पूजीवाद का स्थान एक ऐसे समाज को ग्रहण करना चाहिए, जो स्वार्थ, अधिलाभ तथा मुनाफे को खत्म कर देगा और श्रम को मानवीय जीवन का बुनियादी गुण बना देगा। तब लोग एक दूसरे को उत्पीडित करना बन्द कर देगे, बल्कि प्रकृति पर प्रभुत्व स्थापित करने तथा वास्तविक सामाजिक न्याय, सच्ची स्वतन्त्रता और यथार्थ समानता लागू करने के लिए एकजुट होगे। इससे मानवजाति की निरन्तर प्रगति सुनिश्चित होगी।

परन्तु १९वी सदी के प्रारभ तक सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी सघर्ष सम्बन्धी वैज्ञानिक सिद्धान्त के उद्भव की परिस्थितिया परिपक्व नही हुई

थी। खुद पूजीवादी उत्पादन अभी कम विकसित हो पाया था, सर्वहारा ने अपने को एक वर्ग के रूप मे सगठित नही किया था, उस समय वह इतिहास मे अपनी भूमिका नही समझता था और किसी भी प्रकार के शोषण अथवा उत्पीडन से रहित नये, समाजवादी समाज की सिद्धि के तरीको तथा उपायो को नही जान पाया था। इसी कारण महान काल्पनिक समाजवादी भी भविष्य के सही रास्ते को नही समझ सके और उनका समाजवाद एक सपना, कल्पना ही बना रहा।

**क्लाड आरी सेट-साइमन**

विख्यात फ्रासीसी काल्पनिक समाजवादी क्लाड आरी सेट-साइमन (१७६०–१८२५) ने अपनी एक महानतम कृति – «*Opinions litteraires, philosophiques et industrielles*» (साहित्य, दर्शन और उद्योग के सम्बन्ध मे विचार) – का प्रारभ ही मानवजाति के अतीत मे किसी "स्वर्ण युग" के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए किया। समाज के ऐसे पुनर्गठन के बाद ही मानवजाति का वास्तविक स्वर्ण युग आयेगा, जिससे जनता के भारी बहुमत का भला होगा, उसका जीवन सुखी होगा तथा साथ ही समाज के प्रत्येक सदस्य के गुणो के विकास के लिए सर्वाधिक अनुकूल परिस्थितिया पैदा होगी।

सेट-साइमन की कृतियो में स्वत्वाधिकारियो के छोटे समूह द्वारा मेहनतकश समुदाय का शोषण करनेवाले पूजीवादी समाज की आलोचना की गई थी। उनका मत था कि ऐतिहासिक दृष्टि से पूजीवादी समाज एक अस्थिर समाज है और मानवजाति का इतिहास इसी के साथ खत्म नही हो जायेगा। मानवजाति अभी समाज के दो बहुत ही असमान भागो मे विभाजन का अत करेगी, जिसमें छोटा भाग बडे भाग का उत्पीडन करता है। इसके बाद लोग प्रकृति की शक्तियो को काम में लाने के उद्देश्य से अपने को समानाधिकार प्राप्त नागरिको के समाज में सगठित करेगे।

यद्यपि सेट-साइमन और उनके अनेक अनुयायियो के मत ने उस सामाजिक व्यवस्था का स्पष्ट चित्र नही प्रस्तुत किया, जिसकी वे स्थापना करना चाहते थे, तथापि उसमे एक ऐसे समाज की स्थापना का विचार निहित था, जिसमें प्रत्येक अपनी योग्यतानुसार काम करता और उसे अपने श्रमानुसार पगार मिलती। यह सिद्धान्त समाजवाद की बुनियाद बन गया। सेंट-साइमन का यह विचार बहुत ही महत्त्वपूर्ण था कि जिस समाज में

शोषण नही होगा, वह विज्ञान तथा तक्नीक के विकास को अवरुद्ध करनेवाली सभी बाधाओं को दूर करके निर्माण की असीम शक्तियों को विकसित कर देगा और प्रकृति की प्रबल शक्तिया को मनुष्य की सेवा मे लगा देगा। राजकीय मशीनरी को दमन और जनता पर नियत्रण की मशीनरी से समाज की समस्त गतिविधियो को निदेशित करनेवाली मशीनरी मे बदल देने के उनके विचार के सम्बन्ध मे भी यही बात कही जा सकती है।

सेंट-साइमन ने लिखा कि यद्यपि मानवजाति परस्पर विनाशकारी सघर्ष मे अपनी काफी शक्ति नष्ट कर रही है, परन्तु अत्यत सभ्य देश अभी भी समृद्धि के खासे ऊचे स्तर को कायम रखे हुए हैं। इसलिए, यदि मानवजाति अपने साधनो का दुरुपयोग बन्द कर दे और अगर प्रत्येक देश के लोग प्रकृति की शक्तियो को नियत्रित करने के काम मे एकजुट हो जायें, तो वह और भी अधिक उपलब्धिया हासिल कर सकती है। उनके शिष्यो का विचार था कि आर्थिक विकास के फलस्वरूप विभिन्न देशो के लोगो के बीच आर्थिक सम्बन्धो का विस्तार होगा, एक ऐसी विश्व अर्थव्यवस्था और मेहनतकश लोगो के विश्व सगठन की स्थापना होगी, जिससे सभी सामाजिक तथा राष्ट्रीय विरोधो का अत हो जायेगा और सम्पूर्ण मानवजाति की प्रगति सुनिश्चित हो जायेगी। परन्तु, अपने गुरु की ही भाति सेंट साइमन के अनुयायी भी मेहनतकश लोगो के ऐसे विश्व सगठन को कायम करने मे सक्षम सामाजिक शक्तियो को तथा इसके गठन के आधारभूत सिद्धान्तो को नही समझ सके।

**चार्ल्स फूरिये** एक अन्य महान फ्रासीसी काल्पनिक समाजवादी चार्ल्स फूरिये (१७७२-१८३७) ने सामाजिक न्याय के अनुरूप समाज के पुनर्गठन का प्रतिपादन किया। उन्होंने अपने समकालीन पूजीवादी समाज की कडी आलोचना की। उन्होने लिखा कि उत्पादन की पूजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत श्रम स्वतत्र नही होता और मजदूर को इसके अन्तिम नतीजो मे कोई अभिरुचि नही होती। श्रम को आनन्द तथा सुख का स्रोत होना चाहिए, किन्तु इसकी जगह यह अभिशाप और कष्ट का कारण है।

फूरिये ने बताया कि पूजीवाद के अन्तर्गत श्रम के औजारो तथा पूजी का अधिकाधिक सकेन्द्रण होता जाता है और इससे सम्पूर्ण समाज पर

मुट्ठी भर पूजीपतियो का नियत्रण हो जाता है। पूजीवादी होड के फलस्वरूप इजारेदारी अस्तित्व मे आ जाती है, चन्द स्वार्थी समाज को अधिकाधिक अपने शिकजे मे कस लेते है और सामतवाद – पुराने सामतवाद की अपेक्षा अपने वाणिज्यिक आधार के कारण अधिक भयावह सामतवाद – के पुन स्थापन का खतरा पैदा हो जाता है। इसके साथ ही कृषि के क्षेत्र मे तकनीक की उपलब्धिया तथा श्रम मे सहयोग का लाभ छोटे किसानो की पहुच के बाहर होता है। ऐसी दशा मे सामाजिक प्रगति एक प्रपच बन जाती है। धनी और अधिक धनवान होता है जबकि गरीब जहा के तहा बने रहते हैं। दौलत बढती जाती है, परन्तु गरीबी कम नहीं होती। मुनाफाखोर और जालसाज सर्वाधिपति बन जाते हैं तथा सारे साम्राज्यो की नकेल उनके हाथ मे आ जाती है।

धनी और निर्धन के बीच की खाई चौडी होती जाती है। वे युद्ध की स्थिति मे पहुच जाते हैं। सार्वजनिक हितो तथा निजी हितो मे टक्कर होती है। वर्तमान सामाजिक प्रणाली का अर्थ एक के विरुद्ध सब का और सब के विरुद्ध एक का युद्ध है। व्यक्ति सतत समष्टि का विरोधी बना रहता है, दूसरो के दुर्भाग्य और यहा तक कि विनाश पर एक का सुख आधारित होता है।

पूजीवाद की वकालत करनेवाले पूजीवादी जनवाद के वास्तविक स्वरूप को छिपाने के लिए जिन झूठी बातो का इस्तेमाल किया करते थे, फूरिये ने उनका सफलतापूर्वक भण्डाफोड किया। यदि "सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न" जनता रोजी के अधिकार तथा निर्वाह-वेतन से वचित है, तो कागज पर अकित अधिकार बेकार हैं।

श्रम को – शोषक समाज मे जिसका अर्थ बेगार है – आनन्द मे, भावी समाज के स्वतत्र नागरिक की एक अनिवार्य आवश्यकता मे परिवर्तित करने की अपरिहार्य जरूरत पर जोर देने का फूरिये को अधिकतम श्रेय दिया जाना चाहिये। उन्होंने श्रम के पूजीवादी विभाजन को, जो व्यक्ति को शक्तिहीन और साधनहीन बनाता है, और शहर तथा गाव के अतर को दूर करने के साधना एव तरीको को ढूढने की भी कोशिश की। परतु उन्होंने जो प्रश्न उठाये थे, उनके वह ठीक उत्तर नहीं दे सके। फिर भी उन्होंने फैलैक्सो (श्रम-समूहो) मे काम के ऐसे सगठन के बारे मे कुछ महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये, जो मनुष्य को सतोष दे और ऐसी

परिस्थितिया पैदा करे, जिनमे लोग सदैव एक ही प्रकार का काम करने को विवश न हो, वल्कि अपनी योग्यतानुसार कार्य को चुन सके। फैलैक्सो मे श्रम विभाजन की पुरानी प्रणाली को खत्म कर दिया जाता। फैलैक्स का प्रत्येक सदस्य एक काम के बाद दूसरा काम करता और मेहनतकशो की विभिन्न टोलियो मे प्रतियोगिता होती। श्रम सृजनात्मक प्रक्रिया बन जाता, जिसमे मनुष्य का उत्साह अपने को प्रकट करता और सार्वजनिक हितो के साथ निजी हित एकाकार हो जाते।

किन्तु फूरिये ने फैलैक्सो मे पूजीपतियो को भी शामिल किया था, जिन्हे जमीन तथा उपकरण खरीदने के लिये अपनी पूजी लेकर आना था। उन्हे उनकी पूजी पर ऊचा व्याज दिया जाता और उन्हे विशेषाधिकार प्राप्त होते (धनी अच्छा खाना खाते, अधिक आराम करते, कडा शारीरिक काम नही करते, शिकार करते, मछली मारते, आदि)। फूरिये यह नही समझ पाये कि उनके परिकल्पित समूहो मे बरकरार असमानता के फलस्वरूप अनिवार्यतः सामाजिक विरोध और कटु सघर्ष पैदा होगे।

फ्रासीसी काल्पनिक समाजवादियो ने सामाजिक प्रगति का ऐसा सिद्धान्त विकसित किया था, जिससे सामाजिक विज्ञान के इतिहास मे एक नये दौर का सूत्रपात हुआ।

**रॉबर्ट ओवेन**

काल्पनिक समाजवाद ने इगलैण्ड मे सामाजिक विज्ञान के विकास मे भी बड़ी भूमिका अदा की। १६वी सदी के प्रथमार्ध मे अग्रेज मजदूर वर्ग के सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रबोधक थे काल्पनिक समाजवादी रॉबर्ट ओवेन (१७७१–१८५८)। उनका विचार था कि ज्ञान के प्रकाश से अन्ततः लोग पूजीवादी प्रणाली के घोर बेतुकेपन और असगतियो से लज्जित होगे तथा मानवीय सुख के मार्ग मे आनेवाली बाधाओ को वे बर्दाश्त नही करेगे।

ओवेन निजी स्वामित्व के कट्टर विरोधी थे। परन्तु उन्होने इसकी भर्त्सना नैतिक दृष्टिकोण से इस आधार पर की थी कि यह मानवजाति द्वारा झेली गयी अनगिनत आपदाओ तथा बर्दाश्त किये गये अपराधो का और मानवजाति के इतिहास के सभी युगो मे युद्धो का कारण है।

निजी स्वामित्व का उन्मूलन करके और उत्पादन के सभी साधनो को सार्वजनिक सम्पत्ति मे बदलकर–अर्थात्, साररूप मे समाजवादी समाज

का निर्माण करके—मानवजाति सदा के लिये शत्रुता के मुख्य कारण और सामाजिक जीवन को आक्रात करनेवाले छल और धोखाधडी के अनत स्रोत का अत कर देगी और आजादी से सास ले सकेगी।

ओवेन ने समझ लिया था कि उत्पीडित लोगो के बढते हुए असतोष तथा आक्रोश के फलस्वरूप हिसात्मक क्रान्ति हो सकती है और उन्होने सुधारो के जरिये इसे रोकना आवश्यक माना। उन्होंने अपने समय के शासक हलको—ब्रिटिश ससद, यूरोप और अमरीका की सरकारो, "पवित्र सश्रय"—यूरोपीय सम्राटो के प्रतिक्रियावादी गुट, महारानी विक्टोरिया और रूस के सम्राट निकोलाई प्रथम—के सम्मुख इस प्रकार के सुधार रखे।

ओवेन ने एक अच्छा नमूना प्रस्तुत कर समाज को समझाने तथा पुनर्शिक्षित करने के लिए नये समाज के बीजरूप मे कम्युनिस्ट बस्तियो को सगठित करने की योजना पेश की। उन्होन अपनी योजनाओ को व्यावहारिक रूप प्रदान करने की कोशिश की और अमरीका मे अपने धन से एक बस्ती कायम करने की कोशिश की, परन्तु इसपर चार साल खपाने के बाद वह पूर्णतया विफल रहे। उन्होने अपनी फैक्टरी मे काम करने की दशा मे सुधार करने की भी कोशिश की, काम के घटो को कम किया, अपने मजदूरो की पगार बढाई, एक आदर्श स्कूल खोला तथा शिशु-सदन और किडरगार्टेन कायम किये और अस्पताल निधि स्थापित की। उन्होने बालको और किशोरो के काम के घटो को परिसीमित करने के लिए कानून बनाने के निमित्त व्यापक सार्वजनिक आन्दोलन भी शुरु किया था।

**इतिहास मे काल्पनिक समाजवाद का स्थान**

काल्पनिक समाजवादियो को मुख्यत इसका श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होंने पूजीवाद की गहरी आलोचना की, उसकी बुराइयो का पर्दाफाश किया तथा यह दिखाया कि वह अपने को लगातार नष्ट करता जाता है और यह सिद्ध किया कि उसका विनाश और एक नये, समाजवादी समाज द्वारा उसकी जगह लिया जाना अनिवार्य है। सामान्यतया, उन्होंने निजी स्वामित्व (जिसे उन्होंने शोषण तथा मेहनतकशो पर थोपे जानेवाले अन्य कष्टो का मुख्य कारण माना) के उन्मूलन और जनता को सच्ची स्वतत्रता, समानता और बन्धुत्व प्रदान करनेवाली सामूहिक, सार्वजनिक स्वामित्व की प्रणाली की स्थापना के साथ नये समाज के निर्माण को सम्बद्ध किया।

काल्पनिक समाजवादियो ने पूजीवाद के विरोध मे एक नये समाज, समाजवाद को प्रस्तुत किया और भविष्य के इस समाज के कुछ लक्षणो का पूर्वानुमान लगाने मे सफलता प्राप्त की। काल्पनिक समाजवादियो की कृतियो मे इस आशय की गहरी मानवीय भावनाए निहित है कि यह नया समाज मनुष्य के लिए, उसके गुणो तथा प्रवृत्तियो के विकास और उनके सुधार के लिए यथासभव सर्वाधिक अनुकूल परिस्थितियो को सुनिश्चित करेगा। उन्होने मनुष्य, उसकी योग्यताओ तथा आवश्यकताओ, मनुष्य के मुख्य लक्षण, अधिकार एव कर्तव्य के रूप मे श्रम, उसको मानव की महत्वपूर्ण आवश्यकता और आनन्द के स्रोत मे परिवर्तित करने, मानसिक तथा शारीरिक श्रम के अवसादकारी विरोधो, नगर तथा गाव के अन्तर्विरोधो और श्रम एव जरूरतो के अनुसार समुचित वितरण के बारे मे कई अच्छे विचार प्रस्तुत किए।

वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तको ने सामाजिक विकास की इन आवश्यक तथा जटिल समस्याओ के बारे मे काल्पनिक समाजवादियो के विचारो का ऊचा मूल्याकन किया। १९ वी सदी का काल्पनिक समाजवाद **मार्क्सवाद का एक विचारधारात्मक स्रोत, वैज्ञानिक समाजवाद का निकटतम पूर्ववर्ती था।**

वैज्ञानिक समाजवाद के एक प्रवर्तक फ्रेडरिक एगेल्स ने लिखा है कि मार्क्स और उन्होने जो सिद्धात निरूपित किया, वह "सेंट-साइमन, फूरिये और ओवेन के विचारो पर आधारित है—जिन्हे अपनी धारणाओ की सारी विलक्षणता और काल्पनिकता के बावजूद सभी युगो के चिन्तको मे विशिष्ट स्थान प्राप्त है और जिनकी प्रतिभा ने ऐसी अनेक बातो का पूर्वानुमान किया, जिनकी सत्यता अब हम वैज्ञानिक ढग से प्रमाणित कर रहे है।"*

काल्पनिक समाजवादियो की कृतियो का ऊचा मूल्याकन करते हुए भी मार्क्स और एगेल्स ने उनकी ऐतिहासिक सकीर्णता साबित की और उन भाववादी सिद्धान्तो की आलोचना की, जिनपर उनकी शिक्षा आधारित है। उन्होने महान काल्पनिक समाजवादियो द्वारा प्रचारित भाडी समता और श्राम त्याग के सिद्धान्त को अस्वीकार किया, समाजवाद को प्राप्त करने के लिए उनके द्वारा सुझाए गए तरीका तथा साधनो के काल्पनिक

---

*फ्रेडरिक एगेल्स, 'जर्मनी मे किसान युद्ध' की भूमिका का पूरक।

तथा अव्यावहारिक चरित्र से असहमति प्रकट की। काल्पनिक समाजवादियो ने पूजीपतियो और सर्वहाराओ के वर्गगत हितो मे गहन विरोध को तो अनुभव किया, परन्तु सर्वहारा वर्ग की सक्रिय ऐतिहासिक कार्रवाई करने की क्षमता को अस्वीकार किया और उसे उच्च कम्युनिस्ट ध्येयो को प्राप्त करने योग्य ऐतिहासिक शक्ति नही माना। कई काल्पनिक समाजवादी वर्ग-सघर्ष तथा क्रान्ति के खिलाफ थे और न केवल क्रान्तिकारी ही, बल्कि सामान्यतया किसी भी राजनीतिक कार्रवाई के विरुद्ध थे।

उनमे से बहुतेरो ने सुधारो के जरिये, समाज के पुनर्गठन के लिए अमूर्त योजनाए प्रस्तुत करके, अव्यावहारिक बस्तियो को कायम करके अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने की कोशिशें की। सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के लिए भौतिक साधनो को ढूढ निकालने की जगह वे ऐसे सामाजिक विज्ञान को निरूपित करना चाहते थे, जो जनता द्वारा अपना लिये जाने पर अपने आप मानवजाति के चिरपोषित लक्ष्य को पूरा कर देता। सर्वहारा वर्ग की उपेक्षा करते हुए, बिना उसे समझे और वास्तव मे उससे भय खाते हुए उन्होंने समाज के सभी वर्गो, मुख्यत शासक वर्गो से उनके सद्विवेक के नाम पर अपील की और वर्गीय हितो के सामजस्य का आह्वान किया।

काल्पनिक समाजवादी इस कारण सफल नही हुए कि वे जनता से, मजदूर वर्ग से कटे हुए थे, सामाजिक विकास के नियमो को नही जानते थे, समाज की भौतिक परिस्थितियो से अनभिज्ञ थे तथा केवल विचारो, शिक्षा और मानसिक विकास पर निर्भर करने की कोशिश करते थे। उनकी विफलता कोई आकस्मिक बात नही थी। इसका मूल कारण उनके युग की सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थितियो मे—अविकसित सामाजिक सम्बन्धो और सर्वहाराओ की अपरिपक्वता मे निहित था, जिन्होंने एक वर्ग के रूप मे अभी तक अपने को सगठित नही किया था और जो इतिहास द्वारा अपने लिए निर्धारित महान भूमिका को अभी नही समझते थे। एगेल्स ने लिखा है—"पूजीवादी उत्पादन की अपरिपक्व परिस्थितियो तथा अपरिपक्व वर्ग-सम्बन्धो के समनुरूप सिद्धान्त भी अपरिपक्व थे।"*

१६वीं सदी के मध्य तक वैज्ञानिक समाजवाद काल्पनिक समाजवाद का स्थान ग्रहण कर चुका था। काल्पनिक समाजवादियो के अनुयायी,

---

*फ्रेडरिक एगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन', पृ० ४२७।

जो क्रान्तिकारी संघर्ष करनेवाले जनसमुदाय से कटे हुए थे, सामाजिक प्रगति को बढावा दे। की जगह वास्तव मे उसे अवरुद्ध कर रहे थे। मजदूर आन्दोलन निरन्तर फैलता जा रहा था और पूजीवादी शोषण के विरुद्ध मेहनतकशो का आक्रोश बढता जा रहा था, परन्तु सेन्ट-साइमन, फूरिये और ओवेन के अनुयायी सर्वहाराओ से अलग-थलग पडे रहे। वे इस भ्रान्ति को फैलाते रहे कि समाजवाद को दृढ वर्ग-संघर्ष द्वारा नही, बल्कि वर्गगत मेल से ही प्राप्त किया जा सकता है और यह कि लोगो को धनिको की दयालुता पर आश्रित रहना चाहिए, जो अन्ततः एक नयी, बेहतर सामाजिक प्रणाली कायम करने के लिए अपने धन का परित्याग कर देंगे। इस प्रकार काल्पनिक समाजवाद के प्रतिपादक मज़दूर वर्ग की स्वतंत्र राजनीतिक पार्टियो की स्थापना मे बाधा डालने लगे। १६ वी सदी के शुरू मे सर्वहारा वर्ग – समाज के पुनर्गठन मे वस्तुतः महानतम शक्ति – बिना किसी शक्तिशाली सगठन और स्पष्ट कार्यक्रम के और अपनी क्षमता तथा अन्तिम लक्ष्य को जाने बिना अपना संघर्ष चला रहा था। जनसमुदाय से और शोषको के विरुद्ध उसके अनवरत संघर्ष से समाजवादी विचारो के अलगाव पर पार पाना आवश्यक था। समाजवाद का सिद्धान्त मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन से एक हो जाने के बाद ही महान ऐतिहासिक शक्ति बन सका। परन्तु इसके लिये खुद समाजवादी विचारो मे आमूल परिवर्तन, उनके काल्पनिक स्वरूप को दूर करना आवश्यक था। समाजवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्त को प्रतिपादित करना नितान्त आवश्यक हो गया। यह काम मार्क्स और एगेल्स ने किया।

## २. समाजवाद का कल्पना से विज्ञान में रूपान्तरण। कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स

कार्ल मार्क्स (१८१८–१८८३) और फ़्रेडरिक एगेल्स (१८२०–१८६५) ने १६ वी सदी के पाचवें दशक मे जर्मनी मे अपना वैज्ञानिक कार्य शुरू किया। वह पूजीवाद के द्रुत विकास का काल था, जिसने यूरोप तथा

उत्तरी अमरीका मे अपनी जड जमा ली थी, वह नये वर्ग—औद्योगिक सर्वहारा वर्ग—के विकास और इसके क्रान्तिकारी संघर्ष की शुरूआत का काल था।

ऐसा लगता था कि पूंजीपति वर्ग के प्रभुत्व, निजी स्वामित्व तथा शोषण का अन्त न होगा। परन्तु ऐसा केवल प्रतीत ही होता था। १८४८ मे 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' मे आनेवाले जमाने की बातें प्रकाश मे आयी, जिसमे इतिहास के नाम पर मार्क्स और एंगेल्स ने पूंजीवाद के विनाश की उद्घोषणा की। उन्होने सिद्ध किया कि निजी स्वामित्व तथा शोषण पर आधारित पूंजीवादी समाज का स्थान शोषणशून्य और उजरती गुलामी से मुक्त समाज ग्रहण करेगा, उसकी जगह कम्युनिस्ट समाज कायम होगा और यह कि मानवजाति महान कम्युनिस्ट क्रान्ति की ओर गतिमान है। 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' काल्पनिक समाजवाद के अन्त तथा वैज्ञानिक समाजवाद की शुरूआत का द्योतक था।

अवैज्ञानिक, काल्पनिक समाजवाद से वैज्ञानिक समाजवाद की क्या भिन्नता है?

**वैज्ञानिक समाजवाद के दार्शनिक और आर्थिक सिद्धान्त**

वैज्ञानिक समाजवाद की मुख्य विशेषता इस बात से प्रकट होती है कि यह तरह तरह की कल्पनाओ तथा लोकोपकारी अपेक्षाओ पर नही, बल्कि ठोस दार्शनिक और आर्थिक नीव पर आधारित है। वैज्ञानिक समाजवाद काल्पनिक स्वर्गों अथवा अलौकिक शक्तियो के बारे मे मनगढत कथाओ से लोगो को परितोष नही प्रदान करता। इसका सम्बन्ध हमारी यथार्थ, ठोस दुनिया, वास्तविकताओ, सामाजिक विकास को नियंत्रित करनेवाले वस्तुगत नियमो से है।

वैज्ञानिक समाजवाद का दार्शनिक आधार मार्क्स और एंगेल्स द्वारा निरूपित द्वन्द्वात्मक तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद का दर्शन है, वह दर्शन, जिसमे एक सम्यक् विश्वदृष्टिकोण— प्रकृति एव समाज, उनके विकास को नियंत्रित करनेवाली नियमितता, उनके सज्ञान तथा क्रान्तिकारी ढग से पुनर्गठन के तरीके और साधन की सुनिश्चित वैज्ञानिक विचार-पद्धति है। मार्क्सवाद का दर्शन ससार को जैसा वह वस्तुत है, वैसा ही—विपर्यंतर विवर्धनों और विरूपणो के बिना—प्रतिबिंबित करता है। मार्क्सवादी दर्शन का बुनियादी विचार इस बात को स्वीकार करता है कि ससृति, प्रकृति भौतिक तथा वस्तुगत हैं, अर्थात्, इनका मनुष्य की चेतना से पृथक्

अस्तित्व है और यह कि चेतना अप्रधान, स्वयं पदार्थ का गुणधर्म है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह निर्विवाद रूप में प्रमाणित हो चुका है कि मनुष्य के अस्तित्व में आने के बहुत पहले प्रकृति का अस्तित्व था और मानव तथा उसकी चेतना प्राकृतिक जगत के लम्बे विकास का परिणाम हैं।

मार्क्सवादी दर्शन के अनुसार भौतिक जगत् अपरिवर्तनीय नहीं है, सदा एक ही रूप में बना रहनेवाला नहीं है। यह सतत गतिमान, परिवर्तनशील और विकासमान है। जड़ जगत् और सजीव जगत् दोनों परिवर्तित तथा विकसित होते हैं। मानव समाज भी विकसित होता रहता है। डण्डे और पत्थर से लेकर, जिनसे मनुष्य ने अपना जीवन-संघर्ष शुरू किया था, मानवजाति आधुनिक मशीनों, स्वचलन, दूर संचार, परमाणविक ऊर्जा और अन्तरिक्ष-यात्रा की वर्तमान सभ्यता के स्तर तक पहुंच गयी है। इस प्रकार मार्क्सवादी दर्शन द्वन्द्वात्मक-भौतिकवादी विश्वदृष्टिकोण है। द्वन्द्ववाद के विचार – सतत गति तथा विकास – इस विश्वदृष्टिकोण के मुख्य विचार हैं। यह भाववादी विश्वदृष्टिकोण का, जिसके अनुसार अस्तित्वमान हर चीज का आधार चेतना, विचार तथा भाव है, तथा आध्यात्मिक विश्वदृष्टिकोण का समान रूप से विरोधी है, जो दुनिया को स्थिर, गतिशून्य और अपरिवर्तनीय मानता है।

मार्क्स और एंगेल्स को इतिहास की भौतिकवादी धारणा, ऐतिहासिक भौतिकवाद के निरूपण का महान श्रेय प्राप्त है। इस धारणा ने इस भाववादी मत का स्थानग्रहण किया कि इतिहास की गति लोगों के विचारों तथा सामाजिक दृष्टिकोणों के अनुरूप होती है। मार्क्स और एंगेल्स ने शुरूआत इस स्पष्ट तथ्य को आधार मानकर की कि राजनीति, दर्शन तथा कला, अर्थात आध्यात्मिक जीवन में भाग लेने के पहले लोगों के लिए जीवन की अनिवार्य भौतिक चीजें – भोजन, वस्त्र, घर – आवश्यक हैं। परन्तु इन्हें प्राप्त करने के लिए लोगों को श्रम और उत्पादन करना जरूरी है। लोगों की श्रम सम्बन्धी क्रियाशीलता – भौतिक उत्पादन – ही सामाजिक विकास का आधार है। सामाजिक विकास के भौतिक आधार के अपने विश्लेषण में मार्क्स तथा एंगेल्स ने साबित किया कि इतिहास कोई आकस्मिक घटनाओं का संकलन नहीं, बल्कि एक सामाजिक प्रणाली का अन्य, उच्चतर तथा श्रेष्ठतर सामाजिक प्रणाली द्वारा स्थानग्रहण करने की नियम नियमित

स्वाभाविक अपरिहार्य प्रक्रिया है। स्थानग्रहण की इस प्रक्रिया का आधार भौतिक उत्पादन की प्रगति पर अवलम्बित है।

इतिहास की द्वन्द्वात्मक-भौतिकवादी धारणा ने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त के निरूपण मे बहुत बडी भूमिका अदा की। वास्तव मे, यदि समाज का विकास एक सामाजिक प्रणाली का दूसरी सामाजिक प्रणाली द्वारा स्थानग्रहण करने की नियम नियन्त्रित प्रक्रिया है, तो पूजीवादी शोषण का समाज एक शाश्वत समाज नही हो सकता, बल्कि इसका स्थान एक शोषणशून्य नया समाज ग्रहण करेगा ही।

वैज्ञानिक समाजवाद को पुष्ट करने मे मार्क्सवादी आर्थिक सिद्धान्त–समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओ मे भौतिक सम्पदा के उत्पादन, वितरण, विनिमय तथा खपत को नियन्त्रित करनेवाले आर्थिक नियमो के अध्ययन का सिद्धान्त भी बहुत महत्वपूर्ण था।

मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र की आधारशिला–अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त है, जो पूजीवाद के सारतत्व–पूजीवादी मुनाफे तथा पूजीवादी शोषण के स्रोत का पर्दाफाश करता है। पूजीवादी समाज मे मजदूर उत्पादन के साधनो से वचित होता है, उसकी एकमात्र सम्पत्ति है उसकी श्रम-शक्ति–श्रम करने तथा भौतिक सम्पदा पैदा करने की उसकी क्षमता। अपने जीवन निर्वाह तथा अपने परिवार के पालन पोषण के लिए वह पूजीपति, उत्पादन के साधनो (फैक्टरियो, मशीनो आदि) के मालिक के पास जाने और उसके हाथ अपनी श्रम-शक्ति बेचने को विवश होता है।

मजदूर और पूजीपति के बीच सौदा होता है। मजदूर अपनी श्रम-शक्ति बेचता है और पूजीपति उसे खरीदता है, मजदूर काम करता है और पूजीपति उसे वेतन देता है। मार्क्स ने साबित किया कि सरसरी तौर पर यह सौदा जितना न्यायोचित प्रतीत होता है, उसकी अपेक्षा बहुत ही कम न्यायसगत है, क्योकि श्रम-शक्ति भौतिक सम्पदा को पैदा करने मे सक्षम एक विशेष प्रकार का पण्य है। इसके अलावा, पूजीपति द्वारा दिये जानेवाले वेतन की अपेक्षा श्रम-शक्ति द्वारा उत्पादित सम्पदाओ का मूल्य बहुत अधिक होता है। पूजीपति मजदूर द्वारा उत्पादित वस्तुओ के मूल्य का केवल एक अश उसे वेतन के रूप मे देता है और शेषाश स्वय हडप लेता है। पूजीवादी शोषण का सारतत्त्व इसी मे निहित है।

निस्सन्देह, मजदूर वर्ग विद्यमान स्थिति को स्वीकार नही कर सकता। वह अपने उत्पीडको–पूंजीपतियो के विरुद्ध उठ खडा होता है। मजदूरो और पूजीपतियो के बीच वर्ग-सघर्ष अनिवार्य है, यह समाज मे इन वर्गो की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति मे परस्पर विरोध तथा इस परिस्थिति को बदलने के लिए मजदूर वर्ग की सहज आकाक्षा का स्वाभाविक परिणाम है। निजी स्वामित्व और शोषण का उन्मूलन करके मजदूर वर्ग उत्पादन के साधनो पर सामाजिक स्वामित्व की प्रणाली, एक नयी सामाजिक प्रणाली–समाजवाद को कायम करता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वस्तुत: समाजवादी क्रान्ति के मूल कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, पूंजीवादी उत्पादन के सारतत्व मे ही निहित है। इन कारणो को प्रकट करने के लिये समाज के जीवन और विकास मे भौतिक उत्पादन जो भूमिका अदा करता है, उसका, चाहे सक्षेप मे ही सही, वर्णन करना आवश्यक है।

## ३. समाजवाद द्वारा पूंजीवाद का स्थानग्रहण ऐतिहासिक अनिवार्यता है

**भौतिक उत्पादन–सामाजिक विकास का आधार**

जैसा कि हम पहले कह चुके है, लोग भोजन, वस्त्र, घर और अन्य भौतिक वस्तुओ के बिना जीवित नही रह सकते। परन्तु प्रकृति इन वस्तुओ को तैयारशुदा हालत मे प्रदान नही करती। इन्हे प्राप्त करने के लिए लोगो को श्रम करना जरूरी है। श्रम सामाजिक जीवन का आधार है, वह मनुष्य की स्वाभाविक आवश्यकता भी है। श्रम के बिना, उत्पादक क्रियाशीलता के बिना खुद मानवीय जीवन असंभव होता है। इसलिए भौतिक सम्पदा का उत्पादन ही सामाजिक विकास का मुख्य, निर्णायक कारक है।

सभी प्रकार के उत्पादन के लिए मनुष्य का श्रम, श्रम के साधन तथा श्रम के लक्ष्य अपेक्षित है। श्रम की प्रक्रिया मे अपनी जरूरतो को पूरा करने के निमित्त लोग प्राकृतिक पदार्थों को अनुकूलित तथा परिवर्तित करते है। भौतिक उत्पादन के विकास मे श्रम के औजार, अर्थात् वे साधन, जिनके

ज़रिये मनुष्य प्रकृति के उत्पादो पर क्रिया करता है, विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

परन्तु प्राकृतिक सम्पदा चाहे जितनी ही बडी हो और श्रम के औज़ार चाहे जितने भी उत्कृष्ट हो, मनुष्य के हाथ के स्पर्श हुए बिना वे जड बने रहते हैं। सभी प्रकार के उत्पादन का अनिवार्य तत्त्व है श्रम शक्ति, अर्थात् काम करने की मनुष्य की क्षमता तथा श्रम के औज़ारो तथा श्रम के लक्ष्यो, अर्थात् उत्पादन के साधनो का सयोजन। श्रम-शक्ति और उत्पादन के साधन समग्र रूप मे **समाज की उत्पादक शक्तिया** है। उत्पादक शक्तियो के विकास का स्तर इस बात का सूचक है कि मनुष्य ने किस सीमा तक प्रकृति पर अपना नियत्रण कायम कर लिया है।

परन्तु उत्पादक शक्तिया भौतिक उत्पादन की एकमात्र कारक नही हैं। लोग एकसाथ मिलकर, समुदाय बनाकर ही उत्पादन कर सकते हैं। इसी कारण श्रम का स्वरूप सदा से सामाजिक रहा है और सदैव ऐसा ही रहेगा। श्रम के दौरान लोग अनिवार्यत एक दूसरे के साथ निश्चित सम्बन्धो मे बध जाते हैं। उत्पादन की प्रक्रिया मे उनके सम्बन्ध **उत्पादन-सम्बन्ध** कहलाते हैं और ये भौतिक उत्पादन के अनिवार्य पहलू हैं।

उत्पादन-सम्बन्ध स्वामित्व के स्वरूप पर आधारित है, इस बात पर आधारित है कि उत्पादन के साधनो – ज़मीन, खनिज साधन, जगल, पानी, कच्चा माल, फ़ैक्टरी की इमारत, श्रम के औज़ार आदि – पर किसका स्वामित्व है। स्वामित्व के स्वरूप पर भौतिक सम्पदा के **वितरण** का स्वरूप भी अवलम्बित होता है। मिसाल के लिए, निजी स्वामित्व की दशा मे, अर्थात् जब उत्पादन के साधन समाज के एक छोटे तबके के स्वामित्व मे होते हैं, तो वितरण भी अन्यायपूर्ण होता है। उत्पादन के साधनो का मालिक उत्पादित सम्पदा का बहुत बडा भाग खुद हडप जाता है, गोकि सामान्यतया वह स्वय उत्पादक श्रम मे कोई प्रत्यक्ष भाग नही लेता।

चूंकि भौतिक उत्पादन सामाजिक विकास का आधार है, इसलिए समाज का इतिहास प्रथमत उत्पादन की एक पद्धति का अधिक विकसित तथा बेहतर दूसरी पद्धति द्वारा नियम-नियत्रित स्थानग्रहण करने का इतिहास है।

इतिहास मे उत्पादन की पाच पद्धतिया रही हैं – आदिम सामुदायिक, दासवादी, सामतवादी, पूजीवादी और समाजवादी। आइये, हम

उत्पादन की पूजीवादी पद्धति पर विचार करे और समाजवादी पद्धति द्वारा इसके स्थानग्रहण की अनिवार्यता को साबित करे।

**पूजीवादी उत्पादन**

शुरू मे पूजीवाद की उत्पादक शक्तिया वाष्प चालित मशीनो पर आधारित थी। अन्य किसी भी साधन की अपेक्षा वाष्प इजन ही वह साधन था, जिससे उत्पादन की प्रक्रिया और फलत सभी सामाजिक सम्बन्धो मे आमूल परिवर्तन हुए।

पूजीवादी उत्पादन पद्धति तथा इसके अभिकर्त्ता–पूजीपति वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका थी उत्पादन के बिखरे हुए छोटे साधनो का सकेन्द्रण और सवर्धन तथा उनका उत्पादन के महत् आधुनिक साधनो मे रूपान्तरण। चरखे, करघे और घन का स्थान कताई मशीन, मशीकृत करघे और वाष्प घन ने ले लिया। सैकडो और हजारो मजदूरो के सयुक्त श्रम की अपेक्षा करनेवाली बडी फैक्टरियो ने छोटी छोटी कर्मशालाओ का स्थान ले लिया। उत्पादन मे अब बिखरे हुए, अलग अलग कार्य नही बल्कि कई सामाजिक कार्य सन्निहित थे और उत्पाद अलग अलग व्यक्तियो के उत्पाद न रहकर सामाजिक उत्पाद बन गये। सामतवादी व्यवस्था के अन्तर्गत जहा किसान खुद सन पैदा करता था और स्वय इसका विधायन करता था तथा इससे सूत, कपडा और परिधान तैयार किया करता था, वहा अब उसका उत्पादित सन पूजीपति की मिल मे जाने लगा, जहा सभी बुनियादी कार्य–विधायन, धुलाई, धुनाई, कताई तथा कपडा बनाने आदि का काम–मशीनो द्वारा होने लगा।

पूजीवादी उत्पादन पद्धति के फलस्वरूप उत्पादक शक्तियो का द्रुत गति से विकास हुआ, अधिक विकसित देशो की अर्थव्यवस्था सुदृढ हो गई, सामतवाद के अवशेषो का उन्मूलन हो गया, और एक विश्व अर्थव्यवस्था की स्थापना हुई, जिसमे कम विकसित तथा पिछडे हुए देश खिच आये। पूजीवाद ने पूजीवादी देशो की सीमाओ के बाहर अपनी शोषण और उत्पीडन की प्रणाली को फैलाया। इस प्रणाली ने सार्वभौमिक स्वरूप ग्रहण कर लिया और वह उन सभी राष्ट्रो के लिये अभिशाप तथा विनाशकारी बन गयी, जो औपनिवेशिक दासता की स्थिति मे आ गये थे। मार्क्स और एगेल्स ने 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' मे पूजीवाद की उत्पादक शक्तियो का वर्णन इस प्रकार किया है–"प्राकृतिक शक्तियो का मनुष्य द्वारा वशीभूत किया जाना, मशीनी उत्पादन, उद्योग और खेतीबारी म

रसायन का प्रयोग, वाष्प-चालित जहाजरानी, रेलवे, बिजली के तार, पूरे के पूरे महाद्वीपों का खेती लायक बनाया जाना, नदियों का जहाजरानी लायक बनाया जाना, पूरी आबादियों का मानो जादू से पैदा हो जाना"* मानवजाति के इतिहास के पूर्ववर्ती सभी युगों की अपेक्षा एक दो सदियों के भीतर ही पूंजीवाद ने उत्पादक शक्तियों के विकास मे बहुत अधिक सफलता प्राप्त की।

उत्पादक शक्तियों के इस द्रुत विकास मे निजी पूंजीवादी स्वामित्व पर आधारित नये, पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धो ने सहायता की। इस स्वामित्व ने धीरे-धीरे, परन्तु अनमनीयतापूर्वक सामंती स्वामित्व को स्थानच्युत कर दिया। इन सम्बन्धो के फलस्वरूप उत्पादन के विकास का उत्प्रेरक, पूंजीवादी मुनाफा, अस्तित्व में आया। पूंजीपति अधिकाधिक मुनाफा कमाने की लालसा से उत्पादन को बढ़ाता है और उद्योग तथा कृषि दोनों क्षेत्रों मे मशीनों और उत्पादन के तरीकों मे सुधार करता है। यदि वह ऐसा नही करता, तो वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों द्वारा कुचल दिया जाता है और दिवालिया हो जाता है। पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत उत्पादक – सर्वहारा औपचारिक रूप से स्वतन्त्र व्यक्ति होता है, वह न जमीन और न किसी विशेष फैक्टरी से बंधा होता है। वह इस अर्थ मे स्वतन्त्र होता है कि किसी एक या दूसरे पूंजीपति के लिये काम कर सकता है, परन्तु सम्पूर्ण पूंजीपति वर्ग से वह स्वतन्त्र नही होता। उत्पादन के साधनो से वंचित वह अपनी श्रम शक्ति बेचने और इस प्रकार शोषण के जुए को बर्दाश्त करने को विवश होता है।

**पूंजीवाद का बुनियादी अन्तर्विरोध**

पूंजीवाद ने न केवल उत्पादन के विकास के एक ऐसे उच्च स्तर को प्राप्त कर लिया, जो सभी पूर्ववर्ती समाजो को अज्ञात था, बल्कि ऐसी उत्पादक शक्तियों को भी जन्म दिया, जो अन्त मे समूचे तौर पर पूंजीवादी व्यवस्था का ही काम तमाम कर देंगी। मार्क्स और एंगेल्स ने पूंजी की तुलना एक ऐसे जादूगर से की है, जो अपनी जादूगरी की शक्ति को खुद नियंत्रित करने मे असमर्थ हो जाता है।

---

*मार्क्स और एंगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

श्रम का सामाजिक विभाजन उत्पादन की विभिन्न शाखाओ को एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से बाध देता है और उन्हे परस्परावलम्बी बना देता है। इस प्रकार सम्पूर्ण समाज के लिये वस्तुए तैयार करते हुए उत्पादन लगातार समाजीकृत होता जाता है। परन्तु उत्पादक शक्तियो के इस समाजीकरण की उत्पादन के साधनो के निजी स्वामित्व से अधिकाधिक टक्कर होती है। बडे पैमाने का उत्पादन लोगो को बडी सख्या मे काम पर लगानेवाले दर्जनो तथा सैकडो उद्यमो को सम्बद्ध करता है। परन्तु मुट्ठी भर पूजीपति तथा अन्य स्वत्वाधिकारी, जिनकी सख्या आबादी मे बहुत ही कम होती है, उत्पादन के फलो को हडप जाते हैं।

प्रत्येक पूजीपति समाज के हितो की परवाह किये बिना अपने निजी स्वार्थो की दृष्टि से अपने उद्यमो का प्रबन्ध करता है। फलत अव्यवस्था तथा निर्मम होड के कारण उत्पादन क्षीण होता जाता है। पूजीपति अपना मुनाफा बढाने के लिए वेतन घटाने, काम के अधिक घटो को बनाये रखने और अपने मजदूरो के काम करने तथा जीवन निर्वाह की स्थितियो को शोचनीय बनाते हुए कम खर्च करने की कोशिशें करता है। इस कारण मेहनतकशो की क्रय-क्षमता की अपेक्षा माल के उत्पादन की वृद्धि ज्यादा तेजी से होती है और उसके फलस्वरूप अत्युत्पादन, माल की बहुतायत, आर्थिक सकट और उत्पादन मे गिरावट पैदा हो जाती है। कारखानो को बन्द कर दिया जाता है और बडी सख्या मे मजदूरो की छटनी कर दी जाती है। इससे पूजीवादी उत्पादन प्रणाली का गहन अतर्विरोध—उत्पादन के सामाजिक चरित्र और स्वामित्व के पूजीवादी स्वरूप का अतर्विरोध—सामने आता है। यह पूजीवाद का बुनियादी अन्तर्विरोध और समाजवादी क्रान्ति का वस्तुगत आधार है।

**मजदूर वर्ग का विश्व ऐतिहासिक कार्यभार**

समाजवादी क्रान्ति को निष्पन्न करने मे सक्षम सामाजिक शक्ति पूजीवादी समाज का सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग—सर्वहारा वर्ग—है। मार्क्स और एगेल्स ने कहा है कि **पूजीवाद का उन्मूलन तथा समाजवाद का निर्माण** सर्वहारा वर्ग का महान ऐतिहासिक कार्यभार है। समाजवादी समाज के निर्माता के रूप मे सर्वहारा वर्ग की विश्व ऐतिहासिक भूमिका का यह सिद्धान्त वैज्ञानिक समाजवाद का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। यह कोई सयाग की बात नही कि वैज्ञानिक समाजवाद की पहली

कार्यक्रमीय दस्तावेज–'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'–पूजीवाद के विरुद्ध सघर्ष मे दुनिया के सर्वहाराओ से एकजुट होने की इस अपील के साथ समाप्त होता है. "शासक वर्ग कम्युनिस्ट क्रान्ति के भय से कापा करे! सर्वहाराओ के पास अपनी जजीरो के अलावा खोने के लिये और कुछ नही है। जीतने के लिये उनके पास सारी दुनिया है।"*

पूजीवाद ने सर्वहारा वर्ग के रूप मे अपनी कब्र खोदनेवाले को खुद पैदा कर दिया है। पूजीवादी समाज और बडे पैमाने के उद्योग के विकास का मतलब मजदूर वर्ग का विकास भी है, और यही सभी मेहनतकश लोगो को, सारी मानवजाति को शोषण के जुए से मुक्त कर सकता है।

मार्क्स और एगेल्स क्यो इस नतीजे पर पहुचे कि मानवजाति को मुक्त करने का यह महान लक्ष्य मजदूर वर्ग के ही ऊपर है? उन्होने क्यो मजदूर वर्ग को सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग माना?

सर्वप्रथम इस कारण कि मजदूर वर्ग का उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व नही है। फलत, जैसा कि हम पहले कह चुके है यह पूजीपति के लिए काम करने, पूजीवादी शोषण के जुए को बर्दाश्त करने के लिए विवश है। इसी कारण किसी अन्य वर्ग की अपेक्षा इसकी शोषण के आधार–निजी स्वामित्व और पूजीवाद के उन्मूलन तथा समाजवाद के निर्माण मे अधिक दिलचस्पी है। अत. पूजीवाद को मिटाने और समाजवाद को स्थापित करने की ओर लक्षित क्रान्ति मजदूर वर्ग का महान और सर्वाधिक चिरपोषित उद्देश्य है। क्रान्ति मे मजदूर वर्ग के पास खोने के लिए कुछ भी नही और पाने के लिए सब कुछ है: उत्पादन के साधनो पर सार्वजनिक स्वामित्व, राजनीतिक सत्ता, अपने जीवन-स्तर को ऊचा उठाने और सम्पूर्ण सास्कृतिक सम्पदा के उपयोग की सभावना।

वैज्ञानिक समाजवाद के विरोधी यह दावा करते है कि मजदूर वर्ग का लक्ष्य हर तरह के स्वामित्व का उन्मूलन करना है। परन्तु किसी भी रूप मे बात ऐसी नही है। मजदूर वर्ग का लक्ष्य है उत्पादन के साधनो पर निजी पूजीवादी स्वामित्व को समाप्त करना, क्योकि मनुष्य द्वारा

---

*मार्क्स और एगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

मनुष्य के शोषण का यही आधार है। मार्क्स और एंगेल्स ने 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' मे लिखा है कि समाजवाद सामाजिक उत्पादों को उपयोग मे लाने के अधिकार से, अर्थात्, सम्पत्ति के हकदार होने की सभावना से मनुष्य को वचित नही करता। यह केवल इस प्रकार के उपयोग द्वारा दूसरो के श्रम को अपने अधीन करने और शोषण तथा मुनाफाखोरी के साधन के रूप मे सम्पत्ति का उपयोग करने के अधिकार से उसे वचित करता है। राजकीय सत्ता को अपने हाथ मे ले लेने के बाद मजदूर वर्ग बडे पैमाने की पूजीवादी सम्पत्ति को जरूर जब्त कर लेता है, परन्तु किसानो, दस्तकारो, व्यापारियो और निम्न पूजीपति वर्ग के अन्य प्रतिनिधियो की छोटी सम्पत्ति को उन्ही के अधिकार मे रहने देता है। जैसा कि हम आगे, तीसरे अध्याय मे देखेगे, समाजवादी निर्माण की प्रक्रिया मे छोटी सम्पत्ति के स्वत्वाधिकारियो की सहमति से ही इसे सामूहिक, सामाजिक सम्पत्ति मे रूपान्तरित किया जाता है।

अर्थव्यवस्था की सर्वाधिक विकसित प्रणाली—बडे पैमाने के यत्रीकृत उत्पादन—से सम्बद्ध होने के कारण भी मजदूर वर्ग सबसे क्रान्तिकारी वर्ग है। और चूकि भविष्य बडे पैमाने के उत्पादन का है, इसलिए मजदूर वर्ग भावी उत्पादन और इस प्रकार सम्पूर्ण समाज के भविष्य से सम्बद्ध है। पूजीवाद के अन्तर्गत बडे पैमाने के उद्योग का विकास हो रहा है, और उससे मजदूर वर्ग की शक्ति कमजोर होना तो रहा दूर, उसकी सख्या मे बडी वृद्धि ही होती है तथा सामाजिक जीवन मे सर्वहारा वर्ग द्वारा अदा की जानेवाली भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। पूजीवादी समाज इस प्रकार मजदूर वर्ग का गठन तथा सवर्द्धन करता है।

मजदूर वर्ग आधुनिक समाज की प्रकाण्ड उत्पादक शक्तियो का निर्माता, बडे पैमाने के उत्पादन का स्रष्टा है। मार्क्स के शब्दो मे अथक काम करके तथा अपनी सारी शारीरिक शक्ति और मानसिक योग्यताओ का उपयोग करके सर्वहारा वर्ग ने खुद श्रम को उदात्त बनाने और आम समृद्धि को सभव बनाने के लिए उत्पादनशीलता को आवश्यक सीमा तक बढाने के निमित्त भौतिक साधनो को पैदा किया। आधुनिक उद्योग की अक्षय उत्पादक शक्तियों के सृजन से श्रम की मुक्ति की पहली अनिवार्य शर्त की पूर्ति हुई।

चूकि प्राक् पूजीवादी समाजो मे उत्पादन बहुत ही कम विकसित था, इसलिये एगेल्स के शब्दो मे "ऐतिहासिक प्रगति कुल मिलाकर एक

विशेषाधिकारप्राप्त अल्पसख्यक समुदाय के क्रियाकलाप का ही विषय बना दी गई थी और बहुसख्यकों के भाग्य म अपने श्रम द्वारा जीवन निर्वाह के अपने स्वल्प साधन और इसके अतिरिक्त विशेषाधिकार सपन्न समुदाय के लिए अधिकाधिक प्रचुर साधन उत्पादित करना ही रह गया था।"*

पूजीपति वर्ग अपने ऐतिहासिक कार्यभार को पूरा कर चुका है और अब उत्पादन तथा समाज और वास्तव मे सम्पूर्ण मानवजाति के भावी विकास मे बाधक बन गया है और वास्तविक समानता एव आम समृद्धि की स्थापना मे रोडे अटका रहा है। अब सर्वहारा वर्ग के सम्मुख श्रम की मुक्ति के लिए दूसरी शर्त को पूरा करने का कार्यभार प्रस्तुत है उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व का उन्मूलन और इन्हे उत्पादको के सामूहिक नियत्रण मे करना, समाज के प्रत्येक सदस्य को सामाजिक सम्पदा के उत्पादन तथा वितरण—दोनो कार्यों मे भाग लेने की सम्भावना प्रदान करना, सारे उत्पादन की योजनाबद्ध व्यवस्था करना तथा इस प्रकार सामाजिक उत्पादन को ऐसे स्तर पर पहुचाना कि समाज के सभी सदस्यो की सतत बढ़ती हुई उपयुक्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

मजदूर वर्ग शोषण-प्रणाली को समाप्त करने के अपने ऐतिहासिक कार्यभार को पूरा करने मे इसलिए भी समर्थ है कि सख्या की दृष्टि से इसे श्रेष्ठता प्राप्त है। वह पूजीवादी समाज का एक बहुसख्यक और इसके अलावा, जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, द्रुत गति से विकासमान वर्ग भी है। लेकिन बात इतनी ही नही है। मजदूर जिन परिस्थितियो मे उत्पादन तथा जीवन निर्वाह करते है, उनके फलस्वरूप वे सगठन की बहुत ही उच्च स्थिति भी प्राप्त कर सकते है।

बडे पैमाने के उद्योग के निर्माण के दौरान पूजीपति वर्ग ने मजदूरो को बडी फैक्टरियों और मिलो मे सकेन्द्रित करके उन्हे बडे नगरो मे बसने के लिए बाध्य कर दिया। मजदूर एकसाथ बडे बडे समूहो मे श्रम करते है। इस कारण वे किसी अन्य सामाजिक वर्ग की अपेक्षा एकजुट तथा सगठित होने की आवश्यकता बेहतर ढग से समझने लगते है। वे अलगाव और कमजोरी की भावनाओ को दूर करते है। वे इस बात को अधिकाधिक अनुभव करने

---

*फ्रेडरिक एगेल्स, 'कार्ल मार्क्स'।

3*

लगते हैं कि यद्यपि अलग-अलग वे कमज़ोर हैं, परन्तु एकसाथ वे अपराजेय शक्ति हैं। विभिन्न नगरों और इलाकों के बीच सम्पर्कों के विकास से उनमें एकसार मजदूरों के बीच सम्बन्धों के विकास में सफलता प्राप्त होती है। वे यह महसूस करने लगते हैं कि उनके काम तथा जीवननिर्वाह की परिस्थितियां सर्वत्र विषम हैं, कि सर्वत्र उन्हें एक ही शोषक वर्ग का सामना करना है। अपने मजूरी हितों और लक्ष्यों के प्रति मजदूरों की अभिज्ञता तथा इसी प्रकार उनकी वर्गगत चेतना भी विकसित होती है। उत्पादन तथा सामाजिक जीवन में उन्हें जो स्थिति प्राप्त है, उससे वे सभी उत्पीड़ित वर्गों में सर्वाधिक जुझारू तथा शक्तिशाली हो जाते हैं।

इस प्रकार सर्वहारा वर्ग के जीवन की परिस्थितियों से उसे समाज में अपनी विशेष स्थिति और अपने वर्गगत हितों को समझने में सहायता मिलती है। इससे वह प्रगतिशील क्रान्तिकारी विश्वदृष्टिकोण अपनाने तथा श्रम और संघर्ष के जरिये उच्च राजनीतिक चेतना विकसित करने में सक्षम हो जाता है। समाज के अन्य तबकों के प्रतिनिधियों की अपेक्षा मजदूर अधिक वस्तुनिष्ठ और कालातीत, परम्परागत विचारों तथा विश्वासों से कम बाधित होते हैं। उनका जीवन ही उन्हें संकीर्ण साम्प्रदायिक, धार्मिक और राष्ट्रवादी पूर्वाग्रहों से मुक्त कर देता है।

यद्यपि मार्क्स और एंगेल्स ने कहा था कि पूंजीवादी समाज में सर्वहारा वर्ग ही सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग है, परन्तु उन्होंने समाज के अन्य गैर-सर्वहारा वर्गों, मिसाल के लिए किसानों द्वारा अदा की जानेवाली क्रान्तिकारी भूमिका को हीन नहीं माना। फिर भी अपनी सामाजिक स्थिति के कारण किसान क्रान्ति द्वारा मनुष्य को मुक्त नहीं कर सकते। किसान समुदाय कालातीत सामंती समाज का फल है। इसके अलावा, किसान की प्रकृति पूर्णतया अन्तर्विरोधी है। एक ओर, वह स्वत्वाधिकारी है–उसके अधिकार में जमीन का टुकड़ा, श्रम के औज़ार, ढोर आदि हैं। दूसरी ओर, अपने श्रम से जीविकोपार्जन करने के कारण वह मेहनतकश भी है। पूंजीवाद के विकास के साथ-साथ किसान समुदाय का सामाजिक स्तरीकरण होता है। कुछ किसान धनी हो जाते हैं और ग्रामीण पूंजीपति बन जाते हैं, शेष, अधिकांश किसान तबाह हो जाते हैं और वे मजदूर वर्ग की पांतों को बढ़ाते हैं। यहां इस बात का उल्लेख भी कर देना चाहिए कि किसान छोटे छोटे गांवों में बिखरे हुए हैं और वे आसानी से संगठित

नही हो पाते। इसके अलावा उनमे छोटे स्वामी की गहरी मनोवृत्ति पायी जाती है।

फिर भी, वैज्ञानिक समाजवाद किसान समुदाय तथा कुछ अन्य सामाजिक तबको, उदाहरणार्थ, जनवादी विचारो के बुद्धिजीवियो की क्रान्तिकारी भूमिका को कम महत्त्वपूर्ण आकने के विरुद्ध चेतावनी देता है। जैसा कि हम आगे पाचवें अध्याय मे देखेंगे, उनकी भूमिका उन देशो मे विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, जो विकास की पूजीवादी अवस्था मे अभी तक नहीं पहुचे हैं, खासकर जो औपनिवेशिक दासता से अभी-अभी मुक्त हुए हैं।

इस प्रकार, पूजीवादी समाज मे मजदूर वर्ग सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग है। समाज मे सबसे अधिक शोषित वर्ग होने की अपनी स्थिति के कारण यह अनिवार्यत पूजीपति वर्ग के विरुद्ध वर्ग-सघर्ष मे खिच आता है।

किन्तु मजदूरो ने सहसा ही अपने को एक वर्ग के रूप मे सगठित नही किया और न ही वर्ग-चेतन सगठित शक्ति के रूप मे वे पूजीपति वर्ग के मुकाबले खडे हो गए। शुरू मे पूजीपति वग के खिलाफ उनका सघर्ष आत्मस्फूर्त और असगठित था। यह अलग अलग मजदूरो अथवा एक ही फैक्टरी मे काम करनेवाले मजदूरो द्वारा चलाया जाता था और उन्होने यह सघर्ष सम्पूर्ण पूजीपति वर्ग के विरुद्ध नही, बल्कि "अपने ही" पूजीपतियो के विरुद्ध, अर्थात्, अपने प्रत्यक्ष शोषको के विरुद्ध चलाया। बहुधा वे श्रम के औजारो, मशीनो को यह समझे बिना नष्ट कर दिया करते थे कि उनकी दुर्दशा के लिए मशीनें नही, बल्कि मशीनो का स्वत्वाधिकारी– सम्पूर्ण पूजीपति वर्ग और निजी स्वामित्व पर आधारित पूजीवादी सामाजिक व्यवस्था दोषी है।

बाद मे ज्यो-ज्यो पूजीवादी उत्पादन विकसित हुआ, आर्थिक जीवन अधिक केन्द्रीकृत होता गया और आर्थिक सम्बन्ध बढते गए, त्यो-त्यो विभिन्न फैक्टरियो और उद्योग की विभिन्न शाखाओ मे लगे मजदूरो के बीच सम्पर्क भी अधिकाधिक घनिष्ठ होता गया। धीरे-धीरे मजदूरो ने यह समझ लिया कि उनके हित एक से है और सम्पूर्ण पूजीपति वर्ग तथा पूजीवादी सामाजिक सम्बन्धो के खिलाफ सयुक्त सघर्ष करने की आवश्यकता महसूस की। पूजीपतियो के विरुद्ध मजदूरो का सघर्ष सचेत रूप मे लडा जानेवाला वर्ग-सघर्ष हो गया। मजदूरो ने मिलकर एक वर्ग का निर्माण किया और अपने

महान मुक्तिदायी कार्यभार से अनजान वर्ग से सर्वहारा वर्ग पूजीवाद के विरुद्ध, समाजवाद के लिए चेतन संघर्षकर्ता के रूप मे विकसित हुआ।

अपने विश्व ऐतिहासिक कार्यभार–पूजीवाद के उन्मूलन तथा उसकी जगह समाजवाद की स्थापना–को पूरा करने के संघर्ष में मजदूर वर्ग अकेला नही है। शोषण के उन्मूलन म दिलचस्पी रखनेवाला वर्ग यही अकेला नही है। पूजीवादी समाज मे दूसरे भी ऐसे वर्ग तथा मेहनतकश तबके है, जो शोषकों के जुल्मो से पीड़ित है, ऐसे वर्ग तथा तबके–मेहनतकश किसान, शिल्पकार, छोटे व्यापारी और बुद्धिजीवी (इजीनियर, तकनीशियन, अध्यापक, डाक्टर, कलाकार, दफ्तरी कर्मचारी आदि), जिनके महत्त्वपूर्ण हित मजदूर वर्ग के हितो के अनुरूप है। समाज के ये तबके उत्पीडन से केवल अपने प्रयास द्वारा छुटकारा नही पा सकते, लेकिन सर्वहारा वर्ग के महान सघर्ष मे वे उसके साथी और सहायक हो सकते है।

**पूजीवादी गुलामी से अपने को मुक्त कर मजदूर वर्ग सारे समाज को उत्पीडन से मुक्त करता है।** समाज के अन्य तबको से किसी भी विशेषाधिकार की माग किये बिना यह सभी मेहनतकश लोगो को शोषण से छुटकारा दिलाने मे सहायता प्रदान करना अपना फर्ज समझता है। 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' मे कहा गया है कि "पहले के तमाम ऐतिहासिक आन्दोलन अल्पमत के आन्दोलन रहे है या अल्पमत के फायदे के लिए रहे है। किन्तु सर्वहारा आन्दोलन विशाल बहुमत का, विशाल बहुमत के फायदे के लिए होनेवाला चेतन तथा स्वतन्त्र आन्दोलन है। हमारे वर्तमान समाज का सबसे निचला स्तर, सर्वहारा वर्ग, शासकीय समाज की तमाम ऊपरी परतो को पलटे बिना हिल तक नही सकता, किसी प्रकार अपने को ऊपर नही उठा सकता।"*

**मजदूर वर्ग और अन्य क्रान्तिकारी शक्तियां**

यद्यपि वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्त्तको ने सर्वहारा वर्ग को सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग माना था और कहा था कि यह स्वय इतिहास द्वारा निर्दिष्ट पूजीवाद की कब्र खोदनेवाला तथा नये, समाजवादी समाज का निर्माता है, परन्तु उन्होने अन्य क्रान्तिकारी और जनवादी शक्तियो के महत्त्व को कम नही आका। मार्क्स और एगेल्स ने 'कम्युनिस्ट पार्टी के

---

*मार्क्स और एगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

घोषणापत्र' मे दिखाया है कि किसान, निम्न पूजीपति, पूजीपति वर्ग का सर्वाधिक रेडिकल तबका और जनवादी बुद्धिजीवी मजदूर वर्ग के साथ-साथ सघर्ष करते हैं। उन्होंने लिखा कि कम्युनिस्ट सर्वत्र सभी देशो की जनवादी पार्टियो की एकता तथा सहमति के लिए प्रयास करते है। वे "सर्वत्र विद्यमान सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रत्येक क्रान्तिकारी आन्दोलन का समर्थन करते है"।*

मार्क्स और एगेल्स ने कृषि समस्या और पूजीपतियो तथा जमीदारो के विरुद्ध किसानो के सघर्ष मे उनके हितो की रक्षा पर काफी ध्यान दिया। उन्होंने पूजीपतियो की उनकी लूट-खसोट के लिये भर्त्सना की, आयरिश, पोलिश तथा अन्य स्वाधीनता सग्रामियो को अपना पूर्ण समर्थन प्रदान किया, राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष मे महती क्रान्तिकारी क्षमता को अनुभव किया और दृढता के साथ इसमे विश्वास किया कि उत्पीडित राष्ट्र अपनी स्वाधीनता प्राप्त करेगे तथा इतिहास मे महान भूमिका अदा करेंगे।

यह उल्लेखनीय है कि जब पूजीवादी समृद्धि अपनी पराकाष्ठा पर थी, जब पूजीवाद दृढता के साथ प्रगति के पथ पर लम्बे डग भर रहा था और उत्पादन, तकनीक तथा विज्ञान के क्षेत्र मे बडी प्रगति कर रहा था, उस समय मार्क्स और एगेल्स ने सिद्ध किया कि प्रत्येक राष्ट्र के लिए विकास के पूजीवादी पथ को अपनाना अनिवार्य नही है, बल्कि किसी न किसी कारण से पिछडे हुए कुछ राष्ट्र पूजीवादी अवस्था से गुजरे बिना समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त कर सकते है। उन्होंने विशेष रूप से आदिम कबायली प्रथाओ को बनाये रखनेवाले राष्ट्रो की ओर इगित करते हुए यह विश्वास प्रकट किया कि निजी सम्पत्ति से रहित और सब के लिये समानता पर आधारित यह प्रथा नये समाजवादी सम्बन्धो के बीज रूप की तरह काम आ सकती है। निस्सन्देह, पूजीवाद को ध्वस्त करने और समाजवादी विकास के पथ को अपनाने वाले यही सबसे पहले राष्ट्र नही हो सकते। यह काम विकसित अथवा पर्याप्त रूप मे विकसित पूजीवादी देशो के सर्वहारा ही कर सकते हैं। एगेल्स ने लिखा है कि वे देश जहा कबायली प्रथाए अथवा उनके अवशेष अभी पूर्ववत कायम है, सामुदायिक स्वामित्व के इन अवशेषों और तदनुरूप लोक प्रथाओ

*मार्क्स और एगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

को समाजवादी समाज की ओर अपनी प्रगति को काफी छोटा करने और पश्चिमी यूरोप मे हम लोगो को जिन कष्टो तथा संघर्षों के बीच से अपना पथ प्रशस्त करना है, उनसे काफी हद तक अपने को बचाने के शक्तिशाली साधन के रूप मे उपयोग कर सकेंगे।"*

जिन देशो मे पूजीवादी अर्थव्यवस्थाओ का एक खास सीमा तक विकास हो चुका था, वहा उनका बुनियादी रूप मे पुनर्गठन हो चुकने के बाद विकासमान देश यह देखकर कि सार्वजनिक स्वामित्व के आधार पर कैसे आधुनिक उद्योग खडा किया जा सकता है और कैसे उसे सारे समाज के लिए लाभजनक बनाया जा सकता है, यह अनुभव करेंगे कि विकास की पूजीवादी अवस्था से गुजरे बिना समाजवाद को प्राप्त करने का छोटा रास्ता भी है।

मार्क्स और एगेल्स ने प्राय एक सदी पहले इस संभावना के बारे मे लिखा था। अब इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि वे कितने सही तथा दूरदर्शी थे। जैसा कि हम आगे देखेंगे, इस समय, जब समाजवाद एक विश्व प्रणाली बन चुका है, जब सबसे छोटा तथा सबसे पिछड़ा हुआ देश भी विजयी समाजवादी देशो के आदर्श, अनुभव और सहायता तथा विश्व विज्ञान एव तकनीक की उपलब्धियो का लाभ उठा सकता है, तो समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने का रास्ता कही अधिक छोटा हो गया है तथा उनके लिए पूजीवाद अब अनिवार्य अवस्था नही रहा है। और अनेक देशो ने अब समाजवाद के इसी छोटे रास्ते को अपनाने का दृढ सकल्प कर लिया है।

**क्रान्तिकारी पार्टी की आवश्यकता**

जैसा कि हम देख चुके है, समाजवादी क्रान्ति और वर्गहीन समाज की स्थापना के सम्बन्ध मे वैज्ञानिक समाजवाद के निष्कर्ष सामाजिक विकास के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है। परन्तु वैज्ञानिक समाजवाद के अनुसार विजय का दिशा-निर्देश करनेवाले नियम किसी प्रकार की रहस्यपूर्ण पारलौकिक शक्ति अथवा होनी नही है।

ये नियम अपने आप समाजवाद की ओर नही ले जाते। मजदूर वर्ग तथा सभी मेहनतकश लोगो को समाजवादी पथ पर समाज के पुनर्गठन के

---

*फ्रे० एगेल्स, 'रूस मे सामाजिक समस्या' नामक कृति का उपसहार।

अपने प्रयास मे इन नियमो को अच्छी तरह समझ लेना और उसके बाद इनका उपयोग करना चाहिए।

अपने ऐतिहासिक ध्येय को पूरा करने, एकजुट तथा सुसगठित शक्ति के रूप मे पूजीपतिया का विरोध करने और सघर्ष के विविध तरीको के बारे मे पूर्ण जानकारी प्राप्त करने तथा कुशलतापूर्वक उन्हे लागू करने के लिए मजदूर वर्ग को ऐतिहासिक विकास के सभी नियमो को जानना और वग सघर्ष के जटिल स्वरूप को अच्छी तरह समझना चाहिए। और इसके लिए उसे अपने महत्त्वपूर्ण हितो को प्रकट करनेवाले क्रान्तिकारी सिद्धान्त की दक्षता प्राप्त करनी चाहिए। यह सिद्धान्त है **मार्क्सवाद-लेनिनवाद, वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त।**

अपने आप तो मजदूर आन्दोलन स्पूर्त्त रूप मे विकसित हो सकता है। लेकिन यदि इसे वर्ग-चेतन तथा सगठित बनाना है, तो मजदूरो के बीच वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त का प्रचार करना चाहिए, उसे उनके दिलोदिमाग पर हावी हो जाना चाहिए। अपनी रोजी की चिन्ता से ग्रस्त मजदूरो के पास एक वैज्ञानिक सिद्धान्त की व्याख्या प्रस्तुत करने का समय नही होता। इससे भी बढकर बात यह है कि इसके लिए उनके पास आवश्यक ज्ञान नही है, क्योकि उन्ह गम्भीर शिक्षा देने मे पूजीपतियो की कोई दिलचस्पी नही है। इसी लिए वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त को मजदूरो का साथ देनेवाले बुद्धिजीवियो ने निरूपित किया है।

इस सिद्धान्त के निर्धारण के बाद कार्यभार यह था कि इसे मजदूरो की सपत्ति बनाया जाये, इसपर ध्यान रखा जाये कि पूजीपतिया के विरुद्ध अपने सघर्ष मे मजदूर इसका अपने पथदर्शक के रूप म इस्तेमाल करे। दो कारणो से यह कोई आसान काम नही था। पहला कारण यह था कि मजदूरो का स्वयस्फूर्त आन्दोलन अलग अलग पूजीपतियो से अपनी आर्थिक मागें मजूर कराने की ओर लक्षित था। इस प्रकार के सघर्ष के प्रभाव मे मजदूरो को केवल अपने दैनिक आर्थिक हितो की रक्षा करने की आवश्यकता की जानकारी थी और इसलिए मजदूरो के मन मे इस समूह-प्रवृत्ति, इस आर्थिक प्रवृत्ति की जगह वर्गगत, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी प्रवृत्ति को बिठाना आवश्यक हो गया। दूसरा कारण यह था कि पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत पूजीवादी वैचारिकी ही प्रमुख वैचारिकी होती है और मजदूर चाहे अनचाहे इसके प्रभाव म आ जाते है। फलत मेहनतकश लोगो के

दिमाग से पूजीवादी वैचारिकी के तत्वों को मिटाना जरूरी है। यह कार्यभार पूजीवादी वैचारिकी के विरुद्ध निरन्तर दैनिक संघर्ष के जरिये ही पूरा हो सकता है।

मजदूर वर्ग में वैज्ञानिक समाजवाद के विचारों को प्रचलित करने, पूजीवाद के विरुद्ध संघर्ष के लिए उसे संगठित करने, इस संघर्ष को निर्देशित करने और पूजीवादी वैचारिकी का सफलतापूर्वक विरोध करने के लिये मजदूर वर्ग की एक क्रान्तिकारी पार्टी, एक मार्क्सवादी पार्टी नितान्त आवश्यक है। मार्क्सवादी पार्टी वैज्ञानिक समाजवाद तथा मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आदोलन का आन्तरिक समन्वय है।

अपनी स्वतत्र पार्टी को कायम कर लेने के बाद ही, मजदूर वर्ग अपना ऐतिहासिक कार्यभार पूरा कर सकता है, अर्थात् समाजवादी समाज में पूजीवादी समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण को सम्पन्न कर सकता है। वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तकों ने, जो न केवल महान विचारक, बल्कि क्रान्तिकारी संघर्ष के महान संगठक भी थे, मजदूर वर्ग की पार्टी को कायम करने तथा सुदृढ बनाने के लिए कई दशक तक प्रयास किए। १८४७ में उन्होंने 'कम्युनिस्ट लीग' के नाम से विख्यात प्रथम कम्युनिस्ट सगठन कायम किया और इसके कार्यक्रम के रूप में प्रसिद्ध 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' प्रकाशित किया। १८६४ में मार्क्स और एगेल्स की पहलकदमी पर स्थापित 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघ' (पहला इंटरनेशनल) से अनेक देशों में मजदूर पार्टियों की स्थापना का पथ प्रशस्त हुआ।

## ४ लेनिन द्वारा वैज्ञानिक समाजवाद का विकास

१९ वी सदी के मध्य मे, जब पूजीवाद प्रगति की दिशा मे लम्बे डग भर रहा था, वैज्ञानिक समाजवाद अस्तित्व मे आया। १९ वी सदी के अन्त तथा २० वी सदी के शुरू मे ऐतिहासिक परिस्थितियो मे आमूल परिवर्तन हुए। पूजीवाद ने अपनी अन्तिम मजिल—साम्राज्यवाद मे प्रवेश किया। साम्राज्यवाद के उदय के साथ ही आर्थिक और सामाजिक अन्तर्विरोध अपूर्व रूप मे तीव्र हो गए। अपेक्षत शान्तिपूर्ण विकास के ऐतिहासिक काल की जगह सामाजिक तूफानो तथा क्रांतिकारी उथल-पुथल का काल आ गया।

सामाजिक सम्बन्धो मे आमूल परिवर्तनो के इस युग के साथ ही

वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति—परमाणु ऊर्जा की खोज और उपयोग, अन्तरिक्ष अनुसधान, विज्ञान का [illegible] मे व्यापक इस्तेमाल, इलेक्ट्रानिक [illegible] के विकास—का नया दौर शुरू हुआ।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी [illegible] के रूप मे स्पष्ट करती है कि पूजीवाद, जो ऐतिहासिक दृष्टि से केवल सक्रमणकालीन सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था है मानवजाति की सामाजिक, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति मे अधिकाधिक बाधक सिद्ध हो रहा है। पूजीवाद के समाजवाद द्वारा स्थानापन्न की ऐतिहासिक अनिवार्यता अधिकाधिक अविलम्बनीय बनती जा रही है।

जब ये नयी परिस्थितिया पैदा हुई, तो बुनियादी सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिये मार्क्सवाद के सृजनात्मक विकास से सम्बद्ध नया दृष्टिकोण अपनाना स्वाभाविक रूप से आवश्यक हो गया। राष्ट्रीय मुक्ति तथा जनवादी आन्दोलनो के साथ सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन के नये अनुभव का और नवीनतम वैज्ञानिक एव तकनीकी उपलब्धियो का सामान्यीकरण करना भी अनिवार्य हो गया। यह इसलिए और भी अधिक आवश्यक हो गया कि मार्क्सवाद की विरोधी शक्तिया अधिक सक्रिय हो गई थी और वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त और व्यवहार पर अपने हमलो को तेज़ कर रही थी, जो उस समय दुनिया भर मे अधिकाधिक मेहनतकशो के दिलोदिमाग पर हावी हो रहा था।

बीसवी सदी के शुरू मे अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी और विशेष रूप से मज़दूर आन्दोलन का केन्द्र रूस हो गया, जहा उस समय तक समाजवादी क्रान्ति की परिस्थितिया परिपक्व हो चुकी थी। यद्यपि अभी रूस मुख्यत खेतिहर देश था, परन्तु उसमे पूजीवाद तीव्र गति से विकसित हो रहा था और औद्योगिक उत्पादन अत्यत सकेन्द्रित हो गया था। उसका सर्वहारा वर्ग मुख्यत औद्योगिक मजदूरो का बना था। मजदूरो के निर्मम शोषण, किसानो की जमीन की भूख और गरीबी, जनता की राजनीतिक अधिकारहीनता, जातीय अल्पसख्यको के उत्पीडन, सामती तथा पितृसत्तात्मक अवशेषो, अन्तर्राष्ट्रीय पूजी पर निर्भरता—इन सभी बातो से रूस सामाजिक तथा जातीय उत्पीडन, सम्पूर्ण साम्राज्यवादी व्यवस्था के अन्तर्विरोधो का केन्द्र-बिन्दु और इस प्रणाली की सबसे कमजोर कड़ी बन गया था।

रूस मे समाजवादी क्रान्ति विकसित होती जा रही थी। ऐसे ही समय इसने दुनिया को लेनिनवाद, अर्थात, नयी ऐतिहासिक परिस्थितियो के अनुरूप समृद्ध तथा विकसित मार्क्सवाद प्रदान किया। मार्क्सवाद का यह सृजनात्मक विकास अविच्छिन्न रूप मे व्ला० इ० लेनिन (१८७०–१९२४) के नाम से सम्बद्ध था।

इस प्रतिभासम्पन्न दार्शनिक और अविचल क्रान्तिकारी ने मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष के लिए अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया था। उनका सैद्धान्तिक कार्यकलाप सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष और सोवियत संघ मे समाजवाद के निर्माण से घनिष्ठ रूप मे सम्बद्ध था। उन्होंने न केवल वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त को विकसित किया, बल्कि सोवियत संघ मे समाजवादी निर्माण की ठोस योजना तैयार की और उसके व्यावहारिक कार्यान्वयन को खुद निदेशित किया। उनके विचार समाज के समाजवादी पुनर्गठन के संघर्ष मे एक के बाद दूसरी पीढी को अनुप्राणित करते रहे है और करते रहेगे। लेनिनवाद—क्रान्तिकारी विचार तथा क्रान्तिकारी क्रियाशीलता का चिरन्तन स्रोत है। लेनिन का नाम—नयी दुनिया का प्रतीक है।

मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की 'लेनिन शताब्दी समारोह के सम्बन्ध मे' शीर्षक अपील मे कहा गया है कि विश्व समाजवाद, मजदूर तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के पूरे अनुभव से मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की पुष्टि हो चुकी है। अनेक देशो मे समाजवादी क्रान्तियो की विजय, विश्व समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव, पूजीवादी देशो मे मजदूर आन्दोलन की सफलताओ, भूतपूर्व उपनिवेशो तथा अर्ध-उपनिवेशो के लोगो के स्वतंत्र सामाजिक और राजनीतिक कार्यकलाप, साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष के अभूतपूर्व उभार, इन सभी बातो से लेनिनवाद की ऐतिहासिक सत्यता प्रमाणित होती है, जो वर्तमान युग की बुनियादी अपेक्षाओ को प्रकट करता है।

वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त मे समाजवादी क्रान्ति का लेनिन का सिद्धान्त एक महत्त्वपूर्ण देन है।

इस सिद्धान्त का सारतत्त्व क्या है?

**साम्राज्यवाद – समाजवाद की पूर्ववेला**

सबसे पहले यह कि लेनिन ने साम्राज्यवाद की ऐतिहासिक स्थिति को दर्शाया। उन्होंने प्रमाणित किया कि साम्राज्यवाद समाजवादी क्रान्ति की पूर्ववेला है। लेनिन ने लिखा कि साम्राज्यवाद के "फलस्वरूप उत्पादन का अत्यत व्यापक समाजीकरण हो जाता है', परन्तु यह निजी स्वामित्व पर आधारित वितरण सिद्धान्त को बरकरार रखता है, 'निजी आर्थिक सम्बन्ध और निजी स्वामित्व के सम्बन्ध उस खोल के समान हैं, जो अब अपने अन्तर्य के अनुरूप नही रहा, वह ऐसा खोल है, जो अनिवार्यत नष्ट होगा और जिसे अपरिहार्य रूप से दूर कर दिया जायेगा।"* पूजीवाद के अन्तर्विरोधो के बहुत ही तीव्र हो जाने से समाजवादी क्रान्ति न केवल सभव, बल्कि आवश्यक और अपरिहार्य हो जाती है। समाजवादी क्रान्ति मजदूर वर्ग का फौरी कार्यभार बन जाता है।

निर्बाध प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर इजारेदारी की प्रभुता साम्राज्यवाद का मुख्य लक्षण है। इजारेदारिया पूजीपतियो के विशाल सघ ही हैं, जिन्होंने यथासभव अधिकतम मुनाफा कमाने के उद्देश्य से उत्पादित सभी वस्तुओ के अधिकाश के उत्पादन तथा बिक्री को अपने हाथो मे सकेन्द्रित कर रखा है। अधिकाधिक मुनाफा कमाने की अपनी प्रवृत्ति के कारण साम्राज्यवादी खुद अपने देश के और उपनिवेशो तथा परतत्र देशो के मेहनतकशो का और अधिक निर्मम शोषण करने लगते हैं। अपने बीच दुनिया का विभाजन कर लेने के बाद वे उसके पुनर्विभाजन के लिए घोर सघर्ष करते हैं।

साम्राज्यवाद के अन्तर्गत पूजीवादी समाज के सभी अन्तर्विरोध बहुत ही तीव्र हो जाते है और उत्पादक शक्तियो तथा उत्पादन-सम्बन्धो, उत्पादक शक्तियो के सामाजिक स्वरूप और उनके विकास के निजी पूजीवादी ढग के बीच अन्तर्विरोधो के प्रसग मे यह बात विशेष रूप से लागू होती है। निजी स्वामित्व तथा शोषण पर आधारित उत्पादन के पूजीवादी सम्बन्ध उत्पादन के विकास मे अधिकाधिक बाधा प्रस्तुत करते हैं।

उत्पादन के विकास के उच्च स्तर के फलस्वरूप बहुत बडी मात्रा मे भौतिक वस्तुए तैयार होती हैं, परन्तु निजी स्वामित्व पर आधारित वितरण-सिद्धान्त के कारण आबादी का भारी बहुमत उन्हे प्राप्त करन तथा उनका

---

*ब्ला० इ० लेनिन, 'साम्राज्यवाद, पूजीवाद की चरम अवस्था'।

उपभोग करन मे असमर्थ होता है। फलत, प्राय आर्थिक सकट पैदा होते रहते हैं जो वस्तुओ के अत्युत्पादन और उनके लिए मण्डिया पाने की अत्यधिक कठिनाइयो मे प्रकट होते हैं। ऐसी स्थिति मे या तो उद्यमो को बन्द कर दिया जाता है अथवा उत्पादन मे कमी कर दी जाती है। फलत, बेकारी बढती जाती है, मेहनतकश लोगो का जीवन-स्तर गिरता है और व्यापारिक तथा वित्तीय व्यवस्था भग हो जाती है। इन सकटो से उत्पादन का विकास न केवल अवरुद्ध हो जाता है, बल्कि बहुधा बहुत ही पिछड जाता है। १९२९-१९३३ मे जिस आर्थिक सकट से पूजीवादी दुनिया हिल उठी थी, उससे बहुत तबाही मची थी। इस सम्बन्ध मे यही कहना पर्याप्त है कि सकट के समय औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा मे ब्रिटेन मे २३ ८ प्रतिशत, सयुक्त राज्य अमरीका मे ४६ २ प्रतिशत और जर्मनी मे ४० ६ प्रतिशत की कमी हो गई थी।

निस्सन्देह, अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए इजारेदारिया पुरानी मशीनो की जगह नयी मशीने लगाने और उत्पादक शक्तियो को सुधारने को विवश होती हैं। परन्तु अपने उत्पादन मे सुधार करते हुए इजारेदारिया अपने प्रतिद्वन्द्वियो को वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति से अवगत नही होने देती, वैज्ञानिक सूचनाओ के आदान प्रदान को प्रतिबन्धित करती हैं, और इस प्रकार वैज्ञानिक एव तकनीकी प्रगति मे बाधा डालती हैं। मिसाल के लिये अमरीका की सबसे बडी फर्मों मे एक 'जनरल मोटर्स' के अधिकार मे जितने पेटेट हैं, वह उनके एक प्रतिशत से भी कम का इस्तेमाल करती है। ब्रिटिश फर्म अपने केवल पाच प्रतिशत पेटेटो का उपयोग करती है। अन्य पेटेटो को गुप्त रखा जाता है, और उनके उपयोग से अधिक मुनाफा कमाने के लिए बेहतर समय की प्रतीक्षा की जाती है। इस कारण बहुतेरे आविष्कारो को बहुत देर से उत्पादन के काम मे लाया जाता है। उदाहरणार्थ, नायलॉन १९३२ मे ही आविष्कार हो चुका था, परन्तु १९४६-१९४७ तक इसके उत्पादन की कोई व्यवस्था नही की गई। इस आविष्कार के मालिको ने नायलॉन तैयार करने के लिए अपने उद्यमो का उस समय पुनर्गठन करना लाभजनक नही समझा, क्योकि काफी तैयार रेशमी तथा सूती कपडा बिक्री के लिये स्टाक मे पडा हुआ था। बहुधा वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियो का उपयोग जनसाधारण के अनिष्ट के लिए किया जाता है, मसलन युद्ध की तैयारी तथा उसे चलाने के लिए।

फलत , लाखों व्यक्ति मौत के मुह मे झोक दिये जाते है और विपुल भौतिक सम्पदा नष्ट हो जाती है। सक्षेप मे, उत्पादन के पूजीवादी सम्बन्धो की सीमा के अतर्गत पूजीवादी निजी स्वामित्व के भीतर बहुत ही विकसित उत्पादक शक्तिया अपने को आवद्ध पाती है। वर्ग-सघर्ष की तीव्रता मे प्रकट होनेवाला उत्पादन की पूजीवादी पद्धति का यह अन्तर्विरोध समाजवादी **क्रान्ति का आर्थिक आधार है**। इस प्रकार समाजवादी क्रान्ति, सार्वजनिक स्वामित्व द्वारा निजी पूजीवादी स्वामित्व का स्थानग्रहण एक **ऐतिहासिक अनिवार्यता है**। सामाजिक प्रगति के लिए उत्पादन का विकास करने की अनिवार्य आवश्यकताओ से यही निष्कर्ष निकलता है। यह पूजीवाद की साम्राज्यवादी अवस्था मे उसके अन्तर्विरोधो के बढ जाने का परिणाम है। इसी कारण साम्राज्यवाद पूजीवाद के विकास की अन्तिम अवस्था तथा नये, समाजवादी समाज के आविर्भाव का द्योतक है।

समाजवाद की व्यावहारिक उपलब्धि के लिए पूजीवाद के अन्तर्गत, विशेष रूप से पूजीवाद की अन्तिम, साम्राज्यवादी अवस्था के दौरान गठित बडे पैमाने का यत्रीकृत तथा बहुत ही समाजीकृत उत्पादन अपेक्षित है। ऐसे समाज के निर्माण के लिए, जिसमे शोषण नही होता तथा हरेक अपनी योग्यतानुसार श्रम करता है और अपने काम के अनुसार वेतन पाता है, खयाली पुलाव पकाना ही काफी नही है। समाज के सभी सदस्यो के लिए यथार्थ रूप मे मानवोचित निर्वाह की परिस्थितियो को पैदा करने मे सक्षम **बड़े पैमाने के, सुविकसित सामाजिक उत्पादन के रूप में वस्तुगत पूर्वापेक्षाएं** आवश्यक है। समाजवादी समाज का निर्माण गरीबी और समतावाद के आधार पर नही, बल्कि बडे पैमाने के उत्पादन मे सामूहिक श्रम द्वारा सर्जित वर्द्धमान सामाजिक सम्पदा के आधार पर ही हो सकता है। लेकिन इस लक्ष्य को समाजवादी क्रान्ति, पूजीवाद के क्रातिकारी साधनो से विनाश और समाजवाद की स्थापना द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

**एक देश में समाजवाद के विजयी होने की संभावना**

जैसा कि हम पहले देख चुके है, वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्त्तक मार्क्स और एगेल्स ने पूजीवाद के विनाश और समाजवाद की विजय की अनिवार्यता वैज्ञानिक दृष्टि से सावित की थी। परन्तु वे जिस काल मे रह रहे थे, उसमे पूजीवाद लगातार और कमोवेश समान गति से विकास कर रहा था। इस कारण उन्हे विश्वास

था कि सर्वहारा क्राति सभी अथवा अधिकाश सभ्य देशो मे एकसाथ विजयी हो सकती है।

परन्तु, १९वी सदी के अन्त तथा २०वी सदी के शुरू मे जब पूजीवाद ने साम्राज्यवादी अवस्था मे प्रवेश किया, तो समाजवादी क्रान्ति की परिस्थितिया सर्वथा बदल चुकी थी। लेनिन ने क्रान्तिकारी सिद्धान्त को विकसित करके साम्राज्यवादी युग के अनुरूप बनाया।

**शुरू मे एक अलग देश मे** समाजवाद के विजयी होने की सभावना का प्रख्यात निरूपण लेनिन के समाजवादी क्रान्ति के सिद्धान्त का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसे प्रमाणित करते समय लेनिन ने इस तथ्य को दृष्टि मे रखा कि आजकल की भाति उस समय पूजीवादी देश बहुत ही असमान रूप मे, छलागे लगा-लगाकर विकसित हो रहे थे। पहले के पिछडे हुए देश आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से विकसित देशो के समकक्ष पहुचकर उनसे आगे निकल जाते है। इससे शक्ति-सतुलन गडबडा जाता है, सघर्ष पैदा होते है और पूजीवादी देशो का सयुक्त मोर्चा कमजोर होता है। विश्व पूजीवाद की स्थिति कमजोर हो जाती है तथा साम्राज्यवादी शृखला को उसकी सबसे कमजोर कडी पर तोड देने की सभावना पैदा हो जाती है। लेनिन ने लिखा, "विभिन्न देशो मे पूजीवाद का विकास बहुत ही असम रूप मे होता है। पण्य-उत्पादन की दशा मे इससे भिन्न बात हो भी नही सकती। इससे निर्विवाद रूप मे यह निष्कर्ष निकलता है कि समाजवाद सभी देशो मे एकसाथ विजय नही प्राप्त कर सकता। शुरू मे यह एक देश अथवा कई देशो मे विजयी होगा, जबकि दूसरे देश पूजीवादी अथवा प्राक्-पूजीवादी बने रहेगे।"*

यह साबित करके कि शुरू मे एक देश मे समाजवाद का विजयी होना सभव है, लेनिन ने यह भविष्यवाणी भी की कि विश्व समाजवादी क्रान्ति कैसे विकसित होगी – अधिकाधिक देश साम्राज्यवादी शृखला से अलग हो जायेगे, जबकि अन्य देश पूजीवादी तथा प्राक्-पूजीवादी बने रहेगे। लेनिन ने पूजीवाद से समाजवाद की ओर मानवजाति के सक्रमण को एक घटना के रूप मे नही, बल्कि पूरे ऐतिहासिक युग के रूप मे देखा।

समाजवादी क्रान्ति के मार्क्सवादी सिद्धान्त को विकसित करते हुए लेनिन ने

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'सर्वहारा क्राति का युद्ध सम्बन्धी कार्यक्रम'।

समसामयिक दुनिया के जटिल चित्र को ध्यान मे रखा था ' पूजीवादी तथा प्राक्-पूजीवादी दोनो प्रकार के देशो का अस्तित्व, उपनिवेशो और ऐसे देशो का अस्तित्व, जिन्हे अभी पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति की समस्याओ को हल करना था; सभी देशो मे विभिन्न वर्गों, सामाजिक श्रेणियो आदि का अस्तित्व। फलत' लेनिन इस नतीजे पर पहुचे कि साम्राज्यवाद के अन्तर्गत "विशुद्ध" समाजवादी क्रान्तिया नही हो सकती। लेनिन ने लिखा कि यह नही सोचना चाहिए कि "एक सेना एक स्थान मे पक्तिवद्ध खडी होकर यह कहे, 'हम समाजवाद के पोषक है' तथा दूसरी सेना किसी अन्य स्थान मे इसी प्रकार खडी होकर कहे, 'हम साम्राज्यवाद के पोषक है" और यही सामाजिक क्रान्ति होगी। जो भी 'विशुद्ध' सामाजिक क्रान्ति की आशा लगाये बैठा है, वह इसे कभी नहीं देख पायेगा। वह सिर्फ कथनी मे क्रान्तिकारी है, जो यह नही समझता कि वास्तविक क्रान्ति क्या है। लेनिन के मतानुसार क्रान्तिकारी प्रक्रिया "प्रत्येक तथा सभी उत्पीडित और असतुष्ट तत्वो के जन-सघर्ष का उभार है।"* इस प्रक्रिया मे मजदूर आन्दोलन, किसान आन्दोलन, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और साम्राज्यवाद के विरुद्ध सभी जनवादी आन्दोलन समाविष्ट होते है।

लेनिन ने इस सम्बन्ध मे इसपर जोर दिया कि साम्राज्यवाद की जड खोदनेवाली सभी क्रान्तिकारी शक्तियो के साथ मजदूर वर्ग को सुदृढ़ संश्रय कायम करना चाहिए। उन्होंने सकीर्णता और अन्य मेहनतकश लोगो तथा जनवादी शक्तियों से मजदूर वर्ग के अलग-थलग पड जाने का डटकर विरोध किया। लेनिन का तात्पर्य किसी भी तरह के सश्रय से नही, बल्कि ऐसे सश्रय से था, जिसमे नेतृत्वकारी भूमिका मजदूर वर्ग की थी, जिसे वह मुख्य क्रान्तिकारी शक्ति मानते थे।

लेनिन यह नही मानते थे कि साम्राज्यवादी युग मे प्रत्येक क्रान्तिकारी उभार समाजवादी होगा और यह कि इसके फलस्वरूप सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व कायम होगा, यद्यपि कई देशो मे वह इसकी सभावना को अस्वीकार भी नही करते थे। प्राक्-पूजीवादी देशो, उपनिवेशो और प्रबल सामती अवशेषोवाले देशो तथा उन देशो मे, जहा पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति अभी तक पूर्ण नही हो पायी है, वहा समाजवादी क्रान्ति के पहले पूजीवादी-

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'आत्म-निर्णय सम्बन्धी बहस का परिणाम'।

जनवादी अथवा राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति हो सकती है और अनुकूल परिस्थितिया पैदा होने पर वह समाजवादी क्रान्ति मे विकसित हो सकती है। लेनिन ने अन्य देशो मे समाजवाद के विजयी हो जाने की दशा मे प्राक् पूजीवादी देशो द्वारा विकास के गैर-पूजीवादी पथ को अपनाने का विचार भी विकसित किया।

**क्रान्तिकारी पार्टी के संस्थापक**

मजदूर वर्ग की पार्टी के बारे मे मार्क्स और एगेल्स के विचारो को विकसित करते हुए लेनिन ने मार्क्सवादी सर्वहारा पार्टी के सामजस्य-पूर्ण सिद्धान्त को निरूपित किया। उन्होंने मजदूर वर्ग तथा अन्य सभी मेहनतकश लोगो के पथ-प्रदर्शक के रूप मे उसकी भूमिका निर्धारित की, उसकी नियमावली तैयार की और उसकी बुनियादी नीति की रूपरेखा निर्धारित की। लेनिन ने साबित किया कि पार्टी मजदूर वर्ग का सर्वाधिक प्रगतिशील, वर्ग-चेतन और सर्वोत्कृष्ट रूप से सगठित दस्ता है, जो मजदूर वर्ग और करोडो अन्य मेहनतकश लोगो के बीच सम्पर्क कायम रखता है। इसके विशिष्ट लक्षण है – पूजीवाद तथा पूजीवादी वैचारिकी के प्रति असह्यता, प्रगाढ क्रान्तिकारी दृष्टिकोण, कथनी और करनी मे सगति और शोषण के उन्मूलन तथा समाज के समाजवादी पुनर्गठन के निमित्त क्रान्तिकारी सघर्ष के साथ वैज्ञानिक समाजवाद के क्रान्तिकारी सिद्धान्त का समन्वय।

लेनिन ने वास्तविक क्रान्तिकारी पार्टी के सगठन मे वर्षो लगाये। उन्होंने जिस पार्टी को कायम किया, वही मजदूर आन्दोलन से वैज्ञानिक समाजवाद को समन्वित करनेवाली पहली पार्टी थी। सत्ता के लिए सघर्ष मे सर्वहारा वर्ग का, सभी मेहनतकश लोगो का नेतृत्व करने के लिए वह पूर्णतया तैयार थी। उसने रूसी तथा विश्व सर्वहारा वर्ग दोना के क्रान्तिकारी सघर्ष के अनुभव को सृजनात्मक रूप मे आत्मसात करके क्रान्तिकारियो की पूर्ववर्त्ती पीढियो के हर ईमानदार, विवेकपूर्ण, साहसपूर्ण और आत्मोत्सर्गमय तत्व को अपना लिया था। उसने रूसी मजदूर वर्ग को जनवादी तथा समाजवादी क्रान्ति का वैज्ञानिक कार्यक्रम दिया, उसे राजनीतिक रूप से सगठित किया और निरकुशता तथा पूजीवाद के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए उद्‌बोधित किया। बाल्शेविक पार्टी के नेतृत्व म रूस के मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकशो ने महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति म और ससार के पहले समाजवादी राज्य की स्थापना म विजय प्राप्त की।

लेनिन केवल रूसी नही, वल्कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग और सारी दुनिया के मेहनतकश लोगो के नेता थे। जिस विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया था, उसके भावी विकास मे उनकी गहरी अभिरुचि थी। दूसरे इटरनेशनल का, जिसके नेताम्रो ने मजदूर वर्ग के हितो के साथ गद्दारी की थी, स्थानग्रहण करनेवाले तीसरे कम्युनिस्ट इटरनेशनल के वह प्रेरणास्रोत थे। दूसरे इटरनेशनल के नताम्रो की गद्दारी और राष्ट्रवादी भावनाम्रो का पर्दाफाश करते हुए उन्होंने कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप पर ज़ोर दिया और दुनिया की सभी कम्युनिस्ट शक्तिया की एकता का आह्वान किया।

नवोदित समाजवादी राज्य की राजधानी मास्को मे ही १६१६ मे २ से ६ मार्च तक विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनेवाले तीसरे इटरनेशनल की प्रथम (सस्थापना) काग्रेस हुई। तीसरे इटरनेशनल ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारधारात्मक आधार पर दुनिया के कम्युनिस्टो को एकजुट किया, नयी ऐतिहासिक परिस्थितियो मे मजदूर आन्दोलन की रणनीति तथा कार्यनीति को निर्धारित किया, नयी कम्युनिस्ट पार्टियो को क्रान्तिकारी सघर्ष के अनुभव से समृद्ध करके उनकी स्थापना तथा विकास मे सहायता प्रदान की और मजदूर आन्दोलन के शत्रुम्रो का अविचल विरोध किया। उसने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन तथा जनवाद और शाति के लिये किये जानेवाले जन-सघर्ष पर अपरिमित प्रभाव डाला।

लेनिन का नाम सर्वहारा क्रान्ति, सामाजिक प्रगति और समाजवाद का प्रतीक बन गया है, दुनिया के कम्युनिस्ट रूपान्तरण का प्रतीक हो गया है। **लेनिनवाद – एक गहन अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त है। लेनिनवाद – बीसवीं सदी का मार्क्सवाद है।**

**अक्तूबर क्रान्ति का सारतत्त्व और महत्त्व**

लेनिन के समाजवादी क्रान्ति के सिद्धान्त से निर्देशित होते हुए रूस के मजदूर वर्ग ने मेहनतकश किसानो से मिलकर लेनिन की पार्टी के नेतृत्व मे पूजीपतियो और जमीदारो की सत्ता को उखाड फेंका और २५ अक्तूबर (नये कलैण्डर के अनुसार ७ नवम्बर), १६१७ को राजनीतिक सत्ता को अपने हाथ मे ले लिया। इस तिथि ने एक नये युग, पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण के युग की शुरूआत के रूप मे इतिहास मे अपना स्थान बना लिया है।

लेनिन ने लिखा था, "हमे इस बात पर गर्व करने का अधिकार है और हम गर्व करते है कि सोवियत राज्य का निर्माण आरम्भ करने और इस प्रकार विश्व के इतिहास मे एक नये युग का, एक ऐसे नये वर्ग के प्रभुत्व-युग का श्रीगणेश करने का सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ है, जो हर पूजीवादी देश म उत्पीडित है, परन्तु जो हर जगह नये जीवन की ओर, पूजीपति वर्ग पर विजय की ओर, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की ओर और पूजी की गुलामी और साम्राज्यवादी युद्धो से मानवजाति की मुक्ति की ओर आगे बढ रहा है।"*

अन्तर्य म सर्वहारा होने के साथ ही अक्तूबर क्रान्ति वस्तुत जन क्रांति भी थी। इसका जनवादी स्वरूप मजदूर वर्ग तथा किसान समुदाय के सश्रय और सभी जातियो के सयुक्त सघर्ष और भ्रातृत्वपूर्ण सहयोग मे प्रकट हुआ। मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के सश्रय को आधार बनाकर बोल्शेविक पार्टी ने विभिन्न क्रान्तिकारी रझानो—पूजीपति वर्ग का तख्ता पलटने के लिए सर्वहारा वर्ग के समाजवादी आन्दोलन, जमीदारो के विरुद्ध किसानो के क्रान्तिकारी सघर्ष, जनता के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और शान्ति कायम करने तथा प्रथम विश्वयुद्ध को समाप्त करने के लिए जन आन्दोलन—मे समन्वय कायम किया और उन्हे एक ही ध्येय की ओर लक्षित किया। इसी के फलस्वरूप अक्तूबर क्रान्ति ने बुनियादी समाजवादी कार्यभारो के साथ ही जनवादी कार्यभारो का भी मूलभूत समाधान प्रस्तुत किया। और इस प्रकार इसने जनता के व्यापक जनवादी आन्दोलन के साथ समाजवाद के लिए मजदूर आन्दोलन को, जनवाद के निमित्त सघर्ष के साथ समाजवाद के लिये सघर्ष को एकजुट करने की न केवल सभावना, बल्कि आवश्यकता भी प्रदर्शित की। समाजवादी क्रान्ति कोई षड्यन्त्र या "सक्रिय क्रान्तिकारियो" के एक समूह का विद्रोह नही, बल्कि मजदूर वर्ग तथा इसकी मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व मे करोडो लोगो का आन्दोलन और सघर्ष है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का ऐतिहासिक महत्त्व इस तथ्य मे निहित है कि शोषण और उत्पीडन की पूजीवादी व्यवस्था को उखाड फेकने के लिए दुनिया मे यह पहली क्रान्ति थी। प्राकृतिक सम्पदा और उत्पादन के मुख्य साधन जनता की सम्पत्ति बन गए। नवोदित जनतन्त्र ने

*व्ला० इ० लेनिन, 'अक्तूबर क्राति की चौथी सालगिरह'।

जातियो की समानता तथा उनके आत्म-निर्णय के अधिकार की उद्घोषणा की, समाज के श्रेणियो मे विभाजन तथा धनिको के विशेषाधिकारो को समाप्त किया और महिलाओ की असमानता को खत्म कर दिया।

अक्तूबर क्रान्ति ने रूस को विनाशकारी साम्राज्यवादी युद्ध के गर्त्त से निकाला। राष्ट्रीय आपदा से देश बच गया और रूस की जनता को विदेशी पूजी की गुलामी के खतरे से मुक्ति मिली।

अक्तूबर क्रान्ति वह क्रान्ति थी, जो एक देश मे विजयी हुई और इस अर्थ मे वह रूस की जनता का घरेलू मामला थी। परन्तु साथ ही इसने देश विशेष की सीमाओ को लाघकर प्रकाण्ड अन्तर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर लिया। इसने अनेक ऐसी सामाजिक समस्याओ से जूझकर उन्हे सफलतापूर्वक हल किया, जो इस समय ग़ैर समाजवादी देशो के मजदूर वर्ग तथा सभी मेहनतकश लोगो द्वारा हल की जा रही हैं। इसने समाजवादी क्रान्ति के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की सत्यता को व्यावहारिक रूप मे प्रमाणित किया और यह भी साबित किया कि **अक्तूबर क्रान्ति के बुनियादी लक्षण दुनिया के सभी देशो के क्रान्तिकारी विकास की प्रक्रिया मे अनिवार्यत पुन. प्रकट होते हैं।** इसने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप दिखाया। इसने पूजीवाद के विरुद्ध, समाजवाद के लिए सघर्ष का बहुमूल्य अनुभव सभी देशो के मजदूर वर्ग और मेहनतकश लोगो को प्रदान किया तथा नये, समाजवादी समाज की ओर मानवजाति का पथ प्रशस्त किया। इसने दुनिया के लोगो को आर्थिक तथा सास्कृतिक पिछडेपन को दूर करने, जातीय समस्या को हल करने, शोषण और सभी रूपो मे उत्पीडन को समाप्त करने तथा जीवन-स्तर को ऊचा उठाने और शान्ति कायम रखने एव सुदृढ बनाने का रास्ता दिखाया।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सम्बन्धी अपनी थीसिस मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने कहा, "अक्तूबर क्रान्ति का युगान्तरकारी महत्त्व इस तथ्य मे निहित है कि इसने क्रान्तिकारी परिवर्तन का पथ प्रशस्त किया और इस परिवर्तन को लागू करने के तरीको और उपायो को निरूपित किया, जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया है। महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति मे उपलब्ध अनुभव क्रान्तिकारी सघर्ष के सिद्धान्त तथा व्यवहार की अक्षय निधि है, वैज्ञानिक रणनीति तथा कार्यनीति का आदर्श है।"

अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व इस तथ्य में भी निहित है कि इसने दुनिया पर पूजीवाद के एकच्छत्र आधिपत्य को समाप्त किया। इसने दुनिया को दो परस्परविरोधी प्रणालियो—पूजीवादी प्रणाली और समाजवादी प्रणाली—मे विभाजित कर दिया और इसके फलस्वरूप विश्व इतिहास के पूरे क्रम मे परिवर्तन आ गया। समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव के साथ साम्राज्यवादियो की प्रतिक्रियावादी महत्त्वाकाक्षाओ का प्रतिरोध करने तथा मानव समाज के विकास पर अधिकाधिक प्रभाव डालने मे सक्षम शक्ति अस्तित्व मे आ गयी। मानवजाति को लुटेरू युद्धो के विरुद्ध, शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक प्रगति के सघर्ष मे एक विश्वसनीय अवलम्ब प्राप्त हो गया।

अक्तूबर क्रान्ति की विजय के साथ पूजीवाद ने आम सकट के दौर मे प्रवेश किया, जिसकी विशेषता उसके सभी अन्तर्विरोधो का तीव्र होना और साम्राज्यवादी शोषण के क्षेत्र का सिमट जाना है। दुनिया के मेहनतकश लोगो के सम्मुख क्रान्तिकारी सघर्ष शुरू करने के लिए नयी सभावनाए पैदा हुई, क्योकि उन्होने विश्व मे मजदूर वर्ग के प्रथम राज्य को अपने शक्तिशाली साथी के रूप मे पाया, जिसकी सहायता पर भरोसा किया जा सकता है।

रूसी पूजीपति वर्ग के विरुद्ध सघर्ष और नये, समाजवादी समाज का निर्माण करते हुए सोवियत सघ के मजदूर वर्ग और मेहनतकश लोगो ने विश्व पूजीवाद के विरुद्ध तथा सभी मेहनतकश लोगो की मुक्ति के निमित्त, सारी दुनिया मे समाजवाद की विजय के लिए सघर्ष किया और आज भी सघर्ष कर रहे है। लेनिन ने लिखा है कि सोवियतो का देश "अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद के प्रकाश स्तम्भ और सभी मेहनतकश जन समुदाय के लिये एक मिसाल की तरह अटल खडा रहेगा।"*

अक्तूबर क्रान्ति की विजय से अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के विकास को शक्तिशाली प्रेरणा प्राप्त हुई। दुनिया के विभिन्न भागो मे कई देशो के

---

*व्ला० इ० लेनिन, मजदूरो, सैनिको तथा किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतो की तीसरी अखिल रूसी काग्रेस (१०–१८ जनवरी, १९१८) मे जन-कमिसार परिषद की सरगर्मियो के बारे मे दी गयी रिपोर्ट (११ जनवरी)।

मजदूर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव से अपने शोषकों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और अन्य देशों मे क्रान्तिया फूट पड़ी और यूरोप तथा अमरीका मे जनव्यापी सर्वहारा क्रान्तिकारी सरगर्मिया फैल गईं।

विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन अस्तित्व मे आ गया। लेनिन की पार्टी के ढंग पर गठित मार्क्सवादी पार्टिया यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमरीका मे अस्तित्व मे आईं। १६१६ के मार्च मे वे सगठनात्मक तथा विचारधारात्मक रूप से तीसरे (कम्युनिस्ट) इंटरनेशनल मे संहत हो गईं, जो वर्तमान कम्युनिस्ट आन्दोलन की शुरुआत का द्योतक था और जो दुनिया के सभी कम्युनिस्टों के लिए क्रान्तिकारी सघर्ष का स्कूल बना।

अक्तूबर क्रान्ति ने औपनिवेशिक तथा पराधीन देशों के लोगो मे जागृति पैदा की। वे राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियों की शक्तिशाली लहर से आप्लावित हो गए, जिससे **साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन आरंभ हुआ** और औपनिवेशिक शासन से उत्पीडित राष्ट्रों की पूर्ण मुक्ति के लिए परिस्थितिया पैदा हुईं।

अक्तूबर क्रान्ति के प्रभाव से विविध जनवादी आन्दोलन, विशेष रूप से शान्ति तथा राज्यों के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का आन्दोलन और साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी नीतियो के विरुद्ध आन्दोलन अस्तित्व मे आये।

जैसा कि हम देखते है, अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के परिणामस्वरूप अथवा प्रत्यक्ष प्रभावस्वरूप आज की बुनियादी क्रान्तिकारी शक्तिया अस्तित्व मे आईं—समाजवाद का निर्माण करनेवाले राष्ट्र, पूजीवादी देशो मे मजदूर आन्दोलन, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन—और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एक ही विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया मे उनका विलयन शुरु हो गया। घनिष्ठ रूप से एकता के सूत्र मे आबद्ध तथा एक दूसरे को प्रभावित करनेवाली ये ही वे क्रान्तिकारी शक्तिया है, जो पूजीवादी दुनिया को मिटा रही हैं और एक नये, समाजवादी समाज का निर्माण कर रही है। ये शक्तिया वर्तमान युग की, मानवजाति के पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण के युग की प्रतीक हैं। महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सम्बन्धी सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस मे कहा गया है कि "अक्तूबर क्रान्ति विश्वव्यापी स्तर पर पूजीवाद से समाजवाद की ओर

क्रान्तिकारी सक्रमण की शुरुआत की द्योतक थी। पिछले पचास वर्षों के दौरान विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया अधिकाधिक देशों तथा राष्ट्रों को अपनी ओर आकृष्ट करते हुए अविच्छिन्न रूप मे विकसित होती रही है। उक्त प्रक्रिया का यह क्रमिक विकास साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष मे हुआ है, जो क्रान्ति की शक्तियो का डटकर प्रतिरोध करता है और जहा भी सभव होता है, वहा जवाबी प्रहार करता है। इसके साथ ही विश्व क्रान्तिकारी आन्दोलन अपने तीव्र विकास तथा साम्राज्यवाद-विरोधी सघर्ष मे भाग लेनेवाली सामाजिक शक्तियो की विविधता के कारण आन्तरिक कठिनाइयो का सामना भी करता है। किन्तु मानवजाति के ऐतिहासिक विकास का अक्तूबर क्रान्ति द्वारा निर्धारित मुख्य रुझान दृढता के साथ कायम है। इसके मुख्य अन्तर्य, दिशा और लक्षण का निर्धारण अब विश्व समाजवादी व्यवस्था और समाजवादी पुनर्निर्माण के लिए सघर्षरत साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियो द्वारा होता है।'

अब हम वर्तमान युग के स्वरूप और आज की बुनियादी क्रान्तिकारी शक्तियो पर दृष्टिपात करेंगे।

# आधुनिक युग पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण का युग है

हमने पहले अध्याय मे दिखाया था कि अक्तूबर क्रान्ति से मानवजाति के इतिहास मे आमूल परिवर्तन हुआ. उसने आधुनिक युग का समारम्भ किया। वर्तमान युग का स्वरूप क्या है?

## १. आधुनिक युग का स्वरूप

सामाजिक विकास के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की बुनियादी धारणा सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की धारणा है। **सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था** सामाजिक विकास की वह इतिहास-नियमित अवस्था है, जो उत्पादक शक्तियो, उत्पादन तथा अन्य सामाजिक सम्बन्धों, बौद्धिक जीवन, पारिवारिक तथा सार्वजनिक सम्बन्धो का कुल योग है। भौतिक सम्पदा की उत्पादन-पद्धति, अर्थात् उत्पादक शक्तियो और उत्पादन-सम्बन्धों की एकता किसी भी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का आधार होती है।

सामाजिक विकास—एक उच्चतर तथा सुधरे हुए ढग की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था द्वारा निम्न कोटि की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का क्रमागत स्थानग्रहण—एक नियम-नियमित ऐतिहासिक प्रक्रिया है। आदिम-सामुदायिक, दासवादी, सामंतवादी, पूजीवादी और कम्युनिस्ट—ये है वे सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाए, जिन्होने मानवजाति के विकास की प्रक्रिया मे एक दूसरे का स्थानग्रहण किया है।

किन्तु, सामाजिक विकास को दुनिया के सभी देशो मे एकसाथ ही

व्यवस्थाओ के परिवर्त्तन की प्रक्रिया नही समझा जा सकता। विकास की विभिन्न आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियो के कारण यह सक्रमण भिन्न-भिन्न देशो मे भिन्न भिन्न समय मे होता है। इसी कारण, सम्पूर्ण मानव समाज अपने विकास की प्रत्येक अवस्था विशेष मे विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ तथा प्रणालियो, विभिन्न वर्गो, सामाजिक श्रेणियो, जातियो और राज्यो के बीच अन्योन्यक्रिया तथा सघर्ष का असाधारणत जटिल चित्र प्रस्तुत करता है।

मानवजाति की वर्त्तमान स्थिति पर दृष्टिपात कीजिए। इसके एक-तिहाई भाग ने समाजवाद का या तो निर्माण कर लिया है अथवा सफलतापूर्वक निर्माण कर रहा है, जबकि अधिकाश आज भी गैर-समाजवादी देशो मे निवास करता है। गैर समाजवादी देशो मे विकसित पूजीवादी तथा साम्राज्यवादी देश और विकास की प्राक् पूजीवादी अवस्थावाले देश भी शामिल है। इसके अलावा, कई करोड लोग, मुख्यत अफ्रीका मे, औपनिवेशिक उत्पीडन की अवस्था मे जीवन व्यतीत कर रहे है।

स्वाभाविक ही है कि सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की धारणा सम्पूर्ण मानवजाति के विकास के इस जटिल चित्र को पूर्णतया प्रकट करने के लिए पर्याप्त नही है। अपने विकास की एक विशेष ऐतिहासिक अवस्था मे सम्पूर्ण समाज का यह चित्र ऐतिहासिक "युग" की धारणा द्वारा अभिव्यक्त होता है। साथ ही सामाजिक विकास के पूरे चित्र को परिवेष्टित करनेवाली इस धारणा द्वारा मानवजाति के विकास की प्रमुख प्रवृत्ति पर भी जोर दिया जाता है और इस रुझान का वाहन करनेवाले वर्ग, अर्थात् युग के मुख्य अन्तर्य को निर्दिष्ट करनेवाले प्रमुख वर्ग को अलग किया जाता है। लेनिन ने लिखा था, "हम यह नही जान सकते कि युग विशेष मे विभिन्न ऐतिहासिक आन्दोलन कितनी तेजी तथा कितनी सफलता के साथ विकसित होगे। परन्तु हम यह जान सकते है और जानते भी है कि किसी युग के मुख्य अन्तर्य, उसके विकास की मुख्य दिशा, उसकी ऐतिहासिक परिस्थितियो के मुख्य लक्षण आदि को निर्दिष्ट करनेवाला कौन प्रमुख वर्ग है।'* इसलिए आधुनिक युग के स्वरूप

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'ग़ैर झडे के नीचे'।

को निश्चित करने के लिए यह निर्धारित करना आवश्यक है कि इस समय मानवजाति किस दिशा मे अग्रसर है और कौनसा वर्ग इस गति का द्योतक है।

वर्तमान युग तीव्र सामाजिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का युग है, मानव जीवन के सभी क्षत्रो मे व्यापक परिवर्तनो का युग है। सम्पूर्ण सामाजिक सम्बन्धो मे गहन परिवर्तन हो रहा है। पूजीवाद पर समाजवाद को एक के बाद दूसरी विजय हासिल हो रही है। एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमरीकी देशो मे राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन तेजी से फैल रहा है और दजनो भूतपूर्व अधिकारहीन उपनिवेश हाल मे पूर्ण प्रभुतासम्पन्न राज्य हो गये है। स्वतत्रता, भौतिक तथा सास्कृतिक प्रगति और शान्ति के लिए मेहनतकश जन समुदाय का सघर्ष जोर पकड रहा है।

आधुनिक युग तीव्रतम अतविरोधो का युग है। साम्राज्यवादी तथा प्रतिक्रियावादी शक्तिया कट्टरता और कटुता के साथ प्रगतिशील शक्तियो का प्रतिरोध कर रही है। वे मानवजाति के सम्मुख परमाणविक विनाश तथा सर्वनाश का खतरा खडा करती है और विज्ञान तथा तकनीक की उपलब्धियो को जन-कल्याण के लिए उपयोग मे लाने मे बाधा डालने की कोशिशें करती है। आज की दुनिया मे विरोधाभास तथा अतविरोध जितने चौंकानेवाले है, उतनी दु खजनक भी है। उस एक ही सप्ताह मे और शायद उसी दिन, जब एक अतरिक्ष यान शुक्र ग्रह की ओर रवाना किया जाता है तब ही अफ्रीका के महान नेता पैट्रिस लुमुम्बा की जघन्य हत्या होती है अथवा सोवियत सघ का एक नागरिक बाह्य अन्तरिक्ष मे प्रविष्ट होने का गौरव प्राप्त करता है, तो दूसरी ओर साम्राज्यवादी भाडे के टट्टू क्रान्तिकारी क्यूबा पर आक्रमण करते है।

आज की दुनिया पर दृष्टिपात करते हुए हम राष्ट्रो के जीवन और अतर्राष्ट्रीय राजनीति में अप्रत्याशित परिवर्तनो के साथ-साथ अत्यत विविध स्वरूप की अनेकानेक घटनाओ, अविच्छिन्न प्रगति को भी देखते है।

आधुनिक युग को समझने का साधन कहा खोजा जाये? विविध प्रकार की घटनाओ से परिभ्रमित न होने, सही नीति का अनुसरण करने तथा दुनिया के क्रान्तिकारी नवनिर्माण के सघर्ष म अपना स्थान प्राप्त करन के लिए इसके स्वरूप का ठीक-ठीक निर्धारण कैसे किया जाये?

अपने वर्गीय स्वार्थो से अधे हुए और सज्ञान के वैज्ञानिक तरीको स

अनजान पूंजीवादी वैचारिक वर्तमानकालीन सामाजिक विकासक्रम की विविधता तथा जटिलता को समझने मे असमर्थ सिद्ध हो चुके है।

उनमे से कुछ खुल्लमखुल्ला यह कहते है कि आधुनिक युग के स्वरूप को निर्धारित करना और यह स्थिर करना असभव है कि मानवजाति किधर अग्रसर हो रही है, क्योकि सामाजिक विकासक्रम अनिर्दिष्ट तथा अस्थिर है और इस कारण उसका वस्तुगत, पूर्वाग्रहशून्य मूल्याकन सभव नही है। कुछ यह साबित करने की कोशिश करते है कि आधुनिक युग के स्वरूप का निर्धारण तकनीकी आविष्कारो, खासकर परमाणु उर्जा और परमाणु बम की खोज से होता है। वे वर्तमान युग को "तकनीकी युग", "परमाणु युग" और "परमाणु बम का युग" कहते है। मिसाल के लिये पश्चिमी जर्मनी के दार्शनिक कार्ल जैस्पर्स लिखते है, "परमाणु बम से एक नयी परिस्थिति पैदा हो गई है।" यह कोई आकस्मिक बात नही है कि साम्राज्यवाद के पोषक परमाणु बम की ओर सकेत करते रहते है। विश्वव्यापी तापनाभिकीय युद्ध के बारे मे लोगो के भय का लाभ उठाते हुए साम्राज्यवाद के पोषक दुनिया को इस प्रकार आतकित करने का प्रयास करते हैं कि यदि वे साम्राज्यवाद के साथ सामजस्य स्थापित नही करते और नये समाज के लिए, समाजवाद के लिए अपने सघर्ष का परित्याग नही करते, तो अत्यधिक विनाशकारी हथियारो का उपयोग करनेवाला युद्ध अनिवार्य हो जायेगा और इस प्रकार समस्त मानवजाति के विनष्ट हो जाने का खतरा प्रस्तुत हो जायेगा। किन्तु फिर भी परमाणु बम से ही आधुनिक युग का स्वरूप निर्धारित नही होता, गोकि साम्राज्यवादियो के हाथ मे इसका होना मानवजाति के लिए गभीर खतरा है।

पूजीवादी दुनिया मे यह साबित करने का प्रयास हो रहा है कि वर्तमान युग "एक ही औद्योगिक समाज" के विकास का युग है, जिसमे न तो पूजीवाद है और न समाजवाद, और यह कि अब दोनो प्रणालिया बहुत ही विकसित उद्योग, विज्ञान तथा तकनीक के एक ही समाज मे, "ऊची घपनवाने" समाज मे एकीकृत होती जा रही है। परन्तु यह सामाजिक सम्बन्धो और खासकर उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व के विविध रूपो पर आधारित आर्थिक सम्बन्धो तथा मेहनतकशो और शोषको के हितो मे टकराव की उपेक्षा करते हुए तकनीक को सबसे अधिक प्रमुखता प्रदान करने का एक और प्रयास मात्र है।

निस्सन्देह, आधुनिक उद्योग और तकनीकी खोजें सामाजिक विकास मे बड़ी भूमिका अदा करती हैं, परन्तु सारी प्रक्रिया को केवल तकनीक पर ही आधारित नही किया जा सकता। तकनीक पर लोगों का अधिकार है, परन्तु लोग विभिन्न सामाजिक प्रणालियों, विभिन्न वर्गो मे विभक्त हैं और तकनीकी उपलब्धियों के उपयोग के बारे मे उन सभी का रवैया एक सा नही है। साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथ मे तकनीक शोषण तथा बहुधा युद्ध और आक्रमण का साधन है। समाजवादी प्रगतिशील शक्तियों के हाथ में यह सृजन, लोगों के रहन-सहन के स्तर मे वृद्धि और साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों के प्रतिरोध का साधन है।

वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त हमे बताता है कि वर्तमान युग को समझने की कुंजी तकनीक मे नही, बल्कि **अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वर्ग शक्तियों के वस्तुगत संतुलन और वर्तमान ऐतिहासिक प्रक्रिया के विकास की बुनियादी प्रवृत्ति में खोजनी चाहिये।** विश्व मुक्ति आन्दोलन के अनुभव के आधार पर यह सिद्धात मानव समाज के विकास की वर्तमान अवस्था के सारतत्त्व, सामाजिक विकास को निर्धारित करनेवाले कारकों और मानवजाति के भविष्य से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करता है।

वर्तमान युग के स्वरूप को सबसे पहले लेनिन ने ही निर्धारित किया था। १९२० के दिसम्बर मे उन्होने लिखा कि विश्व इतिहास के नये काल का सारतत्त्व है "पूजीवाद तथा इसके अवशेषो का उन्मूलन और कम्युनिस्ट व्यवस्था के मूलतत्त्वों की स्थापना।"* लेनिन ने पूजीवाद के उन्मूलन और पूजीवाद से समाजवाद एवं कम्युनिज्म की ओर सक्रमण को सदा एक **समस्त ऐतिहासिक युग** के रूप मे, दो परस्परविरोधी सामाजिक प्रणालियों के सह-अस्तित्व तथा संघर्ष के युग के रूप में माना था।

उनका यह मानना ठीक ही था कि नये युग का ध्वजवाहक मजदूर वर्ग है, जो इतिहास द्वारा पूंजीवाद का उन्मूलन करने और समाजवाद की विजय को सुनिश्चित बनाने के लिए निर्दिष्ट है। लेनिन ने नये युग के सूत्रपात को अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के साथ जोडा, जिसने दुनिया में पहली बार मजदूर वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित किया। उन्हें पक्का

---

*ब्ला० इ० लेनिन, 'इटली की समाजवादी पार्टी के आन्तरिक संघर्ष के संबंध में'।

विश्वास था कि शुरू मे केवल एक देश मे विजयी सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व विकसित होकर राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण कर लेगा और अधिकाधिक राष्ट्र तथा राज्य समाजवादी विकास का पथ अपना लेगे।

लेनिन के बाद आधुनिक युग की धारणा को और अधिक विकसित तथा समृद्ध बनाया गया है। वर्तमान युग, जिसका मुख्य अन्तर्य पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण है, दो परस्परविरोधी सामाजिक प्रणालियो के बीच सघर्ष का युग है, समाजवादी तथा राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो का युग है, साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन का युग है, यह वह युग है, जिसमे अधिकाधिक राष्ट्र समाजवाद का पथ अपना रहे है। यह समाजवाद तथा कम्युनिज्म की विश्वव्यापी पैमाने पर विजय का युग है। वर्तमान युग मे सर्वप्रमुख स्थान अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग को प्राप्त है। वही विश्व समाजवादी प्रणाली का निर्माता है।

आधुनिक युग की यह व्याख्या प्रगतिशील लोगो के विचारो और आकाक्षाओ को अभिव्यक्त करनेवाला कोरा सूत्र ही नही है। यह यथार्थ स्थिति के, विश्व घटनाक्रम के मुख्य परिणामो – वर्तमानकालीन पूजीवाद की सकटपूर्ण स्थिति और विश्व समाजवादी प्रणाली, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और पूजीवादी देशो मे सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन की सफलताओ – के गहरे वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है।

वे दिन लद गए, जब साम्राज्यवाद का एकच्छत्र प्रभुत्व सारी दुनिया पर कायम था और वह विभिन्न राष्ट्रो तथा राज्यो पर अपने मनमाने निर्णय थोपा करता था। अब साम्राज्यवाद नही, बल्कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध समाजवाद तथा सामाजिक प्रगति के लिए सघर्षरत शक्तिया, विशेष रूप से विश्व समाजवादी प्रणाली वर्तमान विश्व प्रक्रिया के मुख्य रुझान, मुख्य अन्तर्य और मुख्य लक्षणो को निर्धारित करती है। पूजीवादी व्यवस्था, जो कभी प्रगतिशील थी, अब छिन्न भिन्न हो रही है, निजी स्वामित्व, शोषण और लोगो के बीच विद्वेष का निजाम ध्वस्त हो रहा है।

पूजीवादी व्यवस्था का स्थान अब सार्वजनिक स्वामित्व और सहयोग के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध तथा पारस्परिक सहायता पर आधारित कम्युनिस्ट व्यवस्था ग्रहण कर रही है।

१९६९ मे मास्को मे हुए कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज म कहा गया है, "साम्राज्यवाद न तो

अपनी खोयी हुई ऐतिहासिक पहलकदमी को पुन प्राप्त कर सकता है और न दुनिया के विकासक्रम को बदल सकता है। मानवजाति के विकास की मुख्य दिशा विश्व समाजवादी प्रणाली, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग और सभी क्रान्तिकारी शक्तियो द्वारा निर्धारित की जा रही है।"

वर्तमान युग का बुनियादी अन्तर्विरोध है समाजवाद और पूजीवाद के बीच का, विभिन्न सामाजिक आर्थिक प्रणालिया के बीच का अन्तर्विरोध। यह अन्तर्विरोध वर्गों, श्रम और पूजी के बीच अन्तर्विरोध की उच्चतम अभिव्यक्ति है। वर्ग सघर्ष के इतिहास मे पहले कभी भी समाजवादी और पूजीवादी व्यवस्थाओ मे सकेद्रित वर्ग शक्तियो जैसी सुसगठित और प्रबल वग शक्तिया एक दूसरे की टक्कर पर नही खडी हुई थी। ये प्रणालिया अपने मे दो वर्ग नीतियो, मानवजाति के विकास मे दो ऐतिहासिक रुझानो को व्यक्त करती हैं। विश्व समाजवादी प्रणाली द्वारा अभिव्यक्त एक नीति श्रम, शान्ति, जनवाद, समाजवाद और प्रगति की प्रतीक है। साम्राज्यवाद द्वारा अभिव्यक्त दूसरी नीति पूजी, प्रतिक्रिया, उत्पीडन और युद्ध की प्रतीक है। विश्व समाजवादी प्रणाली – पूजी के विरुद्ध श्रम के दीर्घकालीन सघर्ष और उसपर उसकी ऐतिहासिक विजयो का प्रतिफल – के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग, सभी मेहनतकश लोगो और स्वतत्रताप्राप्त अथवा स्वाधीनता के लिए सघर्षरत राष्ट्रो को बहुत ही भौतिक, राजनीतिक और नैतिक समर्थन प्राप्त है, जिसके फलस्वरूप वे साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी साजिशो का विरोध करने तथा शान्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता, जनवाद और समाजवाद के लिए सफल सघर्ष करने म सक्षम हो गये हैं।

**मानवजाति के इतिहास मे एक महान सक्रातिकाल**

इस प्रकार वतमान युग विश्व इतिहास का एक महान सक्रातिकाल है, यह मानवजाति के पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण का युग है। इसका खास महत्त्व इस तथ्य मे निहित है कि मानवजाति का वास्तविक इतिहास विश्वव्यापी स्तर पर समाजवाद की विजय से शुरू होता है जबकि मानवजाति के सम्पूर्ण प्राक् समाजवादी अतीत को इसका प्रागैतिहासिक काल कहा जा सकता है। आदि कालीन समाज को छोडकर, जो मानवजाति के विकास का सबस लम्बा तथा सर्वाधिक कठिन दौर था, यह वर्ग विरोध पर आधारित समाज का इतिहास, मानव द्वारा मानव के शोषण और उत्पीडन का इतिहास रहा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रागैतिहासिक काल आवश्यक तथा अनिवार्य था, क्योंकि इसके दौरान मानवजाति के सुखद भविष्य, इसके वास्तविक इतिहास के लिए पूर्वापेक्षित परिस्थितियां पैदा हुई। मानवजाति ने अपने प्रागैतिहासिक काल में ही अपनी आदिम अवस्था से, जब लोग वस्तुत प्राकृतिक शक्तियों के हाथ में खिलौने जैसे थे, तकनीकी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास के वर्तमान उच्च स्तर की ओर बढ़ना शुरू किया था। मानवजाति ने वर्गविरोध पर आधारित समाज में भी प्रगति की, परन्तु इस प्रगति का सदैव बहुत ऊंचा मूल्य चुकाना पड़ा यह प्रगति अनिवार्यत सामाजिक तथा जातीय उत्पीड़न, करोड़ों लोगों की अमानवीय व्यथा और बेहाली, दमन तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के हनन और युद्धों के साथ साथ हुई। दीर्घकाल तक ऐतिहासिक प्रगति केवल इस परस्परविरोधी रूप में ही संभव थी।

शोषक समाज में दमन तथा उत्पीड़न का राज होता है, कमजोरों पर शक्तिशाली ही जीतते हैं। ऐसे समाज पर अराजकता तथा स्वत स्फूर्ति हावी रहती है। सामाजिक नियम लोगों को तानाशाहों की तरह कुचलते हैं, उन्हें अपनी इच्छा के प्रतिकूल काम करने को मजबूर करते हैं, उनके सर्वोत्कृष्ट इरादों को निष्फल बना देते हैं और अंधी आवश्यकताओं के सम्मुख सिर झुकाने के लिए विवश कर देते हैं।

पूंजीवाद के विकास के साथ साथ अराजकता और सामाजिक सम्बन्धों की कटुता बढ़ती जाती है।

जो देश अभी पूंजीवाद के कब्जे में हैं, उन सभी के मेहनतकशों का वह उत्पीड़क है। एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध मुट्ठीभर बड़े-बड़े कारोबारी, धनकुबेरों का समूह पूंजीवादी दुनिया की सम्पदा को अपने अधिकार मे कर लेता है और इस प्रकार पूरे के पूरे राष्ट्रों पर शासन करता है। अपने दुमछल्लों के साथ मजदूरों तथा किसानों के श्रम से सर्जित राष्ट्रीय आय के बड़े भाग को फूंकते हुए वे परोपजीवियों की भांति जीवन व्यतीत करते हैं। पूंजीवाद आर्थिक अव्यवस्था, सतत बेकारी, लोगों की गरीबी और उत्पादक शक्तियों की निर्मम बर्बादी की प्रणाली है। यह सम्पूर्ण मानवजाति को घातक संकट में डालनेवाले युद्ध के खतरे से सतत परिपूर्ण प्रणाली है।

मार्क्स ने लिखा कि पूंजी के रन्ध्र रन्ध्र से रक्त और गन्दगी का स्राव होता है। उन्होंने कहा, 'अमरीका में सोने और चांदी की खोज,

आदिवासी आबादी का समूल नष्ट किया जाना, गुलाम बनाया जाना और खानो मे जिन्दा दफनाया जाना, ईस्ट इण्डिया की विजय तथा लूट का प्रारम्भ, अफ्रीका का काली चमडीवालो के व्यापारिक आखेट-क्षेत्र मे बदला जाना—पूजीवादी उत्पादन के अरुणोदय के सूचक हैं।"*

पूजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत युद्ध दीर्घकालीन, नृशस और विनाशकारी होते है और सामान्यतया सारी दुनिया को प्रभावित करते है। पूजीवादी राष्ट्रो का शोषक अल्पमत श्रमजीवी बहुमत को उत्पीडित करता तथा कुचलता है और इसके फलस्वरूप घोर वर्ग-अन्तर्विरोध पैदा होता है तथा वर्गों के बीच एव व्यक्ति और समाज के बीच अनवरत सघर्ष होते रहते हैं।

कुछ सदी पहले पूजीवाद ने औपनिवेशिक प्रणाली को जन्म दिया और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के अधिकाश लोगो को गुलाम बनाया। यह पूजीवादी "सभ्यता" के लिए चुकाई जानेवाली कीमत थी। पूजीवाद इस बात के लिए जिम्मेदार है कि इन महाद्वीपो का, जिनका निर्मम शोषण किया गया है, विकास दशाब्दियो और सदियो के लिए पिछड गया है और यह कि गुलाम राष्ट्रो को बहुत ही कठोर परिश्रम तथा रहन-सहन की असहनीय परिस्थितियो का सामना करना पडा। आज पूजीवाद पीछे हटने के लिए विवश है. राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के दबाव से औपनिवेशिक प्रणाली ध्वस्त होती जा रही है।

नवस्वाधीन देशो मे उपनिवेशवाद सामाजिक प्रगति के अनेक शत्रुओ को पीछे छोड आया है—गरीबी, भूख, निरक्षरता, रोग, अज्ञान, अस्वास्थ्यकर परिस्थितिया और निम्न श्रम उत्पादिता। साम्राज्यवाद आज भी नवस्वाधीन देशो के औद्योगिक तथा सास्कृतिक विकास मे रोडे अटकाता है और उनकी सामाजिक तथा राजनीतिक प्रगति मे अवरोध खडा करता है। लम्बे अर्से से पूजीवाद मानवजाति के विकास मे बाधक रहा है। एकमात्र समाजवाद मानव समुदाय की वास्तविक, असीमित प्रगति का पथ प्रशस्त करता है।

समाजवाद की विजय का अर्थ यह है कि मनुष्य "एक निश्चित अर्थ मे बाकी पशु-जगत् से अपने को अन्तिम रूप मे अलग करता है और पशुवत् अस्तित्व की परिस्थितियो को छोडकर सचमुच मानव अस्तित्व की

---

*कार्ल मार्क्स, 'पूजी', खण्ड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, पृ० ८४२।

परिस्थितियो मे प्रवेश कर जाता है।"* धनिको और गरीबो, उत्पीडको और उत्पीडितो के रूप मे समाज के विभाजन के मुख्य कारण – उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व – को समाप्त कर, समाजवाद लोगो के बीच नये, वास्तविक मानवीय सम्बन्धो – सार्वजनिक समाजवादी स्वामित्व पर आधारित बन्धुत्वपूर्ण सहयोग तथा पारस्परिक सहायता के सम्बन्धो – को स्थापित करता है। इससे मेहनतकश लोगो के बीच भयकर होड की स्थिति पैदा होने की आशका बिल्कुल दूर हो जाती है और उनकी एकता सुदृढ होती है। समाजवादी समाज अपने सभी सदस्यो को एकजुट करता है और इस प्रकार एक ही श्रम समुदाय सगठित करके उसके प्रयास को सयुक्त ध्येय की ओर लक्षित करता है। उत्पादन मे स्वत स्फूर्ति तथा अव्यवस्था का स्थान चेतन सुनियोजित श्रम ग्रहण कर लेता है। मनुष्य "अपने सामाजिक सगठन का खुद मालिक बन जाने के कारण पहली बार प्रकृति का वास्तविक तथा सचेतन स्वामी बन जाता है। अभी तक उसके अपने सामाजिक कार्यों के नियम वाह्य प्राकृतिक नियमो के रूप मे उसके ऊपर शासन किया करते थे। अब वह खुद उनका पूर्ण समझदारी के साथ उपयोग करेगा और उनको अपने काबू मे ले आयेगा।"**

**मानवजाति आवश्यकता की दुनिया से स्वतंत्रता की दुनिया की ओर छलांग मारती है, लोग अपने इतिहास के चेतन निर्माता बन जाते हैं।**

मनुष्य अपनी उत्पादक शक्तियो के विकास के उस स्तर पर पहुंच गया है, अर्थात् प्रकृति पर उसका इतना नियत्रण कायम हो गया है कि प्रकृति पर (मौसम, खनिज सम्पदा, ईधन, भूमि आदि पर) उसकी प्रत्यक्ष निर्भरता समाप्त होने लगी है। भौतिक उत्पादन तथा विज्ञान के क्षेत्र मे मनुष्य की अपनी चमत्कारपूर्ण प्रगति से उसे जीवन के अनुपयुक्त रूपो से अन्तत अपने को मुक्त करने का अवसर प्राप्त हो गया है। ऐतिहासिक प्रगति के लिए अब न तो कगाली तथा करोडो व्यक्तियो का त्याग और न अल्पमत द्वारा बहुमत की अधीनता आवश्यक है। राष्ट्रो के बीच युद्धो

---

*फ्रेडरिक एगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, पृ० ४६६।

**वही।

और पृथक्, एकान्तिक अस्तित्व के लिए अन्य सभी प्रकार के सघर्षो के सभी कारण और बहाने खत्म हो रहे है। विश्व समाजवाद की अवस्था मे भावी सार्वभौमिक समाजवादी समाज की रूपरेखा देखी जा सकती है—सामूहिक अस्तित्व का ऐसा समाज, जिसमे युद्ध, वर्गीय और राष्ट्रीय उत्पीडन का नामोनिशान न होगा, नगर और गाव, मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच अन्तर तथा मनुष्य को गिरानेवाले श्रम के पुराने, पूजीवादी विभाजन के अन्य सभी लक्षण मिट चुके होगे।

आधुनिक युग पुरातन और नवोदित शक्तियो के बीच सघर्ष का युग है। विज्ञान तथा तकनीक की महान उपलब्धियो और स्वतत्र समाज के वैज्ञानिक ढग से सगठन के आधार पर समाजवाद मानवजाति के सम्मुख सभी जरूरतो को पूरा करने की सभावना प्रस्तुत करता है। इस समय उत्पादक शक्तियो के विकास की दिशा मे हर कदम पूजीवाद को मिटाने की फौरी आवश्यकता को बार-बार प्रकट करता है। लेनिन ने १९१३ मे ही लिखा था कि "हर ओर, हर कदम पर ऐसी समस्याए सामने आती है, जिन्हे तत्काल हल करने मे मनुष्य सर्वथा समर्थ है, परन्तु पूजीवाद आडे आता है।"* परन्तु समाजवादी शक्तिया अधिकाधिक तेज़ी से बढ और फैल रही है तथा मरणासन्न साम्राज्यवादी शक्तियो की तुलना मे अधिकाधिक श्रेष्ठता प्राप्त करती जा रही है।

पूजीवाद और उपनिवेशवाद अब मानवजाति के अतीत को प्रकट करते है। समाजवाद वर्तमान युग की महान शक्ति है और वह व्यापक भू-खण्डो मे फैलता जा रहा है। सभी महाद्वीपो मे करोडो लोग वैज्ञानिक समाजवाद के विचारो को अपनाते जा रहे है।

परन्तु नया समाज अपने आप अस्तित्व मे नही आ जाता। पुराने समाज की शक्तियो के विरुद्ध कटु सघर्ष से युक्त इसके उदय की प्रक्रिया बहुत ही कष्टदायक होती है। तथापि प्रगति और दुनिया के क्रान्तिकारी नवनिर्माण की शक्तिया अपराजेय है। पूजीवाद मिटकर रहेगा। इसे कोई भी रोक नही सकता। जिस प्रकार रात के बाद दिन आता है, उसी प्रकार सभी देश और सभी लोग निश्चित रूप से समाजवाद की तरफ आयेंगे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'सभ्य वर्बरता'।

## २ विश्व पूजीवाद के आम सकट की तीव्रता

**पूजीवाद के आम सकट की शुरुआत** मानवजाति को मुक्ति दिलानेवाले नये, वर्तमान युग का अपन आप प्रादुर्भाव नही हो गया है दुनिया का स्वरूप शोषक पूजीवादी प्रणाली के विरुद्ध मेहनतकश लोगो के सघर्ष के फलस्वरूप, उस सघर्ष के फलस्वरूप, जिसमे उन्होंने वृहत् त्याग किये है, बदलने लगा है।

पूजीवाद की इजारेदारी अवस्था, साम्राज्यवाद के अन्तर्गत पूजीवाद मे निहित अतर्विरोध इतनी तीव्र हो जाते है कि क्रान्ति के लिए आवश्यक पूर्वपेक्षित दशाए पैदा हो जाती है। सबसे पहले **श्रम और पूजी के बीच** अन्तर्विरोध तीव्र होता है। पूजीवादी राज्य की सहायता से पूजीवादी इजारेदारिया अधिकतम मुनाफा कमाने के उद्देश्य से मेहनतकश लोगो पर अपना हमला तेज कर देती है और उन्हे जो भी सीमित तथा औपचारिक राजनीतिक और आर्थिक अधिकार प्राप्त है, उनसे भी उन्हे वचित कर देती है। जैसा कि वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धान्त सिद्ध करता है, पूजीवादी जुए से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है समाजवादी क्रान्ति द्वारा पूजीपतियो के शासन को उखाड फेकना।

साम्राज्यवाद के फलस्वरूप **पूजीवादी राज्यो के बीच और उनके विविध गुटो के बीच अन्तर्विरोधो** ने तीव्र रूप ग्रहण कर लिया है। साम्राज्यवादी पहले से ही विभाजित दुनिया के पुनर्विभाजन के प्रश्न पर—उपनिवेशो, मण्डियो और सस्ते कच्चे माल के स्रोतो के फिर से बटवारे के प्रश्न पर—एक दूसरे के विरुद्ध सघर्ष कर रहे है। इस सदी मे हुए दोनो विश्व युद्धो का यही कारण था। मगर साम्राज्यवादी राज्यो के बीच सघर्ष तथा युद्धो से, एक दूसरे की उनकी लूट और अन्य देशो की लूट-खसोट से युद्ध भडकानेवाले पूजीपतियो के विरुद्ध मेहनतकश लोगो की घृणा की भावना बढ गई है। इससे पूजीवाद का आधार और अधिक कमजोर हो गया है और मेहनतकश लोगो मे इसके विरुद्ध सघर्ष करने का सकल्प और भी मजबूत हो गया है। पूजीवादी प्रणाली पूजी द्वारा श्रम के शोषण पर आधारित है। पूजीवादी समाज की साम्राज्यवादी अवस्था मे पूजी द्वारा श्रम के शोषण के साथ ही, शासक देशो, अर्थात् चन्द विकसित पूजीवादी राष्ट्रो के पूजीपतियो द्वारा मानवजाति के भारी बहुम[illegible] दुनिया

के लोगो—का शोषण शुरू हो जाता है। फलत विश्व पूजीवाद का एक और अन्तर्विरोध—एक ओर औपनिवेशिक और पराधीन देशो तथा दूसरी ओर साम्राज्यवादी राष्ट्रो के बीच अन्तर्विरोध आविर्भूत तथा तीव्र हो जाता है। इस अन्तर्विरोध से इस बात की पुष्टि होती है कि न केवल विकसित पूजीवादी देशो मे, बल्कि उपनिवेशवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सघर्षरत उत्पीडित पराधीन राष्ट्रो—दोनो के मेहनतकश लोगो की पूजीवाद के पतन मे समान अभिरुचि है। १९२० मे लेनिन ने कहा था, 'जब हर देश के शोषित और उत्पीडित मजदूरो की क्रातिकारी चढाई, निम्न-पूजीवादी अशको के प्रतिरोध और अभिजात मजदूरो के छोटे-से ऊपरी स्तर के प्रभाव पर काबू पाती हुई उन करोडो आदमियो की क्रातिकारी चढाई के साथ मिलकर एक हो जायेगी, जो अब तक इतिहास से बाहर रहे हैं और जिन्हे महज इतिहास का विषय समझा जाता रहा है, तब विश्व साम्राज्यवाद का जरूर पतन हो जायेगा।"*

इन सभी अन्तर्विरोधो का बढना साम्राज्यवाद को अनिवार्य विनाश की ओर ले जा रहा है। इससे पूजीवाद का आम सकट पैदा हो गया है, अर्थात् विश्व पूजीवाद के नीचे से लेकर उपर तक, उसकी अर्थव्यवस्था, राजकीय प्रणाली, उसकी राजनीति और सस्कृति के सकटग्रस्त हो जाने से उसका पतन तथा विघटन शुरू हो गया है। इस आम सकट से ग्रस्त पूजीवादी प्रणाली अब अन्य देशो पर आधिपत्य कायम रखने मे समर्थ नही रही है और वे एक एक करके उसकी पकड से छूटकर समाजवादी पथ अपनाते जा रहे हैं।

इस सकट का प्रारभ प्रथम विश्व युद्ध (१९१४—१९१८) और विशेष रूप से १९१७ मे रूस मे अक्तूबर क्रान्ति की विजय से हुआ। पूजीवाद एकमात्र विश्वव्यापी सामाजिक प्रणाली नही रहा। अपने सभी प्रयासो के बावजूद, वह दुनिया के प्रथम समाजवादी राज्य—सोवियत सघ के बनने को रोकने मे विफल रहा। इस नवोदित राज्य ने साम्राज्यवादियो के सभी प्रकार के हमलो—फौजी आक्रमणो, आर्थिक नाकेबन्दी, अनवरत लाछन

---

*ब्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी काग्रेस। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति तथा कम्युनिस्ट इटरनेशनल के कार्यभारो पर १९ जुलाई १९२० को दी गयी रिपोर्ट।

और विचारधारात्मक तोडफोड—का सामना किया और अपनी जीव्यता तथा अपराजेयता सिद्ध की। ये वे परिस्थितिया थी, जिनमे पूजीवाद के आम सकट का **प्रथम दौर** शुरू हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध और अनेक यूरोपीय तथा एशियाई देशो मे समाजवादी क्रान्तियो के छिडने के दौरान पूजीवाद के आम सकट का **दूसरा दौर** शुरू हुआ। अब पूजीवाद **एकमात्र** सामाजिक प्रणाली नही रहा; समाजवाद एक देश की सीमा के बाहर फैल गया और विश्व पूजीवादी प्रणाली के साथ-साथ विश्व समाजवादी प्रणाली भी अस्तित्व मे आ गई।

**आम संकट का नया, तीसरा दौर**

यह ध्यान देने योग्य बात है कि पूजीवाद के आम सकट के तीसरे दौर का प्रारभ विश्व युद्ध के फलस्वरूप नही, बल्कि शाति-काल मे, दो विरोधी सामाजिक प्रणालियो के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की परिस्थितियो मे हुआ। सकट के इस तीसरे दौर का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू है विश्व मच पर शक्तियो के अन्योन्यसबध मे समाजवादी व्यवस्था के पक्ष मे आमूलचूल परिवर्त्तन। अधिकाधिक देश पूजीवाद से नाता तोडते जा रहे हैं, जबकि समाजवाद तथा सामाजिक प्रगति के लिए सघर्परत शक्तिया तीव्र गति से वढ रही हैं। समाजवाद के साथ शान्तिपूर्ण आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता मे साम्राज्यवाद की स्थिति अधिकाधिक कमजोर होती जा रही है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के अभूतपूर्व विस्तार से साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली विघटित होती जा रही है।

पूजीवादी अर्थव्यवस्था की बढती हुई अस्थिरता तथा गतिहीनता पूजीवाद के आम सकट के तीसरे दौर का एक अन्य लक्षण है। जनता के हित मे विज्ञान तथा तक्नीक की नवीनतम उपलब्धियो की बात तो छोडिये, अपनी सभी उत्पादक शक्तियो के समुचित उपयोग मे भी पूजीवाद की वढती हुई असमर्थता का सजीव प्रमाण है आर्थिक विकास की अस्थिर दरे, कल-कारखानो का क्षमता से कम उत्पादन और समय-समय पर पूजीवादी दुनिया को हिला देनेवाले आर्थिक सकट।

मिसाल के लिए सयुक्त राज्य अमरीका युद्धोत्तरकालीन चार आर्थिक सकटो (१६४८–१६४६, १६५३–१६५४, १६५७–१६५८ और १६६०–१६६१) से गुजर चुका है। १६५७–१६५८ के आर्थिक सकट के फलस्वरूप ६०–६५ अरब डालर मूल्य की औद्योगिक पैदावार की क्षति हुई और

उत्पादन गिरकर १९५३ के स्तर पर पहुच गया। मजदूरो को अपनी मजदूरी मे १६ ६७८ अरब डालर की क्षति उठानी पडी। इस सकट से कृषिगत जमीन के रकबे मे भी कमी हुई – १९६१ तक २९ करोड एकड खेती योग्य जमीन बेकार पडी रहन लगी थी।

१९६० के अत में कनाडियाई उद्योग केवल ७० प्रतिशत और जापानी उद्योग ८० प्रतिशत क्षमता का उपयोग कर रहा था। १९६१ मे जर्मन सघात्मक गणराज्य का उद्योग क्षमता से १२ प्रतिशत नीचे चल रहा था और ब्रिटेन तथा बेल्जियम की स्थिति तो इससे भी बदतर थी। उद्योग की पूरी की पूरी शाखाओं के उत्पादन मे गिरावट आई इटली तथा फ्रास के पोत निर्माण उद्योग, ब्रिटेन मे सूती उद्योग और रेलवे, आदि।

पूजीवाद अपनी मुख्य उत्पादक शक्ति – मजदूरो का भी पूर्ण उपयोग नही कर सकता। यह मजदूरो को बेकारी के मुह मे झोक देता है और उन्हे रोजी कमाने के साधना से भी वचित कर देता है। सरकारी आकडा के अनुसार उत्तरी अमरीका और पश्चिमी यूरोप के विकसित पूजीवादी देशो तथा जापान के ८५ करोड औद्योगिक मजदूरो मे से ०८–१ करोड पूर्णतया बेकार है और इनमे से अधिकाश अमरीकी है। मानवीय प्रतिभा की चमत्कारपूर्ण उपलब्धिया – स्वचालित मशीने तथा यन्त्रीकरण – पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत मनुष्य के लिए कल्याणप्रद होने की जगह उसकी शत्रु हो जाती है। अमरीका मे स्वचालित मशीनो की बदौलत हर साल करीब २० लाख मजदूरो की रोजी जाती रहती है।

इन सब बातो से यही साबित होता है कि पूजीवाद के अन्तर्गत उत्पादक शक्तियो और उत्पादन सम्बन्धो के बीच अन्तर्विरोध अभूतपूर्व रूप मे तीव्र हो गया है।

आम सकट के नये दौर मे पूजीवाद के अन्य अन्तर्विरोध भी अभूतपूर्व रूप मे तीव्र हो गये है। श्रम और पूजी के बीच सघर्ष के जोर पकडते जाने के साथ राष्ट्रीय हितो की राज्य की मशीनरी पर हावी मुट्ठीभर इजारेदारो की आर्थिक महत्त्वाकाक्षाओ के साथ गभीर टक्कर होती है। पूजीवादी देशो के असम आर्थिक एव राजनीतिक विकास के कारण पूजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत शक्ति सतुलन मे सतत परिवर्तन होता रहता है, अलग अलग पूजीवादी देशो तथा उनके गुटो के बीच अन्तर्विरोध तीव्र होता जाता है और पूजीवादी मण्डियो मे होड ज्यादा तेज हो जाती है।

पूजीवाद के आम सकट के तीसरे दौर का एक अन्य लक्षण है साम्राज्यवाद की राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों से सम्बन्धित संकट की वृद्धि, जो सभी क्षेत्रों में राजनीतिक प्रतिक्रिया के तीव्रीकरण, पूजीवादी स्वतत्रताओं पर प्रतिबन्ध अथवा उनके पूर्ण उन्मूलन, कुछ देशों मे फासिस्ट, तानाशाही शासनो की स्थापना और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे साम्राज्यवाद द्वारा अपनी प्रमुख भूमिका के गवाये जाने मे प्रकट होती है।

पूजीवादी वैचारिकी भी गभीर सकट के दौर से गुजर रही है। इसकी मुख्य अभिव्यक्तिया हैं निराशा और भविष्य के बारे मे भय, रहस्यवाद तथा विज्ञान और मनुष्य की सृजनात्मक शक्तियो तथा क्षमताओं मे अविश्वास, प्रगति का अस्वीकरण तथा कम्युनिज्म की निन्दा, और उजरती गुलामी एव उत्पीडन की प्रणाली की हिमायत, जिससे सभी जगह घृणा की जाती है। पूजीवादी वैचारिकी अरसे से जनसाधारण का समर्थन प्राप्त करने योग्य कोई भी विचार नही प्रस्तुत कर पाई है, क्योकि यह एक ऐसे वर्ग की वैचारिकी है, जो ऐतिहासिक रगमच से लुप्त होता जा रहा है। इसलिए इसका अन्तिम और पूर्ण विनाश सुनिश्चित है।

पूजीवाद के सभी अन्तर्विरोधो और इसके आम सकट की तीव्रता का मतलब यह है कि समाजवादी क्राति, जिसे निजी स्वामित्व पर आधारित पूजीवादी उत्पादन सम्बन्धों, मुट्ठीभर इजारेदारो द्वारा नियत्रित राज्य और प्रतिक्रियावादी राजनीति तथा वैचारिकी वाले पूजीवाद का अन्त करना है, एक अपरिहार्य ऐतिहासिक आवश्यकता है। इन अन्तर्विरोधो की तीव्रता और विशेष रूप से **विश्व समाजवाद की शक्तियों के द्रुत विकास से साम्राज्यवाद की जड़ खुदती तथा नष्ट होती जा रही है और वह अपने पतन और विनाश की ओर जा रहा है।**

परन्तु, विश्व अर्थव्यवस्था, राजनीति और विचारधारा के क्षेत्र मे साम्राज्यवाद की स्थिति के काफी कमजोर हो जाने के बावजूद, वह अपने अनिवार्य विनाश को टालने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहा है। वर्तमानकालीन पूजीवाद सर्वोपरि रूप मे **राजकीय-इजारेदारी पूंजीवाद है, जिसका मतलब है राज्य की राजनीतिक सत्ता का उन इजारेदारियों के आर्थिक प्रभुत्त्व के साथ आंगिक विलयन,** जिनके प्रतिनिधि पूजीवादी राज्य की मशीनरी मे मुख्य पदो पर आसीन हैं। सयुक्त राज्य अमरीका की ८९ वी काग्रेस (जानसन प्रशासन के समय की काग्रेस) मे एक भी मजदूर नही था, १४७

सदस्य व्यवसायी और बैंकर थे तथा ३०५ सदस्य इजारेदारियो के वेतनभोगी वकील थे।

आर्थिक क्षेत्र मे राजकीय इजारेदारी पूजीवाद का अर्थ है अधिकाश उत्पादन-साधनो तथा राष्ट्रीय सम्पदा को अपने कब्जे मे रखनेवाली इजारेदारियो की सर्वशक्तिमत्ता, अर्थव्यवस्था का फौजीकरण, राजकीय इजारेदारी नियोजन तथा विनियमन द्वारा मण्डी के स्वत स्फूर्त हानिकारक प्रभाव को नियन्त्रित करने के प्रयास मे पूजीवादी उत्पादन मे राज्य का हस्तक्षेप।

गृह नीति मे इसका मतलब है सार्वजनिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे प्रतिक्रिया का बोलबाला, प्रगतिशील शक्तियो, विशेष रूप से कम्युनिस्टो पर जुल्म और उनका दमन, तानाशाही हुकूमतो की स्थापना, फासिस्टवादी तत्त्वो को प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति (मिसाल के लिए जर्मन सघात्मक गणराज्य मे), सेना का प्रभुत्व और जनवाद विरोधी उथल पुथलो का अधिकाधिक होना (यूनान और कुछ लैटिन अमरीकी देशो मे)।

विदेश नीति मे इसका अर्थ है फौजी तथा आर्थिक दृष्टि से अधिक कमजोर देशो के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप, उत्पीडन के नव उपनिवेशवादी तरीको को थोपना, आर्थिक प्रसार और नग्न आक्रमण (वियतनाम मे सयुक्त राज्य अमरीका का साम्राज्यवादी युद्ध)।

राजकीय इजारेदारी पूजीवाद अपने को दो विश्व प्रणालियो के बीच सघर्ष के अनुरूप ढालता है, उत्पादक शक्तियो के वर्तमान स्तर, वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति की आवश्यकताओ, विश्वव्यापी स्तर पर वर्ग-सघर्ष की विशेषताओ, समाजवादी देशो की उपलब्धियो और खुद पूजीवादी दुनिया मे वर्ग सघर्षो के तीव्रीकरण को ध्यान मे रखता है। उत्पादन की अराजकता, आर्थिक सकटो तथा बडे पैमाने पर बेकारी जैसी अत्यत अनिष्टकारी और खतरनाक परिघटनाओ पर अकुश लगाने के प्रयास मे यह अर्थव्यवस्था मे व्यापक राजकीय विनियमन तथा सामाजिक नियन्त्रण की नीति लागू करता है, शोषण के नये, पर कोई कम नृशस नही, अधिक प्रच्छन्न तरीको को अमल मे लाता है और सामाजिक ढोग की नीति अपनाता है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सबधी थीसिस मे कहा गया है "परन्तु कोई भी नवाचार पूजीवाद के शोषक सारतत्त्व का नही

लिए उनके सदुपयोग के मार्ग मे पूजीवाद द्वारा पैदा किये गए अवरोध के बीच अन्तर्विरोध के बारे मे यह बात विशेष रूप से लागू होती है। पूजीवाद वैज्ञानिक आविष्कारो तथा प्रचुर भौतिक साधनो के अधिकाश को युद्ध कार्यों के लिये निर्धारित करके राष्ट्रीय सम्पदा को नष्ट करता है। वर्तमानकालीन उत्पादन के सामाजिक स्वरूप और इसके विनियमन के राजकीय-इजारेदारी स्वरूप के बीच यह अन्तर्विरोध है। यह न केवल पूजी और श्रम के बीच अन्तर्विरोध का विकास ही है, बल्कि राष्ट्र के भारी बहुमत और वित्तीय अल्पतत्र के हितो के बीच अन्तर्विरोध का बढना भी है।"

इस प्रकार वर्तमान युग मे पूजीवादी प्रणाली सामाजिक, तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति मे एक मुख्य अवरोध है। वर्तमान समाज आज समाजवाद की देहरी पर खडा हुआ है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवी काग्रेस मे केंद्रीय समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट मे इस बात पर जोर दिया गया है कि "आधुनिक पूजीवाद अपने को ससार की नई परिस्थिति के अनुसार ढाल रहा है। समाजवाद से टकराव की हालतो मे पूजीवादी देश पहले किसी भी समय से अधिक इस भय से त्रस्त हैं कि वर्ग सघर्ष कही जनव्यापी क्रातिकारी आदोलन का रूप न ले ले। इसलिए पूजीपति वर्ग मेहनतकश लोगो के शोषण और उत्पीडन के अधिक प्रछन्न रूपो का उपयोग करने का यत्न कर रहा है और कितने ही मामलो मे आशिक सुधार करने के लिए भी तैयार है, ताकि जनसाधारण को जहा तक सभव हो, अपने वैचारिक तथा राजनीतिक नियत्रण मे रख सके। इजारेदारिया अपनी स्थितियो को पुष्ट करने, उत्पादन की कारगरता और विकास दरो को बढाने और मेहनतकश जनता के शोषण और उत्पीडन को तीव्र करने के लिए वैज्ञानिक तथा प्राविधिक उपलब्धियो का व्यापक उपयोग कर रही हैं।

"लेकिन नई परिस्थितियो के अनुसार अपने को ढालने का यह मतलब नही कि पूजीवाद कोई टिकाऊ व्यवस्था बनता जा रहा है। पूजीवाद का आम सकट विषमतर ही होता जा रहा है।"*

बहुधा पूछा जाता है कि अगर पूजीवाद के अन्तर्विरोधो, विशेष रूप से उत्पादक शक्तियो और उत्पादन सम्बन्धो के बीच अन्तर्विरोधो से

---

*सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवी काग्रेस की दस्तावेजें।

बदल सकता, कोई भी प्रपच इसे इसकी बुनियादी बुराइयो से मुक्त नही कर सकता और इसके अपरिहार्य अन्तर्विरोधो को दूर नही कर सकता। वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति के विकास, अधिकाधिक राजकीय इजारेदारी विनियमन तथा इस आधार पर उत्पादन मे कुछ वृद्धि से साम्राज्यवादी राज्यो मे अनिवार्यत उत्पादन का अधिक समाजीकरण होता है, वर्ग अन्तर्विरोध तीव्र होते हैं और सामाजिक एव राजनीतिक शक्तियो के सतुलन मे काफी परिवर्तन होते हैं। इससे मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे पूजीवाद से समाजवाद की ओर क्रान्तिकारी सक्रमण को सम्पन्न करने के लिए आहूत साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियो के भावी विकास की वस्तुगत परिस्थितिया पैदा होती हैं।"

जैसा कि १९६९ मे मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज मे कहा गया है, "इजारेदारी पूजी के हितार्थ वाछित रूपो और स्तर पर लागू और उसके शासन को बरकरार रखने की ओर लक्षित राजकीय इजारेदारी विनियमन पूजीवादी मण्डी की स्वत स्फूर्त शक्तियो को नियत्रित नही कर पाता। लगभग कोई भी पूजीवादी देश अपनी अर्थव्यवस्था मे आवर्ती उतार-चढाव तथा मन्दी को टाल नही पाया है, कुछ देशो मे तीव्र औद्योगिक विकास के कालो के बाद ही उत्पादन के धीमा होने तथा अक्सर उसमे गिरावट आने के काल आते रहते हैं। पूजीवादी प्रणाली गभीर मुद्रा तथा वित्त सकट से ग्रस्त है।

"वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्राति मानवजाति के सम्मुख प्रकृति का इच्छानुसार रूपान्तरण करने, वृहत भौतिक सम्पदा पैदा करने और मनुष्य की सृजनात्मक क्षमताओ को बढाने के लिए अभूतपूर्व सभावनाए प्रस्तुत करती है। इन सभावनाओ के उपयोग से सभी की भलाई होनी चाहिए, परन्तु पूजीपति अपना मुनाफा बढाने तथा मेहनतकशो का शोषण तीव्र करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं।

"वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति से अर्थव्यवस्था के समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्राप्त होती है, इजारेदारी प्रभुत्व के अन्तर्गत इसके फलस्वरूप सामाजिक अन्तर्विरोधो की बढते हुए स्तर, तथा अधिक तीव्र रूप मे पुनरुत्पत्ति होती है। पूजीवाद के पुराने अन्तर्विरोध न केवल तीव्र होते हैं, बल्कि नये अन्तर्विरोध भी पैदा हो जाते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति द्वारा प्रस्तुत असीम सभावनाओ और सम्पूर्ण समाज के कल्याण के

लिए उनके सदुपयोग के मार्ग मे पूजीवाद द्वारा पैदा किये गए अवरोध के बीच अन्तर्विरोध के बारे मे यह बात विशेष रूप से लागू होती है। पूजीवाद वैज्ञानिक आविष्कारो तथा प्रचुर भौतिक साधनो के अधिकाश को युद्ध कार्यों के लिये निर्धारित करके राष्ट्रीय सम्पदा को नष्ट करता है। वर्तमानकालीन उत्पादन के सामाजिक स्वरूप और इसके विनियमन के राजकीय इजारेदारी स्वरूप के बीच यह अन्तर्विरोध है। यह न केवल पूजी और श्रम के बीच अन्तर्विरोध का विकास ही है बल्कि राष्ट्र के भारी बहुमत और वित्तीय अल्पतन्त्र के हितो के बीच अन्तर्विरोध का बढना भी है।"

इस प्रकार वर्तमान युग मे पूजीवादी प्रणाली सामाजिक तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति मे एक मुख्य अवरोध है। वर्तमान समाज आज समाजवाद की देहरी पर खडा हुआ है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवी काग्रेस मे केद्रीय समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट मे इस बात पर जोर दिया गया है कि "आधुनिक पूजीवाद अपने को ससार की नई परिस्थिति के अनुसार ढाल रहा है। समाजवाद से टकराव की हालतो मे पूजीवादी देश पहले किसी भी समय से अधिक इस भय से त्रस्त है कि वर्ग सघर्ष कही जनव्यापी क्रातिकारी आदोलन का रूप न ले ले। इसलिए पूजीपति वर्ग मेहनतकश लोगो के शोषण और उत्पीडन के अधिक प्रच्छन्न रूपो का उपयोग करने का यत्न कर रहा है और कितने ही मामलो मे आशिक सुधार करने के लिए भी तैयार है, ताकि जनसाधारण को जहा तक सभव हो, अपने वैचारिक तथा राजनीतिक नियत्रण मे रख सके। इजारेदारिया अपनी स्थितियो को पुष्ट करने, उत्पादन की कारगरता और विकास दरो को बढाने और मेहनतकश जनता के शोषण और उत्पीडन को तीव्र करने के लिए वैज्ञानिक तथा प्राविधिक उपलब्धियो का व्यापक उपयोग कर रही है।

'लेकिन नई परिस्थितियो के अनुसार अपने को ढालने का यह मतलब नही कि पूजीवाद कोई टिकाऊ व्यवस्था बनता जा रहा है। पूजीवाद का आम सकट विषमतर ही होता जा रहा है।'*

बहुधा पूछा जाता है कि अगर पूजीवाद के अन्तर्विरोधो, विशेष रूप से उत्पादक शक्तियो और उत्पादन सम्बन्धो के बीच अन्तर्विरोधो से

*सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवी काग्रेस की दस्तावेजे।

समाजवादी क्रान्ति ऐतिहासिक अनिवार्यता बन जाती है, तो इस दशा मे अनेक – विशेषकर अत्यत विकसित – देशो मे पूजीवाद आज भी क्यो कायम है?

बात यह है कि यद्यपि पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत अनिवार्यत पैदा होनेवाले अन्तर्विरोधो से क्रान्ति की वस्तुगत संभावना पैदा हो जाती है, परन्तु यह सभावना वास्तविकता का रूप ग्रहण कर सके इसके लिए इसे मूर्त रूप प्रदान करने मे सक्षम सामाजिक शक्ति – मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व मे मजदूरो तथा गैर-सर्वहारा मेहनतकश लोगो के क्रान्तिकारी सश्रय – का होना अनिवार्य है। और अनेक देशो मे अभी इस शक्ति को परिपक्वता ग्रहण करना है। मजदूर आन्दोलन मे फूट तथा पूजीपति वर्ग के दावपेंच दोनो से इसके परिपक्व होने मे बाधा पैदा होती है। पूजीपति वर्ग प्रलोभन तथा ज़ोर-जबरदस्ती की घृणित नीति का इस्तेमाल करते हुए मेहनतकश लोगो के कुछ तबको मे पूजीवादी भ्रातियो को बरकरार रखता है, अभिजात मजदूरो को घूस खिलाता है और पूजी तथा श्रम के बीच के अन्तर्विरोधो को मिटाने तथा उनपर आवरण डालने का अनवरत प्रयास करता है। पूजीवाद को कायम रखने मे पूजीवादी राज्य और बल-प्रयोग करनेवाली (सेना, पुलिस, अदालते और जेल) तथा विचारधारात्मक प्रभाव डालनेवाली (स्कूल, धर्म, पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो आदि) इसकी वृहत मशीनरी की भूमिका बहुत बड़ी है।

इसके अलावा बात यह भी है कि समाजवादी देश ऐतिहासिक दृष्टि से अपने अस्तित्व के अल्पकाल तथा अपने पहले के पिछडेपन और विकास की जटिल परिस्थितियो की वजह से अभी तक प्रतिव्यक्ति उत्पादन की दृष्टि से विकसित पूजीवादी देशो से आगे नही बढ पाये है। अन्तिम बात यह है कि मार्क्सवाद को विकृत करने तथा इसके साथ विश्वासघात करने-वालो की भी इसमे कोई मामूली भूमिका नही है, जो समाजवादी विचारो को बदनाम करते है।

## ३. मुख्य क्रान्तिकारी शक्तियां

पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण के आधुनिक युग मे जनता के बहुत ही व्यापक तबको मे स्वतत्र राजनीतिक जीवन की चेतना पैदा हो गई है और वे अब इतिहास के सक्रिय तथा चेतन निर्माता बनते जा रहे

है। विभिन्न राजनीतिक और धार्मिक विचारो के करोडो लोग वर्गीय तथा राष्ट्रीय उत्पीडन के विरुद्ध, शान्ति और जनवाद के लिए सघर्ष मे शामिल होते जा रहे है। अपने स्वरूप तथा महत्त्व से वर्तमान युग की घटनाए सारे राष्ट्रो और इस प्रकार समस्त मानवजाति के भविष्य को प्रभावित करती है। अब कोई अलग-थलग पडे देश अथवा महाद्वीप नही है। मानवजाति को समाजवाद की ओर ले जानेवाला विश्व क्रान्तिकारी विकास अब वास्तव मे सार्वभौमिक हो गया है।

जैसा कि हम पहले ही कह चुके है, विश्व पूजीवादी प्रणाली समूचे तौर पर समाजवादी क्रान्ति के लिए परिपक्व हो चुकी है। फिर भी, साम्राज्यवाद को एक ही प्रहार मे समाप्त नही किया जा सकता इसके उन्मूलन के लिए दीर्घकाल तक लगातार वर्ग सघर्षो और क्रान्तियो की जरूरत होगी। विश्व पूजीवादी प्रणाली का विनाश विभिन्न, पचमेल क्रान्तिकारी धाराओ के सयोग का परिणाम है। एकसाथ मिलकर वे साम्राज्यवाद पर आगे पीछे चारो तरफ से प्रहार करती है और एक ही विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया मे विलयित हो जाती है, जो साम्राज्यवाद की जड खोद रही है तथा अन्तत उसे समूल नष्ट कर देगी। जैसा कि हम जानते है यह शक्तिशाली प्रक्रिया महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति द्वारा शुरू हुई थी।

वर्तमान युग मे **विश्व साम्राज्यवाद को जो तीन मुख्य क्रान्तिकारी शक्तिया हिला रही है, वे है—समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माण मे सलग्न राष्ट्र, मजदूर वर्ग का अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन और उपनिवेशो तथा परतत्र देशो के लोगो का राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन।** व अभिन्न रूप से एक दूसरे से सम्बद्ध है, एक दूसरे पर निर्भर है और एक दूसरे के साथ सहयोग करती है।

तीनो मुख्य विश्व क्रान्तिकारी शक्तियो—समाजवादी देशो के मेहनतकश लोग, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और विकसित पूजीवादी देशो के सर्वहारा—मे से प्रत्येक अपने-अपने क्रान्तिकारी मोर्चे पर सघर्ष करते हुए अपने ठोस कार्यभारो को पूरा करती है, परन्तु इसके साथ ही वे सयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय कार्य—विश्व साम्राज्यवाद का उन्मूलन करने और अन्तिम लक्ष्य—विश्वव्यापी स्तर पर समाजवाद की विजय—की प्राप्ति मे एक दूसरे की सहायता भी करती है। मजदूर वर्ग तथा सारी दुनिया की स्वतत्रताप्रेमी शक्तियो की अन्तर्राष्ट्रीय एकता इसमे अभिव्यक्त होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की मुख्य उपलब्धि, **विश्व समाजवादी प्रणाली** विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया का मुख्य कारक है। समाजवादी देश सामाजिक सम्बन्धो को रूपान्तरित और ऐतिहासिक दृष्टि से अनिवार्य समाजवाद के पथ को प्रशस्त कर रहे हैं, जिसे अन्तत समस्त मानवजाति अपनायेगी। वे यथासभव कम से कम समय मे आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता तथा जीवन के अन्य सभी क्षेत्रो मे पूजीवाद पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करना अपना बुनियादी कार्यभार मानते हैं। समाजवादी देशो की बढती हुई शक्ति साम्राज्यवाद की सबसे आक्रामक तथा प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियो पर अकुश लगाती है और विश्व शान्ति को कायम रखने म सहायता प्रदान करती है। समाजवादी देश उन राष्ट्रो को अधिकाधिक सहायता भी प्रदान कर रहे हैं, जिन्होंने औपनिवेशिक जुए से अपने को मुक्त कर लिया है।

**विकसित पूजीवादी देशो का मजदूर वर्ग** साम्राज्यवाद को उसकी अपनी माद मे पराजित करने के लिए सघर्ष कर रहा है। वह यह जानते हुए इजारेदारी विरोधी मोर्चे को व्यापक बना रहा है और जनवाद तथा जनता के महत्त्वपूर्ण हितो के लिए जूझ रहा है कि उसका सघर्ष समाजवाद के लिए सार्वभौमिक सघर्ष का अग है। वह साम्राज्यवाद की आधारशिला को भीतर से ध्वस्त कर रहा है। वह राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समर्थन मे प्रत्यक्ष सघर्ष कर रहा है। यह सब कुछ करते हुए पूजीवादी देशो का मजदूर आन्दोलन समाजवाद और पूजीवाद के बीच विश्वव्यापी सघर्ष की गति को प्रभावित करता है।

एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका का **राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन** आज की एक अत्यत महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी शक्ति और विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया का एक बुनियादी तत्त्व है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के प्रहार से औपनिवेशिक प्रणाली के ध्वस्त होने से साम्राज्यवाद को बहुत ही गहरा आघात पहुचा है, इससे साम्राज्यवाद अपने सुदृढ तथा सुरक्षित आधार से वचित हो गया है और उसके राजनीतिक प्रभुत्व का क्षेत्र सिमट गया है। औपनिवेशिक जुए से अपने को मुक्त करनेवाले देशो द्वारा आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए तथा विकास के गैर पूजीवादी पथ को, जो उन्हे सच्ची स्वतत्रता प्रदान करने और उनकी उत्पादक शक्तियो का तीव्र विकास सुनिश्चित करने का अकेला रास्ता है,—अपनाने के लिये चलाये जानेवाले सघर्ष से भी साम्राज्यवाद को गभीर आघात पहुच रहा है और विश्व

क्रान्तिकारी प्रक्रिया की अन्य शक्तियों को प्रेरणा प्राप्त हो रही है। उपनिवेशवाद का विनाश और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के सम्मुख प्रस्तुत समस्याओ का सफल समाधान विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया के अन्य सघटक अगो, विशेषकर विश्व समाजवादी प्रणाली के साथ घनिष्ठ तथा अविच्छिन्न रूप मे सम्बद्ध है।

साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तिया बढ रही है एक दूसरे को सहायता प्रदान कर रही है और अधिकाधिक घनिष्ठ रूप मे एकजुट हो रही है।

**दुनिया भर के मजदूरो तथा उत्पीडित राष्ट्रो, एक हो! – यह जुझारू नारा अब सभी देशो और महाद्वीपो के करोडो मेहनतकशो को एकजुट कर रहा है।**

वर्तमान युग म समाजवादी शक्तियो को वृहत सफलताए प्राप्त हो चुकी है। परन्तु सघर्ष अभी समाप्त नही हुआ है। विभिन्न देशा म समाजवादी क्रान्ति अलग अलग समय पर परिपक्व होती है। पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण का युग देशो के पूजीवादी प्रणाली से लगातार अलग होने और उनके समाजवाद के पथ पर अग्रसर होने का युग है।

आगामी दशाब्दिया विजय और हर्ष, कठिनाइयो और चिन्ताओ, तीव्र सघर्ष और असीम प्रयास की दशाब्दिया होगी। हर साल पुरानी दुनिया की ताकते कमजोर पडती जा रही है, साम्राज्यवाद के पैर तले जमीन खिसकती जा रही है। विश्व शान्ति, राष्ट्रो के बीच बन्धुत्व और दोस्ती, सार्विक समानता, स्वतन्त्रता और सुख के आदर्श – अर्थात् समाजवाद के उच्चादर्श – समस्त मानवजाति के लिए कल की वास्तविकता के प्रतीक है।

आइए, अब हम आज की बुनियादी क्रान्तिकारी शक्तियो का विस्तार से अनुशीलन करे। इसका प्रारभ हम विश्व समाजवादी प्रणाली और समसामयिक इतिहास पर इसके प्रभाव से करगे।

अध्याय ३

# समाजवादी प्रणाली और विश्व विकास पर उसका प्रभाव

आधी सदी पहले, १९१७ के अक्तूबर मे समाजवाद का जो विजयी फरहरा सोवियत देश मे पहले-पहल लहराया था, वह अब दुनिया के कई भागो मे गर्व के साथ लहरा रहा है। सोवियत जनता के कारनामे से उत्प्रेरित करोडो मेहनतकश लोग पूजी, शोषण और जातीय उत्पीडन के विरुद्ध उठ खडे हुए और यूरोप, एशिया तथा लैटिन अमरीका के अनेक देशो मे उन्होंने विजय प्राप्त की। विश्व समाजवादी प्रणाली अब विश्व विकास मे निर्णायक कारक बनती जा रही है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय के बाद विश्व समाजवादी प्रणाली की स्थापना महानतम ऐतिहासिक घटना है। यह प्रणाली अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की शानदार कृति है, इसके वीरतापूर्ण संघर्ष तथा सुदृढ प्रयास की परिणति है। यह न केवल सभी समाजवादी, वल्कि सभी जनवादी और प्रगतिशील शक्तियो की भी धुरी है। यह वह प्रकाश-स्तम्भ है, जिससे मानवजाति का भावी पथ आलोकित होता है। यह विश्व के घटनाक्रम पर अपरिमित क्रान्तिकारी प्रभाव डालती है। वैज्ञानिक समाजवाद के अविनाशी विचारो को मूर्त करनेवाली समाजवादी प्रणाली एक महती भौतिक शक्ति भी है। साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष के मुख्य भार और मानवजाति के भविष्य के मुख्य दायित्व का वहन भी वही करती है।

तो, यह विश्व समाजवादी प्रणाली है क्या?

# १. विश्व समाजवादी प्रणाली—एक महान अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी

**विश्व समाजवादी प्रणाली का उदय**

सबसे पहला समाजवादी देश रूस था, जो अब सोवियत समाजवादी जनतन्त्र संघ है। अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति को सफल बनाकर रूस के उत्पीडित जनसाधारण ने दुनिया में सर्वप्रथम जनसत्ता—मजदूरों और किसानों की सत्ता—स्थापित की और पृथ्वी के छठे भाग में फैले दुनिया में सबसे बड़े देश में अपना राज्य कायम किया, जो आबादी की दृष्टि से भी सबसे बड़े देशों में एक है।

१९२१ में सोवियत संघ की दक्षिणी पूर्वी सीमा पर स्थित स्वल्प आबादी वाले देश मंगोलिया में जन मुक्ति क्रान्ति विजयी हुई। मंगोलिया मंगोलियाई लोक जनतन्त्र बन गया और सोवियत संघ की सर्वतोमुखी सहायता से विकास के गैर-पूंजीवादी पथ पर अग्रसर हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया में आमूल परिवर्तन हुए और पश्चिम तथा पूर्व दोनों ही में पूंजीवाद को काफी पीछे हटना पड़ा।

साम्राज्यवादियों को आशा थी कि युद्ध के दौरान वे सोवियत संघ को यदि विनष्ट नहीं, तो काफी कमजोर अवश्य बना देंगे और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर तथा जनवादी आन्दोलनों को कुचल देंगे। परन्तु फासिस्टवाद की शक्तियों पर सोवियत जनता की भव्य विजय से समाजवाद के शत्रुओं के कुचक्र विफल हो गए।

शत्रु के आक्रमण के फलस्वरूप अपार क्षति तथा अभूतपूर्व विनाश के बावजूद सोवियत संघ युद्ध की ज्वाला से निकलते समय पूर्ववत ही शक्तिशाली था। संसार के पहले समाजवादी देश की प्रतिष्ठा और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर इसके प्रभाव में अपरिमित वृद्धि हुई।

यूरोप की जनता ने युद्ध के दौरान फासिस्ट शासन के विरुद्ध कसकर संघर्ष किया था। और जब सोवियत सेना ने जर्मन फासिस्टों को सोवियत भूमि से खदेड़ा और फासिस्टों से पदाक्रान्त अन्य देशों को मुक्त करने लगी, तो कई देशों के मेहनतकश लोग अपने-अपने देश के पूंजीपतियों तथा जमींदारों के विरुद्ध उठ खड़े हुए, जिन्होंने युद्ध के समय नाजियों के साथ सहयोग किया था।

पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, रूमानिया, बुल्गारिया और अल्वानिया के लोगो ने अपने शोषको का तख्ता उलट दिया, सत्ता अपने हाथो मे ले ली और लोक जनतत्रो की स्थापना की। १९४९ मे जर्मनी के पूर्वी प्रदेश पर जर्मन जनवादी जनतत्र की स्थापना हुई, जिसने समाजवादी समाज के निर्माण को अपना ध्येय घोषित किया।

एशिया मे भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस महाद्वीप की आवादी १ अरब ७० करोड के लगभग है–दुनिया की कुल जनसख्या के आधे से अधिक–और उसमे से ८० करोड से अधिक अब समाजवादी देशो मे निवास करती है।

चीनी जनता की विजय एक महान ऐतिहासिक घटना थी। जापानी आक्रमणकारियो की पराजय के बाद उसने जन क्रान्ति की, विदेशी साम्राज्यवादियो तथा चीनी शोषको के जुए को उतार फेका और समाजवाद के पथ को अपनाया। १ अक्तूबर, १९४९ को चीनी लोक जनतत्र की उद्घोषणा की गई।

१९४५ मे उत्तरी कोरिया से जापानी उपनिवेशवादियो को मार भगाने के वाद वहा आमूल जनवादी परिवर्तन हुए और १९४७ के सितम्बर मे कोरियाई लोक जनवादी जनतत्र स्थापित हुआ।

वियतनाम मे भी वडे परिवर्तन हुए। द्वितीय विश्व युद्ध के पहले यह एक फ्रासीसी उपनिवेश था और युद्ध के दौरान जापानियो ने इस पर कब्जा कर लिया था। वियतनाम की देशभक्त शक्तियो ने जापानी आक्रमणकारियो के विरुद्ध वीरतापूर्ण सघर्ष किया और उनको मार भगाने के वाद १९४५ के सितम्वर मे वियतनामी जनवादी जनतत्र की स्थापना की। परन्तु इसके वाद भी वियतनामियो को अपने भूतपूर्व औपनिवेशिक अधिपतियो के विरुद्ध दीर्घकालीन प्रचण्ड युद्ध करना पडा।

१९५९ मे दुनिया ने क्यूवा मे जन क्रान्ति की विजय देखी। लैटिन अमरीका मे सबसे पहले क्यूवा की जनता ने ही समाजवादी पथ अपनाया।

अब छोटे-वडे १४ देश विश्व समाजवादी प्रणाली के अग है। आर्थिक दृष्टि से पहले के पिछडे हुए अधिकाश समाजवादी देश अल्पकाल मे ही आधुनिक उद्योगो से सपन्न अत्यधिक विकसित राज्य बन गये है। उन्होंने

अपने जीवन स्तर को काफी ऊचा उठा लिया है और विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र म काफी सफलता प्राप्त की है।

द्वितीय विश्व युद्ध क पहले समाजवादी जगत की आबादी दुनिया की कुल जनसख्या के ६ प्रतिशत के लगभग तथा उसका भ क्षेत्र इसके कुल क्षेत्रफल का १७ प्रतिशत ही था। १९७० के मध्य मे ये आकडे क्रमश करीब एक तिहाई और लगभग २६ प्रतिशत थे। ज्यो-ज्यो विश्व समाजवादी प्रणाली विकसित होती जा रही है, त्यो-त्यो अधिकाधिक राष्ट्र अपने को साम्राज्यवादी गुलामी के पाश से मुक्त करते जा रहे हैं। पूजीवाद समाजवाद को एक देश की सीमाओ को पार करके एक विश्व प्रणाली बनने से रोक पाने मे बेवस साबित हुआ है।

वर्तमान समय म, जब साम्राज्यवाद काफी कमजोर हो गया है और अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-सतुलन समाजवाद के अनुकूल होता जा रहा है, किसी भी देश, यहा तक कि बहुत ही अविकसित देश का भी समाजवाद की ओर सक्रमण सभव है। एशिया और अफ्रीका के अनेक देशो ने समाजवादी आधार पर अपने राष्ट्रीय जीवन का नवनिर्माण करने की आकाक्षाए व्यक्त की हैं। इससे बिल्कुल स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि मानवजाति समाजवाद की ओर जानेवाले प्रशस्त राजमार्ग पर चल रही है।

**नये प्रकार के अन्तर्राज्यीय सम्बन्ध**

समाजवादी देश अपने भू क्षेत्र तथा जनसख्या, अपने आर्थिक विकास के स्तर और प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न है। हरेक की अपनी अपनी ऐतिहासिक परम्पराए और राष्ट्रीय सस्कृतिया है, राज्य सत्ता के अपने निकाय तथा अपने सविधान हैं। परन्तु उनके सामान्य लक्षण भी हैं, जो उन्हे एकता के सूत्र मे आबद्ध करते हैं। उनमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है उनकी सामाजिक आर्थिक प्रणाली तथा राज्य सत्ता का समान सारतत्त्व। समाजवादी देशा मे केवल एक प्रकार की अर्थव्यवस्था है इसके अन्तगत उत्पादन के बुनियादी साधन – कारखाने, मिले खान, बिजलीघर, बैंक, परिवहन साधन और प्राकृतिक सम्पदा – जनता की सम्पत्ति है और जनता का हित साधन करते हैं। राज्य अथव्यवस्था का सचालन योजनानुसार करता है। अधिकाश समाजवादी देशो मे शोषक वग नि शेष हो चुके हैं। मेहनतकश लोग खुद अपने लिए, अपने बच्चो तथा अपने देश के लिए श्रम करते हैं।

विश्व समाजवादी प्रणाली सर्वप्रभु राज्यों की बिरादरी है, जो राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के आदर, सर्वतोमुखी परस्पर लाभदायी सहयोग और बन्धुत्वपूर्ण पारस्परिक सहायता के सिद्धान्तो पर आधारित नये समाजवादी ढंग के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो द्वारा एकता के सूत्र मे बंधे हुए हैं।

समाजवादी देशो के सम्बन्ध अपनी अपनी जनताओ को उनके सबसे महत्त्वपूर्ण हितो के आधार पर अधिकाधिक निकट लानेवाले अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रतिरक्षा और सस्कृति के क्षेत्रो मे बढते हुए सहयोग के सम्बन्ध हैं। उनके सम्बन्धो का स्वरूप उनकी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियो की समरूपता, समान मार्क्सवादी-लेनिनवादी वैचारिकी और शान्ति, जनवाद तथा समाजवाद के लिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष मे उनके सामान्य कार्यभार से उत्पन्न होता है। उनके सम्बन्ध कम्युनिस्ट आन्दोलन के मार्ग-दर्शक सिद्धान्त सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचार को मूर्त करते हैं।

राज्यो मे लगातार बढता हुआ सौहार्द समाजवादी बिरादरी की एक वस्तुगत नियम-नियंत्रित प्रक्रिया है। परन्तु यह नही सोचना चाहिए कि यह प्रक्रिया निर्बाध और पीडारहित है। इसमे गभीर कठिनाइया निहित हैं, जिनका समाजवादी देशो को अपने प्रारम्भिक विकास मे निम्नाकित कारणो से सामना करना पडता है—नये समाज के निर्माण मे अनुभवहीनता, योग्यताप्राप्त कार्यकर्ताओ का अभाव, कुछ देशो द्वारा पूजीवाद से विरासत मे प्राप्त आर्थिक तथा सास्कृतिक पिछडापन, अपर्याप्त भौतिक एव वित्तीय साधन, सत्ताच्युत शोषक वर्गों के अवशेषो द्वारा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रतिरोध और कुछ देशो मे ऐसे निम्न-पूजीवादी तत्त्वो की बडी सख्या, जो हर तरह के ढुलमुलपन के शिकार हो सकते हैं।

बाहरी कठिनाइया—साम्राज्यवाद की आक्रामक नीति, जिससे समाजवादी देशो को मजबूरन प्रतिरक्षा पर भारी व्यय करना पडता है, और साम्राज्यवादी शक्तियो द्वारा सभी उपायो (आर्थिक, राजनीतिक, विचारधारात्मक और फौजी) से समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण मे बाधा डालने के प्रयासो के कारण ये आन्तरिक कठिनाइया और भी गम्भीर रूप ग्रहण कर लेती हैं।

कभी-कभी समाजवादी देशो के बीच भी अन्तर्विरोध पैदा हो जाते हैं। खुद जीवन की जटिलता और विविधता के कारण नई तथा जटिल

समस्याए पैदा हो जाती है। इस प्रकार की समस्याओ के समाधान के लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद के परखे हुए आधार पर सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाना तथा विचारो और अनुभव का आदान-प्रदान करना नितान्त आवश्यक है। साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने संघर्ष मे समाजवादी राज्य पृथ्वी पर समाजवाद तथा कम्युनिज्म की विजय के लिए सयुक्त रूप से प्रयत्नशील है और इस लक्ष्य की प्राप्ति मे समाजवादी देशो के लोगों को जो भी कठिनाइया पैदा होती है, उन्हे दूर करना चाहिए। यह इस कारण और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि साम्राज्यवादी इन कठिनाइयो का फायदा उठाने की कोशिश करते है, समाजवादी देशो को पुन पूजीवादी विकास के पथ पर लाने, समाजवादी प्रणाली को तोडने और इस प्रकार दुनिया मे शक्ति-सतुलन मे परिवर्तन लाने का अथक प्रयास कर रहे है। परन्तु सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो का मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकश लोग इन कुचक्रो को ध्वस्त कर देते है।

समाजवादी बिरादरी का निर्माण और उसका विकास एक लम्बी तथा जटिल प्रक्रिया है। यह न केवल इस कारण जटिल है कि इस बिरादरी मे आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक विकास के विभिन्न स्तरो तथा विभिन्न इतिहासो और ऐतिहासिक परम्पराओ एव प्रथाओवाले देश शामिल है। यह इस कारण भी जटिल है कि इसके लिए मानवजाति के इतिहास मे अज्ञात नये अन्तर्राज्यीय सम्बन्धो का पैदा होना अपेक्षित है और हर सूरत मे नयी प्रक्रिया सदैव कठिन तथा जटिल हुआ करती है। इससे भी बढकर यह बात है कि इस प्रक्रिया के दौरान विभिन्न देशो को शोषक वर्गों के सदियो पुराने शासन की कष्टप्रद विरासत—राष्ट्रीय पृथकता, मनमुटाव और अविश्वास को दूर करना पडता है।

समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का विकास जारी है। विश्व समाजवादी प्रणाली के अस्तित्व मे आने के बीस से अधिक वर्षो के दौरान समाजवादी देशो ने अपनी बिरादरी की मजबूत नीव रख दी है। उन्होंने सहयोग तथा पारस्परिक सहायता के विविध रूपो को पैदा किया है और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे सयुक्त कार्रवाई का प्रचुर अनुभव सचित किया है।

आइए, अब हम समाजवादी देशो के बीच सहयोग तथा पारस्परिक सहायता के ठोस रूपो पर विचार करे।

**समाजवादी सहयोग तथा पारस्परिक सहायता के रूप**

समाजवादी देश अपने सबधो को पूर्ण समानता, एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता तथा स्वतत्रता के प्रति सम्मान, और एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप के सिद्धान्त पर आधारित करते है। परन्तु यही सब कुछ नही है। उनके सम्बन्धो के अन्य मुख्य तत्व है बन्धुत्वपूर्ण सहयोग और पारस्परिक सहायता, जिनमे समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का सिद्धान्त अभिव्यक्त होता है। उनकी वर्धमान एकता उनके सबधो का एक और तत्त्व है। यही एकता समाजवादी देशो को नष्ट कर देने के विश्व साम्राज्यवाद के कुचक्रो से उनकी रक्षा करती है, प्रत्येक समाजवादी राज्य की राष्ट्रीय स्वाधीनता और सम्पूर्ण समाजवादी प्रणाली की शक्ति के विकास को सुनिश्चित बनाती है।

समाजवादी देश हर सभव तरीके से एक दूसरे की सहायता करते हैं, आर्थिक, राजनीतिक एव सास्कृतिक क्षेत्रो मे सहयोग बढाते है, अत्यावश्यक समस्याओ पर खुलकर विचार करते हैं और बन्धुत्वपूर्ण सम्बन्धो को सुदृढ बनाने के उद्देश्य से सभी प्रश्नो को न्यायसगत रूप मे हल करने का प्रयास करते हैं।

वे अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे भी एक दूसरे का समर्थन करते है और विदेश नीति सम्बन्धी सभी मुख्य प्रश्नो पर एक-सी नीति का अनुसरण करते हैं। इस नीति का सारतत्त्व क्या है? समाजवादी देश विश्व शान्ति के पोषक हैं। रूस मे समाजवादी क्रान्ति के शुरू मे ही सोवियत विदेश नीति की आम दिशा रही है शान्ति रक्षा और राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति के लिये सघर्षरत सभी राष्ट्रो को समर्थन प्रदान करना। सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस ने १९१७ मे ७ नवम्बर की रात को शाति सम्बन्धी आज्ञप्ति स्वीकार की और सभी राष्ट्रो तथा सरकारो से साम्राज्यवादी हत्याकाण्ड को समाप्त करने की अपील की। लेनिन की शान्ति सम्बन्धी आज्ञप्ति इतिहास की प्रथम सरकारी दस्तावेज है, जिसमे यह घोषणा की गई थी कि "शक्तिशाली तथा धनवान राज्यों ने जिन कमजोर जातियों पर विजय प्राप्त कर ली है, उन्हे आपस मे बाटने के सवाल पर युद्ध" मानवजाति के विरुद्ध सबसे बडा अपराध है। आगे उसमे "बिना किसी अपवाद के सभी राष्ट्रो

के लिए न्यायोचित शान्ति की माग" की गई थी।* सर्वहारा क्रान्ति ने अन्तर्राष्ट्रीय आचरण की नई संहिता की उद्घोषणा करके शान्ति कायम करने सभी विवादों को जनवादी ढंग से हल करने और यूरोप तथा अन्यत्र – सभी राष्ट्रों के साथ न्यायसगत व्यवहार करने का आह्वान किया।

बाद में जो समाजवादी देश अस्तित्व में आये उन्होंने भी इस विदेश नीति का समर्थन किया है। वे आम तथा पूर्ण निशस्त्रीकरण के लिए प्रयास कर रहे हैं और ऐसे कदमों को प्रस्तावित करते रहते हैं, जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में सुधार होगा तथा हथियारबन्दी की होड़ समाप्त करने में सहायता मिलेगी। समाजवादी देश सक्रिय रूप से उपनिवेशवाद का विरोध तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का समर्थन करते हैं, व्यापार के क्षेत्र में आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों के साथ भेदभाव की नीति की भर्त्सना करते हैं, उन्हें अधिकाधिक आर्थिक, तकनीकी और सास्कृतिक सहायता प्रदान करने और सभी देशों के बीच व्यापारिक तथा सास्कृतिक सम्बन्धों को विकसित करने का समर्थन करते हैं।

**आर्थिक सहयोग** तथा पारस्परिक सहायता समाजवादी देशों के बीच सम्बन्धों के विकास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कोई भी समाजवादी देश, विशेष रूप से कोई छोटा समाजवादी देश शेष समाजवादी बिरादरी की सहायता के बिना उस गति से विकास नही कर सकता था, जिस गति से उसका विकास हो रहा है। जन शक्ति तथा भौतिक साधनों की कमी या अतीत से विरासत में प्राप्त अपने आर्थिक पिछड़ेपन के कारण उसके सम्मुख गभीर कठिनाइयां प्रस्तुत हो जातीं।

आर्थिक सहयोग तथा पारस्परिक सहायता में समाजवादी देश किस लक्ष्य का अनुसरण करते हैं? वे आर्थिक विकास की उच्च गति को प्राप्त करने, जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने, औद्योगीकरण को तीव्र बनाने और अपने आर्थिक विकास के स्तर को समरूप बनाने में एक दूसरे की सहायता करते हैं। वे नये समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करने में एक दूसरे की मदद करते हैं और पूंजीवाद से आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता में शीघ्र विजय प्राप्त करने की दिशा में पूरा प्रयास करते हैं।

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में शांति के बारे में २६ अक्तूबर (८ नवम्बर) को दी गयी रिपोर्ट।

आज की दुनिया में कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों से पृथक् रहकर अपने ही बूते पर विकास नहीं कर सकता। समाजवादी देशों की उत्पादक शक्तियों का तीव्र विकास मुख्यत उनके आर्थिक सहयोग पर ही निर्भर है। स्वाभाविक रूप से अपना आर्थिक विकास में हर देश मुख्यत अपने आन्तरिक साधनों और शक्तियों पर निर्भर रहता है। परन्तु उसकी अर्थव्यवस्था विश्व समाजवादी प्रणाली द्वारा प्रस्तुत सुविधाओं का उपयोग करके ही वास्तव में प्रभावकारी रूप से विकसित हो सकती है।

समाजवादी देशों के एक बड़े समूह—चेकोस्लोवाकिया, जर्मन जनवादी जनतंत्र, पोलैंड, बुल्गारिया, रूमानिया, सोवियत संघ और हंगरी—ने इसी उद्देश्य से पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् कायम की। बाद में मंगोलियाई लोक जनतंत्र भी इसमें शामिल हो गया। इस आर्थिक संगठन के सदस्य-देश समानता तथा एक दूसरे की प्रभुसत्ता के सम्मान के आधार पर एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं—कोई देश अथवा देशों का समूह दूसरों से वरिष्ठ होने का दावा नहीं कर सकता। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् के घोषणापत्र में इस पर जोर दिया गया है कि सहयोग के सिद्धान्तों के लिए यह अपेक्षित है कि सदस्य-देश पूरे संगठन के हितों के साथ अपने हितों का समुचित समन्वय कायम करें। प्रत्येक देश के राष्ट्रीय हित और साझे आर्थिक कार्यभारों को पूरा करने का दायित्व इस आधार पर सभी समाजवादी देशों के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में एक दूसरे की सहायता करने के अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य के साथ एकाकार हो जाते हैं।

१९६१–१९६५ में पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् के सदस्य-देशों के बीच व्यापार की मात्रा औसतन २० अरब रूबल प्रतिवर्ष रही।

आर्थिक सहयोग की इस प्रणाली में सोवियत संघ बड़ी भूमिका अदा करता है, जिसका हिस्सा इस आर्थिक संगठन के कुल व्यापार की मात्रा में एक तिहाई है। १९७० में सदस्य-देशों के कुल व्यापार की मात्रा ३० अरब रूबल रही। सोवियत संघ कच्चा माल, ईंधन, मशीनें और साजसामान तथा पूरे के पूरे संयंत्र निर्यात करता है और अपनी जरूरत की चीजें (मशीनें, उपभोक्ता सामग्री, आदि) आयात करता है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् के सदस्य देशों ने संयुक्त रूप से कई बड़े बड़े कारखानों तथा परियोजनाओं का निर्माण किया है। "द्रूज्बा"

(मैत्री) पाइपलाइन से सोवियत सघ से चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, हगरी और जर्मन जनवादी जनतन्त्र को तेल पहुचता है। "मीर" (शान्ति) विद्युत् ग्रिड चालू हुआ है। इस समय इस समाजवादी आर्थिक सगठन मे शामिल राष्ट्र खनिज निष्कर्षण उद्यमो का निर्माण कर रहे है। पोटाशियम लवण को निकालने के सयन्त्रो के निर्माण मे चेकोस्लोवाकिया जर्मन जनवादी जनतन्त्र को सहायता प्रदान कर रहा है। पोलैण्ड, जर्मन जनवादी जनतन्त्र और चेकोस्लोवाकिया अपने कोयला निक्षेपो का सयुक्त उपयोग कर रहे है और उन्होंने विशाल बिजलीघरो का सयुक्त निर्माण किया है। खनिज लोह के खनन, एल्यूमिनियम के उत्पादन और तेल निकालने आदि मे चेकोस्लोवाकिया और सोवियत सघ एव दूसरे के साथ सहयोग कर रहे है।

सोवियत सघ उन समाजवादी देशो की भी सहायता कर रहा है जो पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् मे शामिल नही है। सोवियत सघ ने चीनी लोक जनतन्त्र को अल्पकाल मे ही आधुनिक उपकरणो से लैस २०० से अधिक बडी फैक्टरियो, कारखानो और सयन्त्रो के निर्माण मे मदद की। सोवियत सहायता के फलस्वरूप चीन ने अपने यहा विमान उद्योग, मोटरगाडी और ट्रैक्टर उद्योग, विद्युत् इजीनियरी, भारी मशीन निर्माण उद्योग, सूक्ष्म यन्त्र निर्माण उद्योग, उपकरण निर्माण उद्योग, रेडियो निर्माण उद्योग तथा रासायनिक उद्योग की विभिन्न शाखाए स्थापित की हैं। छठे दशक मे चीन को उत्पादन तथा वैज्ञानिक एव तकनीकी क्षेत्रो मे सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से १० हज़ार से अधिक सोवियत विशेषज्ञ चीन भेजे गये थे। १६५१ से १६६२ के बीच करीब १० हज़ार चीनी इजीनियरो, तकनीशियनो और कुशल मजदूरो तथा लगभग १ हज़ार वैज्ञानिको को सोवियत सघ मे वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। उक्त अवधि के दौरान ११ हज़ार से अधिक चीनी विद्यार्थियो तथा पोस्ट ग्रैजुएट छात्रो ने सोवियत सघ मे अपनी उच्च शिक्षा पूरी की।

क्यूबा, वियतनाम जनवादी जनतन्त्र और अन्य देश भी सोवियत सघ तथा दूसरे समाजवादी देशो से पर्याप्त सहायता प्राप्त कर रहे हैं।

शोध-कार्य को गति देने तथा लागत को कम करने के लिये समाजवादी देश विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र मे आपस मे सहयोग करते हैं। इससे मझोले तथा छोटे देशो के लिये शोध-कार्य मे, जिसे वे स्वय अपने सहारे नही कर पाते, भाग लेना और विज्ञान के सुलाभो का अधिक विवेकपूर्ण

ढग से और पूर्णतया लाभ उठाना सभव हो जाता है। सदस्य-देशो ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुभव और उत्पादन सम्बन्धी जानकारी के आदान-प्रदान की व्यवस्था की है और इससे उन्हे समय तथा धन की काफी बचत हुई है। वैज्ञानिक सहयोग तथा कारखानो, मशीनो, उपकरणो एवं औजारो के डिजाइनो और प्राविधिक विवरणो के आदान-प्रदान के रूप मे मुफ्त प्रदत्त पारस्परिक सहायता से सभी समाजवादी देशो को पूजीवादी व्यवस्था से विरसे मे प्राप्त वैज्ञानिक, तकनीकी और आर्थिक पिछडेपन को दूर करने मे मदद मिलती है। पूजीवादी परिस्थितियो के अन्तर्गत सहयोग के जिन रूपो की कल्पना भी नही की जा सकती, जैसे अग्रणी मजदूरो मे अनुभव का आदान-प्रदान और पूरे के पूरे उद्यमो के काम के उन्नत तरीको से सभी कारखानो को परिचित कराना, वे भी अधिकाधिक बडे पैमाने पर लागू किये जा रहे हैं।

विश्व समाजवादी विरादरी मे जो अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन मूर्त रूप ग्रहण कर रहा है, वह अपने स्वरूप की दृष्टि से सर्वथा नया है। पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत भी राष्ट्रो के बीच श्रम का विभाजन है, परन्तु वह शक्तिशाली राष्ट्रो द्वारा कमजोर देशो को गुलाम बनाने पर आधारित है। प्रमुख साम्राज्यवादी राष्ट्र – सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी, फ्रास और जापान – कमजोर देशो पर अपनी इच्छा थोपने तथा उनके आर्थिक और सास्कृतिक विकास मे बाधा डालने के लिए इस विभाजन का दुरुपयोग करते हैं। पूजीवादी समाज के राजनीतिक और आर्थिक सम्बन्ध ऐसी परिस्थितिया पैदा करते तथा कायम रखते हैं, जिनमे एक देश की सफलता का अर्थ दूसरे देश की विफलता है। मार्क्स ने पूजीवाद के बारे मे लिखा है कि "इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक राज्य के लाभ का अर्थ है दूसरे राज्य की क्षति।"*

अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रम-विभाजन इससे भिन्न सिद्धान्तो पर आधारित है। प्रत्येक समाजवादी देश की अभिरुचि दूसरे समाजवादी देश की अर्थव्यवस्था के विकास और सुदृढीकरण मे है, क्योकि एक समाजवादी देश जितना ही अधिक सशक्त होगा, सम्पूर्ण विश्व समाजवादी प्रणाली भी उतनी ही अधिक शक्तिशाली होती जायेगी। समाजवादी देश दूसरो

---

*का० मार्क्स, फ्रास-प्रशा युद्ध के बारे मे अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ की जनरल कौसिल की दूसरी चिट्ठी।

को कुचलने अथवा कमजोर बनाने के लिए नहीं, बल्कि अपनी बिरादरी की प्रगति को तीव्र बनाने के लिए आर्थिक सम्बन्धो का उपयोग करते है।

समाजवादी आर्थिक सहयोग और पारस्परिक सहायता के भिन्न भिन्न रूप है–राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओ मे समन्वय, उत्पादन सम्बन्धी विशेषीकरण और सहयोग, व्यापार, ऋण तकनीकी सहायता और वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग, औद्योगिक उद्यमो का सयुक्त निर्माण और प्राकृतिक सम्पदा का सयुक्त उपयोग।

विश्व समाजवादी प्रणाली मे सोवियत सघ, चेकोस्लोवाकिया और जर्मन जनवादी जनतत्र जैसे औद्योगिक दृष्टि से अत्यत विकसित देश है और वियतनामी जनवादी जनतत्र और मगोलिया जैसे औद्योगिक दृष्टि से निम्न-स्तर वाले देश भी है। अधिक विकसित समाजवादी देश आथिक विकास के अपने आर्थिक स्तरो के बडे अन्तर को दूर करने मे बन्धु राष्ट्रा की सहायता करन का प्रयास करते है। वे पिछडे हुए समाजवादी देशो को अपने आर्थिक तथा सास्कृतिक स्तरो को ऊचा उठाने मे सहायता प्रदान करते है। इस प्रकार विश्व समाजवादी प्रणाली के अन्तर्गत औद्योगिक तथा खेतिहर, आर्थिक दृष्टि से उन्नत और पिछडे राष्ट्रो म विभाजन धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। इस पारस्परिक सहायता के फलस्वरूप जो समाजवादी देश अभी हाल तक आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए थे, उन्होंने अपनी अर्थव्यवस्था तथा उत्पादक शक्तियो को बडी सफलता के साथ विकसित कर लिया है और उनके आर्थिक विकास के स्तरो को शीघ्रता से समरूप बनाने के लिए यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

इस कार्यभार को पूरा करने मे समाजवादी देशो को कई गभीर तथा जटिल समस्याओ का सामना करना पडता है, क्योकि सदियो के दौरान उनका आर्थिक विकास अलग अलग तरह से हुआ है। आथिक विकास के स्तरो को समरूप बनाने की प्रक्रिया किस तरह चल रही है? निस्सन्देह, औद्योगिक रूप मे उन्नत देश अपने विकास को अवरुद्ध नही कर सकते, क्योकि इससे सम्पूर्ण विश्व समाजवादी प्रणाली निश्चय ही कमजोर हो जायेगी। समाजवादी देश अपने राष्ट्रीय साधनो–श्रम शक्ति, कच्चा माल और उत्पादन क्षमता–को जुटाकर तथा एक दूसरे को सर्वतोमुखी सहायता एव समथन प्रदान कर इस लक्ष्य को प्राप्त करेगे। आधुनिकतम कारखाना का निर्माण करने और नवीनतम मशीनें लगाने मे समाजवादी देश एक दूसरे

की सहायता करते रहेगे। वे जानते है कि छोटी-छोटी फैक्टरियो तथा पुराने साजसामान पर आधारित निम्न-तकनीकी स्तर के औद्योगीकरण से व अपन आर्थिक विकास-स्तर को कभी समरूप नही बना पायेंगे, क्योकि श्रम-उत्पादिता म अन्तर पूर्ववत बना रहेगा और आधुनिक कारखानो की अपेक्षा छोटी-छोटी फैक्टरियो मे पूजी-सचय और शुद्ध उत्पाद की मात्रा भी बहुत ही कम रहगी।

सहयोग तथा पारस्परिक सहायता से समाजवादी देशो का सामान्य विकास तीव्र गति से होता है। समाजवादी देशो को व्यापक सहायता प्रदान करनवाल सोवियत सघ को खुद इस प्रकार के सहयोग से लाभ पहुचता है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद् मे शामिल देश अपने आर्थिक सम्बन्धो को बढाते जा रहे है, सयुक्त कार्य द्वारा आर्थिक प्रगति की गति तीव्र कर रहे है और इसके फलस्वरूप समाजवादी निर्माण के काम को गति प्रदान कर रहे है।

उत्पादन को अधिक दक्ष और तकनीकी प्रगति को तीव्र बनाने की जरूरत पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देशो के उत्पादन मे घनिष्ठ विशेषीकरण तथा सहकारिता और व्यापक वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग का अधिकाधिक प्रोत्साहित करती है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के अप्रैल, १६६६ मे हुए तेईसवें (विशेष) अधिवेशन के निर्णयो ने समाजवादी देशो मे सहयोग को सुधारने म बडी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। अधिवेशन मे परिषद के सदस्य-देशो के समाजवादी एकीकरण की मुख्य दिशाओ को निर्धारित करने का निश्चय किया गया, इसके अलावा पारस्परिक आर्थिक सबधो को पुष्ट करने के लिए ठोस उपाय भी निरूपित किये गये।

समाजवादी आर्थिक एकीकरण का सार अनेक देशो के श्रम, भौतिक तथा वित्तीय साधनो को एकजुट करना है, ताकि प्रत्येक देश मे अलग-अलग और समाजवादी बिरादरी मे समूचे तौर पर उत्पादन का और अधिक विकास किया जा सके। परिषद के सदस्य-देशो की वैज्ञानिक तथा प्राविधिक क्षमता का एकीकरण और विज्ञान तथा टैक्नालाजी की तीव्र विकास-दरों को सुनिश्चित करने और उसके आधार पर उत्पादन को तेज करने के लिए नवीनतम प्रविधियो और टैक्नालाजी का सयुक्त [illegible] और उपयोग बड़ा महत्व रखता है।

एकीकरण सर्वतोमुखी, स्थिर प्राविधिक तथा उत्पादन संपर्कों की विरचना के सुधार, समाजवादी देशों के साझे बाज़ार के प्रसार और मुद्रा तथा ऋण संबंधी क्रियाओं के दृढ़ीकरण और विकास के आधार पर समाजवादी देशों की अर्थ-व्यवस्थाओं का सुविचारित और सुनियोजित अनुकूलन है। लेनिन ने एकीकरण की व्यवहार्यता और आवश्यकता का, जो मानवजाति के आर्थिक, राजनीतिक और बौधिक जीवन का अंतर्राष्ट्रीयकरण है, पूर्वानुमान कर लिया था।

समाजवादी आर्थिक एकीकरण समाजवादी देशों द्वारा प्राप्त आर्थिक सफलताओं पर आधारित है, जो सबसे बढ़कर समाजवादी देशो की जनताओं के श्रम और संघर्ष का परिणाम है और जो उनके आपसी सहयोग और सहायता से काफ़ी हद तक प्रभावित हुई है।

कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की रिपोर्ट पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवीं कांग्रेस के प्रस्ताव में कहा गया है कि "आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देशों की अंतर्राज्यीय विशेषीकरण और उत्पादन के सहयोग की नीति और आर्थिक योजनाओं के समन्वयन तथा आर्थिक एकीकरण की नीति विश्व समाजवाद के विकास की वस्तुगत आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति है।"*

विश्व समाजवादी प्रणाली ने अब अपने विकास की नयी अवस्था मे प्रवेश कर लिया है। सोवियत संघ व्यापक पैमाने पर कम्युनिस्ट समाज के निर्माण में संलग्न है। कुछ देश समाजवाद की आधारशिला रख रहे हैं और कुछ व्यापक पैमाने पर समाजवाद का निर्माण कर रहे है। सम्पूर्ण समाजवादी प्रणाली के भीतर समाजवाद की निर्णायक विजयों, एक ही जुझारू शिविर में समाजवादी देशों के विलयन और इस शिविर की बढ़ती हुई एकता तथा शक्ति के कारण समाजवादी देशों में पूंजीवाद को पुनः क़ायम करना असंभव है। इससे सम्पूर्ण समाजवादी प्रणाली के भीतर समाजवाद और कम्युनिज़्म की पूर्ण विजय सुनिश्चित हो जाती है।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तों के आधार पर विश्व समाजवादी प्रणाली की एकता का सुदृढ़ीकरण समाजवादी देशों की भावी प्रगति की अनिवार्य शर्त है। यह एकता समाजवादी बिरादरी तथा विश्व कम्युनिस्ट

---

*सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की चौबीसवी कांग्रेस की दस्तावेज़ें।

आन्दोलन के हितो के विरोधी राष्ट्रवाद तथा जातीय अनन्यता के प्रतिकूल है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सम्बन्धी थीसिस मे कहा गया है "मार्क्सवाद-लेनिनवाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रति निष्ठा विश्व समाजवादी बिरादरी के सफल विकास, विश्व के घटनाक्रम पर उसके प्रभाव मे वृद्धि की गारटी है। इसके साथ ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद से किंचित विचलन समाजवाद के ध्येय, जनता के वास्तविक राष्ट्रीय हितो के लिए घोर अनिष्टकारी है।"

यह बात चीन मे वर्तमान परिस्थिति से प्रत्यक्ष है। माओ त्से-तुग की अगुआई मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के वर्तमान नेतृत्व द्वारा अनुसरित नीति ने, जो "वामपंथी" लफ्फाज़ी की आड मे छिपी निम्नपूजीवादी दुःसाहसिकता और महाशक्ति अंधराष्ट्रवाद का मिश्रण है और जो समाजवादी बिरादरी की एकता को कमज़ोर करने और विश्व कम्युनिस्ट आदोलन मे फूट डालने की ओर लक्षित है, मज़दूर वर्ग और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थिति को बहुत कमजोर किया और उसके फलस्वरूप निम्नपूजीवादी, अराजकतावादी तत्वो का हमला हुआ। चीन मे समाजवादी उपलब्धिया बडे सकट मे पड गईं।

विश्व समाजवादी प्रणाली की एकता के लिए सघर्ष इस कारण भी नितान्त आवश्यक है कि साम्राज्यवादी इसे क्षति पहुचाने और समाजवादी बिरादरी से एक न एक देश को अलग करने का पूरा प्रयास कर रहे है। १९५६ मे हगरी और १९६८ की गरमियो मे चेकोस्लोवाकिया की घटनाओ से यह प्रमाणित हो जाता है, जब पश्चिमी साम्राज्यवादियो के सकेत पर प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियो ने इन देशो को समाजवादी प्रणाली से पृथक् करने की कोशिशे की थी। सोवियत सघ, बुल्गारिया, हगरी, जर्मन जनवादी जनतत्र और पोलैण्ड ने चेकोस्लोवाकिया की जनता की सहायता की और अपनी समाजवादी उपलब्धियो की रक्षा मे उसकी मदद करने के लिए वहा फौजे भेजी।

**विश्व समाजवाद की उपलब्धियो की दृढ़तापूर्वक रक्षा करते हुए सोवियत जन तथा अन्य समाजवादी देशो के लोग अपने अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन करते है।** यह ससार भर के कम्युनिस्टो का अतर्राष्ट्रीयतावादी फर्ज है।

एकता और दृढता समाजवाद की शक्तियो को बढाती है। समाजवादी देशो की एकता जितनी ही सुदृढ होगी अपने आर्थिक एव सास्कृतिक विकास तथा अपने जीवन-स्तर का ऊचा उठान न जितना ही अधिक व आपस म सहयोग करेगे और उनका राजनीतिक सहयोग जितना ही घनिष्ठ होगा विश्व समाजवादी प्रणाली उतनी ही अधिक सबल होगी, उतने ही अधिक प्रभावकारी ढग से समाजवाद पूजीवाद पर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करेगा और समाजवादी प्रणाली विश्व के घटनाक्रम पर उतना ही अधिक प्रभाव डालेगी।

## २. विश्व के घटनाक्रम पर समाजवादी प्रणाली का प्रभाव

शान्ति और सामाजिक प्रगति के लिये और साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष के हरावल मे रहते हुए समाजवादी प्रणाली विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया मे अपना निर्णायक योगदान प्रस्तुत करती है।

**अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-सतुलन के समाजवाद के अनुकूल हो जाने से** समाजवादी प्रणाली समसामयिक इतिहास के विकास का निर्णायक कारक बन गयी है।

यह परिवर्तन विश्व समाजवादी प्रणाली की सुदृढता और इसकी राजनीतिक तथा आर्थिक एकता के कारण हुआ है। यह नयी सामाजिक प्रणाली की श्रेष्ठता का भी फल है, जिसके परिणामस्वरूप समाजवादी देशो का तीव्र आर्थिक विकास हुआ हे। इसके अतिरिक्त, समाजवादी देशो की औद्योगिक शक्ति तथा तीव्र वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप विश्व समाजवादी प्रणाली की फौजी शक्ति मे वृद्धि ने भी इस परिवर्तन मे योग दिया है। यह परिवर्तन औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन का भी परिणाम है। पहले के दर्जनो उत्पीडित राष्ट्र विश्व साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध सक्रिय सघर्ष मे शामिल हो गये है और इस प्रकार उन्होने मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के हल मे विश्व समाजवाद की स्थिति को मजबूत बनाया है। अपने अन्तर्विरोधो, मुख्यत पूजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग, श्रम और पूजी के बीच अन्तर्विरोधो के उग्र होने से साम्राज्यवाद की कमजोरी के कारण भी यह परिवर्तन हुआ।

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-सतुलन मे यह परिवर्तन मुख्यतः आ विकास मे समाजवाद की उपलब्धियो और पूजीवाद के साथ सफल शान्ति प्रतिद्वन्द्विता के कारण ही हुआ है। आइए, इन सफलताओ पर दृष्टिपात क

**समाजवाद और पूंजीवाद के बीच आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता**

समाजवाद और पूजीवाद के बीच विश्वव्या सघर्ष का मुख्य क्षेत्र आर्थिक अथवा भौति उत्पादन का क्षेत्र है। समाजवाद अन्तर्राष्ट्री मामलो पर अपना प्रभाव मुख्यत. पूजीवा के साथ प्रतिद्वन्द्विता मे अपनी आर्थिक सफलताओं के ज़रिये डालता है लेनिन ने लिखा था "आज हम मुख्यतः अपनी आर्थिक नीति के ज़रि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को प्रभावित कर रहे हैं... इस क्षेत्र मे सघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर पहुच गया है। अगर हम इस समस्या को हल कर लेगे, तो अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर निश्चित और निर्णयात्मक विजय प्राप्त कर लेगे।"*

इसे स्मरण रखना चाहिए कि समाजवाद ने पूजीवाद के साथ आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियो मे शुरु की थी, जब पूजीवाद को अपार आर्थिक श्रेष्ठता प्राप्त थी।

अपनी समाजवादी क्रान्तियो की विजय के पहले, कई वर्तमान समाजवादी देश आर्थिक दृष्टि से अविकसित थे। इन देशो मे शोषक व्यवस्था से समाजवाद को विरासत मे जो कुछ मिला, वह था बहुत ही पिछडा हुआ तथा कमज़ोर उद्योग, आदिम कृषि, रहन-सहन का निम्न स्तर और व्यापक गरीबी, आबादी के भारी बहुमत का सास्कृतिक पिछडापन एव निरक्षरता और लगभग अस्तित्वहीन सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा। समाजवादी पथ अपनानेवाले देशो को यथासभव शीघ्रातिशीघ्र औद्योगीकरण करने और विकसित पूजीवादी देशों से आर्थिक और सास्कृतिक फासले को पाटने के लिए अपनी सारी राष्ट्रीय शक्तियो तथा साधनो को जुटाना था, जो दशाब्दियो, यहा तक कि सदियों से उनके बीच रहा था।

मिसाल के लिए, प्रथम विश्वयुद्ध के पहले रूस सयुक्त राज्य अमरीका की तुलना मे प्रतिव्यक्ति १२ गुना कम कच्चा लोहा तथा इस्पात और

---

*व्ला० इ० लेनिन, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के १०वें अखिल रूसी सम्मेलन मे दिया गया उपसहारी भाषण।

२१ गुना कम विद्युत पैदा करता था। इससे भी बढ़कर बात यह है कि सोवियत जनता द्वारा १६२० मे गृहयुद्ध में अपने ही शोषकों और विदेशी हस्तक्षेपकारियों को पराजित करने तक देश के औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा १६१३ की तुलना में पांच गुना कम हो गई थी। यह १६१४–१६१८ के विश्वयुद्ध, गृहयुद्ध और पूंजीवादी राष्ट्रों के फौजी हस्तक्षेप से पैदा हुई तबाही का ही दुष्परिणाम था। १६१३ मे विश्व के औद्योगिक उत्पादन में रूस का हिस्सा ४ प्रतिशत से कुछ ऊपर था, परन्तु १६२० तक यह गिरकर १ प्रतिशत से भी कम हो गया।

सोवियत जनतंत्र के सम्मुख अपने **आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने और विकसित पूंजीवादी देशों के समकक्ष पहुंचने** का अत्यंत आवश्यक और दुस्तर कार्यभार प्रस्तुत था। यह नवोदित समाजवादी राज्य के लिए जीवन-मरण का प्रश्न था, क्योंकि पूंजीपति इसे पराजित करने और पुरानी व्यवस्था को पुनः क़ायम करने की आशा कर रहे थे। हथियारों से पूर्णतया लैस साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत ख़तरे का सामना करने के लिए देश के सम्मुख एकमात्र रास्ता था शक्तिशाली अर्थव्यवस्था का निर्माण, जिससे वह अपनी प्रतिरक्षा को सुदृढ़ बनाने की क्षमता प्राप्त कर सकता था। शत्रु-राष्ट्रों से घिरे होने के बावजूद सोवियत जनता ने विषम कठिनाइयों पर विजय पाई और इस कार्यभार को सफलतापूर्वक पूरा किया। १६३७ तक विश्व के औद्योगिक उत्पादन में सोवियत संघ का हिस्सा बढ़कर क़रीब १० प्रतिशत हो गया था। पूंजीवादी देशों ने विकास के जिस फ़ासले को तय करने में दशाब्दियां लगा दी थी, उसको सोवियत संघ ने केवल १५ वर्षों मे ही तय कर लिया। वह आर्थिक दृष्टि से पूजीवादी देशों से पूर्णतया स्वतंत्र शक्तिशाली औद्योगिक राष्ट्र बन गया। उसने जो आर्थिक सफलताएं प्राप्त की, वे १६४१–१६४५ के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में नाजियों पर विजय प्राप्त करने का एक मुख्य कारक बनीं।

इस प्रकार सोवियत संघ ने अस्तित्व में आने के साथ आर्थिक विकास की निरंतर तीव्र गति प्रकट की है और यह प्रमाणित कर दिया है कि समाजवाद आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता में पूंजीवाद पर विजयी हो सकता है।

सोवियत संघ पर हिटलरी जर्मनी और उसके साथी राष्ट्रों के आक्रमण

से अपार बरबादी हुई, बेशुमार जाने गई और सोवियत जनता को विनाश से बचने के लिए एडी-चोटी का ज़ोर लगाना पडा। परतु इसके बावजूद युद्ध के बाद सोवियत सघ सफलतापूर्वक प्रगति करता रहा, जिसके फलस्वरूप १९७० मे दुनिया के कुल औद्योगिक उत्पादन मे उसका हिस्सा २० प्रतिशत के लगभग था। यह भी दृष्टव्य है कि १९१३ के बाद खुद विश्व का औद्योगिक उत्पादन कई गुना बढा है। अब सयुक्त राज्य अमरीका के बाद सोवियत सघ दुनिया का सबसे बडा औद्योगिक राष्ट्र है और ब्रिटेन, फ्रास, कनाडा, इटली, बेल्जियम और हालैण्ड कुल जितना पैदा करते है, उससे अधिक वह अकेले पैदा करता है। विज्ञान, तकनीक तथा सस्कृति की कई शाखाओ मे यह दुनिया मे सबसे आगे है।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद के ५० वर्षो मे सोवियत जनता ने जितनी भौतिक तथा आध्यात्मिक सम्पदा पैदा की है, उतनी सोवियत सघ के भू-क्षेत्र पर निवास करनेवाली जातियो की सभी पूर्ववर्ती पीढियो ने नही की थी। सोवियत जनता ने दूसरो के बल पर नही, बल्कि खुद अपने श्रम से सुदृढ अर्थव्यवस्था का निर्माण किया है। दीर्घकाल तक वह चारो ओर शत्रु-राष्ट्रो से घिरा रहा, उसे किसी से कोई भी आर्थिक सहायता पाने की आशा नही थी और इससे भी बढकर साम्राज्यवादियो की ओर से निरन्तर आक्रमण का खतरा बना रहने के कारण वह अपनी प्रतिरक्षा को सुदृढ बनाने पर काफी धन व्यय करने तथा इस दिशा मे अधिक प्रयास करने को विवश था। इसके अलावा सोवियत जनता को साम्राज्यवादियों के सशस्त्र आक्रमण का सामना करने तथा उसके बाद अपनी तबाह अर्थ-व्यवस्था का पुनरुद्धार करने मे कई वर्ष लगाने पडे थे। क्या समाजवाद की अपराजेयता और पूजीवाद की तुलना मे इसकी श्रेष्ठता का इससे कोई बेहतर सबूत हो सकता है?

नये जीवन के निर्माण मे अन्य समाजवादी देश भी बहुत सफल रहे है। १९५० की तुलना मे १९६९ मे बुल्गारिया का औद्योगिक स्तर १०८९ प्रतिशत, रूमानिया का १०१५ प्रतिशत, पोलैण्ड का ६९९ प्रतिशत, मगोलिया का ६९८ प्रतिशत, जर्मन जनवादी जनतत्र का ५०३ प्रतिशत, हगरी का ४८४ प्रतिशत और चेकोस्लोवाकिया का ४६६ प्रतिशत अधिक था। समाजवादी देश सफलतापूर्वक समाजवाद तथा कम्युनिज्म का भौतिक तथा तकनीकी आधार निर्मित कर रहे है। उनके आर्थिक विकास के फलस्वरूप

उनकी राष्ट्रीय आय मे सतत वृद्धि और रहन-सहन तथा सास्कृतिक स्तर मे सुधार होता जा रहा है।

विश्व के कुल औद्योगिक उत्पादन म समाजवादी देशो का हिस्सा १९५० मे करीब २० प्रतिशत, १९५५ म लगभग २७ प्रतिशत और १९७० मे ३९ प्रतिशत हो गया था। औद्योगिक और कृषि उपज की कुल मात्रा की दृष्टि से आज भी पूजीवादी दुनिया समाजवादी दुनिया से आगे है। परन्तु निकट भविष्य मे कुल औद्योगिक और कृषि उपज मे पूजीवादी दुनिया के समकक्ष पहुच जाने के ऐतिहासिक कार्यभार को पूरा करने का समाजवादी देशो का दृढ सकल्प है और व इसे करने मे समर्थ भी हैं। इसके बाद वे प्रतिव्यक्ति उत्पादन और रहन सहन के स्तर म सर्वाधिक विकसित पूजीवादी देशा से आगे बढ जाने का इरादा रखते हैं।

पूजीवादी दुनिया मे प्रतिव्यक्ति के हिसाब से उत्पादन के उच्च स्तर वाले थोडे-से ही देश हैं। उत्पादन के बहुत ही निम्न स्तर वाले देशो की सख्या काफी अधिक है। इसके अलावा, पूजीवादी देशो म उत्पादन के उच्च स्तर का अर्थ रहन-सहन का भी उच्च स्तर नही है। प्रतिव्यक्ति उत्पादन सम्बन्धी औसत आकडो के पीछे शोषक वर्गो का व्यर्थ का विराट व्यय, परोपजीवियो के इस छोटे समूह की खपत का बहुत ही उच्च स्तर और मेहनतकश लोगो की खपत का बहुत ही निम्न स्तर होता है। दूसरी ओर, समाजवादी देशो मे उत्पादक शक्तियो के विकास से अनिवार्यत जनता के जीवन-स्तर मे सुधार होता है, क्योकि राष्ट्रीय आय सम्पूर्ण जनता की होती है।

इस विश्वास का क्या आधार है कि समाजवाद आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता मे पूजीवाद को पराजित करने, प्रतिव्यक्ति उत्पादन मे उससे आगे निकल जाने और दुनिया मे सर्वोच्च जीवन-स्तर कायम करने मे समर्थ है? इसका आधार यह तथ्य है कि समाजवाद आर्थिक विकास की दर मे पूजीवाद की तुलना मे बहुत ही आगे है। १९३७ की अपेक्षा १९७० मे समाजवादी देशो का औद्योगिक उत्पादन १३ गुना अधिक था, जबकि इसी अवधि मे पूजीवादी देशो का उत्पादन केवल ४ ५ गुना बढा था। उत्पादन, विज्ञान और आधुनिक तकनीक मे घनिष्ठ समन्वय स्थापित कर लेने के फलस्वरूप सोवियत सघ विश्व वैज्ञानिक प्रगति की मुख्य दिशाओ (राकेट विज्ञान,

परमाणविक ऊर्जा का शान्तिपूर्ण उपयोग, इलेक्ट्रॉनिक्स, अन्तरिक्ष-अनुसधान, आदि) मे लगातार अग्रिम स्थान पर है।

सोवियत सघ उत्पादन की कुल मात्रा की दृष्टि से सयुक्त राज्य अमरीका के निकट पहुचता जा रहा है। १६१३ मे रूस ने सयुक्त राज्य अमरीका के उत्पादन का केवल १२.५ प्रतिशत पैदा किया था, परन्तु १६७० मे सोवियत सघ ने उसके कुल उत्पादन के दो-तिहाई से अधिक पैदा किया।

सोवियत सघ और सम्पूर्ण विश्व समाजवादी प्रणाली औद्योगिक उत्पादन के उस स्तर पर पहुच गये है, जहा पूजीवादी प्रणाली की अपेक्षा आर्थिक विकास की उनकी उच्च गति के फलस्वरूप कई बुनियादी औद्योगिक वस्तुओ के उत्पादन मे अधिक निरपेक्ष वृद्धि हुई है। यहा इस बात का उल्लेख कर देना भी जरूरी है कि समाजवादी देशो के पास कच्चे माल के प्रचुर भडार है और पूजीवाद से आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता मे सफलता प्राप्त करने मे इससे भी उन्हे सहायता मिलती है।

समाजवाद और पूजीवाद के बीच आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता का अन्तिम परिणाम श्रम-उत्पादिता के उनके स्तर से निश्चित होगा। श्रम-उत्पादिता की दृष्टि से सोवियत सघ यूरोप के प्रमुख पूजीवादी देशो से आगे निकल गया है और सयुक्त राज्य अमरीका से अपने को अलग करनेवाले अतर को उसने उल्लेखनीय रूप से कम कर दिया है। चूकि सोवियत श्रम-उत्पादिता की वृद्धि-दर पूजीवादी देशो की अपेक्षा अधिक स्थिर तथा तीव्र है, इसलिए वह सयुक्त राज्य अमरीका के स्तर के सतत निकट पहुचता जा रहा है। १६१३ मे रूस के औद्योगिक मजदूरो की श्रम-उत्पादिता अमरीकी मजदूरो की श्रम-उत्पादिता का लगभग ११ प्रतिशत थी, परन्तु १६७१ तक यह ७५ से अधिक प्रतिशत तक पहुच गई थी।

संक्षेप मे, पूजीवाद और समाजवाद के बीच प्रतिद्वन्द्विता की प्रगति से इस बात मे कोई सन्देह नही रह गया है कि मानवीय प्रयास के मुख्य क्षेत्र – भौतिक उत्पादन – मे समाजवाद शीघ्र ही पूजीवाद पर विजय प्राप्त कर लेगा।

विश्व समाजवाद के विकास की वर्तमान अवस्था के मुख्य लक्षणो को प्रकट करते हुए १६६६ मे होनेवाला कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो का मास्को सम्मेलन इस नतीजे पर पहुचा था कि "समाजवादी दुनिया अब अपने विकास की उस अवस्था मे प्रविष्ट हो गई है, जब नयी प्रणाली मे निहित

वृहत क्षमताओ का अपूर्व रूप मे व्यापक पैमाने पर उपयोग करने की सभावना पैदा हो गई है। परिपक्व समाजवादी समाज की आवश्यकताओ के अनुरूप बेहतर आर्थिक तथा राजनीतिक तरीको के निकालने तथा उपयोग द्वारा इसकी सम्भावना और अधिक हो जाती है समाजवादी जनवाद मे सुधार, उत्पादक शक्तियो मे वृद्धि, राजनीतिक तथा सास्कृतिक प्रगति, मानवीय और नैतिक मान्यताओ की श्रेष्ठता से दुनिया के मेहनतकश लोगो पर समाजवाद का प्रभाव बढता है और साम्राज्यवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी महत्व के सघर्ष मे इसकी स्थिति सुदृढ होती है।"

**समाजवादी प्रणाली अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे निर्णायक कारक बनती जा रही है**

अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-सतुलन मे समाजवाद के अनुकूल परिवर्तन हो जाने से साम्राज्यवादी समाजवादी राज्यो को ध्यान मे रखने और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो को मनमाने ढग से निपटाने की अपनी अतीत की परम्परा को छोडने के लिए मजबूर हो गए हैं। अब विश्व समाजवाद के सक्रिय भाग लिये बिना किसी भी मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय मामले को तय करना असभव है। मानवजाति के विकास के निर्णायक कारक के रूप मे विश्व समाजवादी प्रणाली का रूपान्तरण वर्तमान विश्व का एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण है। समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण मे आगे अधिक सफलताए प्राप्त करते जाने के साथ-साथ समाज के आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक जीवन मे समाजवादी प्रणाली की भूमिका बढती जायेगी।

सोवियत सघ मे नयी सामाजिक प्रणाली की विजय के साथ मानवजाति की दृष्टि मे वैज्ञानिक समाजवाद केवल एक सिद्धान्त नही, बल्कि जीता जागता सत्य बन गया है। एक नयी ऐतिहासिक शक्ति—शोषण, उत्पीडन और सामाजिक अन्याय को समाप्त करने तथा सहस्राब्दियो से मानवजाति को सताप पहुचानेवाले सभी जटिल सामाजिक प्रश्नो को हल करने के उद्देश्य से आमूल सामाजिक परिवर्तन करनेवाले राष्ट्रो के आदर्श की शक्ति—अस्तित्व मे आ गई है।

अपने आदर्श की शक्ति द्वारा विश्व समाजवादी प्रणाली पूंजीवादी दुनिया के मेहनतकश लोगो के विचारो मे क्रान्ति ला रही है। यह उन्हे पूजीवाद के विरुद्ध सघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करती है और उनके लिए इस सघर्ष को अधिक आसान बनाती है।

विश्व समाजवादी प्रणाली की सफलताओं का साम्राज्यवादी राष्ट्रो की गृह-नीतियो पर भी बडा असर पडता है। समाजवादी देशों द्वारा जनता के रहन-सहन को सुधारने के निमित्त उठाये गये कदमों (वेतन तथा पेंशन की रकम मे वृद्धि करने, कार्य सप्ताह को कम करने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा, सस्कृति, रिहाइशी मकानों आदि के लिए अधिक धन-राशि निर्धारित करने) से पूजीवादी देशों के सत्तारूढ वर्ग भी मजदूरो को रियायते प्रदान करने को विवश हो जाते हैं। चौथे दशक मे अमरीकी लेखक थियोडोर ड्राइसर ने संयुक्त राज्य अमरीका के नये सामाजिक कानून का स्वागत इन शब्दो मे किया, "मैं इसके लिए मार्क्स और लाल रूस को धन्यवाद देता हूं।" अनेक प्रमुख पूजीवादी नेताओं ने स्वीकार किया है कि विश्व समाजवादी प्रणाली की सफलताओं से बडे पैमाने पर बेकारी, रगभेद, आदि पूजीवादी जनवाद के "कलको" को कायम रखना खतरनाक बन जाता है।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्षरत तथा नवस्वतंत्र राष्ट्र अब विश्व समाजवादी प्रणाली के समर्थन तथा सहायता का भरोसा कर सकते हैं। दूसरे राष्ट्रो के मामलों मे हस्तक्षेप करने के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के प्रतिक्रान्तिकारी प्रयासो मे समाजवादी देश अधिकाधिक बाधक बनते जा रहे हैं। विश्व समाजवादी प्रणाली के अस्तित्व मे आने के पहले क्रान्तिकारी राष्ट्रों पर पुरानी व्यवस्था को फिर से कायम करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया की सयुक्त शक्तियो द्वारा फौजी हस्तक्षेप का खतरा सदा मडराता रहता था। परन्तु इस समय किसी भी देश की राष्ट्रीय मुक्ति, लोक जनवादी अथवा समाजवादी क्रान्ति को कुचलने के अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के कुचक्रों को समाजवादी देशो के प्रतिरोध का सामना करना पडता है, जो ऐसे देशो के लोगों को प्रतिक्रान्ति तथा उपनिवेशवाद के निर्यात के विरुद्ध उनके सघर्ष मे सशस्त्र सहायता सहित हर प्रकार की सहायता प्रदान करते हैं।

वर्तमान दुनिया की सबसे बडी समस्या, युद्ध और शान्ति की समस्या के समाधान पर विश्व समाजवादी प्रणाली बहुत बडा प्रभाव डालती है। वह प्रतिक्रिया और युद्ध की शक्तियों के विरुद्ध शान्ति और प्रगति की शक्तियों को समाहृत तथा एकजुट करती है और साम्राज्यवाद की आक्रामक साजिशों के विरुद्ध यह खुद एक दुर्लंघ्य अवरोध है। समाजवादी देशों के

प्रयास मे ही शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे अधिकाधिक ग्राह्य होता जा रहा है, राष्ट्रीय प्रभुसत्ता समानता और प्रादेशिक अखण्डता जैसी अन्तर्राष्ट्रीय धारणाए अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण तथा सार्थक होती जा रही है और अनेक ऐसे छोटे छोटे देश, जिन्हे पहले साम्राज्यवादी राष्ट्रो की नीतियो का अनुसरण करना पडता था, अब स्वतत्र विदेश नीति का अनुसरण करने लगे है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने और साम्राज्यवादी आक्रमण के क्षेत्र को कम करने मे सहायता मिलती है। विश्व समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव से अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ को शान्तिपूर्ण तरीको से हल करने के लिए साम्राज्यवादियो को विवश करने मे सक्षम भौतिक शक्ति अस्तित्व मे आ गई है।

समाजवादी देश उपनिवेशवाद के कट्टर शत्रु तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता और समानता के प्रबल समर्थक है। वे स्वतत्रता के लिए सघर्षरत राष्ट्रो को हर प्रकार की सहायता प्रदान करते है और इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के उभार तथा औपनिवेशिक प्रणाली के पूर्ण विघटन के एक शक्तिशाली कारक है।

जिन राष्ट्रो ने औपनिवेशिक गुलामी के पाश को तोड दिया है और जो राष्ट्रीय अभ्युत्थान तथा आर्थिक स्वाधीनता के लिए सघर्षरत है, विश्व समाजवादी प्रणाली उन्हे सहायता प्रदान करती है। समाजवादी देशो की सफलताए, जिन्होंने साम्राज्यवाद से विरासत में प्राप्त सदियो पुराने पिछडेपन को अल्पकाल मे ही दूर कर दिया है और विभिन्न राष्ट्रो के बीच आर्थिक और सास्कृतिक विकास के अन्तर को काफी हद तक कम कर दिया है, एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के विकासमान देशो के लोगा को प्रोत्साहन दे रही है, और उन्हे साम्राज्यवाद द्वारा उनपर लादे गय आर्थिक और सास्कृतिक पिछडेपन को खत्म करने का रास्ता दिखा रही है। समाजवादी देश अपनी आर्थिक उपलब्धियो की बदौलत इन विकासमान देशो को आर्थिक सहायता प्रदान कर सकते है। समाजवादी और विकासमान देशो के बीच आर्थिक सम्बन्ध तेजी से विकसित हो रहे है।

१९६९ मे मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज मे कहा गया है, "**साम्राज्यवाद-विरोधी सघर्ष मे विश्व समाजवादी प्रणाली ही निर्णायक शक्ति है।** प्रत्येक मुक्ति सघर्ष को विश्व समाजवादी प्रणाली से और सबसे पहले सोवियत सघ से अपरिहार्य सहायता प्राप्त होती है।"

# मज़दूर वर्ग का क्रान्तिकारी संघर्ष

यद्यपि पूंजीवाद के पोषक पूंजीवादी समाज मे "वर्गों के विलोप" और "सामाजिक मेलजोल" की बात करते है, परन्तु श्रम और पूजी के बीच संघर्ष तथा मजदूर वर्ग का क्रान्तिकारी आन्दोलन बहुत व्यापक होता जा रहा है तथा जोर पकडता जा रहा है। अब हम इसी आन्दोलन की चर्चा करेगे, जो विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया की एक बुनियादी धारा है।

वृहत् सामाजिक प्रगति, उत्पादन में वृद्धि और विज्ञान तथा तकनीक की नवीनतम उपलब्धियो से जनित गहन परिवर्तनों का पूंजीवादी देशो मे मजदूर वर्ग की स्थिति, सख्या और गठन तथा इसके संघर्ष की परिस्थितियो, ध्येयों और कार्यभारो पर अनिवार्यत. प्रभाव पडता है। मजदूर वर्ग की सख्या मे जबर्दस्त वृद्धि हुई है· १९वी सदी के मध्य मे ६० लाख से बढकर १९६७ मे वह ३७ करोड़ हो चुकी थी, जिसमे विकसित पूंजीवादी देशो के मजदूरो की सख्या २० करोड तथा विकासमान देशो के मजदूरो की सख्या १७ करोड़ थी।

मज़दूर वर्ग की रचना मे भी परिवर्तन आया है। विशेष रूप से हाल के वर्षों मे प्रशासकीय, तकनीकी और दफ्तरी कर्मचारियो की सख्या मे काफी वृद्धि हुई है। उन्हे अर्ध-सर्वहारा कहना अधिक उपयुक्त होगा, परन्तु उत्पादन मे उनकी स्थिति और भूमिका प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक श्रम मे संलग्न मजदूरो की स्थिति और भूमिका के अधिकाधिक समान होती जा रही है। मज़दूर वर्ग की केवल सख्या ही नही बढती जा रही है, बल्कि वह अधिक सुसगठित भी होता जा रहा है।

कम्युनिस्ट पार्टिया मजदूरो के सघर्ष का नेतृत्व करने मे अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। करोडो मेहनतकश पुरुष और स्त्रिया ट्रेड-यूनियनो तथा युवक, महिला और अन्य जनवादी सगठनो मे एकजुट है। विश्व ट्रेड-यूनियन सघ के सदस्यो की सख्या १४ करोड के लगभग है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति द्वारा शुरू की गयी विश्व के क्रान्तिकारी रूपान्तरण की प्रक्रिया से ऐसी परिस्थिति पैदा हो गयी है, जो अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघर्ष के अनुकूल है। इसके विभिन्न दस्तो के सगठन और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे मजबूती आई है। अक्तूबर क्रान्ति की विजय के बाद अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग आधुनिक युग के केन्द्र मे आ गया हैं।

## १. साम्राज्यवाद–एक शोषक समाज है

पूजीवादी सिद्धान्तकार और राजनीतिज्ञ दावा करते है कि वर्तमान पूजीवाद "लोक पूजीवाद" बनता जा रहा है, कि उसका ध्येय मनुष्य की आवश्यकताओ की पूर्ति है और यह कि उसका अन्तिम लक्ष्य "कल्याणकारी राज्य" की स्थापना है, जिसमे उपभोग का स्तर ऊचा होगा। परन्तु वे यह कहना "भूल जाते है" कि किस मनुष्य, किसके उपभोग और "कल्याण' के लिए पूजीवाद इतना चिन्तित है। आखिर, पूजीवादी समाज म उत्पादन के साधनो का मालिक – पूजीपति – होता है और मेहनत करनेवाला मजदूर और किसान भी तो होता ही है।

समाज म वडे स्वत्वाधिकारियो की सख्या नगण्य ही है, परन्तु वे ही पूजीवादी दुनिया के वास्तविक मालिक है। और उन्ही के बारे मे, उनके कल्याण तथा उपभोग के उनके उच्च स्तर के सम्बन्ध मे ही पूजीवादी सिद्धातकार इतने चिन्तित है। अर्थव्यवस्था, राजनीति और बौद्धिक जीवन मे मुख्य पदो पर पूजीपतियो का ही नियत्रण है और उनके हाथो मे वृहत साधन है। ये चन्द धनी लोग, जिनकी सख्या आबादी का केवल १ प्रतिशत है, सयुक्त राज्य अमरीका की ६० प्रतिशत और ब्रिटेन की ५० प्रतिशत से अधिक राष्ट्रीय सम्पदा को अपने हाथो मे किये हुए है। जाहिर है कि अपनी बेतुकी "आवश्यकताओ" की पूर्ति के लिए पूजीपतियो के पास असीम साधन है।

यह विराट धन-राशि कहा से आती है? ईमानदार श्रम से तो इसे अर्जित करना असभव ही है हिसाब लगाया गया है कि राकफेलरो, मैलनो अथवा दूपाओ का धन इकट्ठा करने के लिए अच्छी पगार पानेवाले अमरीकी मजदूर को कोई १० लाख साल तक अपनी पगार जमा करते जाना होगा। इजारेदारो की दौलत का एकमात्र स्रोत है मजदूरो का शोषण, जो बुनियादी तौर के मानवीय स्वभाव तथा मनुष्य के पावन लक्ष्या के प्रतिकूल एक सर्वथा अमानवीय प्रक्रिया है।

राजकीय-इजारेदारी पूजीवाद शोषण को तीव्र बनाता है। इस सम्बध मे यही कहना पर्याप्त है कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के प्रारभिक वर्षों मे अमरीकी विधायन उद्योग मे अतिरिक्त मूल्य की दर १९३९ के २०३ ३ प्रतिशत, १९२९ के १८६ २ प्रतिशत और १८८९ के केवल १२२ २ प्रतिशत की तुलना मे २६०–३०० प्रतिशत तक पहुच गई थी। १९६७ मे अमरीकी पूजीपतियो ने ६५० लाख मजदूरो के श्रम से अर्जित ३१५ अरब डालर का अतिरिक्त मूल्य हडपा।

घोर शोषण मजदूर वर्ग की स्थिति पर बुरा प्रभाव डालता है। इस स्थिति पर विचार करते समय दो विरोधी प्रवृत्तियो के प्रभाव को ध्यान मे रखना आवश्यक है। इनमे एक है पूजीवादी दुनिया मे मजदूर वर्ग की स्थिति का निरन्तर बिगडते जाना। दूसरी मजदूरो के वर्ग सघर्ष से सम्बद्ध है, जो श्रम पर पूजी के प्रहार का प्रतिरोध करता है। कई विकसित पूजीवादी देशो मे मजदूर पूजी के विरुद्ध अपने कठोर सघर्ष के फलस्वरूप ही रहन-सहन की स्थितियो मे कुछ हद तक सुधार करवा पाये है।

पूजीवादी अर्थशास्त्रियो का दावा है कि वर्तमान पूजीवादी समाज म मजदूर वर्ग के दरिद्रीकरण जैसी कोई बात नही है। परन्तु निस्सन्देह बात ऐसी नही है। पूजीवादी देशो मे निरपेक्ष दरिद्रीकरण है—उपनिवेशवादियो द्वारा दीर्घकाल से शोषित देशो के मजदूरो मे, उत्प्रवासियो, बेकारो, अक्षमो आदि मे, विकसित देशो के उन इलाको के मजदूरो मे, जहा मरणासन्न उद्योग, जैसे कोयला-खनन उद्योग स्थित है, भौतिक दारिद्र्य बढ रहा है। यहा सापेक्षिक दरिद्रीकरण भी है, जिसका अभिप्राय है सदा अधिकाधिक धनी होते जानेवाले पूजीपति वर्ग की तुलना मे मजदूर वर्ग की स्थिति का अधिकाधिक बिगडते जाना।

इस सापेक्षिक दरिद्रीकरण की एक अभिव्यक्ति है इजारेदारियो के मुनाफे मे सतत वृद्धि और राष्ट्रीय आय म मजदूरा क हिस्स म लगातार गिरावट। मिसाल के लिए, १६२४ से १६५२ के बीच सयुक्त राज्य अमरीका मे इजारेदारियो के मुनाफे म ६७० प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि कुल राष्ट्रीय आय मे मजदूरो का हिस्सा १६०० के ५६७ प्रतिशत से गिरकर १६५६ मे ४५ ६ प्रतिशत रह गया। यह निर्विवाद है कि भौतिक माना मे कुछ विकसित पूजीवादी देशो (सयुक्त राज्य अमरीका, जर्मन सघात्मक गणराज्य, ब्रिटेन, इटली, फ्रास, आदि) म श्रमजीवी आबादी के कुछ तबको को उच्च जीवन-स्तर प्रदान करने के लिए यह हिस्सा काफी बडा है। परन्तु, इसे विस्मृत नही करना चाहिए कि उपभोग का यह उच्च स्तर इन्ही देशो की श्रमजीवी आबादी के विशाल बहुमत की कगाली और किसी न किसी कारण से अविकसित रहे देशो की आबादी के भारी बहुमत की घोर गरीबी, न्यूनपोषण और निरक्षरता के साथ साथ है। सयुक्त राज्य अमरीका जैसे धनी देश मे, जैसा कि खुद वहा की सरकार ने स्वीकार किया है, कम से कम ३२० लाख लोग गरीबी मे जीवन गुजारते है। इस स्थिति मे विकासमान देशो मे उपभोग के स्तर के बारे मे क्या कहा जा सकता है, जहा प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आय अमरीका की राष्ट्रीय आय का एक नगण्य अश है? उदाहरणार्थ, लैटिन अमरीका मे प्रतिदिन भूख, बीमारी और जराजन्य कमजोरी से ५,५०० व्यक्तियो की मृत्यु हो जाती है। इसके साथ ही लैटिन अमरीका से सयुक्त राज्य अमरीकी इजारेदारिया प्रतिदिन ५० लाख डालर हजम कर जाती है। प्रति मृत व्यक्ति एक हजार डालर–यह है इन्सानी जानो के रूप मे साम्राज्यवाद नाम की प्रणाली को कायम रखने की कीमत!

पूजीवाद के स्वर्ग सयुक्त राज्य अमरीका म लाखो नीग्रो लोगो का निर्मम शोषण किया जाता है और राजनीतिक तथा मानसिक दृष्टि से उन्हे गुलाम बनाया जाता है। अपूर्ण आकडो के अनुसार पाचवे दशक मे नीग्रो लोगो के शोषण से अमरीकी इजारेदारियो को प्रतिवर्ष ४ अरब डालर प्राप्त हुए।

सयुक्त राज्य अमरीका मे नीग्रो लोगो की जो दयनीय स्थिति है, वही दशा है पश्चिमी यूरोप के विकसित पूजीवादी देशो म बसे लाखो उत्प्रवासियो की, जो रोजी की तलाश मे अपने

घर और अवसर अपने परिवारो को भी छोड देने को विवश हो जाते हैं। वे जिन देशो मे जाते हैं, वहा उनका नृशस शोषण किया जाता है तथा उनके साथ जातीय भेद-भाव बरता जाता है और उन्हे सभी राजनीतिक अधिकारो से वचित रखा जाता है। सर्वाधिक कठिन तथा खतरनाक काम पर लगाने के बावजूद उन्हे समान काम के लिए भी स्थानीय मजदूरो की तुलना मे कम मजदूरी दी जाती है और इस प्रकार वे गरीबी तथा अज्ञान की स्थिति मे जीवन-यापन करते हैं।

साम्राज्यवाद ने जिन्हे उत्पादन से पूर्णतया अलग कर दिया है और जो इस प्रकार काम करने की सभावना से वचित कर दिये गये हैं, ऐसे दसियो लाख बेकार मानवीय जीवन का सपना ही देख सकते हैं। "उपभोग के उच्च स्तर वाले" समाज से बहिष्कृत इन सतप्त व्यक्तियो के भाग्य मे लिखा है घोर गरीबी, अपमान और नैराश्य।

अधिकाधिक मुनाफा कमाने के प्रयास मे इजारेदारिया मजदूरो से काम के प्रखरीकरण की नीति को अमल मे ला रही है। मजदूर के स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पडता है। वह थककर चूर हो जाता है और समय से पहले ही वृद्ध हो जाता है। औद्योगिक दुर्घटनाए और बीमारिया बहुत ही व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही हैं तथा मानसिक सतुलनहीनता एक सामान्य सामाजिक अभिशाप बन गई है। मिसाल के लिए, सयुक्त राज्य अमरीका मे प्रतिवर्ष लगभग २० लाख औद्योगिक दुर्घटनाए होती हैं, जिनमे १४–१५ हजार प्राणघातक होती हैं, अस्पताल मे भर्ती होनेवालो मे प्राय आधे मानसिक रोगो के मरीज होते हैं, परन्तु व्यवस्था केवल ५६ प्रतिशत रोगियो के उपचार की है।

पूजीवाद मजदूरो के स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नही देता। सामान्यतया डाक्टरी इलाज के लिए पैसा देना होता है और यह बहुत महगा है। सयुक्त राज्य अमरीका मे चिकित्सा पर प्रतिवर्ष प्रति परिवार को औसतन एक महीने की पगार खर्च करनी पडती है। पूजीवादी देशो मे मेहनतकश लोगो को रिहायशी मकानो की घोर कमी का सामना करना पडता है और वृद्धावस्था पेंशन बहुत ही कम है।

इसके अतिरिक्त, बौद्धिक कार्यकलाप पर एकाधिकार कायम करके सत्तारूढ वर्ग श्रमजीवियो को शिक्षा, विज्ञान और सस्कृति से वचित रखकर मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाते हैं। मजदूरो का मानसिक विकास जिस

सीमा तक उनके हितो के अनुरूप होता है, बस वही तक वे इसपर ध्यान देते है और मजदूरो तथा किसानो के बच्चो की शिक्षा को केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण तक सीमित रखने का प्रयास करते है, ताकि मालिको के लिए श्रम करने के अलावा उनके सम्मुख और कोई रास्ता न हो।

वर्तमान युग के पूजीवाद के निकृष्टतम पहलू, अर्थात् अर्थव्यवस्था के फौजीकरण मे साम्राज्यवाद का अमानवीय सारतत्व बहुत ही तीव्र रूप म प्रकट होता है। मजदूरो के शारीरिक तथा मानसिक श्रम से पैदा की गई विशाल सम्पदा का उपयोग उनके जीवन-स्तर को उचा उठाने की जगह मौत तथा विनाश के भयानक हथियारो के निर्माण के लिए किया जाता है। सयुक्त राज्य अमरीका की फौजी मशीनरी तथा युद्ध सम्बन्धी उद्योग मे ६० लाख लोग अथवा कुल श्रम शक्ति का ११ प्रतिशत लगा हुआ है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले के दो दशको की अपेक्षा युद्ध के बाद की प्रथम दो दशाब्दियो मे सयुक्त राज्य अमरीका ने फौजी कार्यो पर ४८ गुना अधिक व्यय किया। दस वर्षों के दौरान (१९५९ से १९६८ तक) अमरीका का युद्ध सम्बन्धी व्यय ५५१ अरब डालर तक पहुच गया था। कुल मिलाकर, पूजीवादी दुनिया हथियारबन्दी की होड पर प्रतिवर्ष बहुत बडी धन-राशि— १०० अरब डालर से अधिक व्यय करती है। यह कल्पना करना भी कठिन नही है कि यदि यह वृहत् धन राशि शान्तिपूर्ण कार्यो पर लगाई जाये, तो विकासमान देशो की आर्थिक दशा मे कितने बडे परिवर्तन हो सकते है और लोगो के रहन-सहन की स्थिति म कितना सुधार हो सकता है। परन्तु साम्राज्यवाद के अन्तर्गत यह असभव है, क्योकि इजारेदारो के लिए सभी उद्योगो की अपेक्षा शस्त्रास्त्र उद्योग अधिक लाभदायक है।

विज्ञान और तकनीक की वर्तमान उपलब्धियो से जनता के भौतिक तथा सास्कृतिक स्तर को उचा उठाने की अकल्पनीय सभावनाए पैदा हो गई है। परन्तु इजारेदारिया न केवल मनुष्य के हितो मे उनके उपयोग म बाधा डालती है, बल्कि विनाशकारी युद्ध के साधनो के रूप मे उनका इस्तेमाल करके अकसर उनका प्रयोग उसके विरुद्ध ही करती है।

**वर्तमान पूजीवाद एक ऐसा समाज है, जिसमे मुट्ठीभर इजारेदार मेहनतकश लोगों, आबादी के भारी बहुमत का निर्मम शोषण करते है।**

इसी कारण, बढते हुए दमन और आतक के बावजूद पूजीवादी देशो का मजदूर वग तथा सभी मेहनतकश लोग अपनी जनवादी उपलब्धियो के

लिए लडते है और शोषण के तीव्रीकरण तथा श्रम और रहन-सहन की स्थितियो के बिगडने के विरुद्ध सघर्ष करते है। वे प्रतिक्रियावादी शक्तियो के दबाव, फौजीकरण की नीति तथा तापनाभिकीय युद्ध की तैयारी का विरोध करते है।

## २ वर्तमान मजदूर आन्दोलन के बुनियादी लक्षण

सर्वहारा वर्ग का पूजीपतियो के विरुद्ध सघर्ष पूजीवाद के आम सकट के एक नये दौर मे और विश्व के विकास मे विश्व समाजवादी प्रणाली के निर्णायक कारक बन जाने के समय हो रहा है। मजदूर आन्दोलन इस समय अनुकूल स्थिति मे है। सोवियत सघ एव विश्व समाजवादी प्रणाली की सफलताओ, विश्व पूजीवाद के बढते हुए सकट, कम्युनिस्ट पार्टियो के वर्द्धमान प्रभाव और सुधारवाद के विचारधारात्मक ध्वस से वर्ग-सघर्ष की परिस्थितियो मे मजदूर वर्ग के अनुकूल मूलभूत परिवर्तन हो गये हैं। साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी नीति और विशेष रूप से युद्ध का उन्माद पैदा करने तथा हथियारबन्दी की होड को तीव्र करने की नीति के प्रति, जिसका भार मुख्यत साधारण जनसमुदाय को ही वहन करना पडता है, मेहनतकशो के असतोष से मजदूर आन्दोलन के लिए और अधिक सभावनाए पैदा होती जा रही हैं। अधिकाधिक मजदूर यह महसूस करते जा रहे हैं कि समाजवाद ही इस स्थिति से बाहर निकलने का एकमात्र मार्ग है और इससे पूजीपति वर्ग के विरुद्ध सघर्ष मे उनके सक्रिय भाग लेने के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा होती है। समाजवाद की उपलब्धियो से सर्वहारा आन्दोलन की शक्ति बढती है। ये उपलब्धिया पूजीवादी देशो के सर्वहारा को अपने सघर्ष मे अनुप्राणित करती है तथा समाजवाद की भावी विजय मे विश्वास पैदा करती है।

परन्तु यह भी नही भुला देना चाहिए कि विकसित पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग को अपने सघर्ष मे गभीर कठिनाइयो का भी सामना करना पडता है। उसका शत्रु अनुभवी पूजीपति वर्ग है, जो दशाब्दियो और यहा तक कि शताब्दियो से मजदूरो को कुचलने तथा उनकी पातो मे फूट डालने

की "कला" का ज्ञान प्राप्त करता रहा है और जिसके पास काफी भौतिक साधन, शक्तिशाली फौज, पुलिस और विचारधारात्मक मशीनरी है। समाजवादी देशों के भूतपूर्व पूजीपतियो की पराजयो से अन्य देशो के पूजीपति वर्ग ने शिक्षा ग्रहण की है। उसने चाल चलने और मजदूरो की कुछ श्रेणियो को घूस देने का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है। इसके साथ ही जब वह अपने विशेषाधिकारो को कायम रखने के लिए बल प्रयोग आवश्यक समझता है, तो बेहिचक ऐसा करता है। यह सडको और चौरा हो का रक्तरजित करते हुए प्रदर्शनकारियो पर गोली-वर्षा करता है, अश्रुगैस, कोडो आदि का प्रयोग करता है।

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन ने भी साम्राज्यवाद और मजदूरो के बीच उसके भाडे के टट्टुओ के विरुद्ध अपने सघर्ष के दौरान प्रचुर अनुभव सचित किया है। वह विचारधारात्मक दृष्टि से अधिक प्रौढ, सुसगठित और अधिक जुझारू हो गया है। मेहनतकश लोगो के बीच कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो का प्रभाव बढता जा रहा है। ट्रेड-यूनियन अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। अपने सगठनो से निदेशित मजदूर वग दृढता के साथ पूजीवादी राज्य के अत्याचारो का प्रतिरोध करता है और सघर्ष मे साहस, दृढता तथा अनुशासन की वढती हुई भावना एव एकता प्रदशित करता है।

मजदूर वर्ग अब अपने अधिकारो और जनवाद तथा समाजवाद के लिए अपने सघर्ष म अत्यत भिन्न भिन्न तरीके अपनाता है हडताल, प्रदर्शन, सभाए, सम्मेलन, आदि। वह ससदीय सघर्ष मे भी भाग लेता है।

**हडताल**

वतमान परिस्थितियो मे सघर्ष के जिस तरीके का सबसे व्यापक इस्तेमाल किया जाता है, वह है परम्परागत हडताल। पूजी और श्रम के हितो के बीच सामजस्य के बारे मे पूजीवादी एव सुधारवादी नेताओ की चर्चा वढते हुए हडताल आन्दोलन से झूठी साबित हो जाती है। जहा युद्धपूर्व दो दशाब्दियो (१६१६–१६३६) मे *७४५ लाख लोगो ने हडतालो मे भाग लिया था*, वहा युद्धोत्तरकालीन दो दशको (१६४६–१६६६) मे इनकी सख्या बढकर २६३० लाख हो गई। कोई भी पूजीवादी देश हडताल आन्दोलन के प्रभाव से मुक्त नही है। लैटिन अमरीका मे यह विशेष तेजी से फैल रहा है, जो दशको से अमरीकी इजारेदारियो के नृशस जुए से पीडित है।

इजारेदारियो की सेवा मे सलग्न पूजीवादी राज्य खुद एक बडा स्वत्वाधिकारी है और वह अपनी सेवा मे सलग्न मजदूर वर्ग के बडे भाग का स्वय भी शोषण करता है। सामाजिक सुरक्षा, कर प्रणाली, ट्रेड-यूनियन कायकलाप आदि के प्रश्नो पर मजदूरो का राज्य से सघर्ष होता है। व देखते हैं कि राज्य सदा और सर्वत्र इजारेदारियो की रक्षा करता है। बहुधा हडतालो, प्रदर्शनो और सभाओ के दौरान पुलिस तथा कभी-कभी फौजो से भी मुठभेड होती है। राजकीय इजारेदारी पूजीवाद उस अवस्था तक विकसित हो गया है, जिसमें वर्ग अन्तर्विरोध एक ओर मजदूरो और दूसरी ओर इजारेदारियो तथा राज्य की सयुक्त शक्ति के बीच अन्तर्विरोधो का रूप ग्रहण करते जा रहे हैं। फलत वर्ग-सघर्ष का दायरा अधिक व्यापक और जिन मसलो को लेकर यह सघर्ष होता है, उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत होता जा रहा है।

कल मजदूर आठ घटे के कार्य दिवस, बुनियादी ट्रेड-यूनियन अधिकारो, सामाजिक सुरक्षा आदि की मागें करते थे। आज मजदूर वर्ग राजनीतिक मागो को मजूर कराने के लिए सघर्ष कर रहा है, जो अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और जिनसे पूजीवाद को अधिक चोट पहुचती है। वह स्थाई शान्ति का पोषक है, हथियारबन्दी की होड का विरोधी है, मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के शान्तिपूर्ण समाधान, जनवाद के सुदृढीकरण तथा विस्तार और सभी के लिए व्यापक राजनीतिक अधिकारो की माग करता है। मजदूर वर्ग की कार्रवाइयो का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रो के राष्ट्रीयकरण, उनके प्रबन्ध के जनवादीकरण तथा सामाजिक सुरक्षा प्रणाली मे और अधिक सुधार के लिए सघर्ष। सर्वहारा वर्ग और उसका क्रान्तिकारी हरावल – मार्क्सवादी पार्टिया – प्रतिक्रिया तथा आक्रमण के गढ और हथियारबन्दी की होड एव मजदूरो की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार इजारेदारियो पर मुख्य प्रहार करते हैं।

मजदूर वर्ग के विरुद्ध अपने सघर्ष मे – विशेष रूप से पूजीवाद के आम सकट और विश्व समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव के समय से – पूजीपति वर्ग एक भारी नैतिक तथा राजनीतिक पराजय खा चुका है पहले वह जीवन की बेहतर परिस्थितियो, सामाजिक सुरक्षा, आम शिक्षा, डाक्टरी इलाज आदि से सम्बन्धित जिन मागो को एकदम अस्वीकार कर दिया करता था, अब वह उन्हे औपचारिक रूप से उचित तथा न्यायसगत मानने के लिए विवश हो गया है।

१९५५ मे वहा ६१ लाख मजदूरो ने हडताल की थी, १९६० मे इनकी सख्या २ करोड तथा १९६८ मे ५८ करोड तक पहुच गई थी। १९६८ की मई मे फ्रास मे १ करोड और १९६९ की मई मे इटली मे १ करोड २० लाख मजदूरो ने हडताल की थी।

साथ ही हडताल आन्दोलन अधिक लचीला और विविध रूप वाला भी होता जा रहा है। आम हडतालो के अलावा, मजदूर अब चुनौती हडताले, बढते दवाव वाली हडताले (जिनमे हडतालियो की पातो मे क्रमिक रूप मे अधिकाधिक मजदूर शामिल होते जाते है), किसी एक उद्योग की मुख्य फैक्टरियो तथा कारखानो मे होनेवाली हडताले, निश्चित समय पर होनेवाली नियमित साकेतिक हडताले (हर दूसरे दिन या प्रतिदिन कुछ घटे तक चलनेवाली हडताले, आदि), एक उद्योग से दूसरे उद्योग मे फैलनेवाली हडताले, भी करने लगे है। हडताल आन्दोलन के विविध रूपो का इस्तेमाल करके मजदूर अपनी मागो की पूर्ति के हेतु अपने मालिको को विवश करने के लिए उनपर भारी दबाव डाल सकते है। हडताल आन्दोलन से मजदूरो के बीच सघर्ष सम्बन्धी घनिष्ठ एकता की प्रवृत्ति भी अधिकाधिक स्पष्ट रूप मे प्रकट होती है।

इस प्रकार हडतालो का व्यापक दायरा, संगठन और लचीलापन वर्तमान मजदूर आन्दोलन का एक मुख्य लक्षण है।

सघर्ष के आर्थिक और राजनीतिक रूपो का समन्वय

वर्तमान मजदूर आन्दोलन का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण है संघर्ष के आर्थिक और राजनीतिक रूपो का अभिन्न समन्वय। मजदूरो की मागे आर्थिक सीमा को अधिकाधिक पार कर राजनीतिक स्वरूप ग्रहण करती जा रही है। १९५८ मे राजनीतिक हडतालो में ४४ प्रतिशत मजदूरो ने भाग लिया था, तो १९६२ मे यह सख्या ६४ प्रतिशत हो गयी थी।

राजकीय-इजारेदारी पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक क्षेत्र मे केवल अलग-अलग उद्योगपतियो और उनके सघो द्वारा ही नही, बल्कि पूजीवादी राज्य द्वारा भी मजदूरो का विरोध किया जाता है, और इस कारण उनका आर्थिक सघर्ष वस्तुगत रूप मे राजनीतिक सघर्ष बन जाता है। विशुद्ध आर्थिक मागो सम्बन्धी सघर्ष मे मजदूर वर्ग महसूस करने लगता है कि राजनीतिक सघर्ष अपरिहार्य है। अनेक देशो मे निजी

इजारेदारियो की सेवा मे सलग्न पूजीवादी राज्य खुद एक बडा स्वत्वाधिकारी है और वह अपनी सेवा मे सलग्न मजदूर वर्ग के बडे भाग का स्वय भी शोषण करता है। सामाजिक सुरक्षा, कर प्रणाली, ट्रेड-यूनियन कार्यकलाप आदि के प्रश्नो पर मजदूरो का राज्य से सघर्ष होना है। वे देखते हैं कि राज्य सदा और सर्वत्र इजारेदारियो की रक्षा करता है। बहुधा हडतालो, प्रदर्शनो और सभाओ के दौरान पुलिस तथा कभी-कभी फौजो से भी मुठभेडे होती है। राजकीय-इजारेदारी पूजीवाद उस अवस्था तक विकसित हो गया है, जिसमें वर्ग अन्तर्विरोध एक ओर मजदूरो और दूसरी ओर इजारेदारियो तथा राज्य की सयुक्त शक्ति के बीच अन्तर्विरोधो का रूप ग्रहण करते जा रहे हैं। फलत वर्ग-सघर्ष का दायरा अधिक व्यापक और जिन मसलो को लेकर यह सघर्ष होता है, उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत होता जा रहा है।

कल मजदूर आठ घटे के कार्य-दिवस, बुनियादी ट्रेड-यूनियन अधिकारो, सामाजिक सुरक्षा आदि की मागें करते थे। आज मजदूर वर्ग राजनीतिक मागो को मजूर कराने के लिए सघर्ष कर रहा है, जो अधिक महत्त्वपूर्ण है और जिनसे पूजीवाद को अधिक चोट पहुचती है। वह स्थाई शान्ति का पोषक है, हथियारबन्दी की होड का विरोधी है, मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के शान्तिपूर्ण समाधान, जनवाद के सुदृढीकरण तथा विस्तार और सभी के लिए व्यापक राजनीतिक अधिकारो की माग करता है। मजदूर वर्ग की कारवाइयो का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रो के राष्ट्रीयकरण, उनके प्रबन्ध के जनवादीकरण तथा सामाजिक सुरक्षा प्रणाली मे और अधिक सुधार के लिए सघर्ष। सर्वहारा वर्ग और उसका क्रान्तिकारी हरावल – मार्क्सवादी पार्टियां – प्रतिक्रिया तथा आक्रमण के गढ और हथियारबन्दी की होड एव मजदूरो की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार इजारेदारियो पर मुख्य प्रहार करते हैं।

मजदूर वर्ग के विरुद्ध अपने सघर्ष मे – विशेष रूप से पूजीवाद के आम सकट और विश्व समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव के समय से – पूजीपति वर्ग एक भारी नैतिक तथा राजनीतिक पराजय खा चुका है पहले वह जीवन की बेहतर परिस्थितियो, सामाजिक सुरक्षा, आम शिक्षा, डाक्टरी इलाज आदि से सम्बन्धित जिन मागो को एकदम अस्वीकार कर दिया करता था, अब वह उन्हे औपचारिक रूप से उचित तथा न्यायसगत मानने के लिए विवश हो गया है।

निस्सन्देह, मजदूरो की मागो का औचित्य उन्हे शान्त करने और उनके सुधारवादी नेताओ के अवसरवाद एव नग्न गद्दारी के उपयोग द्वारा उनके सगठनो पर काबू पाने के उद्देश्य से ही स्वीकार किया गया है। इसमे कुछ हद तक पूजीपति वर्ग सफल रहा है, परन्तु समय गुजरने के साथ उसकी यह नीति उसके लिए ही घातक सिद्ध होने लगी है। वादे करने मे तो वह उदारता प्रदर्शित करता है, परन्तु उनका पालन नही करता। जहा-तहा पीछे हटने और अपने उत्पीडनकारी तरीको को नरम करने के लिए मजबूर हुआ पूजीपति वर्ग आज जो दे देता है, कल उसे वापस ले लेता है, वादो और प्रस्तावो की जगह वह धमकियो तथा नग्न आतक पर उतर आता है। इसी कारण **मजदूरो का फौरी आर्थिक मागो का सघर्ष आमूल सामाजिक और राजनीतिक मागो के सघर्ष के साथ, समूचे तौर पर पूजीवादी प्रणाली के उन्मूलन के सघर्ष के साथ जुडता जा रहा है।**

इस परिस्थिति मे मजदूर वर्ग पूजीपति वर्ग पर अधिकाधिक प्रहार करता जा रहा है, और केवल अपने ही हितो नही, बल्कि सारी जनता के हितो के समर्थक वर्ग के रूप मे, एक मानी पथप्रदर्शक शक्ति के रूप मे उसकी भूमिका अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है।

**मजदूर वर्ग— उपनिवेशवाद का शत्रु**

पूजीवादी देश मे मजदूरो की मागे अपने ही देश के हितो तक सीमित नही होती, वे अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं। विकसित पूजीवादी देशो के मजदूरो द्वारा उत्पीडित राष्ट्रो की मुक्ति और **राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समर्थन** मे किये जानेवाले सघर्ष से यह बात विशेषकर प्रकट होती है।

पूजीपति वर्ग लाभ और अधिलाभ कमाने के लिए औपनिवेशिक तथा नव औपनिवेशिक उत्पीडन का रास्ता अपनाता है। विकासमान देश विश्व पूजीवाद के शिकार हैं। इसके साथ ही, मजदूरो के शोषण पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को कायम रखने के साधन के रूप मे औपनिवेशिक उत्पीडन खुद साम्राज्यवादी देशो म पूजीवादी प्रणाली को सुदृढ बनाने के साधन के रूप मे काम आता है। साम्राज्यवादी युद्धो और हथियारबन्दी की होड के भार को शासक देशो के मेहनतकश उठाते हैं। यही उत्पीडित **राष्ट्रों तथा विकसित पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग की सयुक्त साम्राज्यवाद-विरोधी कार्रवाई** का कारण है। उदाहरणार्थ, कम्युनिस्टो के नेतृत्व म

फ्रास के प्रगतिशील मजदूरो ने अफ्रीकी उपनिवेशो तथा हिन्दचीन, सीरिया, लेबनान, मार्तिनिके, ग्वादेलूप और फ्रासीसी ओशीनिया के स्वतत्रता सग्राम का समर्थन किया। औपनिवेशिक शासन-काल मे फ्रासीसी मजदूरो ने उपनिवेशो के मजदूरो की मजदूरी बढाने, फ्रासीसी सामाजिक कानूनो को वहा भी लागू करने, उन्हे पूर्ण राजनीतिक अधिकार प्रदान करने, किसानो की मदद करने और जमीन का समुचित पुनर्वितरण करने की माग की। तथापि कम्युनिस्ट पार्टी की मुख्य माग उपनिवेशो के आत्म-निर्णय और स्वाधीनता के अधिकार को स्वीकार करना ही थी। फ्रासीसी उपनिवेशो के लोगो के मुक्त होने मे फ्रासीसी सर्वहारा वर्ग का प्रयास और योगदान भी काफी महत्त्वपूर्ण था। अन्य पूजीवादी देशो के मजदूर और कम्युनिस्ट पार्टिया उत्पीडित राष्ट्रो के सर्वांगीण समर्थन की ऐसी ही नीति का अनुसरण करती रही है और आज भी कर रही है। वे दृढता से उपनिवेशवाद के पुराने और नये–सभी रूपो के विरुद्ध है।

मजदूर वर्ग राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के सभी रूपो को सर्वतोमुखी समर्थन प्रदान करता है और उत्पीडित राष्ट्रो की न केवल दासता के पाश को तोडने, वल्कि नवप्राप्त स्वतत्रता की रक्षा करने मे भी सहायता करता है। अमरीकी आक्रमणकारियो के विरुद्ध न्यायोचित सशस्त्र सघर्ष मे वियतनामी जनता को सभी देशो के मजदूरो द्वारा प्रदत्त राजनीतिक, नैतिक और भौतिक समर्थन से यह बात स्पष्ट रूप मे सिद्ध होती है। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग ने अरब देशो के विरुद्ध इजरायली आक्रमण की भर्त्सना की है और वह अफ्रीकी राष्ट्रो के मुक्ति सघर्ष का हर प्रकार से समर्थन करता है।

**इजारेदारी विरोधी सयुक्त मोर्चा**

मजदूर वर्ग की मुख्य शत्रु पूजीवादी इजारेदारिया है और इस कारण यह उन्ही पर मुख्य प्रहार करता है। बडी इजारेदारियो की सत्ता मजदूर वर्ग ही नही, वल्कि राष्ट्र के सभी तबको के लिए अधिकाधिक दमनकारी होती जा रही है। पूजी और श्रम के बीच पूजीवादी समाज के मुख्य अन्तर्विरोध के अलावा इजारेदारियो और सम्पूर्ण जनता के बीच भी अन्तर्विरोध है, जो अधिक तीव्र होता जा रहा है। इजारेदारी सत्ता के उन्मूलन मे मजदूर वर्ग, किसानो, बुद्धिजीवियो और शहरी निम्न तथा दरमियानी पूजीपति वर्ग–सभी की गहरी अभिरुचि है। इससे पूजीवादी

इजारेदारियो के जुए का विरोध करनेवाले सभी जनवादी आन्दोलनो का एक ही शक्तिशाली इजारेदारी विरोधी मोर्चे मे मविलयन सुगम हो जाता है।

इजारेदारिया मजदूरो ही नही, बल्कि किसानो, दस्तकारो, छोटे छोटे दुकानदारो और दफ्तरी कर्मचारियो की निम्न तथा दरमियानी श्रेणियो के अधिकाश का भी निमम शोषण करती है। एक समय पूजीवादी प्रणाली के पोषक छोटी खेती व गुणो का बखान किया करते थे। परन्तु आजकल इजारेदारिया कृषि के क्षेत्र पर भी हावी हो गई है और दसियो लाख किसानो को बेदखल कर रही है। मिसाल के लिए, सयुक्त राज्य अमरीका म प्रतिवर्ष करीब १ लाख फार्म उजाड दिये जाते है। हर साल कम स कम ६ लाख किसान और उनके परिवार, विशेष रूप से अश्वेत, शहरो की गदी तथा निर्धन बस्तियो की आबादी को बढाने के लिए चले आते है। कनाडा से आस्ट्रेलिया और स्वीडन से इटली तक सारी पूजीवादी दुनिया के बारे मे यही बात कही जा सकती है। छोटी खेती घोर अभाव की स्थिति मे तथा असहनीय श्रम के सहारे ही कायम है।

बडे पूजीपतियो के इस आघात से किसान सगठित होने के लिए विवश हो गये है। इजारेदारियो तथा पूजीवादी राज्य के उत्पीडन के विरुद्ध किसान सघर्ष के सर्वहारा तरीको, मजदूर वर्ग के हरावल दस्तो के अनुभव का उपयोग करते है।

फास मे हाल के वर्षो मे हुए किसानो के कई आन्दोलनो मे लाखो लोग शामिल हुए थे। उन्होने जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए विरोध प्रकट करने के प्रभावकारी तरीके निकाले। उन्होंने कुछ शहरो से आने-जाने के मार्गों को गाडियो तथा ट्रैक्टरो से रोककर, टेलीफोन लाइनो को भग करके और प्रशासकीय कार्यालयो पर धरने देकर कुछ नगरो को एक तरह से घेर सा लिया था। मजदूरो के सगठनो ने किसानो के साथ अपनी एकता प्रकट की और अपना समर्थन प्रदान किया। इटली, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, यूनान और अन्य देशो मे भी किसान तथा खेत-मजदूर बडे पैमाने पर सघर्ष कर रहे है और फासीसियो की भाति हडतालो मे भाग ले रहे है, नगरो की नाकेबदी कर रहे है, सडको पर यातायात को रोक रहे है और नगरो मे विराट सभाए कर रहे है। मजदूरो और किसानो के सगठन एकसाथ मिलकर सघर्ष और एक दूसरे की सहायता कर रहे है।

शहरो मे इजारेदारिया छोटे स्वत्वाधिकारियों को भी तबाह करती है। वे कुटीर उद्योगो को नष्ट कर देती है और छोटे औद्योगिक तथा वाणिज्यिक प्रतिष्ठानो को अधीनस्थ बना लेती है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति के विकास के साथ-साथ अधिकाधिक बुद्धिजीवी—इंजीनियर, तकनीशियन, वैज्ञानिक और दफ्तरी कर्मचारी उत्पादन मे, नियोजन तथा डिजाइनिंग मे और आर्थिक प्रबध मे प्रत्यक्ष भाग ले रहे है और मजदूरो के साथ ही उनका भी शोषण हो रहा है। अपने स्वार्थपूर्ण लक्ष्यों को पूरा करने मे वैज्ञानिको, कलाकारो और लेखको के श्रम का उपयोग करते हुए पूजीपति विज्ञान तथा कला से भी लाभ उठाते है। इजारेदारी उत्पीडन और पूजीवादी राज्यो की जन विरोधी, प्रतिक्रियावादी नीति से बुद्धिजीवी लोग भी पूजी के विरुद्ध सघर्ष मे सक्रिय रूप से भाग लेने को विवश हो जाते है। मिसाल के लिए, १९६८ की गर्मी मे फास मे हुई आम हडताल से यह बात सिद्ध हो गयी, जिसमे मजदूरों के साथ-साथ अपने अधिकारों के लिए दफ्तरी कर्मचारियो, इजीनियरों, तकनीशियनों, कलाकारों और विद्यार्थियों ने भी भाग लिया था।

पूजीवादी प्रणाली आर्थिक दृष्टि से ही नही, बल्कि शिक्षा, विज्ञान और सस्कृति के क्षेत्र मे जनसाधारण के प्रवेश को प्रतिबन्धित करके मानसिक दृष्टि से भी उन्हे लूट रही है। पूजीवादी ससदें फौजी बजटो को स्वीकार करने अथवा इजारेदारियो को आर्थिक सहायता और विशेषाधिकार प्रदान करने के मामले मे तो बडी उदारता प्रदर्शित करती हैं। परन्तु जब उन्हे शिक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए धन और शिक्षको तथा चिकित्सा कर्मचारियों के लिए वेतन-मान निर्धारित करना पडता है, तो वे असाधारणत. खसीस बन जाती हैं। १९४६ की जनवरी से १९६७ के अगस्त तक सयुक्त राज्य अमरीका का सरकारी व्यय कुल १५७८ अरब डालर था। इस रकम मे से ९०४ अरब डालर (५७ प्रतिशत से अधिक) फौजी तैयारियो तथा युद्ध पर और केवल ९६ अरब डालर (६ प्रतिशत के लगभग) शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा और अन्य आवश्यकताओ पर व्यय किया गया।

इन परिस्थितियो मे वेतन बढाने और स्कूलो, विश्वविद्यालयो तथा अस्पतालो के लिए अधिक धन निर्धारित करने की मागो को मनवाने के लिए शिक्षको, प्रोफेसरो और डाक्टरो की कार्रवाइया अविच्छिन्न रूप मे

शान्ति एव जनवाद के सघर्ष से सम्बद्ध हो जाती हैं। बुद्धिजीवियो तथा दफ्तरी कर्मचारियो द्वारा सघर्ष के सर्वहारा रूपो का उपयोग पूजीवादी देशो मे एक सामान्य बात होती जा रही है।

मजदूर वर्ग अपनी प्रत्यक्ष आर्थिक मागो और अपने अधिकारो के लिए ही सघर्ष नही करता। वह अपने जुझारू कार्यकलाप को कारखानो और मिलो तक ही सीमित नही रखता। वह सम्पूर्ण जनता के हरावल, सभी जनवादी शक्तिया के नेता के रूप मे उन्हे सघर्ष के लिए एकजुट तथा तैयार कर रहा है। वह सभी मेहनतकश और शोषित लोगो को सघर्ष के लिए शिक्षा प्रदान कर रहा है और "कथनी मे ही नही, बल्कि अपने कार्यों से, राजनीतिक और आर्थिक मागो मे समन्वय कायम करनेवाले आम क्रान्तिकारी सघर्ष से'* उन्हे शिक्षा प्रदान कर रहा है।

**सामाजिक आधार का विस्तार और प्रगतिशील शक्तियों का एक ही साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा कायम करने की प्रवृत्ति**—मजदूर वर्ग के वर्तमान क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक और महत्त्वपूर्ण लक्षण है।

**फूट का उन्मूलन—मुख्य कार्यभार**

यद्यपि वर्तमान मजदूर आन्दोलन प्रगति करता जा रहा है, तथापि इस तथ्य को भी अस्वीकार नही किया जा सकता कि पूजीवाद के विरुद्ध अपने सघर्ष मे विभिन्न देशो के मजदूरो को कभी कभी शिकस्तो का सामना करना पडता है और यह कि यत्र-तत्र वर्ग-सघर्ष मे प्रतिक्रियावादी शक्तिया का पलडा भारी हो जाता है। इन शिकस्तो का एक कारण यह है कि पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग को बहुत ही विषम परिस्थितियो मे अपना सघर्ष चलाना पडता है। यह अच्छी तरह ज्ञात है कि उसका शत्रु सम्पन्न तथा सुसगठित है और इससे भी बढकर उसके कब्जे मे शक्तिशाली राजकीय मशीनरी, दमन तथा विचारधारात्मक बहकावे की मशीनरी है। परन्तु मजदूर वर्ग की शिकस्तो और प्रतिक्रियावादी शक्तियो की सफलताओ का मुख्य कारण है **मजदूर आन्दोलन मे फूट**, जिसके जिम्मेदार अवसरवादी ही हैं।

स्वाभाविक ही है कि पूजीपति वर्ग मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी कार्यकलाप को कमजोर बनाने तथा कुठित करने के उद्देश्य से उसके बीच

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'क्रान्तिकारी सर्वहारा का जुलूस'।

फूट को बनाये रखने और बढाने के निमित्त हर प्रयास करता है। इस स्थिति मे यह बहुत ही आवश्यक है कि मजदूर वर्ग से फूट दूर की जाये, उसकी पातों मे घनिष्ठ एकता कायम हो और पूजी की सत्ता के विरुद्ध अपने संयुक्त संघर्ष मे **सभी साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियां एकजुट हो।** ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और अन्य पूजीवादी देशो की कम्युनिस्ट पार्टिया मजदूर वर्ग मे फूट को दूर करना आज का एक महत्त्वपूर्ण कार्यभार मानती है। कम्युनिस्ट कुछ सकीर्ण दलगत स्वार्थों के आधार पर नही, जैसा कि सामाजिक-जनवादी नेता दावा करते है, बल्कि खुद मजदूर वर्ग के हितो, सामाजिक-जनवादी तथा अन्य पार्टियों एव संगठनों से सम्बद्ध श्रमजीवी लोगों के हितो, संक्षेप मे, इजारेदारी सत्ता के विरुद्ध, जनवादी सुधारो, शान्ति, सामाजिक प्रगति और समाजवाद के लिए सघर्ष के संयुक्त हितो की रक्षा मे एकता का प्रयास करते है।

मजदूर आन्दोलन की एकता और साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चा कायम करने के लिए संघर्ष – साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष का अविच्छिन्न अग है।

**जनवाद के लिये संघर्ष – समाजवाद के लिये संघर्ष का अविच्छिन्न अंग है**

साम्राज्यवाद के वैचारिक पूजीवादी देशों की स्वतंत्रता और जनवाद के बारे मे बहुत बाते बघारते है और दावा करते है कि सत्तारूढ पूंजीपति वर्ग अधिनायकत्व के विरुद्ध है। व्यक्ति और राज्य के बीच सम्बन्धों के बारे मे उनके पास कहने को बहुत कुछ है, परन्तु कौनसा वर्ग राज्य पर शासन करता है, इस मुख्य प्रश्न के सम्बन्ध मे वे मुह नही खोलते। वस्तुत: पूजीवादी देशो मे इजारेदारी पूजी का, बहुमत पर अल्पमत का अधिनायकत्व कायम है; इजारेदारी पूजी अपनी राजनीतिक सत्ता मे किसी को हाथ नही लगाने देती और अन्य सभी वर्गों तथा सामाजिक तबको को राजनीतिक अधिकारो और जनवादी स्वतत्रताओ से वचित रखने का प्रयास करती है।

निस्सन्देह, पूजीवादी समाज के दीर्घकालीन अस्तित्व के दौरान पूजीवाद ने जनता के दबाव से मजबूर होकर ही चुनाव कानून, गणतान्त्रिक प्रणाली, ससद, आदि जनवादी सस्थाओ को कायम किया है। अपने समय मे ये सस्थाएं सामंतवाद और निरंकुश राजतंत्र की तुलना मे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रगतिशील थी। आज भी, अनुकूल परिस्थितियो मे चुनाव कानून, संसद और अन्य जनवादी संस्थाओ से मेहनतकश लोगो

शान्ति एव जनवाद के सघर्ष से सम्बद्ध हो जाती है। बुद्धिजीवियो तथा दफ्तरी कर्मचारियो द्वारा सघर्ष के सर्वहारा रूपो का उपयोग पूजीवादी देशो मे एक सामान्य बात होती जा रही है।

मजदूर वर्ग अपनी प्रत्यक्ष आर्थिक मागों और अपने अधिकारो के लिए ही सघर्ष नही करता। वह अपने जुझारू कार्यकलाप को कारखाना और मिलो तक ही सीमित नही रखता। वह सम्पूर्ण जनता के हरावल, सभी जनवादी शक्तियो के नेता के रूप मे उन्हें सघर्ष के लिए एकजुट तथा तैयार कर रहा है। वह सभी मेहनतकश और शोषित लोगो को सघर्ष के लिए शिक्षा प्रदान कर रहा है और "कथनी मे ही नही, बल्कि अपने कार्यो से, राजनीतिक और आर्थिक मागो म समन्वय कायम करनेवाले आम क्रान्तिकारी सघर्ष से'* उन्ह शिक्षा प्रदान कर रहा है।

**सामाजिक आधार का विस्तार और प्रगतिशील शक्तियो का एक ही साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा कायम करने की प्रवृत्ति** – मजदूर वर्ग के वर्तमान क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक और महत्त्वपूर्ण लक्षण है।

**फूट का उन्मूलन – मुख्य कार्यभार**

यद्यपि वर्तमान मजदूर आन्दोलन प्रगति करता जा रहा है, तथापि इस तथ्य को भी अस्वीकार नही किया जा सकता कि पूजीवाद के विरुद्ध अपने सघर्ष मे विभिन्न देशो के मजदूरो को कभी-कभी शिकस्तो का सामना करना पडता है और यह कि यत्र-तत्र वर्ग सघर्ष मे प्रतिक्रियावादी शक्तियो का पलडा भारी हो जाता है। इन शिकस्तो का एक कारण यह है कि पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग को बहुत ही विषम परिस्थितियो मे अपना सघर्ष चलाना पडता है। यह अच्छी तरह ज्ञात है कि उसका शत्रु सम्पन्न तथा सुसगठित है और इससे भी बढकर उसके कब्जे मे शक्तिशाली राजकीय मशीनरी, दमन तथा विचारधारात्मक बहकावे की मशीनरी है। परन्तु मजदूर वर्ग की शिकस्तो और प्रतिक्रियावादी शक्तियो की सफलताओ का मुख्य कारण है **मजदूर आन्दोलन मे फूट**, जिसके जिम्मेदार अवसरवादी ही है।

स्वाभाविक ही है कि पूजीपति वर्ग मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी कार्यकलाप को कमजोर बनाने तथा कुठित करने के उद्देश्य से उसके बीच

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'क्रान्तिकारी सर्वहारा का जुलूस'।

फूट को बनाये रखने और बढाने के निमित्त हर प्रयास करता है। इस स्थिति मे यह बहुत ही आवश्यक है कि मजदूर वर्ग से फूट दूर की जाये, उसकी पातो मे घनिष्ठ एकता कायम हो और पूजी की सत्ता के विरुद्ध अपने सयुक्त सघर्ष मे **सभी साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियां एकजुट हो।** ब्रिटेन, फ्रास, इटली और अन्य पूजीवादी देशो की कम्युनिस्ट पार्टियां मजदूर वर्ग मे फूट को दूर करना आज का एक महत्त्वपूर्ण कार्यभार मानती है। कम्युनिस्ट कुछ सकीर्ण दलगत स्वार्थों के आधार पर नही, जैसा कि सामाजिक-जनवादी नेता दावा करते है, बल्कि खुद मजदूर वर्ग के हितो, सामाजिक-जनवादी तथा अन्य पार्टियो एव सगठनो से सम्बद्ध श्रमजीवी लोगो के हितो, सक्षेप मे, इजारेदारी सत्ता के विरुद्ध, जनवादी सुधारो, शान्ति, सामाजिक प्रगति और समाजवाद के लिए सघर्ष के सयुक्त हितो की रक्षा मे एकता का प्रयास करते है।

मजदूर आन्दोलन की एकता और साम्राज्यवाद विरोधी सयुक्त मोर्चा कायम करने के लिए सघर्ष – साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष का अविच्छिन्न अग है।

**जनवाद के लिये संघर्ष – समाजवाद के लिये संघर्ष का अविच्छिन्न अंग है**

साम्राज्यवाद के वैचारिक पूजीवादी देशो की स्वतत्रता और जनवाद के बारे मे बहुत बाते बघारते है और दावा करते है कि सत्तारूढ पूजीपति वर्ग अधिनायकत्व के विरुद्ध है। व्यक्ति और राज्य के बीच सम्बन्धो के बारे मे उनके पास कहने को बहुत कुछ है, परन्तु कौनसा वर्ग राज्य पर शासन करता है, इस मुख्य प्रश्न के सम्बन्ध मे वे मुह नहीं खोलते। वस्तुत पूजीवादी देशो मे इजारेदारी पूजी का, बहुमत पर अल्पमत का अधिनायकत्व कायम है; इजारेदारी पूजी अपनी राजनीतिक सत्ता मे किसी को हाथ नही लगाने देती और अन्य सभी वर्गों तथा सामाजिक तबको को राजनीतिक अधिकारो और जनवादी स्वतत्रताओ से वचित रखने का प्रयास करती है।

निस्सन्देह, पूजीवादी समाज के दीर्घकालीन अस्तित्व के दौरान पूजीवाद ने जनता के दबाव से मजबूर होकर ही चुनाव कानून, गणतात्रिक प्रणाली, ससद, आदि जनवादी सस्थाओ को कायम किया है। अपने समय मे ये सस्थाए सामतवाद और निरकुश राजतत्र की तुलना मे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रगतिशील थी। आज भी, अनुकूल परिस्थितियो मे चुनाव कानून, ससद और अन्य जनवादी सस्थाओ से मेहनतकश लोगो

की काफी भलाई हो सकती है। परन्तु, पूर्ववत पूजीपति वर्ग जनता की वास्तविक सत्ता को कायम करना, अर्थात् समाज और राज्य के प्रशासन मे सभी मेहनतकश लोगो को शामिल करना न तो चाहता था, और न चाहेगा ही।

मिसाल के लिए चुनाव प्रणाली को ही लीजिए। पूजीवादी प्रचारक यह दावा करते है कि पूजीवादी देशो की चुनाव प्रणाली जनवादी है। परन्तु पूजी के स्वामी होने के कारण इजारेदार प्रचार के सार्वजनिक साधनो-प्रेस, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा तथा शक्तिशाली राजनीतिक मशीनरी पर अपना नियत्रण कायम किये हुए है और इस प्रकार वे मतदाताओ पर अपने ही उम्मीदवारो को थोपने मे समर्थ है। कुछ पूजीवादी देशो मे लोगो को केवल पूजीवादी उम्मीदवारो मे से ही अपनी पसन्द का उम्मीदवार चुनना पडता है। दशको से सयुक्त राज्य अमरीका मे मुख्यत थैलीशाहो से सम्बद्ध पार्टिया ही चुनाव लडती रही है। कुछ देशो मे (उदाहरणार्थ, फ्रास और इटली मे) मेहनतकश लोग ससद के लिए अपने प्रतिनिधियो को निर्वाचित करा लेने मे सफल हो जाते है। परन्तु ज्यो ही ऐसे प्रतिनिधियो की सख्या बढने लगती है, त्यो ही इजारेदारिया चुनाव प्रणाली मे परिवर्तन करा देती है अथवा वे चुनाव परिणामो को ही झुठलवा देती है।

प्रतिक्रियावादी पूजीपति वर्ग विरले ही ऐसी राजनीतिक पार्टियो को कायम होने देता है, जो सच्चे अर्थों मे प्रगतिशील और जनता के हितो की पोषक होती है। पश्चिमी जर्मनी मे हजारो राजनीतिक मुकदमे चलाये जा चुके है, जिनमे अभियुक्तो को सैन्यवाद और नाजीवाद के अवशेषो के विरुद्ध सघर्ष करने के कारण जेल अथवा जुर्माने की सजा दी गई है। १९६१ मे सयुक्त राज्य अमरीका मे कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य प्रगतिशील सगठनो के कार्यकलाप पर व्यवहारत प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। कई अन्य पूजीवादी देशो मे भी कम्युनिस्ट पार्टिया गुप्त रूप से काम करने के लिए मजबूर है।

साम्राज्यवादी पूजीपति वर्ग कम्युनिस्टो के साथ-साथ शान्ति, जनवाद और मेहनतकशो के अधिकारो के समर्थक अन्य प्रगतिशील सगठनो पर भी जुल्म ढाता है। इसके साथ ही वह मेहनतकश लोगो के विरोधी खुले फासिस्ट सगठनो के अस्तित्व को प्रोत्साहन प्रदान करता है। नाटो-

अटलान्टिक गुट—के साम्राज्यवादी अफ्रीका मे पुराने ढग के उपनिवेशवादियो के अतिम अवशेष स्पेन तथा पुर्तगाल के फासिस्ट तानाशाहो और दक्षिणी वियतनाम, दक्षिणी कोरिया तथा अन्य पराश्रित राज्यो के जुल्मी कठपुतली शासनो का समर्थन करते हैं।

वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तको ने बहुत ही स्पष्ट रूप मे पूजीवादी जनवाद के सीमित तथा औपचारिक स्वरूप का पर्दाफाश किया है। उन्होंने साबित किया है कि पूजीवादी जनवाद वास्तव मे पूजीपति वर्ग का अधिनायकत्व है, मुट्ठी भर धनिको का आबादी के भारी बहुमत पर अधिनायकत्व है। साथ ही साथ उन्होंने पूजीवादी जनवाद के अन्तर्विरोधी स्वरूप का भी भण्डाफोड किया है। इसके फरेब और धनिको के प्रति इसकी निष्ठा का पर्दाफाश करने के साथ ही उन्होंने यह भी प्रकट किया है कि वह सर्वहारा वर्ग को हथियारबद भी करता है। इसी कारण साम्राज्यवादी पूजीवादी जनवाद को कम करने, सीमित करने और जहा सभव हो पूर्ण रूप से मिटाने की चेष्टा करते है।

पूजीवादी जनवाद न तो कभी अकेले पजीपति वर्ग का हेतु रहा है और न हो ही सकता है, न वह जनता के लिए उसकी ' देन ही है। किसी भी देश म औपचारिक अथवा इससे भी बढकर वास्तविक जनवाद वर्ग शक्तियो के वास्तविक सतुलन, सामतवाद विरोधी क्रान्ति मे मेहनतकश लोगो द्वारा अदा की गई भूमिका और उसके बाद के समय मे उनके सगठन तथा शक्ति पर अवलम्बित रहा है। जनता को जो जनवादी अधिकार तथा स्वतत्रताए प्राप्त है, उनके लिए उन्हे पूजीपति वर्ग को विवश करना पडा है और इन अधिकारो तथा स्वतत्रताओ को कायम रखने के लिए उन्हें बल का भी प्रयोग करना पडा है। मजदूर वर्ग के विकास तथा सुदृढीकरण के साथ-साथ **जनवाद को कायम रखने तथा इसे बढाने के सघर्ष का मुख्य भार अधिकाधिक उसी के कन्धो पर आता गया है।**

इस प्रकार आज भी अपनी घोर प्रतिक्रियावादी व्यवस्था तथा इजारेदारी पूजी की अप्रतिबन्धित सत्ता को कायम रखने के लिए प्रयत्नशील साम्राज्यवाद को सतत वर्द्धमान मजदूर, आम जनवादी आन्दोलन और इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद के दबाव का सामना करना पडता है। समाजवादी देशो के आदश से, जहा के नागरिको को व्यापक जनवादी

अधिकार प्राप्त हैं, पूजीवादी देशो के मेहनतकश लोगो को जनवाद के लिए सघर्ष करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। फलत , पूजीवादी देशो के सत्तारूढ वर्ग मेहनतकश लोगो को न्यूनाधिक रियायते प्रदान करने तथा उनके जनवादी अधिकारो को व्यापक बनाने के लिए विवश हो जाते हैं। मिसाल के लिए, अक्तूबर क्रान्ति के बाद ही पश्चिमी यूरोपीय देशो के सभी अथवा लगभग सभी नागरिको को मताधिकार प्राप्त हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कई पूजीवादी सरकारे मेहनतकश लोगो को पहले से अधिक अधिकार तथा स्वतन्नताए प्रदान करने को विवश हो गईं। इटली मे पूजीपति वर्ग निजी स्वामित्व को कुछ सीमित करने तथा मेहनतकश लोगो के अधिकारो की रक्षा से सम्बन्धित धाराओ को सविधान मे शामिल करने के लिये विवश हुआ।

मजदूर वर्ग और सामान्यतया मेहनतकश लोग अपने जनवादी अधिकारो की रक्षा कर रहे हैं, और यह कोई आश्चर्य की बात नही है, क्योकि जनवाद पूजी के विरुद्ध सघर्ष के लिए अधिकाधिक अवसर प्रदान करता हैं। पूजीवादी ससद पर ही दृष्टिपात कीजिए। एक ओर, पूजीपति वर्ग मजदूरो की आखो मे धूल झोकने तथा अपनी सत्ता को सुदृढ बनाने के लिए इसका इस्तेमाल करता हैं। दूसरी ओर, मजदूर वर्ग और मेहनतकश लोग इसका साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी नीतियो के विरुद्ध अधिकाधिक और सफलता के साथ उपयोग कर रहे हैं। इससे भी बढकर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान समय मे मजदूर वर्ग ससद मे बहुमत प्राप्त कर इसे जनता के हितो के काम आनेवाले निकाय मे परिवर्तित कर सकता है।

इसी कारण जनवादी आवरण को दूर करने, ससद-प्रथा का परित्याग करने और इजारेदारियो के नग्न आतकवादी अधिनायकत्व को कायम करने की ओर बढती हुई प्रतिक्रियावादी राजनीतिक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। पश्चिमी और विशेष रूप से सयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादियो द्वारा १९६७ मे यूनान मे किये गये राज्यविप्लव की साजिश से यह बात सिद्ध हो चुकी है। इजारेदारिया जनवाद से भयाक्रान्त हैं, क्योकि जनवादी विकास के उच्च स्तर का "पूजीवादी समाज की सीमाओ के अतिक्रमण, उसके समाजवादी पुनर्निर्माण के आरम्भ से"* सम्बन्ध है।

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सकलित रचनाए, चार भागो मे, प्रगति प्रकाशन, मास्को, भाग २, पृष्ठ २८६।

आबादी के अन्य तबको के साथ मजदूर वर्ग व्यापक जनवाद के लिये संघर्ष कर रहा है। वह जनवादी स्वतन्त्रताओ के उन्मूलन के लिये इजारेदारो के प्रयास, सभी रूपो मे फासिस्टवाद को फिर से कायम करने के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये लोगो को उत्प्रेरित कर रहा है। इस प्रकार **शान्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनवाद के निमित्त आम जनवादी आन्दोलनो के साथ समाजवाद के लिये मजदूर वर्ग द्वारा चलाये जानेवाले संघर्ष का समन्वय वर्तमान मजदूर आन्दोलन का एक मुख्य लक्षण है।**

पूंजीवादी देशो मे वैज्ञानिक समाजवाद के समर्थक पूंजीवाद के अन्तर्विरोधो तथा दोषो और उसकी जगह समाजवाद को स्थापित करने की आवश्यकताओ की ओर इंगित करके ही नही रह जाते हैं। वे मजदूर वर्ग तथा सामान्यतया सम्पूर्ण जनता के हितो की रक्षा करने, उसके जीवन स्तर को सुधारने और समाजवाद की विजय तक प्रतीक्षा करने की जगह उसके लिए तत्काल व्यापक जनवादी अधिकारो और स्वतन्त्रताओ को प्राप्त करने के लिए सब कुछ करते हैं। उनका दावा है कि पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत इस समय भी **इजारेदारियो की अनियन्त्रित सत्ता तथा उनके आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व से राष्ट्र मुक्त हो सकता है।** इजारेदारियो की सत्ता पर अंकुश लगाया जा सकता है और राष्ट्र के मजदूर वर्ग तथा अन्य सभी प्रगतिशील शक्तियों का प्रभाव बढाया जा सकता है। पूंजीवाद का तख्ता उलटने के पहले भी अनेक देशो मे मजदूर वर्ग पूंजीपति वर्ग को सामान्य सुधारो से बढकर मूलभूत परिवर्तन करने के लिए विवश कर सकता है। राष्ट्र के अधिकाश लोगो तथा समाजवाद के भावी संघर्ष के लिए यह बडे महत्त्व की बाते हैं। फलत, लोगो को एकजुट करके मजदूर वर्ग फासिस्ट प्रतिक्रिया के हमले को विफल बना सकता है, शान्ति तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता के ध्येय को सुदृढ़ कर सकता है और उनके लिए व्यापक जनवादी अधिकार तथा रहन सहन की बेहतर परिस्थितिया सुलभ कर सकता है।

आर्थिक और राजनीतिक संघर्ष मे जनता का भाग लेना मुख्यत मजदूर वर्ग तथा उसकी पार्टी द्वारा अनुसरित नीतियो के औचित्य, समाज के विभिन्न तबको को एकजुट करने मे समर्थ इजारेदारी विरोधी संघर्ष के वास्तविक और ठोस कार्यक्रम के निर्धारण पर अवलम्बित है। प्राय प्रत्येक पूंजीवादी देश के लिए उपयुक्त इजारेदारी विरोधी और जनवादी कार्यक्रम की बुनियादी बाते इस प्रकार हैं

आर्थिक तथा सार्वजनिक जीवन और सभी प्रशासकीय, राजनीतिक तथा सास्कृतिक सस्थाओ का पूर्ण जनवादीकरण,

अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रो का राष्ट्रीयकरण और उनके प्रशासन का जनवादीकरण,

मेहनतकश लोगो के रहन-सहन की स्थिति मे सुधार,

इजारेदारियो के निरकुश शासन से किसानो तथा निम्न एव दरमियानी पूजीपति वर्ग के हितो की रक्षा,

राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए सघर्ष,

शान्ति के लिए सघर्ष और अर्थव्यवस्था का जनता की जरूरतो की पूर्ति के निमित्त शान्तिपूर्ण उद्देश्यो के लिए उपयोग।

इस प्रकार के कार्यक्रम का कार्यान्वियन सामाजिक प्रगति के पथ पर एक बहुत बडा कदम होगा, क्योकि यह जनता के भारी बहुमत के हितो के सर्वथा अनुरूप है। परन्तु इस कार्यक्रम की प्रत्येक माग का अलग अलग कार्यान्वियन अपने आप मे कोई इतिश्री नही है; किसी भी सुधार और किसी भी नई जनवादी सस्था के लिए सघर्ष को मजदूर आन्दोलन के सामान्य तथा अन्तिम लक्ष्यो से पृथक् नही किया जा सकता। अनेक परिवर्तन और सुधार केवल अपने आप मे महत्त्वपूर्ण नही हैं, वे सर्वोपरि रूप मे सघर्ष के मोड के रूप मे, भावी प्रगति के आधार के रूप मे, जनवाद की शक्तियो को बढाने के प्रारम्भिक बिन्दु के रूप मे, नये साथियो का सहयोग प्राप्त करने और खुद मजदूर वर्ग की शक्तियो को एकजुट करने के साधन के रूप मे अधिक महत्त्वपूर्ण है। सुधारो के निमित्त सघर्षों से जनता को शिक्षित करने और पूजीवाद के विरुद्ध निर्णायक सघर्ष तथा समाजवादी क्रान्ति की विजय के लिए परिस्थितिया पैदा करने मे सहायता मिलती है। जनवादी परिवर्तनो के लिए सघर्ष मे भाग लेते हुए आबादी के व्यापक तबके अधिक सगठित, वर्ग-चेतन तथा पूजीवादी समाज के सामाजिक सम्बन्धो के अन्तर्विरोधी स्वरूप से अधिकाधिक अवगत होते है। मजदूर वर्ग से उनकी घनिष्ठता बढती है और साथ ही उन्हें मिलकर सघर्ष करने की आवश्यकता म भी विश्वास होता है। फलत, इजारेदारियों के विरुद्ध आम जनवादी सघर्ष से समाजवादी क्रान्ति होने मे देर नहीं लगती, बल्कि यह सन्निकट हो जाती है। जनवाद के लिये सघर्ष समाजवाद के लिये सघर्ष का अविच्छिन्न अग है।

निस्सन्देह, सामान्य जनवादी सुधारो के कार्यक्रम के कार्यान्वियन से मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के उन्मूलन की बात तो दूर, पूजीवाद के नियमो और अन्तर्विरोधो का भी उन्मूलन नही हो सकता। सुधारवादियो, पूजीपतियो से प्रभावित मजदूर आन्दोलन के दक्षिणपथी नेताओ के दावो के विपरीत पूजीवादी समाज मे अलग-अलग सुधारो से पूजीवाद का समाजवाद मे शान्तिपूर्ण सक्रमण नही हो सकता। उनका कहना है कि छोटे-मोटे क्रमिक सुधारो–आज पेशन की रकम बढाने, कल उद्योग के कुछ क्षेत्रो अथवा परिवहन का राष्ट्रीयकरण करने, परसो मजदूरी बढाने, आदि के कार्यक्रम–को लागू करना समाजवाद की ओर प्रयाण को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है, क्योकि इस प्रकार की छोटी-मोटी सफलताओ से अन्तत समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त हो जायेगा। उनका कहना है कि समाजवाद की उपलब्धि के लिए "पूजीवाद के दोषो को दूर करना", इस व्यवस्था मे "सुधार करना" ही पर्याप्त है। कम्युनिस्ट दृष्टिकोण इस अमान्य और अनिष्टकारी काल्पनिक धारणा के सर्वथा प्रतिकूल है–**कम्युनिस्ट सुधारो को समाजवादी क्रान्ति की एक पूर्वापेक्षा के रूप मे मानकर उनके लिये सघर्ष करते है,** परन्तु वे इन सुधारो को खुद समाजवादी क्रान्ति का अनुकल्प नही मानते। केवल क्रान्ति से, मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर अधिकार कायम करने से ही समाज का आमूल रूपान्तरण, पूजीवादी प्रणाली का उन्मूलन और मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त हो सकता है। जनवाद के लिए सघर्ष समाजवाद के सघर्ष के सन्निकट होते हुए भी समाजवादी लक्ष्यो के निमित्त सघर्ष का स्थान नही लेता–यह क्रान्तिकारी आन्दोलन का केवल एक दौर है, जनता को तैयार करने का एक तरीका है, समाजवादी क्रान्ति के लिए लोगो को जुटाने का एक साधन है।

आम जनवादी सघर्ष के अनुभव से अन्तत लोगो मे यह समझ पैदा हो जाती है कि वास्तविक सामाजिक प्रगति और जनवाद का एकमात्र रास्ता समाजवाद का रास्ता है। मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन का बुनियादी लक्ष्य–सामाजिक विकास की तर्कसगत परिणति है। इस विकास से अनिवार्यत मजदूर वर्ग के ही सम्मुख नही, बल्कि इजारेदारी तथा प्रतिक्रिया के विरुद्ध आम जनवादी सघर्ष मे उसके सहयोगियो के सामने भी समाजवाद की ओर सक्रमण का प्रश्न उपस्थित हो जाता है।

# ३. समाजवाद की ओर संक्रमण के रूप

वर्तमान युग मे, मानवजाति के समाजवाद की ओर अटल प्रगति के युग मे, विभिन्न देशो मे समाजवाद की ओर सक्रमण के ठोस रूपो का प्रश्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। ये रूप क्या है और कैसे निर्धारित होते है? क्या सोवियत रूस की भाति समाजवाद मे सक्रमण सशस्त्र विद्रोह, से, गृहयुद्ध से अनिवार्यत जुडा हुआ है?

वैज्ञानिक समाजवाद के सृजनात्मक स्वरूप, अर्थात् कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो की सामाजिक विकास की समस्याओ को युग की प्रवृत्ति और ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियो के अनुरूप हल करने की क्षमता ने अपने आपको इस महत्त्वपूर्ण समस्या के समाधान मे विशेष शक्ति के साथ प्रदर्शित किया है।

इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि सत्तारूढ वर्ग कभी भी स्वेच्छा से न तो अपनी सत्ता और न उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व का परित्याग करता है, जिससे उसे मेहनतकश लोगो के शोषण का अवसर प्राप्त होता है, यही नही बल्कि वह अपने विविध विशेषाधिकारो का भी परित्याग नही करता। इसी कारण समाजवादी क्राति मे अनिवार्यत. **क्रान्तिकारी बल-प्रयोग**, पूजीवादी प्रणाली का बलपूर्वक उन्मूलन सन्निहित होता है।

परन्तु बल-प्रयोग के विविध रूप होते है। इसका एक रूप हथियारो के इस्तेमाल, गृहयुद्ध और विदेशी हस्तक्षेप से सम्बद्ध है। इसके अलावा तथाकथित शान्त स्वरूप का बल-प्रयोग भी होता है, जैसे निजी स्वामित्व का अधिग्रहण अथवा परिसीमन, शोषक वर्गों के राजनीतिक अधिकारो को समाप्त या प्रतिबन्धित करना और उनके लिए अनिवार्य श्रम आदि की व्यवस्था करना। समाजवादी क्रान्ति मे मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे बहुमत की इच्छा को मानने से इनकार करनेवाले शोषको की नगण्य अल्पसंख्या पर आबादी के भारी बहुमत का यह **बल-प्रयोग** सर्वथा अनिवार्य है: इस प्रकार के बल-प्रयोग या बाध्यता (आर्थिक और राजनीतिक) के बिना प्रतिक्रिया पर समाजवाद शायद कभी विजय प्राप्त नही कर सकता। जहा तक सशस्त्र बल-प्रयोग का सम्बन्ध है, देश विशेष की ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियो

तथा वर्गीय शक्ति-संतुलन और समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का पहले विश्लेषण किये बिना इस प्रश्न का निर्णय नही किया जा सकता।

वैज्ञानिक समाजवाद के शत्रु समाजवाद के उदात्त विचारो को कलंकित करने और जनता म उनके प्रति अविश्वास पैदा करन के अपन सतत प्रयास म दावा करते है कि विश्व समाजवाद ने युद्धा के फलस्वरूप ही अपनी सर्वाधिक निर्णायक सफलताए प्राप्त की है। उनका कहना है कि कम्युनिस्टो की सफलता का मुख्य कारण प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध ही है। यह सच है कि प्रथम विश्वयुद्ध ने अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति को सफल होने मे सहायता की और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कई यूरोपीय तथा एशियाई देशो ने समाजवादी विकास का पथ अपनाया। परन्तु इसे विस्मृत नही करना चाहिए कि इन दोनो भीषण युद्धो को कम्युनिस्टो न नही, बल्कि खुद साम्राज्यवादियो ने शुरू किया था, जिनसे मुक्ति पाने के एकमात्र रास्ते के रूप मे अनेक राष्ट्रो ने समाजवाद को अपनाया।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद नही मानता कि समाजवाद की विजय के लिए विश्वयुद्ध सर्वथा अनिवाय है। समाजवाद वस्तुगत ऐतिहासिक नियमो के फलस्वरूप विजयी होता है। ये नियम अटल है और यह तथ्य इन नियमो द्वारा ही निर्धारित होता है कि समाजवाद उसी तरह सारी दुनिया मे विजयी होकर रहेगा, जिस प्रकार उसने सोवियत सघ तथा समाजवादी प्रणाली के अन्य देशो म विजय प्राप्त की है। समाजवाद की विश्वव्यापी विजय अब कोई दूर नही है, परन्तु इस विजय के लिए राज्यो के बीच युद्ध अनिवार्य नही है।

क्रान्ति के ' निर्यात " अथवा सशस्त्र बाहरी हस्तक्षेप द्वारा विविध देशो मे क्रान्तिया कराने के सुझाव से युक्त सभी सिद्धान्तो का वैज्ञानिक समाजवाद कट्टर विरोधी है। विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रान्तिकारी युद्ध' का आह्वान करनेवाले दुःसाहसियो को झिडकते हुए लेनिन ने कहा था कि इन लोगो का ' विश्वास है कि विश्व क्रांति के हितो का यह तकाजा है कि उसे ठेला जाना चाहिये और उसे केवल युद्ध द्वारा ही ठेला जा सकता है—और शांति द्वारा तो किसी प्रकार भी नही ठेला जा सकता, क्योकि उससे जनता को शायद यह आभास मिले कि साम्राज्यवाद को जायज ठहराया' जा रहा है। इस प्रकार का 'सिद्धात' मार्क्सवाद के सर्वथा प्रतिकूल होगा, क्योकि मार्क्सवाद हमेशा से क्रांतियो को 'ठेलने' के खिलाफ रहा है, जिनका

विकास क्राति को जन्म देनेवाले वर्ग-विरोधो की तीव्रता के विकास के साथ होता है।"*

मजदूर वर्ग वर्तमान युग का सबसे मानवतावादी वर्ग है। यह मानवजाति की सास्कृतिक उपलब्धियो को कायम रखने तथा बढ़ाने, उत्पादक शक्तियो के विकास के स्तर को ऊचा उठाने और दुनिया की सर्वाधिक बहुमूल्य विभूति – स्वय जनता, मेहनतकश लोगो की रक्षा करने का प्रयास करता है। फलत., मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकश लोगो की अभिरुचि सत्ता पर अपनी शान्तिपूर्ण विजय तथा पूजीवाद से समाजवाद की ओर शान्तिपूर्ण सक्रमण मे है। एक सदी पहले वैज्ञानिक समाजवाद के एक प्रवर्तक फ़ेडरिक एगेल्स से पूछा गया था कि क्या निजी स्वामित्व का शातिपूर्ण तरीको से उन्मूलन सभव है, तो उन्होंने यह उत्तर दिया था: "यह एक बहुत ही वाछनीय बात होगी और कम्युनिस्ट तो निस्सदेह *शातिपूर्ण हल के रास्ते मे पड़नेवाले आखिरी लोग होगे।*"** *शान्तिपूर्ण तरीके* से अपरिमित भौतिक हानि और बड़ी सख्या मे लोगो की जानो की कुरबानी से बचा जा सकता है। लेनिन ने लिखा था कि "जनता के लिए यह सबसे आसान और सबसे अधिक सुविधाजनक रास्ता होता।"***

प्रसगतः, समाजवाद की ओर जाने के पथ के चयन का प्रश्न व्यक्तियो की इच्छा पर नही, बल्कि देश विशेष की वर्ग शक्तियो के वस्तुगत सतुलन पर निर्भर करता है। *यदि मजदूर वर्ग, सभी मेहनतकश लोगो की शक्तिया* निर्णायक रूप से पूजीपति वर्ग पर छा जाये तथा पूजीपति वर्ग प्रतिरोध की व्यर्थता का कायल होकर सत्ता को सर्वहारा के हाथ सौपकर जो बच सके, उसे बचाने का रास्ता अख्तियार करे, तो पूजीवाद से समाजवाद मे शान्तिपूर्ण सक्रमण सभव हो जायेगा। परन्तु अनुभव से यह सिद्ध होता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से किसी अन्य मरणोन्मुख वर्ग की भाति (मिसाल के लिए सामत वर्ग) पूजीपति वर्ग इस ढंग से संजीदगी के साथ शक्ति-सतुलन का मूल्याकन करने मे असमर्थ है। मरणासन्न हताशा के साथ वह हर सभव तरीके से अपनी सत्ता को कायम रखने अथवा गंवाये हुए प्रभुत्व को फिर से स्थापित

---

* ब्ला० इ० लेनिन, 'क्रातिकारी लफ्फाजी'।

** मार्क्स और एगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

*** ब्ला० इ० लेनिन, 'नारो के विषय मे'।

करने और उसके जीवन को लंबा करने का प्रयास करता है। इन तरीकों में सबसे महत्त्वपूर्ण सशस्त्र बल है और जब भी पूजीपति वर्ग की सत्ता खतरे में पडती है, जब भी उत्पीडित जनसमुदाय उसे उसकी सत्ता तथा विशेषाधिकारों से वंचित करने का प्रयास करते हैं, तो वह सामान्यतया इसी का प्रयोग करता है। पेरिस कम्यून को खून में डुबो दिया गया था। क्या रूसी जमींदारों तथा पूंजीपतियों ने भी १६१७ के अक्तूबर में मेहनतकश लोगों की विजय को स्वीकार कर लिया था? नहीं, उन्होंने गृहयुद्ध शुरू कर दिया और विदेशों के पूंजीपतियों की सहायता मांगी, जिन्होंने समस्त बल से सोवियत रूस में पूंजीवादी व्यवस्था पुनःस्थापित करने की कोशिश की। परन्तु मजदूरों और किसानों ने डटकर मुकाबला किया और वे सर्वहारा वर्ग की सत्ता को कायम रखने में सफल रहे।

उस समय दुनिया पर पूंजीपति वर्ग का एकच्छत्र प्रभुत्व था। उसे अपनी शक्ति का अहसास था और अपने विरुद्ध विद्रोह करनेवाले किसी भी उत्पीडित राष्ट्र के खिलाफ लडने के लिए वह एकजुट हो सकता था और इस कारण उस समय वस्तुतः सशस्त्र बल ही एकमात्र ऐसा साधन था, जिसका इस्तेमाल करके मजदूर वर्ग सत्ता पर अपना अधिकार कायम कर सकता था। इसीलिए लेनिन ने सिद्धान्ततः सर्वहारा वर्ग द्वारा शान्तिपूर्ण तरीके से सत्ता पर अधिकार करने की संभावना को अस्वीकार किये बिना यह माना कि उस ऐतिहासिक काल में उसकी संभावना बहुत ही कम थी।

किन्तु तब से स्थिति बदल गई है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूंजीवाद और समाजवाद के बीच नये शक्ति-संतुलन से समाजवाद की ओर शान्तिपूर्ण संक्रमण की संभावना काफी बढ गई है। मिसाल के तौर पर कई यूरोपीय और एशियाई देशों में पूंजीवादी जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति में शान्तिपूर्ण संक्रमण का हवाला दिया जा सकता है। और कई अफ्रीकी देश इस समय बिना किसी रक्तपात के शान्तिपूर्ण तरीके से विकास के गैर-पूंजीवादी पथ पर अग्रसर हो रहे हैं।

जहां तक पूंजीवादी देशों का सम्बन्ध है, तो न केवल विश्व समाजवादी प्रणाली की शक्तियों के विकास के फलस्वरूप, बल्कि खुद इन देशों में प्रगतिशील शक्तियों के विकास तथा जनसाधारण पर मजदूर वर्ग और उसकी मार्क्सवादी पार्टियों के प्रभाव की वृद्धि की बदौलत भी समाजवाद की ओर उनके संक्रमण की संभावनाएं बढती जाती हैं। इन परिस्थितियों में कई

देशो मे साम्राज्यवाद के विरुद्ध व्यापक जन आन्दोलन पर अवलम्बित मजदूर वर्ग को अब रक्तपात और गृहयुद्ध के बिना सत्ता पर अधिकार करने के अपूर्व रूप मे अधिक अवसर है। १९५७ मे १४ से १६ नवम्बर तक मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन की घोषणा मे कहा गया था– 'इस समय कई पूजीवादी देशो मे अपने हरावल दस्ते के नेतृत्व मे मजदूर वर्ग को सयुक्त मजदूर एव जन मोर्चा तथा विभिन्न पार्टियो और सार्वजनिक सगठनो के बीच कामकाजी ढग का समझौता तथा राजनीतिक सहयोग होने के आधार पर जनता के बहुमत को एकजुट करने, गृहयुद्ध के बिना राजकीय सत्ता पर अधिकार करने और उत्पादन के बुनियादी साधनो का जनता को हस्तान्तरण सुनिश्चित करने का अवसर प्राप्त है।"

शान्तिपूर्ण ढग से सर्वहारा अधिनायकत्व को कायम करने का एक रास्ता ससदीय रास्ता है। जनता के बहुमत पर निर्भर करके तथा मजदूर आन्दोलन मे विद्यमान अवसरवादियो से दृढ सघर्ष करके कुछ पूजीवादी देशो मे मजदूर वर्ग ससद मे स्थिर बहुमत प्राप्त कर सकता है, उसे मेहनतकश जनता की सेवा के साधन मे परिणत कर सकता है तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियो के प्रतिरोध को ध्वस्त करके समाजवाद की ओर शान्तिपूर्ण ढग से अग्रसर होने की परिस्थितिया पैदा कर सकता है।

सर्वहारा अधिनायकत्व को कायम करने के एक सभावित ढग के नाते **ससदीय रास्ता कोई सुधारवादी रास्ता नहीं है।**

इस बात पर जोर देते हुए कि सघर्ष के ससदीय तरीके को इस्तेमाल करना सभव है, लेनिन ने यह भी बताया था कि ससदीयता के रूप विभिन्न होते हैं। कुछ लोग सरकार का अनुग्रह प्राप्त करने के उद्देश्य से ससद का केवल ऐसे सुधारो की वकालत करने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जो पूजीपति वर्ग के अनुकूल होते है। परन्तु अन्य लोग "अन्त तक क्रान्तिकारी बने रहने" की आकाक्षा रखते हैं। लेनिन ने सदैव इस पर बल दिया था कि ससद का उपयोग "सुधारवादी तरीके से नही", अर्थात् जनता की दुर्दशा को दूर करने मे असमर्थ पूजीपति वर्ग के हितानुकूल सुधारो की वकालत करने के लिए नही, बल्कि "समाजवादी रूपान्तरण" का प्रचार करने तथा उसे स्थापित करने के लिए किया जाना चाहिए। समाजवाद का ससदीय रास्ता वर्ग-सघर्ष और आमूल क्रान्तिकारी रूपान्तरण का रास्ता है, जिसमे अन्तत नये, समाजवादी समाज का निर्माण होगा।

निस्सन्देह, मजदूर वर्ग और उसके सहयोगी जितने ही शक्तिशाली होंगे और संघर्ष के जितने विविध तरीकों में उन्हें दक्षता होगी, इस पथ से सफलता प्राप्त करने की संभावनाएं भी उतनी ही ज्यादा होंगी। यह सोचना भोलेपन का द्योतक होगा कि मेहनतकश लोग संसदीय चुनावों में विजय प्राप्त करके ही सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर सकते हैं तथा उसे कायम रख सकते हैं। जब लोग आवश्यकतानुसार शस्त्र बल सहित सभी संभव तरीकों से संसद में प्राप्त विजय की रक्षा करने में समर्थ होंगे, तभी इस बात की गारंटी हो सकती है कि पूंजीपति वर्ग चुनावों के नतीजों को पैरों तले नहीं रौंद सकेगा, बल्कि उन्हें सार्वजनिक जीवन के सभी पहलुओं के समाजवादी रूपान्तरण के लिए कायम रखा जायगा, सुदृढ़ और विकसित किया जायेगा।

परन्तु शान्तिपूर्ण पथ अपनाने की संभावना का अभिप्राय जड़सूत्रवादियों के दावे के विपरीत यह नहीं है कि सर्वहारा वर्ग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए गैर-शान्तिपूर्ण पथ का पूर्णतया परित्याग कर दे। आज भी दुनिया के बहुत बड़े भाग पर पूंजीपति वर्ग का आधिपत्य कायम है, और उसके पास हथियार हैं, जिनका वह मेहनतकश लोगों के विरुद्ध उपयोग कर सकता है। इसी कारण मजदूर वर्ग को सदैव सजग और संघर्ष के सर्वाधिक विविध रूपों–शान्तिपूर्ण तथा गैर शान्तिपूर्ण, संसदीय तथा गैर-संसदीय–का उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। संघर्ष के सभी तरीकों को अपनाना, विशेष परिस्थिति में सर्वाधिक उपयुक्त तरीके को काम में लाना और शीघ्रता से तथा अप्रत्याशित रूप में आवश्यकतानुसार एक तरीके की जगह दूसरे तरीके को अपनाना किसी भी देश में समाजवादी क्रान्ति की विजय के लिए अपरिहार्य है।

## ४. आज का विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन

**क्रान्तिकारी शक्तियों का हरावल**

अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन – वर्तमान काल का सर्वाधिक व्यापक और प्रभावकारी आन्दोलन–मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष की निदेशक शक्ति है।

कम्युनिस्टों की शक्ति स्वयं इतिहास का वस्तुगत विकास, मानवजाति की समाजवादी भविष्य की ओर अटल प्रगति है जिसके वे ही

प्रतिनिधि नेता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त से लैस कम्युनिस्ट सामाजिक विकास की अपेक्षाओ को अभिव्यक्त करते हैं। सर्वाधिक प्रगतिशील वर्ग – सर्वहारा वर्ग तथा श्रमजीवी जनसमुदाय के हितो के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा है, इस कारण उन्हे उनका असीम विश्वास तथा समर्थन प्राप्त है। कठोर परीक्षा तथा भीषण सघर्ष और कटु पराजय तथा सुखद विजय के समय भी कम्युनिस्ट सदैव अपने वर्ग, सारी जनता और समस्त प्रगतिशील मानवजाति के निष्ठावान सपूत बने रहते है। सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वोच्च अर्थ मे मानवीय गुणो से युक्त होने के कारण वे मेहनतकश लोगो के लिए जीते, काम करते, सघर्ष करते तथा जरूरत पडने पर अपना जीवन भी न्योछावर कर देते हैं।

किसी भी अन्य राजनीतिक आदोलन को कम्युनिस्ट आन्दोलन जैसी कठोर परीक्षाओ के दौर से नही गुजरना पडा है। जारशाही निर्वासन और जेल, फासिस्ट कालकोठरी तथा नजरबन्दी शिविर, भयानक यातना और घृणित हत्याओ से भी कम्युनिस्टो की सकल्पशक्ति भग नही हुई, अपने ध्येय के औचित्य मे उनका विश्वास नही डिगा और न इसके लिए सघर्ष करने की उनकी दृढता शिथिल पडी। और न इतिहास मे इसके अलावा कोई अन्य ऐसा राजनीतिक आन्दोलन रहा है, जो एक के बाद एक शानदार विजय प्राप्त करके इतनी दृढता के साथ विकसित तथा विस्तृत हुआ हो।

एक सदी से कुछ ही समय पहले वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तको ने स्वतत्रता के मुट्ठी भर समर्थको को एकजुट करके क्रान्तिकारी कम्युनिस्टो का प्रथम विश्व सगठन कायम किया था। आज लगभग उन सभी देशो मे कम्युनिस्ट पार्टिया हैं, जहा मजदूर वर्ग भी है। मेहनतकश लोगो के सर्वोत्कृष्ट, सबसे साहसी और अथक परिश्रम करनेवाले करोडो सुपुत्र और सुपुत्रिया उनके सदस्य हैं। इस समय कम्युनिस्ट आन्दोलन दुनिया की सबसे प्रभावशाली शक्ति है और इसका प्रभाव बढता ही जा रहा है।

अलग अलग कम्युनिस्ट पार्टिया अलग अलग परिस्थितियो मे रहती हैं और अलग-अलग परिस्थितियो मे सघर्ष करती हैं, इसलिए उनके सामने प्रस्तुत कार्यभार भी भिन्न भिन्न है।

**समाजवादी देशों की पार्टिया** इन देशो की सत्तारूढ पार्टिया हैं। वहा की जनताओ ने उन्ही के नेतृत्व मे पूजीवादी जुए को उतारा था और अब

वे समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माण में महत्त्वपूर्ण एव कठिन कार्य मे उनका पथ-प्रदर्शन कर रही हैं। वे आर्थिक विकास, नये सामाजिक सम्बन्धो की रचना और जनता को कम्युनिज्म की भावना म शिक्षित करने की जटिल समस्याओ को हल करते हुए विराट सृजनात्मक कार्य मे सलग्न है। वे समाजवाद की उपलब्धियो की रक्षा सुनिश्चित करती है और गैर-समाजवादी दुनिया के लोगो को उनके क्रान्तिकारी सघर्षो मे हर प्रकार की सहायता भी प्रदान करती है। समाजवादी देशा के कम्युनिस्ट जो सृजनात्मक कार्य कर रहे है, वह बडे ऐतिहासिक महत्त्व का है, क्योकि उससे समाजवाद की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति सुदृढ होती है और सारी दुनिया मे उसके विचारो की आकर्षण शक्ति बढती है।

**पूजीवादी देशो की कम्युनिस्ट पार्टियो** को बहुत ही कठिन परिस्थितियो मे, बहुधा गुप्त रूप से, उत्पीडन तथा आतक के वातावरण मे और कभी कभी पूजीवादी प्रतिक्रिया द्वारा मिटा दिये जाने के खतरे के नीचे काम करना पडता है। उन्हे अभी अपने देशो की जनता को पूजीवाद पर विजयी बनाना है। इजारेदारियो के विरुद्ध सघर्ष मे जनता का नतृत्व और मजदूर वर्ग तथा सभी मेहनतकश लोगो के हितो मे सघर्ष करते हुए वे घोर वर्ग-सघर्ष मे राजनीतिक क्रान्तिकारी फौजो का निर्माण कर रहे है। कम्युनिस्ट मजदूर वर्ग की एकता के सबसे सक्रिय समर्थक है और दक्षिणपथी सामाजिक-जनवादी नेताओ की पूजी की पोषक तथा मजदूर वर्ग मे फूट को बनाये रखनेवाली विश्वासघातपूर्ण नीति का विरोध करते है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो की ज्वालाओ मे उत्पन्न **एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टिया** शक्तिशाली हो रही है, नवोदित विकासमान राज्यो के घटनाक्रम पर अधिकाधिक प्रभाव डाल रही है और उपनिवेशवाद तथा नव उपनिवेशवाद के विरुद्ध सघर्ष मे सक्रिय भाग ले रही हैं। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियों को परिणति तक पहुचाना, राष्ट्रीय स्वाधीनता को सुदृढ बनाना और शान्ति, प्रगति तथा समाजवाद के ध्येय की ओर अपनी अपनी जनता का पथ-प्रदर्शन करना उनका मुख्य कार्यभार है।

अपने ठोस लक्ष्यो और कार्यभारो मे अन्तर होने के बावजूद सभी कम्युनिस्ट पाटिया एक ही कार्य—पूजीवाद से समाजवाद की ओर मानवजाति के विकास का निदेशन—कर रही है।

**रणनीति और कार्यनीति**

मार्क्सवाद-लेनिनवाद कम्युनिस्ट पार्टियो की राजनीति का सैद्धान्तिक आधार है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद उन सार्विक नियमो का अध्ययन करता है, जिनके बिना समाजवादी क्रान्ति को पूरा करना अथवा समाजवादी समाज का निर्माण करना सभव नही है। इसके साथ ही जीवन की वास्तविकता के प्रति ठोस ऐतिहासिक दृष्टिकोण इसकी विशेषता है और यह इस पर जोर देता है कि समाजवादी निर्माण को नियन्त्रित करने वाले आम नियम प्रत्येक देश मे अपने अपने विशिष्ट ढग से अभिव्यक्त होते हैं। कम्युनिस्ट जिस ध्येय के लिए सघर्ष कर रहे हैं, उसे सफल बनाने के निमित्त इन विशिष्ट परिस्थितियो को ध्यान मे रखना सर्वथा अनिवार्य है।

कम्युनिस्ट पार्टिया अपनी-अपनी सुनिश्चित राजनीतिक नीतिया निर्धारित करती हैं, जो उनकी रणनीति तथा कार्यनीति मे ठोस अभिव्यक्ति पाती हैं। इसे ध्यान मे रखना चाहिए कि कम्युनिस्ट आन्दोलन मे १९१७ की अक्तूबर क्राति से पहले रणनीति शब्द का प्रयोग नही होता था और उस समय कार्यनीति ही पार्टी की पूरी नीति मानी जाती थी। लेनिन ने 'जनवादी क्रान्ति मे सामाजिक-जनवाद की दो कार्यनीतिया' नामक अपनी कृति मे रूस मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति की तैयारी तथा निष्पत्ति मे पार्टी की समग्र राजनीतिक दिशा की ओर सकेत करते हुए "कार्यनीति" शब्द का प्रयोग किया था। उन्होने केवल १९१७ के अक्तूबर के बाद की कुछ कृतियो मे ही पार्टी की राजनीतिक नीति के प्रसग मे "रणनीति" शब्द का प्रयोग किया था, परन्तु तब भी उन्होने "रणनीति" तथा "कार्यनीति" मे कोई तीव्र अन्तर नही किया था।

वर्तमान कम्युनिस्ट आन्दोलन मे रणनीति सामाजिक विकास की विशेष ऐतिहासिक अवस्था मे मजदूर आन्दोलन के मुख्य लक्ष्य अथवा लेनिन के शब्दो मे मजदूर वर्ग तथा उसकी पार्टी के "आम और बुनियादी कार्यभार" की द्योतक है। रणनीति को निर्धारित करने का मतलब है—आन्दोलन का बुनियादी लक्ष्य निर्धारित करना, मुख्य वर्ग शत्रु को निर्धारित करना, जिसके विरुद्ध क्रान्तिकारियो के प्रयास को सकेन्द्रित करना आवश्यक है, तथा इस शत्रु के खिलाफ सघर्ष मे सहयोगी प्राप्त करना। इसके विपरीत कार्यनीति ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियो मे बुनियादी लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रयुक्त तरीको, साधनो और उपायो के योगफल के अलावा कुछ नहीं है। कार्यनीति

मे व्यापक दायरे वे प्रश्न समाविष्ट होते है सघर्ष के विन रूपो (आर्थिक, राजनीतिक, विचारधारात्मक, शान्तिपूर्ण और गैर शान्तिपूर्ण) का इस्तेमाल किया जाये, सघर्ष के विभिन्न रूपो को कैसे मिलाया जाये, आक्रामक और रक्षात्मक दोनो तरह की कारंवाइया कैसे की जायें और कैसे पीछे हटा जाये, समझौते और राजीनामे कैसे किये जायें, शत्रु-शिविर के अन्तर्विरोधो, सघर्षों तथा झगडो का कैसे लाभ उठाया जाये, गैर-सर्वहारा जनसमुदाय से कैसे सयुक्त मोर्चा कायम किया जाये, आदि। लेनिन के ही शब्दो मे यह मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकश लोगो को क्रान्तिकारी कारंवाई तथा आन्दोलन के मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये शिक्षित और सगठित करने से सम्बन्धित पार्टी का दैनिक कार्य है। लेनिन ने लिखा है, "मार्क्सवादी कार्यनीति मे सघर्ष के विभिन्न रूपो मे समन्वय करना, एक रूप से दूसरे रूप मे दक्षतापूर्ण सक्रमण करना, जनसमुदाय की चेतना को सतत बढाना और सामूहिक कारंवाइयो के क्षेत्र को व्यापक बनाना शामिल है।"*

कम्युनिस्ट रणनीति और कार्यनीति की एकता तथा कार्यनीतिक कार्यभारो को रणनीतिक लक्ष्यो के अनुरूप निर्धारित करने पर ज़ोर देते है। वे इस बात पर बल देते है कि कार्यनीति मे परिवर्तनो से रणनीति क्रातिकारी अन्तर्य से रहित न हो जाये तथा सर्वहारा वर्ग का ऐतिहासिक लक्ष्य विकृत न हो। वे सघर्ष के क्रान्तिकारी लक्ष्यो को विस्मृत कर देनेवाले दक्षिणपथी और वामपथी अवसरवादियो का दृढता से विरोध करते है, जो ऐतिहासिक परिस्थितियो मे परिवर्तनो के फलस्वरूप सघर्ष के कुछ कालातीत रूपो से कट्टरता के साथ चिपके रहने के कारण आन्दोलन के रणनीतिक और कार्यनीतिक कार्यभारो को उलझा देते है। वामपथी अवसरवादी इसे विस्मृत कर सदा केवल सशस्त्र विद्रोह का ही राग अलापते है कि सशस्त्र विद्रोह का तरीका सदैव तथा सर्वत्र व्यवहार्य या वाछनीय नही होता, कि केवल निश्चित परिस्थितियो मे ही, शोषको के सशस्त्र प्रतिरोध के उत्तर मे एकमात्र अन्तिम साधन के रूप मे इसे इस्तेमाल मे लाया जा सकता है।

रणनीति सापेक्ष रूप मे स्थिर तथा अडिग होती है। इसमे विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के किसी दस्ते अथवा किसी देश के विकास के स्तर

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'मजदूर आन्दोलन के रूपो के सबध मे'।

के फलस्वरूप तवदीलिया आती रहती हैं। रणनीति के पुराने कार्यभारों को पूरा कर लेने और विकास की नयी अवस्था मे देश के प्रविष्ट हो जाने पर ही सामान्यतया नये रणनीतिक कार्यभार प्रस्तुत होने हैं। मिसाल के लिये यदि पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के कार्यभार पूरे हो जायें, तो पार्टी नयी रणनीति – समाजवादी क्रान्ति की तैयारी और निष्पादन की रणनीति प्रस्तुत करती है।

रणनीति की अपेक्षा कार्यनीति अधिक परिवर्त्तनशील और गतिशील होती है वर्ग शक्तियो के सतुलन ने, देश जिन परिस्थितियों मे विकास करता है, उनमे तथा साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति मे होनेवाले परिवर्त्तनो के साथ ही सघर्ष के रूप और तरीके बदलते जाते हैं। लेनिन ने लिखा है कि विभिन्न देशो तथा विभिन्न कम्युनिस्ट दस्तो के कम्युनिज्म की ओर वस्तुगत विकास के विशेष लक्षणो का "अध्ययन करना, पता लगाना और उनका पूर्वाभास करना" नितान्त आवश्यक है।

मार्क्सवादी पार्टी की नीति, उसकी रणनीति तथा कार्यनीति का निर्धारण बहुत ही कठिन काम है। यह स्वय एक विज्ञान और कला दोनो ही है। यह विज्ञान इसलिये है कि राजनीतिक दिशा के निर्धारण के लिये वास्तविकता, वर्ग शक्तियो के सतुलन और ठोस ऐतिहासिक परिस्थिति का गहन वैज्ञानिक विश्लेषण अपेक्षित है। परन्तु सही नीति का निर्धारण ही नही, बल्कि उसका सफल क्रियान्वयन भी महत्वपूर्ण है। और इसके लिये काफी योग्यता, प्रणोदित कुशलता और वास्तविक कला आवश्यक है। इस कला के बिना अत्यत सही राजनीतिक दिशा भी बेकार सिद्ध होती है।

किसी नीति को कार्यान्वित करने की कला मुख्यत वर्ग-सघर्ष के व्यवहार मे प्राप्त होती है। सघर्ष के कठिनाइयो और जटिलताओ भरे व्यावहारिक स्कूल के बिना रणनीतिक तथा कार्यनीतिक पथ-प्रदर्शन की कला मे दक्षता प्राप्त करना असभव है। परन्तु इसका यह मतलब नही कि प्रत्येक पार्टी को केवल अपने अनुभव से ही व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। राजनीतिक पथ-प्रदर्शन की कला मे दक्षता प्राप्त करने के लिये दूसरी पार्टियो और वास्तव मे सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के अनुभव का अध्ययन करना भी नितान्त आवश्यक है।

राजनीतिक कला के कई पहलू हैं। इसमे जनता के बीच काम करने; गभीर मतभेद तक रखनेवाले वर्गों, पार्टियो और विभिन्न दलो के प्रयासो

मे समन्वय कायम करने, संघर्ष के उपयुक्त रूपो का चयन करने तथा राजनीतिक परिस्थिति मे हुए परिवर्त्तनो के अनुरूप समय रहते उनमे तबदीली करने; उपयुक्त परिस्थिति पैदा होने पर प्रहार करने, समय रहते उपयुक्त रूप मे पीछे हटने, पार्टी के सम्मुख प्रस्तुत कई कार्यभारो मे से मुख्य कार्यभार को चुनने और इसे पूरा करने पर पार्टी का ध्यान संकेन्द्रित करने आदि की योग्यता शामिल है।

**पूंजीवादी देशों के गैर-सर्वहारा मेहनतकश लोगों, मुख्यतः किसान समुदाय के साथ सर्वहारा वर्ग की दोस्ती को क़ायम करना तथा सुदृढ बनाना** रणनीति और कार्यनीति की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण समस्या है।

जहा तक मजदूरो और किसानो की सामाजिक स्थिति तथा उनके अन्तिम लक्ष्यो का सम्बन्ध है, उनमे काफी समानता है। पूजी द्वारा दोनो का समान रूप से शोषण होता है और दोनो ही पूजीपति वर्ग के आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभुत्व से मुक्त होना चाहते है। यह एक ही लक्ष्य मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के बीच सुदृढ मैत्री का वस्तुगत आधार प्रस्तुत करता है। परन्तु यह मैत्री स्वतःस्फूर्त रूप मे अपने आप कायम नही हो जाती—कम्युनिस्ट पार्टिया पूजीवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान इसे कायम करती है।

मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के बीच मैत्री का विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद का एक आधारभूत विचार है। यह इस धारणा पर आधारित है कि मजदूर वर्ग ही युगो पुरानी कृषि समस्या को किसान के हक मे हल कर सकता है और इस प्रकार उसे उस जमीन पर खेती करने का अवसर प्रदान करता है, जो या तो उसकी अपनी है अथवा सारे समाज की है। दूसरी ओर किसान समुदाय द्वारा क्रान्ति का समर्थन करने और उसमे सक्रिय भाग लेने पर ही मजदूर वर्ग पूजीवाद को नष्ट कर सकता है और उसके स्थान पर समाजवादी समाज की स्थापना कर सकता है।

किसान समुदाय तथा अन्य गैर-सर्वहारा मेहनतकश लोगो के साथ मजदूर वर्ग की मैत्री क्रान्ति की मुख्य सामाजिक-राजनीतिक शक्ति है। इसलिये इस मैत्री को कायम करना तथा इसे सुदृढ करना किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी के सम्मुख प्रस्तुत सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यभारो मे एक है।

लेनिन क्रान्ति को जनता के सृजनात्मक कार्य का ही फल मानते थे। किन्तु जनता को यह समझाने के लिये कि क्रान्ति आवश्यक है और उसमे

उसका सक्रिय भाग लेना अनिवार्य है, पार्टी का जनता के बीच काम करना आना चाहिये। जनता के बीच और उसके साथ काम करने की योग्यता ही वह मुख्य कला है, जिसे पार्टी को जानना चाहिये। यह प्रचार करने की योग्यता का उतना नहीं, जितना पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यभार को पूरा करवाने के लिए जनता का उसके अपने राजनीतिक अनुभव के आधार पर नेतृत्व करने का सवाल है।

"जनता से सम्बन्ध रखना।

'उसके बीच रहना।

'उसकी मनोभावना को जानना।

"सभी कुछ जानना।

"जनता को समझना।

"उसके पास जाने की योग्यता रखना।

'उसके पूर्ण विश्वास को प्राप्त करना।

"नेता और जनता के बीच, हरावल तथा श्रम-सेना के बीच खाई न पैदा करना। *—ये हैं जनता का नेतृत्व करने की कला के बारे मे लेनिन द्वारा प्रतिपादित बुनियादी सिद्धान्त, जिनसे कम्युनिस्टो का पथ प्रदर्शन होता है।

**आम नीति**

मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर निर्भर रहते हुए तथा सर्वहारा वर्ग के एक सदी पुराने वर्ग-सघर्ष के बारे मे सचित अनुभव का सामान्यीकरण करते हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो ने १९५७ और १९६० मे मास्को मे हुए अपने सम्मेलनो मे वर्तमान विश्व कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन के रणनीतिक लक्ष्यो को निर्धारित करनेवाली आम नीति को निरूपित किया।

आम नीति का निरूपण वर्तमान युग के मुख्य लक्षणा के विश्लेपण द्वारा, जिसका मुख्य अतर्य पूजीवाद से समाजवाद मे सक्रमण है, तथा इस तथ्य को स्वीकार करके किया गया था कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग और इसका मुख्य फल—विश्व समाजवादी प्रणाली वतमान अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के प्रमुख कारक है। पूजीवादी देशो के क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और विविध जनवादी आन्दोलनो के साथ समाजवाद तथा

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'नयी आर्थिक नीति के तहत ट्रेड-यूनियनो की भूमिका और कार्यभार' नामक प्रतिपत्तियो का मसविदा।

कम्युनिज़म का निर्माण करनेवाले लोग एक ही **साम्राज्यवाद विरोधी क्रान्तिकारी धारा** के अग है, जो पूंजीवाद की जड को कमज़ोर कर रही है और दुनिया मे एक नये, समाजवादी, कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर रही है।

विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की आम नीति है वर्ग सघर्ष तथा समाजवादी क्रान्ति की नीति। कम्युनिस्टो का मत है कि **पूंजीवाद का क्रान्तिकारी विनाश और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना समाजवाद की ओर सक्रमण के लिये अनिवार्य है**, जो विभिन्न रूप ग्रहण कर सकता है।

कम्युनिस्ट पार्टिया सदा स उपनिवेशवाद के विरुद्ध रही है और आज भी है। वे **राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन** का बिना शर्त समथन करती है और जनवादी, साम्राज्यवाद विरोधी क्रान्ति की निष्पत्ति, वास्तविक राष्ट्रीय स्वाधीनता की स्थापना और विकास के गैर-पूंजीवादी पथ को अपनाने के लिये काम करती है।

कम्युनिस्ट सर्वत्र सक्रिय रूप से **साम्राज्यवादी प्रतिक्रिया का विरोध तथा मेहनतकश लोगो के जनवादी अधिकारो और स्वतत्रताओं का समर्थन करते है।** वे प्रत्येक साम्राज्यवाद विरोधी जनवादी आन्दोलन को पूंजीवाद के विरुद्ध तथा समाजवाद और सामाजिक प्रगति के अपने सघर्ष मे अपना सहायक मानते है।

कम्युनिस्ट आन्दोलन वर्तमान युग का सबसे मानवतावादी आन्दोलन है। यह कोई सयोग की बात नही है कि वह शान्ति के लिए सघप और विभिन्न सामाजिक प्रणालिया वाले राज्यो के बीच शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए सघर्ष को, करोडो लोगो की प्राण रक्षा, जनता द्वारा पैदा की गयी भौतिक तथा सास्कृतिक सम्पदा की सुरक्षा के सघर्ष को अपना एक मुख्य कार्यभार मानता है। इसे पूरा करने के लिए कम्युनिस्ट सभी शान्तिप्रेमी, साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियो को एकजुट करने का प्रयास कर रहे है।

अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की आम नीति है पूंजीवाद के विरुद्ध क्रान्तिकारी सघर्ष तथा दुनिया भर मे समाजवाद एव कम्युनिज़म की पूर्ण विजय की नीति, राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनवाद तथा नये विश्व युद्ध को रोकने की नीति। यह नीति मेहनतकश लोगो के चिरसाध्य हितो और सर्वोच्च मानवीय आदर्शों के अनुरूप है।

यह सोचना भारी भूल होगी कि कम्युनिस्ट आन्दोलन अन्तर्विरोधो तथा कठिनाइयों के बिना विकसित होता है। कम्युनिस्टों को सदा न केवल पूजीपति वर्ग, उसके राजनीतिज्ञो तथा वैचारिकों के विरुद्ध ही, बल्कि अपनी पातो म फैली **अवसरवादी** प्रवृत्तियो के विरुद्ध, सशोधनवाद तथा जडसूत्रवाद के खिलाफ भी कटु सघर्ष करना पडता है।

मजदूर आन्दोलन मे अवसरवाद वह सिद्धान्त और व्यवहार है, जो मजदूर वर्ग के हितो के विरुद्ध है। मजदूर आन्दोलन को पूजीपति वर्ग के हिता के अनुकूल ढालने के लिए वह समझौतापरस्ती, खुले आत्मसमर्पण और अनुचित कार्रवाइयो तथा भडकावे का रास्ता अपनाता है। अपने वर्ग स्वरूप की दृष्टि से अवसरवाद **निम्न-पूजीवादी** नीतियो और वैचारिकी की अभिव्यक्ति है।

अवसरवाद भाति-भाति के रूप ग्रहण करता है **सशोधनवाद, जडसूत्रवाद और सकीर्णतावाद।**

सशोधनवादी (मिसाल के लिए दक्षिणपथी सामाजिक-जनवादी नेता) वास्तव मे समाजवादी क्रान्ति को अस्वीकार करते हैं, पूजीवाद के अन्तर्विरोधो को नजरदाज करते हैं और दावा करते हैं कि पूजीवाद को विशुद्ध सुधारवादी तरीके से समाजवाद मे रूपान्तरित किया जा सकता है।

सशोधनवादी यह कहकर कि मार्क्सवाद १९वी सदी मे अस्तित्व मे आया था और इस समय २०वी सदी है, यह दावा करते हैं कि वह पुराना पड गया है और उसे "आधुनिक बनाना" तथा "सशोधित करना" आवश्यक है। परन्तु मार्क्सवाद के "आधुनिकीकरण" की बात करते हुए वे वास्तव मे उसे उसके क्रान्तिकारी सारतत्त्व से रहित कर देते है। उनका कहना है कि आज की पूजीवादी दुनिया मे राजकीय-इजारेदारी पूजीवाद के विकास, पूजीवादी राष्ट्रीयकरण और पूजीवादी राज्य द्वारा आर्थिक विकास को नियन्त्रित करने के प्रयासो से जनित घटनाक्रम से सिद्ध होता है कि पूजीवाद की आधारशिला ही परिवर्तित हो रही है, पूजीवाद अधिकाधिक समाजवाद के समान होता जा रहा है, वह "धीरे-धीरे" समाजवाद की ओर सरक रहा है। और चूकि पूजीवादी देशो मे सत्ता पूजीपतियो के हाथ मे होती है, इसलिए इसका मतलब यही है कि पूजीपति वर्ग खुद पूजीवाद मे परिवर्तन कर रहा है और उसे धीरे धीरे समाजवाद मे बदल रहा है।

यह समझना कठिन नही है कि समसामयिक पूजीवाद के समाजवाद

मे स्वत रूपान्तरण की इन सभी बातो का एकमात्र अर्थ है वर्ग सघर्ष तथा समाजवादी क्रान्ति का परित्याग सर्वहारा अधिनायकत्व और वास्तविक समाजवाद का परित्याग। यह कोई रहस्य नही है कि समसामयिक पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सभी नये व्यापारो से पूजीवाद की वास्तविक आधारशिला – निजी स्वामित्व तथा शोषण पर किसी भी तरह कोई प्रभाव नही पडता। पूजीवाद वास्तव मे पूजीवाद ही बना रहता है और उस मात्र समाजवादी क्रान्ति तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व से ही समाजवाद मे रूपान्तरित किया जा सकता है।

जडसूत्रवादी और सकीर्णतावादी आत्मगत रूप म क्रान्ति के पक्ष मे है। इसके अलावा वे सोचते हैं कि वे ही सच्चे क्रान्तिकारी हैं और "क्रान्तिकारी युद्ध" से पूजीवाद के फौरी विनाश पर ज़ोर देते हैं। वे शस्त्र-बल से विश्व क्रान्ति को द्रुत गति प्रदान करने और इस बात को ध्यान मे लाये बिना कि देश विशेष मे समाजवाद के लिए परिस्थितिया परिपक्व हैं या नही, वहा के निवासी समाजवाद को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं या नही, बाहर से लोगो पर समाजवाद को थोपने का प्रयास करते हैं। वे इस तथ्य की उपेक्षा करते हैं कि आज की परिस्थितियो म, जब विनाश के भयकर हथियार मौजूद हैं, विश्व पूजीवाद के विरुद्ध "क्रान्तिकारी युद्ध" अनिवार्यत सर्वनाशी विश्वव्यापी तापनाभिकीय युद्ध का रूप ग्रहण कर लेगा। ऐसे युद्ध मे करोडो व्यक्ति मर जायेंगे, पूरे के पूरे राष्ट्रो का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा और मानवजाति अपने विकास मे बहुत ही पीछे ढकेल दी जायेगी।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना के प्रतिकूल विचारो का प्रचार करते हुए जडसूत्रवादी सामान्यतया उन उद्धरणो को प्रस्तुत करके अपने तर्कों को सिद्ध करने की कोशिशें करते हैं कि युद्ध साम्राज्यवाद के अपरिहार्य सहगामी हैं। निस्सन्देह, साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप नही बदला है और इस कारण यह नही समझना चाहिए कि प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तियो द्वारा एक नये युद्ध का शुरू करने की आशका दूर हो गई है। परन्तु इसके साथ यह भी स्पष्ट है कि इस समय उनके लिए ऐसा करना पहले से कही अधिक कठिन होगा। अब शक्तिशाली समाजवादी प्रणाली तथा अनेक गैर-समाजवादी देश और दुनिया के व्यापक जन समुदाय शान्ति रक्षा के लिए तत्पर हैं। इन सभी बातो ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी

इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि वर्तमान युग मे विश्व युद्ध अनिवार्य नही रहे हैं।

हम देखते हैं कि जडसूत्रवादी ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियो तथा मानवजाति जिन परिवर्तनो से गुजर चुकी है, उन्हे न तो ध्यान म लाते है और न लाना ही चाहते हैं। सशोधनवाद का मूलतत्त्व भी यही है, जिसके पोषक या तो आज के पूजीवाद म हुए परिवर्तनो के स्वरूप को नही समझ पाते अथवा समझना नही चाहते। परिस्थिति मे हुए परिवर्तनो का मूल्याकन करने, उसके सभी पहलुओ एव विशेषताओ का अध्ययन करने और उसके अनुरूप कार्यनीति निर्धारित करने मे अक्षमता सभी रूपो के अवसरवाद का खास लक्षण हैं, चाहे वह सशोधनवाद हो या जडसूत्रवाद। सशोधनवादी समाजवादी क्रान्ति के विरुद्ध हैं। यद्यपि कथनी मे वे सुधारो के जरिये पूजीवाद के समाजवाद मे रूपान्तरण के समर्थक हैं, परन्तु करनी मे वे पूजीवाद को कायम रखने के पक्ष मे हैं। जडसूत्रवादी तत्काल "विश्व क्रान्ति के समर्थक है और चाहे या अनचाहे इस धारणा के फलस्वरूप वे क्रान्तिकारी ध्येय को भारी क्षति पहुचाते हैं। सशोधनवादियो की भाति जडसूत्रवादी भी पूजीपति वर्ग के हाथो मे खेलते हैं। सक्षेप मे, सशोधनवाद और जडसूत्रवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

जैसा कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस के निर्णयो मे कहा गया है, "राष्ट्रवाद तथा नायकत्व की आकाक्षाओ से सम्बद्ध होकर मार्क्सवादी लेनिनवादी पथ के 'वामपथी' अथवा 'दक्षिणपथी' विचलन और भी खतरनाक हो जाते हैं।"

कम्युनिस्टो मे गभीर मतभेद हैं, परन्तु इसका मतलब यह नही है कि वे अलघ्य हैं। वे दूर हो सकते हैं और उन्हे अवश्य दूर किया जाना चाहिए, क्योकि पूजीवाद के विरुद्ध, समाजवाद और कम्युनिज्म के लिए सघर्ष की सफलता के निमित्त अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता एक मुख्य पूर्वापेक्षित शर्त है।

सैद्धान्तिक तथा राजनीतिक समस्याओ के बारे म कम्युनिस्टो के मतभेद केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तो के आधार पर ही दूर हो सकते हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद, विश्व समाजवादी क्रान्ति और मजदूर वर्ग तथा सभी महनतकश लोगो के ध्येय के प्रति निष्ठा ही सारी दुनिया के कम्युनिस्टो के बीच एकता का आधार है, वह एकता,

जिमके लिए सोवियत सघ के कम्युनिस्ट और सभी सच्चे मार्क्सवादी-लेनिन-वादी अथक प्रयास कर रहे है।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के मास्को सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज मे कहा गया है कि **"मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रति आस्था और अपनी-अपनी जनता के हितो एवं समाजवाद के साझे ध्येय के लिये निष्ठापूर्ण और समर्पित कार्य कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो की संयुक्त कार्रवाइयो की कारगरता एवं उसके सही दिशा-निर्धारण की आवश्यक शर्त है, इस बात की गारंटी है कि वे अपने ऐतिहासिक ध्येयो को प्राप्त करेगी।"**

लेनिन ने लिखा है कि व्यवहार, "राजनीतिक घटनाक्रम की वास्तविक गति" पार्टियो के बीच मतभेदो को दूर करने के सबसे महत्त्वपूर्ण साधनो मे एक है और इस पर जोर दिया है कि "नई राजनीतिक घटनाओ की रोशनी मे निर्णयो की उपयुक्तता" को यथासभव बार-बार परखा जाना चाहिए।

मास्को सम्मेलन मे भाग लेनेवालो ने अपने इस एक-से विचार की पुष्टि की कि पार्टियो के बीच आपसी सम्बन्ध सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, एकता, पारस्परिक समर्थन, स्वतत्रता तथा समानता के सम्मान और एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप के सिद्धान्तो पर आधारित है। द्विपक्षीय विचार-विनिमय, क्षेत्रीय बैठके, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन तथा अनुभव का सर्वांगीण आदान-प्रदान बन्धु पार्टियो के बीच सहयोग के स्वरूप है।

१९६९ के जून मे मास्को मे हुआ कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन एक महत्त्वपूर्ण कदम था। इस सम्मेलन मे भाग लेनेवालो ने घोषणा की कि "कुछ मतभेदो के बावजूद कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टिया साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष मे सयुक्त मोर्चा कायम करने के बारे मे अपने दृढ निश्चय की पुष्टि करती है।" उन्होने विश्वास प्रकट किया कि ये कठिनाइया दूर हो जायेंगी, क्योंकि "अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के दीर्घकालीन लक्ष्य और हित सामान्य है", क्योकि प्रत्येक पार्टी "वर्तमान समस्याओ के ऐसे समाधान की दिशा मे" प्रयत्नशील है, जो "राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय हितो और कम्युनिस्टो की क्रान्तिकारी भूमिका के अनुकूल हो।"

उक्त सम्मेलन मे भाग लेनेवालो ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष मे,

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर तथा कम्युनिस्ट आन्दोलन के समान लक्ष्यो को पूरा करने के लिए सयुक्त कार्रवाई करने के अपने दृढ सकल्प की घोषणा की। उन्होने क्रान्तिकारी और प्रगतिशील शक्तियो की अन्तिम विजय मे अपना विश्वास प्रकट किया। उन्होने समाजवादी देशो के लोगो, पूजीवादी देशो के मजदूरो और सभी जनवादी शक्तियो, नवस्वतत्र राष्ट्रो और जो आज भी उत्पीडित है, उन सब से **"साम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा शांति, राष्ट्रीय मुक्ति, सामाजिक प्रगति, जनवाद और समाजवाद के लिये संयुक्त संघर्ष मे एकजुट होने की"** अपील की।

मतभेदो को दूर करने के लिए समस्याओ पर विचार करना, अपना खयाल प्रकट करना तथा दूसरो के विचारो को जानना, बहुमत के विचारो से अवगत होना, इन विचारो को निर्णय मे सूत्रबद्ध करना और इस निर्णय को ईमानदारी से अमल मे लाना आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट सम्मेलनो मे, जिनमे सामूहिक रूप से बहुत ही आवश्यक समस्याओ पर विचार किया जाता है और क्रान्तिकारी सघर्ष के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नो पर समन्वित निर्णय किये जाते है, यही तरीका अपनाया जाता है।

कम्युनिस्ट पार्टियो के आपसी मतभेदो को स्वाभाविकतया तत्काल दूर नही किया जा सकता। इसके लिए समय और धैर्य अपेक्षित है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन बातो से कम्युनिस्ट पार्टियो मे भेद हो, उनपर नही, बल्कि जिनसे वे एकता के सूत्र मे आबद्ध होती हो, उन पर ध्यान सकेन्द्रित किया जाये और यथासभव कम से कम समय मे साझे लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए साझे शत्रु के विरुद्ध सघर्ष मे सभी बधु पार्टियो के प्रयासो मे समन्वय स्थापित करने के तरीको को निकाला जाये।

अध्याय ५

# राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियां

समाजवाद का मतलब है मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का पूर्ण उन्मूलन और राष्ट्रीय तथा औपनिवेशिक सभी प्रकार के उत्पीड़न का अन्त। विश्व पूंजी के प्रभुत्व के विरुद्ध तथा नयी समाजवादी प्रणाली के निर्माण के लिए संघर्ष उपनिवेशवाद के उन्मूलन का द्योतक है और इस प्रकार इसमें साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीड़ित राष्ट्रों की स्वाधीनता, पुनरुद्धार तथा विकास का संघर्ष भी शामिल है। इसी कारण राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया का एक अनिवार्य तत्त्व है और इस आन्दोलन के फलस्वरूप औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन वर्तमान युग का एक विशिष्ट लक्षण है। इस अध्याय में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन, उसके स्वरूप, बुनियादी कार्यभार और महत्त्व पर विचार किया गया है। हम सर्वप्रथम साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन की चर्चा करेंगे।

## १. साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन

कुछ ही विकसित देशों के साम्राज्यवादियों ने कई अविकसित देशों को गुलाम बना रखा है।

उन्होंने शस्त्र-बल, ब्लैकमेल, घूस और विश्वासघात के सहारे अफ़्रीका और लैटिन अमरीका के पूरे के पूरे महाद्वीपों तथा एशिया के बहुत बड़े भाग को हथिया लिया और औपनिवेशिक सत्ता की एक विशाल प्रणाली का

निर्माण किया, जिसकी दासता के पाश मे अभी हाल तक आधी से अधिक मानवजाति आबद्ध थी।

साम्राज्यवाद की यह औपनिवेशिक प्रणाली मानवजाति के इतिहास के एक सबसे दुखद परिच्छेद की द्योतक है। साम्राज्यवादियो ने अपने उपनिवेशो को जिस स्थिति मे डाल दिया था, उसमे असख्य मौते, भीषण रक्तपात, पाशविक शोषण, गरीबी, भूख, बीमारी और जहालत ही लोगो के भाग्य मे बदी थी। इस प्रसग मे यही कहना पर्याप्त है कि उपनिवेशवादियो ने १० करोड से अधिक अफ्रीकियो को या तो दासता के लिए बेच दिया या खत्म कर दिया था।

साम्राज्यवादी और उनके प्रचारक अपने सभ्यता-प्रसार कार्य के बारे मे, पिछडे हुए राष्ट्रो को आधुनिक तक्नीक, सस्कृति और रहन-सहन की सुविधाए आदि प्रदान करने की बाते सदा करते आये है और आज भी करते है। परन्तु उत्पीडित राष्ट्रो को इस प्रकार की बातो से मूर्ख नही बनाया जा सकता। वे उपनिवेशवाद के वास्तविक पाशविक स्वरूप को अच्छी तरह जानते है। वे जानते है कि साम्राज्यवादियो के लिए उपनिवेश लाभजनक पूजी-निवेश के क्षेत्र, सस्ते कच्चे मालो एव श्रम-शक्ति के स्रोत, मण्डियो और फौजी अड्डो के स्थल है।

उपनिवेशवाद का अर्थ है गुलाम बने राष्ट्रो से अधिकाधिक मुनाफा कमाने के एकमात्र उद्देश्य से उनका निर्मम शोषण। स्वाभाविक है कि इन राष्ट्रो ने औपनिवेशिक शासन को कभी भी नही स्वीकारा। उन्होंने स्वतत्रता और राष्ट्रीय आज़ादी के लिए साम्राज्यवादी लुटेरो के विरुद्ध नि स्वार्थ सघर्ष किया और आज भी कर रहे है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को प्रबल प्रेरणा प्रदान की, सभी उत्पीडित राष्ट्रो को जगाया, उन्हे सघर्ष के लिए उत्प्रेरित किया और विश्वव्यापी क्रान्तिकारी आन्दोलन के सयुक्त प्रवाह मे खीचा। दुनिया के प्रथम समाजवादी देश – सोवियत सघ – ने समाजवादी क्रान्ति का राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के साथ तालमेल कायम करने का व्यावहारिक नमूना प्रस्तुत किया और जन मुक्ति सघर्ष का आदर्श तथा विश्वसनीय दुर्ग बन गया। अक्तूबर क्रान्ति की विजय के साथ साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली के सकट का प्रारभ हो गया।

सोवियत सघ मे समाजवाद की विजय (जिसके फलस्वरूप १०० से अधिक

जातिया सामाजिक तथा औपनिवेशिक उत्पीडन से मुक्त हुई), जर्मन फासिस्टवाद और जापानी सैन्यवाद की पराजय तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे नूतन शक्ति सतुलन के साथ ही विश्व समाजवादी प्रणाली की स्थापना, क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास और कम्युनिस्ट पार्टियो के बढ़ते हुए प्रभाव ने राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के लिए बहुत ही अनुकूल परिस्थितिया पैदा कर दी है। **समाजवाद का उत्थान उत्पीड़ित राष्ट्रो के मुक्ति युग की शुरूआत का द्योतक है।** अनेक राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो ने साम्राज्यवाद की आधारशिला को ध्वस्त करते हुए औपनिवेशिक प्रणाली के अधिकाश को मिटा दिया है। कभी के उपनिवेश और अर्ध-उपनिवेश अब नवोदित प्रभुतासम्पन्न राष्ट्र बन गये है और बन रहे हैं।

एशिया का स्वरूप मूलत: बदल गया है और चीन, भारत, इन्डोनेशिया तथा अन्य देशो के लोगो ने अपने को औपनिवेशिक तथा अर्ध-औपनिवेशिक जुए से मुक्त कर लिया है। अफ्रीका मे भी औपनिवेशिक प्रणाली ध्वस्त होती जा रही है। कुछ ही समय के भीतर इस विशाल महाद्वीप मे दर्जनों प्रभुतासम्पन्न राज्यो के झण्डे फहराने लगे हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के वर्षों में भूतपूर्व पराधीन भू-खण्डो की जगह सत्तर से अधिक स्वाधीन राज्य उभर चुके हैं। इस समय लैटिन अमरीका साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध सिर उठा रहा है, जहा पहले दशाब्दियो तक संयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यादियो का एकच्छत्र प्रभुत्व था। वीर क्यूबा मे जन क्रान्ति विजयी हो चुकी है और उसने लैटिन अमरीका के सभी राष्ट्रो के सम्मुख राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति के लिए न्यायोचित सघर्ष का आदर्श प्रस्तुत कर दिया है।

औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन और भूतपूर्व उपनिवेशो द्वारा प्राप्त स्वाधीनता साम्राज्यवादियो की देन नही, जैसा कि वे खुद दावा करते है, बल्कि विदेशी शासन के विरुद्ध जनता के वीरतापूर्ण तथा त्यागमय सघर्ष का परिणाम है।

वह दिन दूर नही है, जब मानवजाति के इतिहास के इस कलक, उपनिवेशवाद को सदा के लिए मिटा दिया जायेगा। उपनिवेशवाद इतिहास के वस्तुगत विकास, सामाजिक प्रगति की अपेक्षाओ और जनसाधारण के हितो के प्रतिकूल है। जब तक उपनिवेशवाद के अन्तिम

दुर्गों को ध्वस्त नही कर दिया जाता, तब तक उत्पीडित राष्ट्र, सारी दुनिया के राष्ट्र सघर्ष करते रहेगे।

**राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का महत्त्व**

राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन समसामयिक इतिहास मे बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। साम्राज्यवाद की जड खोदकर और इस प्रकार समाजवाद की विजय मे सहायता प्रदान करते हुए, वह सामाजिक प्रगति का एक मुख्य कारक बन गया है। **राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन – आज की एकीभूत विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अग है**, जिसके बिना समाजवाद की विश्वव्यापी विजय असभव होगी।

मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज मे कहा गया है, "औपनिवेशिक प्रणाली के ध्वस्त होने से साम्राज्यवाद की स्थिति काफी कमजोर हो गई है। **पिछले दशक मे विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया मे एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के साम्राज्यवाद विरोधी जन आन्दोलन की भूमिका बढती गयी है।** कुछ देशो मे यह आन्दोलन पूजीवाद विरोधी अन्तर्य ग्रहण करता जा रहा है।"

लेनिन ने बताया था कि राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समर्थन के बिना "यूरोप मे समाजवाद सुरक्षित नही रहेगा" और औपनिवेशिक उत्पीडन मे दिन काटते लोगो के क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ विकसित देशो के पूजीपति वर्ग के विरुद्ध सर्वहारा सघर्ष का तालमेल बिठाने के फलस्वरूप ही विश्व समाजवादी क्रान्ति की विजय सभव हो सकेगी। लेनिन समाजवाद की विश्वव्यापी विजय के सघर्ष मे राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग का विश्वसनीय साथी मानते थे।

विश्व इतिहास मे कभी के उत्पीडित तथा परतत्र राष्ट्रो की बडी भूमिका के बारे मे लेनिन की भविष्यवाणी आज सच्ची हो गई है। औपनिवेशिक साम्राज्य के ध्वसावशेष से उभरे हुए नवोदित प्रभुतासम्पन्न राज्यो के लोग अब नये जीवन का निर्माण कर रहे है और विश्व राजनीति मे सक्रिय भाग ले रहे है।

नवस्वतत्र राष्ट्र वर्तमान युग की सबसे बडी समस्या – नये विश्वयुद्ध को रोकने और शान्ति को सुदृढ करने की समस्या – के समाधान मे भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है।

औपनिवेशिक दासता से मुक्त राष्ट्रो की जनसख्या समाजवादी देशो के

लोगो के साथ मानवजाति की कुल सख्या की दो-तिहाई है और साम्राज्यवादी आक्रमणकारियो पर अकुश लगाने के लिए यह एक प्रबल शक्ति है।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन इस कारण भी महत्त्वपूर्ण है कि वह साम्राज्यवाद की राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक-रणनीतिक स्थितियों पर शक्तिशाली प्रहार करता है। औपनिवेशिक प्रणाली के ध्वस्त होने के फलस्वरूप साम्राज्यवादियो के प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभुत्व का दायरा काफी सिमट गया है और भूतपूर्व उत्पीडित राष्ट्रों पर गैर-आर्थिक दबाव थोपकर अपने को अधिकाधिक सम्पन्न बनाने के अब उन्हे बहुत कम अवसर प्राप्त है। अनेक आक्रमण-स्थलो तथा फौजी अड्डो और सामरिक कच्चे मालो के आवश्यक स्रोतो के निकल जाने से साम्राज्यवाद की सैनिक-रणनीतिक स्थिति भी काफी कमजोर हो गई है।

पहले के उत्पीडित देशो के प्राकृतिक तथा जन शक्ति साधनो के शोषण के साम्राज्यवादियो को अब बहुत ही कम अवसर प्राप्त हैं, जिसके फलस्वरूप साम्राज्यवादी राज्यो के विभिन्न समूहो के बीच अन्तर्विरोध गंभीर हो गये हैं, और साथ ही पूजीवाद के अन्तर्विरोध, विशेष रूप से श्रम तथा पूजी के बीच अन्तर्विरोध तीव्र रूप ग्रहण करते जा रहे हैं।

इस प्रकार साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन मानवजाति के विकास मे एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। साम्राज्यवाद की जड खोदकर और उसके वर्तमान औपनिवेशिक कुचक्रो को विफल करके यह मानवजाति के पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण को सुगम बना रहा है। इसी कारण कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो ने इसे "विश्व समाजवादी प्रणाली की स्थापना के बाद ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से दूसरे नम्बर की घटना"* कहा है।

## २. नव-उपनिवेशवाद का खतरा

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, अधिकाश औपनिवेशिक तथा पराधीन देश राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर चुके हैं। परन्तु, अगर

* 'शान्ति, जनवाद और समाजवाद के लिए सघर्ष', अग्रेजी सस्करण, मास्को, पृष्ठ ६१।

साम्राज्यवादी नव प्रभुतासम्पन्न देशों के शोषण को तीव्र बनाकर औपनिवेशिक प्रणाली का पुनः कायम करने की कोशिशें करते रहेंगे और अगर आज भी करोड़ों लोग (दक्षिण अफ्रीका, अंगोला, मोज़ाम्बिक, रोडेशिया और अन्य देशों में) औपनिवेशिक दासता के पाश में आबद्ध रहेंगे, तो स्वतंत्र राष्ट्र अपने को सुरक्षित नहीं महसूस कर सकेंगे।

औपनिवेशिक उत्पीडन के नये रूपों के विरुद्ध, नव-उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमरीका के लोगों तथा सम्पूर्ण प्रगतिशील मानवजाति के सम्मुख प्रस्तुत एक मुख्य कार्यभार है।

नव-उपनिवेशवाद क्या है और वह क्या-क्या रूप लेता है?

**भूतपूर्व उपनिवेशों को आर्थिक तथा सामाजिक निर्भरता की स्थिति में डाले रखने और उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति को अवरुद्ध करने के लिये साम्राज्यवादियों द्वारा उठाये गये आर्थिक, राजनीतिक, फौजी और विचारधारात्मक क़दम ही नव-उपनिवेशवाद कहलाते हैं।**

**साम्राज्यवाद का आर्थिक तथा राजनीतिक प्रसार**

साम्राज्यवादी राष्ट्रों का अन्य देशों की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण जारी रहना और वास्तव में उनका घोर आर्थिक शोषण ही नव-उपनिवेशवाद का मुख्य लक्षण है। यद्यपि अधिकांश अफ्रीकी, एशियाई और लैटिन अमरीकी देशों ने राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर ली है, परन्तु आज भी उनमें से कई आर्थिक दृष्टि से साम्राज्यवादी देशों पर आश्रित हैं। उनके कारखाना तथा प्राकृतिक सम्पदा के अधिकांश अभी भी विदेशी इजारेदारियों के कब्जे में हैं, जो इस स्थिति के कारण उनसे भारी मुनाफा कमाती रह सकती हैं। इस समय वे इन देशों से करीब ६ अरब डालर हर साल मुनाफे के रूप में हड़प लेती हैं। यह समझना कोई कठिन नहीं है कि यदि इस सम्पदा पर उनका खुद नियंत्रण रहे, तो उनकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा उनके जीवन-स्तर में कितने बड़े परिवर्तन आ जायेंगे।

साम्राज्यवादियों द्वारा विकासमान देशों को तथाकथित आर्थिक सहायता प्रदान करना नव उपनिवेशवाद का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है। नव-उपनिवेशवाद के वैचारिकों और राजनीतिज्ञों के दावे के विपरीत यह सहायता स्वार्थशून्य नहीं है। इसका सुनिश्चित उद्देश्य है इसे प्राप्त करनेवाले देशों पर ऐसे आर्थिक समझौतों को थोपना, जिनके सहारे विदेशी

इजारेदारियां इन देशों में अपनी आर्थिक स्थिति को कायम रखने तथा उसे सुदृढ बनाने और उन देशों के आर्थिक विकास को अपने निजी स्वार्थपूर्ण हितों के अधीन बनाने मे सक्षम हो जायेंगी। बहुधा यह "सहायता" ऐसी शर्तों पर प्रदान की जाती है कि इसे प्राप्त करनेवाले देशो की राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर आंच आती है, उनके लिए अपनी इच्छानुकूल विकास के पथ को चुनना असंभव हो जाता है और वह उनकी गृह एवं विदेश नीतियों पर दबाव डालने का साधन बन जाती है। सामान्यतया, "सहायता" सम्बन्धी समझौतों में सहायता पानेवाले देशो में बडी संख्या मे आर्थिक और वित्तीय "सलाहकारों" को तैनात करने का प्रावधान होता है, जो वास्तव मे नव-उपनिवेशवादी नीतियों के प्रचारक होते हैं।

नवस्वतंत्र राज्यों के आर्थिक कल्याण के लिए बडी चिन्ता प्रदर्शित करने का प्रपंच रचते हुए साम्राज्यवादी वास्तव में उन्हें विकास के पूंजीवादी पथ को अपनाने के लिए विवश करते हैं, क्योंकि इसी ढंग से वे उनपर अपना नियंत्रण कायम रख सकते हैं। साम्राज्यवादियों द्वारा नवोदित प्रभुतासम्पन्न राज्यों में उठाये गए सभी आर्थिक कदमों की भांति साम्राज्यवादी "सहायता" का मुख्य उद्देश्य है **नवस्वतंत्र राज्यों को विकास के पूंजीवादी पथ को अपनाने के लिये विवश करना और** उनके आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर नियंत्रण स्थापित करना। इस प्रकार की "सहायता" से विकासमान देशो की अर्थव्यवस्था मे इजारेदारी पूंजी को घुसने के लिये मदद मिलती है। इसका अधिकांश भाग फौजी व्यय तथा दक्षिणी कोरिया, दक्षिणी वियतनाम, ताइवान और लैटिन अमरीकी देशों जैसी प्रतिक्रियावादी या कठपुतली सरकारों को कायम रखने के लिये इस्तेमाल किया जाता है।

साम्राज्यवादी "सहायता" के लिये खुद जनता को कितनी कीमत चुकानी पडती है, यह दक्षिणी कोरिया मे स्पष्ट देखा जा सकता है, जहा वर्षों से अमरीकी इजारेदारो का प्रभुत्व कायम है।

संयुक्त राज्य अमरीका ने दक्षिणी कोरिया को आर्थिक सहायता के रूप में २७ अरब डालर और फौजी सहायता के रूप मे १ अरब ५० करोड डालर प्रदान किया है। इस विशाल राशि का बडा हिस्सा दक्षिणी कोरिया की ५,७५,००० की सेना पर खर्च होता है, जो अपने साम्राज्यवादी स्वामियों की निष्ठापूर्वक सेवा करनेवाले सत्तारुढ वर्गों को कायम रखती है।

यह नही कहा जा सकता कि अमरीकी डालरो से वहा कोई भी निर्माण-कार्य नही हुआ है। लेकिन दिक्कत यह है कि सारा काम जनता की भलाई के लिए नही, बल्कि अमरीकी साम्राज्यवादियो और दक्षिणी कोरिया के सत्तारूढ वर्गों की सम्पन्नता बढाने के लिए किया गया है। फलत, अमरीकी डालरो से पूर्णतया अथवा आंशिक रूप मे निर्मित या पुनर्निर्मित २१० फैक्टरियो मे से ६० फैक्टरिया आज बन्द पडी हैं।

'सामूहिक उपनिवेशवाद", अर्थात् साम्राज्यवादियो द्वारा एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमरीकी देशो को लूटने का सयुक्त प्रयास इस समय बहुत ही व्यापक बन गया है।

'सामूहिक उपनिवेशवाद" का एक व्यावहारिक प्रतीक अमरीकी राज्यो का सगठन है। इस सगठन ने, जिसके अधिकाश सदस्य अमरीकी साम्राज्यवाद पर पूर्णतया निर्भर हैं, अनेक कुत्सित कार्य किये है, जिनमे ग्वाटेमाला की कानूनी सरकार को उलटने मे इसका हाथ और क्यूबा की क्रान्ति को कुचलने के प्रयास भी शामिल हैं।

आक्रामक फौजी गुट भी "सामूहिक उपनिवेशवाद" की एक और अभिव्यक्ति है, जिनमे अमरीकी साम्राज्यवादियो ने अपने साझेदारो की सहायता से कई अफ्रीकी-एशियाई देशो को भी घसीट लिया है। सेन्टो, सियेटो और अन्य फौजी गुट आक्रामक फौजी-राजनीतिक सश्रय होने के अलावा गुलामी और विकासमान देशो के औपनिवेशिक शोषण के नये रूप भी हैं। उन्हे फौजी गुटो मे शामिल होने के लिए विवश कर, उनपर फौजी व्यय का भारी बोझ थोपकर और अपनी जोखिमभरी फौजी कार्रवाइयो मे उन्हे बलि का बकरा बनाकर साम्राज्यवादी उन देशो की कमजोर अर्थव्यवस्था को बडी क्षति पहुचाते हैं, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विरुद्ध अपने सघर्ष तथा फौजी अड्डो की स्थापना के लिए उनके प्रदेशो का इस्तेमाल करते हैं तथा इस प्रकार दुनिया भर मे खतरनाक स्थिति पैदा करते है। आर्थिक दृष्टि से पराश्रित देशो के फौजी गुटो मे शामिल होने और उनके प्रदेश पर फौजी अड्डे कायम हो जाने से वे राजनीतिक रूप से भी साम्राज्यवादियो पर निर्भर हो जाते है।

नवस्वाधीन राष्ट्रो के विरुद्ध अपने सघर्ष मे साम्राज्यवादी प्रतिक्रान्ति के निर्यात अथवा शस्त्र-बल से उनके आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप तक करने से नही कतराते।

१९५६ मे, ब्रिटिश, फासीसी और इजराइली साम्राज्यवादियो ने सयुक्त अरब गणराज्य की जनता को घुटने टेकने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। १९६१ म अमरीकी साम्राज्यवादियो ने क्यूबा के विरुद्ध आक्रमण किया और इस समय वे दक्षिणी वियतनाम के विरुद्ध कुत्सित युद्ध कर रहे है, जो वर्षों से अपनी स्वतत्रता के लिए वीरतापूर्वक लड रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादी वियतनामी जनवादी जनतत्र के शहरो और गावो पर बर्बर बम-वर्षा कर रहे है। १९६७ मे साम्राज्यवादियो की साजिश के अनुसार इजराइल ने स्वतत्रताप्रेमी अरबो के विरुद्ध हमला किया।

राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विरुद्ध सघर्ष करते समय नव-उपनिवेशवादी "फूट डालो और राज करो" के पुराने साम्राज्यवादी नुसखे पर चलते है।

इसी कारण साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे—उपनिवेशवाद के विरुद्ध सघर्ष मे मुख्य राजनीतिक हथियार—मे फूट डालने और सामाजिक श्रेणियो, कबीला तथा धार्मिक सम्प्रदायो के बीच मतभेदो को उभाडकर साम्राज्यवादी लोगा और राष्ट्रा म विरोध पैदा करने मे कोई कसर उठा नही रखते। अफ्रीको को अफ्रीकी के विरुद्ध, एशियाई को एशियाई के विरुद्ध और लैटिन अमरीकी को लैटिन अमरीकी के विरुद्ध खडा करना—साम्राज्यवादी इसी लज्जास्पद तरीके से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के स्वतत्रताप्रेमी राष्ट्रा को नष्ट करने की अपनी इच्छा को पूरा करने की कोशिश करते है।

विकासमान देशा पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए साम्राज्यवादी इन देशो मे अपनी पसन्द की सरकारे कायम करवाते है, जिसके फलस्वरूप औपचारिक रूप से स्वाधीन राज्य उनके हाथा के खिलौने बन जाते है। लेनिन ने कहा था कि "पराधीन देशो के विविध रूप होते है, जो राजनीतिक तथा औपचारिक रूप से स्वतत्र होते हुए भी वास्तव मे वित्तीय और राजनयिक अधीनता के जाल मे फसे हुए है।"* साम्राज्यवादी राजनीतिक नेताओ को घूस देते है और राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रति निष्ठावान अगुआओ को रास्ते से हटवा देते है। पैट्रिस लुमुम्बा और एदुवार्दो

---

*ब्ला० इ० लेनिन, 'साम्राज्यवाद, पूजीवाद की चरम अवस्था'।

मादलेन की हत्याए तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेताओ को मार डालने के सतत प्रयास इसके प्रमाण हैं।

इसमे कोई सन्देह नही कि घाना के प्रतिक्रान्तिकारी विप्लव के पीछे साम्राज्यवादी प्रतिक्रिया की घिनौनी शक्तियो का हाथ था। इस विप्लव से साबित हो गया है कि विकास के गैर-पूजीवादी पथ को अपनानेवाले अफ्रीकी राष्ट्रो को बहुत ही सजग रहने की आवश्यकता है, कि उन्हे नवउपनिवेशवादियो की साजिशो से अपनी उपलब्धियो की भरसक रक्षा करनी है।

साम्राज्यवादी अपनी नव-उपनिवेशवादी नीतियो को लागू करने मे मुख्यत बिचवइये पूजीपतियो, सामतो और कबायली सरदारो पर निर्भर करते हैं। वे राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी तबको को अथवा इस पूरे वर्ग को जनता की कीमत पर सम्पन्न होने की सभावना के प्रलोभन मे फासकर अपने पक्ष मे करने की कोशिशें करते हैं। नवस्वतत्र देशो की प्राकृतिक सम्पदा तथा जनता के शोषण मे राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग को छोटे हिस्सेदार की भूमिका प्रदान की जाती है।

**साम्राज्यवाद का विचारधारात्मक प्रसार**

नव उपनिवेशवादी प्रणाली मे प्रगतिशील, समाजवादी तथा शान्तिप्रिय शक्तियो के विरुद्ध विचारधारात्मक युद्ध की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। विकासमान देशो का शोषण जारी रखने तथा उसे तीव्र बनाने के अपने प्रयास मे साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी पूजीवादी वैचारिकी का प्रचार करते हैं।

पूजीवादी वैचारिक जनता की आत्म-चेतना के विकास मे बाधा डालने, उसे प्रगतिशील विचारो को अपनाने से रोकने और इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को विचारधारात्मक दृष्टि से कमजोर बनाने की यथासभव कोशिश करते हैं। वे उपनिवेशवाद की लीपापोती करने, औपनिवेशिक लूट और जुल्मो के कलकपूर्ण इतिहास को आकर्षक रगो मे प्रस्तुत करने, विकासमान देशो के साथ साम्राज्यवादी राज्यो द्वारा कायम सम्बन्धो के शोषक स्वरूप पर आवरण डालने तथा इस प्रकार इन राष्ट्रो को औपनिवेशिक गुलामी मे कभी भी मुक्त न होने देने का प्रयास करते हैं। साम्राज्यवादियो की सहायता के बिना एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमरीकी देशो की अपना काम चला सकने मे अक्षमता, साम्राज्यवाद के

सभ्यता-प्रसार कार्य तथा भूतपूर्व उपनिवेशो और उनके साम्राज्यवादी अधिपतियो के समान आर्थिक एव राजनीतिक हिता के बारे मे कहने के लिए उनके पास बहुत कुछ है।

उपनिवेशवाद के सैद्धान्तिक पोषक राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के सिद्धात की विशेष कटुता के साथ आलोचना करते है। वे राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के सारतत्त्व को विकृत करते है, इस धारणा को कालातीत घोषित करते है और कुदरती तौर पर साम्राज्यवादी नेतृत्व के अन्तर्गत विश्व के एकीकरण के विचार का प्रचार करते है। उनके मतानुसार आर्थिक, सैनिक और राजनीतिक दृष्टियो से विकसित देशा के लिए तो प्रभुसत्ता की धारणा सार्थक है, परन्तु विकासमान राष्ट्रो के लिए ऐसी कोई बात नही है, क्योकि वे इसकी रक्षा करने की स्थिति म बिल्कुल भी नही है। यह समझना कोई कठिन नही है कि इन तर्को का एकमात्र उद्देश्य है साम्राज्यवादी देशो पर विकासमान देशो की निर्भरता को सदा के लिए कायम रखना। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के लोग ऐसे तर्को को स्वीकार नही करते और अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा प्रादेशिक अखण्डता की रक्षा करने के लिए कृतसकल्प है।

नव उपनिवेशवाद का मुख्य विचारधारात्मक हथियार है कम्युनिज्म-विरोध। जनसाधारण पर कम्युनिस्ट विचारो का जो प्रभाव है, उसे घटाने के प्रयास मे साम्राज्यवाद के वैचारिको को समाजवाद तथा कम्युनिज्म के उच्चादर्शो को कलकित करने और कम्युनिस्टो के प्रयासो एव कम्युनिस्ट पार्टियो की नीतियो और लक्ष्यो को सर्वथा गलत रूप मे प्रस्तुत करने मे कोई झिझक नही होती। इसके साथ ही वे पूजीवाद और मानवजाति के लिए अनुकरणीय व्यवस्था के रूप मे पूजीवादी व्यवस्था, विशेष रूप से अमरीकी जीवन-पद्धति की बडी सराहना करते है।

उपनिवेशवाद के प्रचारक अफ्रीकी एशियाई और लैटिन अमरीकी लोगो को यह समझाने का प्रयास करते है कि उनका शत्रु उपनिवेशवाद नही, बल्कि कम्युनिज्म है। वे यह तर्क प्रस्तुत करते है कि कम्युनिज्म तत्वत अन्तर्राष्ट्रीयतावादी है और इस कारण वह उनके राष्ट्रीय हितो के प्रतिकूल है। परन्तु दुनिया के लोग खुद अपने अनुभव से यह सीखते जा रहे है कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादी होते हुए भी कम्युनिस्ट वास्तविक राष्ट्रीय हितो के सबसे प्रबल समर्थक है। कम्युनिस्टो ने दिखा दिया है कि वे राष्ट्रीय

स्वाधीनता के साहसी योद्धा हैं और स्वतंत्रता को प्राप्त कर लेने के बाद वे सामाजिक प्रगति तथा जनता की नये, समाजवादी भविष्य की आकांक्षाओं को तुष्ट करने के लिए काम करते हैं।

कम्युनिज्म विरोध विश्व समाजवादी प्रणाली और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के विरुद्ध लक्षित है। राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे में फूट डालने तथा इसे कमजोर बनाने की आशा में कम्युनिस्ट-विरोधियों की सबसे बड़ी मुश्किलों में एक विश्व समाजवाद तथा अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन की महती शक्तियों से अफ्रीकी-एशियाई और लैटिन अमरीकी राष्ट्रों को पृथक करने की समस्या है।

परन्तु, इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि विश्व समाजवादी प्रणाली तथा विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन को कलंकित करने के प्रयास सफल न होंगे, क्योंकि उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले राष्ट्र दोस्त और दुश्मन में भेद करना जान गये हैं तथा उन्हें पूरा विश्वास हो गया है कि जीवन और सुख के कठिन संघर्ष में विश्व समाजवादी प्रणाली में शामिल राष्ट्र ही उनके सच्चे साथी हैं। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में विश्व समाजवादी प्रणाली की भूमिका पर आगे विस्तार से विचार किया जायेगा।

राष्ट्रों में फूट पैदा करने, जनवाद तथा प्रगति के लिये उनके मोर्चे की एकता को क्षीण करने और इस प्रकार उनपर हावी होने के लिए साम्राज्यवादी प्रतिक्रिया के बहुत ही आजमाये तथा परखे हुए हथियार—राष्ट्रवाद—का इस्तेमाल करते हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने पूंजीवादी राष्ट्रवाद की प्रतिक्रियावादी अभिव्यक्तियों को कभी भी बर्दाश्त नहीं किया है, साथ ही वह उत्पीडक राष्ट्रों के राष्ट्रवाद (शासक शक्ति के अन्धराष्ट्रवाद और नसलवाद) और उत्पीडित राष्ट्रों के राष्ट्रवाद के बीच भेद करने की भी अपेक्षा करता है। निस्सन्देह, एक राष्ट्र अथवा नसल द्वारा दूसरे राष्ट्र या नसल पर प्रभुत्व को उचित ठहरानेवाली शासक शक्ति के अन्धराष्ट्रवाद और नसलवाद की वैचारिकी पूर्णतया प्रतिक्रियावादी है और वैज्ञानिक समाजवाद इसे एकदम अस्वीकार करता है। दूसरी ओर, उत्पीडित राष्ट्रों का राष्ट्रवाद अपनी स्वतंत्रता के लिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध उनके प्रगतिशील संघर्ष की अभिव्यक्ति है और इस कारण यह सर्वहारा वर्ग द्वारा समर्थित है। लेनिन ने लिखा है "उत्पीडित राष्ट्र के किसी भी पूंजीवादी राष्ट्रवाद में आम जनवादी अन्तर्य निहित है, जो

उत्पीडन के विरुद्ध लक्षित रहता है और हम बिना शर्त इसी अन्तर्य का समर्थन करते हैं।"* इस समय कई अफ्रीकी तथा एशियाई देशो मे इस प्रकार का राष्ट्रवाद पाया जाता है। उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, सामती प्रतिक्रिया और पिछडेपन के विरुद्ध जिस सघर्ष के दौरान जनता, विशेष रूप से किसान समुदाय राजनीतिक दृष्टि से प्रबुद्ध हो जाता है, वह इस राष्ट्रवाद को प्रगतिशील स्वरूप प्रदान करता है।

परन्तु इस भी ध्यान मे रखना चाहिए कि राष्ट्रवाद की प्रगतिशील प्रवृत्ति स्थिर नही हो सकती। यह अस्थिर और अस्थायी होती है और इसका कारण है राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन मे राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग द्वारा अदा की जानेवाली ऐतिहासिक दृष्टि से प्रगतिशील भूमिका का अस्थिर स्वरूप। राष्ट्रवाद के बडी शक्ति के अधराष्ट्रवाद तथा नसलवाद के घृणित स्तर पर गिर जाने का खतरा सदा बना रहता है। इससे विभिन्न नसलो के बीच सघर्ष और एक नसल के ऊपर दूसरी नसल का प्रभुत्व कायम हो सकता है।

इसी कारण राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष मे उत्पीडित राष्ट्रो को अपना समर्थन प्रदान करते हुए कम्युनिस्ट उन्हे राष्ट्रवाद के प्रभाव से मुक्त करने का भी प्रयास करते हैं। पूजीवादी राष्ट्रवाद सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रतिकूल है, जिसका अर्थ है सभी नसलो और जातियो के मेहनतकशो की अन्तर्राष्ट्रीय एकता तथा दोस्ती।

**अमरीकी साम्राज्यवाद नव-उपनिवेशवाद का मुख्य आधार है**

नव-उपनिवेशवाद का मुख्य आधार और उसकी मुख्य आक्रामक शक्ति अमरीकी साम्राज्यवाद है। लाक्षणिक बात यह है कि अमरीकी समाजशास्त्री इसे छिपाते नही।

थामस एडम लिखते है, "प्रथम विश्वयुद्ध से कमजोर हुए यूरोपीय औपनिवेशिक राष्ट्र खतरे के बिन्दु तक पहुच गए थे। द्वितीय विश्वयुद्ध से वे अमरीकी आर्थिक और फौजी शक्ति पर निर्भर हो गए। इस प्रकार औपनिवेशिक प्रणाली को कायम रखने का दायित्व अमरीकी जनवाद के कन्धे पर आ पडा।"

दुनिया के लगभग हर भाग के राष्ट्रो का मुख्य शोषक सयुक्त राज्य

* व्ला० इ० लेनिन, 'जातियो का आत्मनिर्णय का अधिकार'।

अमरीका है। यह लैटिन अमरीका का निर्मम दमन करता है और एशियाई तथा अफ्रीकी देशो से अपने पश्चिमी यूरोपीय साम्राज्यवादी साथियो को धीरे-धीरे निकालकर उनमे पैठता जा रहा है। अमरीकी औपनिवेशिक प्रसार का मुख्य साधन है डालर। सयुक्त राज्य अमरीका का विदेशी पूजी-निवेश साम्राज्यवादी राष्ट्रो द्वारा विदेशो मे लगायी गई कुल पूजी के आधे से भी अधिक है और इसमे से अधिकाश पूजी विकासमान देशो की अर्थव्यवस्था मे लगायी गई है। यह कोई आकस्मिक बात नही—वहा सस्ती श्रम-शक्ति तथा सस्ते कच्चे माल की सुलभता के कारण मुनाफे की दर खुद अमरीका की अपेक्षा दुगुनी है।

विकासमान देशो मे सबसे अधिक पूजी लगाने तथा आर्थिक "सहायता" प्रदान करने के अलावा सयुक्त राज्य अमरीका दुनिया का "थानेदार" भी है, जो राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विरुद्ध सघर्ष मे केवल डालर का ही नही, बल्कि हथियारो का भी इस्तेमाल करता है। इसने ताइवान और दक्षिणी कोरिया पर अपना आधिपत्य कायम कर रखा है तथा वह दक्षिणी वियतनाम मे देशभक्तो के विरुद्ध घृणित युद्ध कर रहा है। वह अरब देशो, क्यूबा तथा अन्य राष्ट्रो के विरुद्ध साम्राज्यवादी आक्रमण का समर्थन करता है। अमरीकी फौजी अड्डे (विदेशी भूमि पर इनकी सख्या ४५० से अधिक है) और युद्धपोत दुनिया के शान्तिप्रेमी लोगो के लिए एक गंभीर खतरा है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सम्बन्धी थीसिस मे कहा गया है, "साम्राज्यवाद और विशेष रूप से अमरीकी साम्राज्यवाद राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का मुख्य शत्रु था और आज भी है। आन्तरिक प्रतिक्रिया पर भरोसा रखते हुए यह साजिशों और विप्लवो को सगठित करता है, जातियो के बीच सघर्ष पैदा करता है, प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन देता है और नवस्वतन्त्र राज्यो को प्रादेशिक झगडो मे फसाता है।"

मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के सम्मेलन मे उपस्थित प्रतिनिधियो ने कहा था, "दुनिया को उपनिवेशवाद के अभिशाप से पूर्णतया मुक्त करना, उसके अन्तिम केन्द्रो को विनष्ट करना और उसके नये, छद्म रूपो मे फिर से कायम होने को रोकना वर्तमान युग की माग है।"

# ३. राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का स्वरूप और उसकी उत्प्रेरक शक्तियां

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की सर्वोच्च, अंतिम अवस्था है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्राति सहित किसी भी क्राति के सम्मुख मुख्य प्रश्न राजकीय सत्ता का होना है। विदेशी इजारेदारियां अथवा उनके किराये के टट्टुओं के हाथ से भूतपूर्व उत्पीड़ित राष्ट्र की देशभक्त, प्रगतिशील शक्तियों के हाथ राजकीय सत्ता का हस्तान्तरण प्रत्येक राष्ट्रीय मुक्ति क्राति का बुनियादी लक्षण है। प्रतिक्रियावादी, साम्राज्यवादी अथवा साम्राज्यवाद की पोषक शक्तियों की सत्ता की जगह सम्बन्धित राष्ट्र की स्वतन्त्रताप्रेमी, प्रगतिशील सामाजिक शक्तियों की सत्ता की स्थापना ही राष्ट्रीय मुक्ति क्राति है।

अन्य सभी क्रान्तियों की भांति राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति निश्चित सामाजिक और आर्थिक आधार पर पैदा और विकसित होती है तथा निश्चित उत्प्रेरक शक्तियां, अर्थात् इसमें सक्रिय भाग लेनेवाले वर्गों एवं सामाजिक श्रेणियों की सहायता से अपने विशेष कार्यभारों को पूरा करती है।

**क्रान्ति का स्वरूप**

ऐतिहासिक, प्राकृतिक और अन्य परिस्थितियों के कारण औपनिवेशिक तथा परतन्त्र देशों के आर्थिक तथा राजनीतिक विकास का स्तर सर्वथा एक जैसा नहीं है। इस प्रकार वे जिस सीमा तक साम्राज्यवाद पर निर्भर रहते हैं तथा जिस हद तक उसके द्वारा उनका औपनिवेशिक शोषण होता है, उसी को देखते हुए विश्व पूंजीवादी प्रणाली में उनका स्थान भी भिन्न भिन्न होता है। परन्तु इन देशों के सामाजिक आर्थिक ढांचे के कुछ समान लक्षण भी होते हैं।

अभी हाल तक इनमें से सभी अपनी राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता से (पूर्णतः अथवा आंशिक रूप में) वंचित थे। विदेशी साम्राज्यवाद उनकी अर्थव्यवस्था और नीतियों पर पूर्णतया हावी था, जो उनकी राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता की हर अभिव्यक्ति को दबाता था। इन देशों के जीवन पर हावी विदेशी इजारेदारियां उनके राष्ट्रीय आर्थिक विकास में रोड़ा अटकाने में कोई कसर बाकी न रहने देती थीं और उन्होंने

उन्हें कृषि-उपज तथा कच्चे माल का स्रोत बनाकर उनकी अर्थव्यवस्था क सर्वथा एकतरफा बना दिया था।

भूतपूर्व औपनिवेशिक तथा पराधीन देश साम्राज्यवाद की फौजी रिजर्व की ओर बहुधा विश्व समाजवाद की बढती हुई शक्तिया के विरुद्ध दुर्ग तथा साम्राज्यवाद की आक्रामक साजिशो को कार्यरूप मे परिणत करन के फौजी अड्डो की भूमिका भी अदा करते थे। वे सस्ते कच्चे माल और लगभग मुफ्त श्रम-शक्ति के अक्षय स्रोत तथा विस्तृत और अतिलाभजनक बाज़ार भी थे।

साम्राज्यवादी इजारेदारियो ने औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो के राजनीतिक जीवन पर भी पूर्ण नियत्रण कायम कर रखा था। वे मनमाने ढग से शासको को नियुक्त तथा बर्खास्त किया करती थी, मनमाने कानून बनाया करती थी और उत्पीडित राष्ट्रो के प्रतिरोध के प्रयासो को नृशसतापूर्वक कुचल दिया करती थी। अत्यत प्राथमिक जनवादी अधिकारो को प्रदान करने का भी कोई प्रश्न नही था। निर्मम और नग्न उत्पीडन, निरकुश अत्याचार, साधारण जनवादी स्वतत्रताओ का भी पूर्ण अभाव, मानवीय मर्यादा और राष्ट्रीय आत्म-चेतना का दमन—औपनिवेशिक तथा पराधीन देशा के राजनीतिक तथा विचारधारात्मक जीवन का यही दु खद चित्र था, जिसपर साम्राज्यवादियो ने उपनिवेशवाद के सभ्यता-प्रसार कार्य की चर्चा करते हुए सदैव आवरण डालने की चेष्टा की।

पूजीवादी इजारेदारियो ने आर्थिक और सामाजिक जीवन मे सामतवाद तथा प्राक्-सामतवाद के अवशेषो को कायम रखने की कोशिश की, जो औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो मे स्पष्ट रूप मे दिखाई पडते थे। इन अवशेषो से उनके आर्थिक तथा राजनीतिक विकास मे गभीर बाधा पैदा हुई, जो पूजीवादी इजारेदारियो के हितो के सर्वथा अनुरूप थी। इसके अलावा, उपनिवेशवादी अधिकतम इजारेदारी मुनाफा कमाने के इरादे से शोषण के प्राक्-पूजीवादी रूपा का इस्तेमाल करते थे।

इस प्रकार साम्राज्यवाद न केवल प्रत्यक्ष रूप मे ही औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो का दमन करता है और उनके आर्थिक एव राजनीतिक जीवन म स्वतत्रता की सभी अभिव्यक्तियो को दबाता है, बल्कि स्थानीय प्रतिक्रियावादी शक्तिया और विशेष रूप स सामती तथा प्राक् सामती

सामाजिक सम्बन्धो के पोषको—बडे जमींदारो और कबायली सरदारो के प्रमुख आधार के रूप मे भी कार्य करता है।

इसी कारण साम्राज्यवाद और विदेशी इजारेदारिया उत्पीडित राष्ट्रो के मुख्य शत्रु हैं तथा राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो का **स्वरूप** स्पष्ट रूप मे **साम्राज्यवाद विरोधी** है। विदेशी साम्राज्यवाद के राजनीतिक और आर्थिक शासन के तख्ते को उलटना तथा राजनीतिक एव आर्थिक स्वतन्त्रता को प्राप्त करना प्रत्येक राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का मुख्य लक्ष्य है।

परन्तु, विदेशी इजारेदारी के जुए को उतार फेकने के लिए सामतवाद के अवशेषो तथा कबायली, प्राक्-सामती सम्बन्धो का उन्मूलन आवश्यक है, जिनके समर्थक औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो मे साम्राज्यवाद का मुख्य सामाजिक आधार प्रस्तुत करते हैं। इसी कारण राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया **सामतवाद विरोधी** भी हैं। आर्थिक तथा राजनीतिक विकास मे बाधा प्रस्तुत करनेवाले **प्राक्-पूजीवादी सम्बन्धो के अवशेषो का उन्मूलन** सभी राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो का एक और मुख्य लक्ष्य है।

इतिहास के वास्तविक निर्माताओ—सर्वसाधारण—के शामिल हुए बिना इतनी बडी और जटिल समस्याओ के समाधान की बात सोची भी नही जा सकती। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि गृह नीति मे औपनिवेशिक शासन के अवशेषो का उन्मूलन, अर्थात् **सार्वजनिक जीवन का जनवादीकरण** सभी राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो का तीसरा मुख्य लक्ष्य है, जिससे उनका स्वरूप जनवादी हो जाता है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो के उक्त लक्ष्य अविभाज्य हैं। राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति आर्थिक विकास की दिशा मे, आर्थिक स्वतन्त्रता के सघर्ष मे सफलता प्राप्त करने की पूर्वापेक्षा है। दूसरी ओर वास्तविक राष्ट्रीय आजादी की एकमात्र निश्चित गारटी आर्थिक स्वतन्त्रता है। अन्तत, राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता दोनो की प्राप्ति राष्ट्र के आन्तरिक जीवन के जनवादीकरण की द्योतक है, क्योकि व्यापक जनवादी स्वतन्त्रताओ के कायम हो जाने पर ही लोग क्रान्तिकारी रूपान्तरणो मे सक्रिय भाग ले सकते हैं।

**इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का स्वरूप साम्राज्यवाद विरोधी, सामतवाद विरोधी और जनवादी है।** लेनिन ने लिखा था कि यह "जनवादी

कार्यभार, विदेशी उत्पीडन को समाप्त करने के कार्यभार"* की सिद्धि करती है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का आम जनवादी, साम्राज्यवाद और सामतवाद विरोधी स्वरूप न केवल अपने सामने रखे हुए कार्यभारो द्वारा, बल्कि इन कार्यभारो को पूरा करनेवाली सामाजिक शक्तियो द्वारा, अर्थात् क्रान्ति की प्रेरक शक्तियो द्वारा निर्धारित होता है। आइए, इन शक्तिया पर दृष्टिपात करे।

**राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति की प्रेरक शक्तिया**

वे ही वर्ग और सामाजिक शक्तिया प्रत्येक क्रान्ति की उत्प्रेरक शक्तिया होती है, जो उसमे सक्रिय भाग लेती है, अपने लिए सुनिश्चित लक्ष्य निर्धारित करती है, अपने कार्यकलाप के दायरे, अपनी मागो और क्रान्तिकारी सघर्ष के अपने विशिष्ट तरीको से क्रान्ति के घटनाक्रम को प्रभावित करती है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति की उत्प्रेरक शक्तियो का उल्लेख करने के पहले हम इस बात को फिर से कहना चाहते है कि औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो के आर्थिक और राजनीतिक विकास के स्तर अलग-अलग थे। ऐसे कुछ देशो को खेतिहर-औद्योगिक, दूसरो को बहुत ही कम उद्योगवाले पिछडे हुए खेतिहर देश कहा जा सकता है, जबकि अधिकाश देश प्रबल सामती तथा प्राक्-सामती (पितृसत्तात्मक) सामाजिक सम्बन्धोवाले बहुत पिछडे हुए खेतिहर देश थे। उन सभी देशो का सामाजिक गठन भी बहुत ही विविध प्रकार का था। जहा विकसित पूजीवादी देशो मे बहुत पहले ही पूजीपति वर्ग तथा सर्वहारा वर्ग का गठन पूरा हो चुका है, वहा इन देशो मे यह जटिल प्रक्रिया अभी अधूरी है और कुछ देशो मे यह अभी शुरू ही हुई है। फलत वहा विविध प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध तथा कई वर्ग और सामाजिक श्रेणिया अस्तित्व मे है।

परन्तु इसके बावजूद इन सभी देशो मे मजदूर वर्ग, किसान समुदाय, राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग, नगरवासी निम्न-पूजीपति वर्ग, राष्ट्रीय बुद्धिजीवी समुदाय (असैनिक तथा फौजी, छात्र), सामती सरदार, साम्राज्यवाद का

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा 'साम्राज्यवादी अर्थवाद''।

पोषक बिचवइया पूजीपति वर्ग, और मुख्यत दस्तकारो तथा दूकानदारो सहित विविध दरमियानी श्रेणिया भी मौजूद है।

लगभग ये सभी वर्ग और सामाजिक श्रेणिया विदेशी इजारेदारियो के शोषण के शिकार है, और साम्राज्यवाद के पोषक पूजीपति वर्ग तथा सामती सरदारो को छोडकर अन्य सभी वर्ग और श्रेणिया राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे भाग लेते है।

स्वाभाविक रूप से वे अपने-अपने ढग से क्रान्ति के कार्यभार को समझती है और न केवल राष्ट्रीय, बल्कि अपने वर्गीय अथवा सामुदायिक लक्ष्यो को प्राप्त करने का प्रयास करती है।

आइए, क्रान्ति मे भाग लेनेवाली सामाजिक शक्तियो का विस्तार से विश्लेषण करे और देखें कि वे इसमे कौनसी भूमिका अदा करती है तथा किन लक्ष्यो का अनुसरण करती है।

**मजदूर वर्ग**

क्रान्ति की एक मुख्य प्रेरक शक्ति मजदूर वर्ग है, जिसकी सख्या निरतर बढती जाती है। लाक्षणिक बात यह है कि मजदूर वर्ग की सख्या, उसकी सगठनात्मक एकता और वर्ग चेतना का स्तर सभी देशो मे समान नही है। फलत विभिन्न देशो की राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो मे मजदूर वर्ग की भूमिका भी अलग-अलग है। कुछ देशो मे सगठनात्मक तथा विचारधारात्मक रूप मे एकजुट सर्वहारा वर्ग ने मार्क्सवादी पार्टियो के पथ-प्रदर्शन मे राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का नेतृत्व ग्रहण कर लिया है तथा इसके समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण को सुनिश्चित बना दिया है। दूसरे देशो मे राष्ट्र की सभी प्रगतिशील शक्तियो, विशेष रूप से किसान समुदाय को एकजुट करते हुए सर्वहारा वर्ग भी क्रान्ति की मुख्य प्रेरक शक्ति है। अन्य देशो मे सर्वहारा वर्ग अस्तित्व मे आ गया है, परन्तु अभी वह समाज मे नेतृत्वकारी भूमिका नही अदा करता और राष्ट्र की सभी प्रगतिशील शक्तियो को एकजुट नही करता, क्योकि इन देशो मे राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का नेतृत्व राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग के हाथ मे है। अन्त मे, ऐसे देशो का समूह भी है, जहा सर्वहाराओ ने अभी एक वर्ग के रूप मे अपने को सगठित करना शुरू ही किया है, और चूकि वे सख्या, सगठन और विचारधारा की दृष्टि से कमजोर है, इसलिए अभी राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के विकास और नतीजे पर निर्णायक प्रभाव डालने मे असमर्थ है।

समाज मे अपनी वस्तुगत स्थिति तथा राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को पूरा करने मे सर्वाधिक अभिरुचि रखनेवाली शक्ति होने के कारण सभी पराधीन देशो मे सर्वहारा वर्ग एक क्रान्तिकारी सामाजिक शक्ति है।

विदेशी इजारेदारी प्रभुत्व के उन्मूलन और सार्वजनिक तथा राजकीय जीवन के जनवादीकरण के फलस्वरूप सर्वहारा वर्ग के ऐतिहासिक लक्ष्य--समाजवाद--की प्राप्ति के सघर्ष के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा होती है।

राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के दौरान मजदूर वर्ग अपनी पांतों को सुदृढ़ करता है, समुचित रूप मे सगठित होता है और राजनीतिक अनुभव सचित करता है। मेहनतकश लोगो के गैर-सर्वहारा समूहो के साथ सश्रय कायम करते हुए वह अपनी वर्ग चेतना विकसित करता है। उसके सगठन अस्तित्व मे आते और सुदृढ होते हैं। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया समाजवाद के भावी सघर्षो के लिए सर्वहारा का एक बढिया स्कूल हैं।

**किसान समुदाय**

औपनिवेशिक और पराधीन देशो मे किसान समुदाय की सख्या सबसे अधिक है। इस कारण, राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे यही सबसे बडी और बहुधा मुख्य प्रेरक शक्ति है। मध्य अमरीका की आबादी मे किसानो की सख्या ६६ प्रतिशत, दक्षिणी अमरीका मे ५६ प्रतिशत, एशिया मे (सोवियत सघ को छोडकर) ७० प्रतिशत और अफ्रीका मे ७३ प्रतिशत है।

पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो मे किसानो की दशा बहुत ही बुरी और असहनीय है। जमीन से वचित होने के कारण वे उपज का ४० से ८० प्रतिशत तक लगान के रूप मे देते हुए बडी जागीरो वाले जमीदारो से कठोर शर्तों पर खेती के लिए जमीन लेने को विवश थे। इसके अलावा, किसान विदेशी इजारेदारो के प्रभुत्व के अन्तर्गत भी थे, जो स्थानीय जमीदारो की साठगाठ से खुद भारी मुनाफा कमाते हुए उनका शोषण करते थे, उन्हे लूटते तथा तबाह करते थे। घोर गरीबी की स्थिति मे पड जाने से वे ग्रामीण सर्वहारा के पहले से ही बडे लशकर की सख्या को बढाते जाते थे।

पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो मे **कृषि-समस्या सभी सामाजिक समस्याओ मे सबसे गभीर है।** विदेशी इजारेदारो तथा स्थानीय जमीदारो ने किसानो की जो जमीन हथिया ली है, उसे पुन. प्राप्त करने मे उनकी

गहरी दिलचस्पी है। इस कारण विदेशी पूजी तथा साथ ही सामती ज़मीदारो के राजनीतिक और आर्थिक शासन को उखाड फेकने एव आमूल कृषि-सुधारो को लागू करने मे प्रयत्नशील किसान समुदाय एक महत्त्वपूर्ण साम्राज्यवाद विरोधी और सामतवाद विरोधी शक्ति है।

उपनिवेशवाद और सामतवाद के विरुद्ध तथा जनवादी परिवर्तनो के लिए सघर्ष मे किसान **मजदूर वर्ग के स्वाभाविक साथी हैं**। उनमे इस बात की जानकारी अधिकाधिक विकसित होती जा रही है कि मजदूर वर्ग उनके हितो का अविचल और सुदृढ समर्थक है। फलत, राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के विकास के साथ-साथ मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के बीच सश्रय सुदृढ होता जाता है।

**राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग**

पराधीन और औपनिवेशिक देशो मे पूजीपति वर्ग की स्थिति और भूमिका बहुत ही जटिल तथा विरोधपूर्ण है।

विदेशी इजारेदारियो तथा स्थानीय ज़मीदारो दोनो ने हर तरह से इन देशो के राष्ट्रीय आर्थिक विकास मे रुकावटें पैदा की। इसलिए पूजीपति वर्ग का देश के आर्थिक विकास मे अभिरुचि रखनेवाला हिस्सा राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति, विशेष रूप से राजनीतिक स्वाधीनता के सघर्ष मे सक्रिय भाग लेता है। साम्राज्यवाद समर्थक और राष्ट्र विरोधी पूजीपति वर्ग से भिन्न (जिसे कभी कभी बिचवइया भी कहा जाता है), जो विदेशी इजारेदारियो से घनिष्ठ रूप मे सम्बद्ध होने के कारण राष्ट्रीय हितो के साथ विश्वासघात करता है, इस हिस्से को **राष्ट्रीय पूजीपति** वर्ग कहते हैं।

राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग अपने हितो को प्रश्रय प्रदान करने, अर्थात् राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास को प्रोत्साहन देने और समाज मे अपना ही राजनीतिक प्रभुत्व कायम करने के लिए राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे भाग लेने के साथ ही सारे राष्ट्र के हितों का भी समर्थन करता है, क्योकि यह विदेशी साम्राज्यवाद और स्थानीय सामतवाद के शसन का तख्ता उलटने के बाद ही अपने वर्गीय लक्ष्यो को प्राप्त कर सकता है। इसकी साम्राज्यवाद विरोधी, सामतवाद विरोधी और कुछ परिस्थितियो मे जनवादी आकाक्षाओ के फलस्वरूप इसके हित कभी-कभी दीर्घकाल के लिए सारे राष्ट्र के हितो के अनुरूप हो जाते हैं।

परन्तु साथ ही यह भी ध्यान मे रखना चाहिए कि राष्ट्रीय पूजीपति

वर्ग का स्वरूप विरोधपूर्ण और द्वैध होता है। विदेशी साम्राज्यवाद और उसकी समर्थक आन्तरिक शक्तियो, विशेप रूप से सामती अभिजात वर्ग के विरुद्ध सघर्ष मे यह मेहनतकश लोगो का साथ देता है, उन पर निर्भर करता है और अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए उनकी क्रान्तिकारी शक्ति का उपयोग करता है। परन्तु साथ ही यह क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग और किसान समुदाय से भी भय खाता है, क्योकि उनमे यह अपने शोषण सम्बन्धी हितो के लिए खतरा देखता है और फलत क्रान्ति के विकास को शिथिल बनाकर उसको अपने ही हितो के सकीर्ण ढाचे मे सीमित करने की कोशिश करता है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग की भूमिका की चर्चा करते समय इसे कभी भी विस्मृत नही करना चाहिए कि एक वर्ग के रूप मे समाज के आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर अपने अखण्ड प्रभुत्त्व तथा शोपण को कायम रखने के लिए यह विकास के पूजीवादी पथ का पोषक है। राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग अविचल साम्राज्यवाद विरोधी और सामतवाद विरोधी शक्ति नही हो सकता।

केवल मजदूर वर्ग के सुदृढ सगठन तथा उसकी विचारधारात्मक एकता और किसान समुदाय तथा अन्य गैर-सर्वहारा मेहनतकश लोगो के साथ इसके घनिष्ठ सश्रय से ही राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग की असगति तथा ढुलमुलपन को दूर किया जा सकता है और इसकी प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति पर अकुश लगाया जा सकता है।

**दरमियानी श्रेणिया** तथाकथित **दरमियानी** (निम्न-पूजीवादी) श्रेणिया –शिल्पकार, दस्तकार, छोटे व्यापारी और दूकानदार–पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो, विशेप रूप से अफ्रीका मे बहुसख्यक और प्रभावशाली है।

अपने देश के आर्थिक पिछडेपन के कारण ये श्रेणिया अर्थव्यवस्था मे वस्तुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उनके छोटे-छोटे उद्यम काफी मात्रा मे ऐसी वस्तुए तैयार करते है, जिनकी आबादी को आवश्यकता पडती है। सार्वजनिक सेवाए, फुटकर व्यापार आदि इन्ही के हाथ मे है और वे ही उनकी व्यवस्था करते है। राजनीति मे उनकी भूमिका अर्थव्यवस्था मे उनकी भूमिका के अनुरूप है। इसी कारण राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का भविष्य कुछ हद तक दरमियानी श्रेणियो की स्थिति पर, इस

बात पर निर्भर रहता है कि वे प्रगतिशील शक्तियो का साथ देती है या प्रतिक्रियावादी शक्तियो का।

अपने सामाजिक स्वरूप मे ये श्रेणिया बहुत ही अतर्विरोधी है। एक ओर उनके पास सम्पत्ति होती है—यद्यपि आम तौर पर बहुत ही कम—और इससे वे पूजीपति वर्ग के निकट हो जाती है। दूसरी ओर, काम करने के लिए, अपने ही श्रम से अपनी रोजी कमाने के लिए विवश होने के कारण वे मजदूरो और विशेष रूप से किसानो के सन्निकट होती है। इसके अलावा, अन्य मेहनतकश लोगो की ही भाति विदेशी साम्राज्यवादी और स्थानीय धनिक दोनो ही उनका भी निर्मम शोषण करते है। इस परिस्थिति मे यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि उनमे से अधिकाश उग्रवादी विचारो की होती है और राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे भाग लेते हुए उसकी विजयपूर्ण परिणति मे गहरी दिलचस्पी रखती है।

परतु सभी देशो मे क्राति मे दरमियानी श्रेणियो की हिस्सेदारी की हद समान नही होती। जहा प्रतिक्रियावादी शक्तिया उन्हे भ्रम मे डालने तथा अपने पक्ष मे कर लेने म सफल हो जाती है, वहा क्रान्ति के विकास मे बाधा पैदा होती है। परन्तु जहा वे प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी शक्तियो का साथ देती है, वहा साम्राज्यवाद और आन्तरिक प्रतिक्रिया के विरुद्ध क्रान्ति की वे सक्रिय सघपकर्त्ता बन जाती है।

**राष्ट्रीय-जनवादी बुद्धिजीवी**

**राष्ट्रीय-जनवादी बुद्धिजीवी**—वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक कर्मी, सरकारी कर्मचारी, प्रगतिशील फौजी अफसर, विद्यार्थी, दफ्तरी कर्मचारी, आदि—राष्टीय मुक्ति क्रान्ति मे बडी और कभी-कभी तो नेतृत्वकारी भूमिका तक अदा करते है। जिन देशो मे मजदूर वर्ग ने अभी तक अपने को स्वतन्त्र शक्ति के रूप मे कायम नही कर लिया है और राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग या तो कमजोर है अथवा साम्राज्यवाद की पोपक नीति का अनुसरण करता है, मिसाल के लिये अधिकाश अफ्रीकी देशो मे, वहा उन्हें विशेष रूप से प्रमुखता प्राप्त है। इन परिस्थितियो मे बहुधा बुद्धिजीवी क्रान्ति और राज्य के नेता हो जाते है। उनके नेतृत्व मे कई देशो ने न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की है, बल्कि अनेक साम्राज्यवाद विरोधी, सामतवाद विरोधी और पूजीवाद विरोधी कदम भी उठाये है, जो जनता के हितो के अनुरूप है। ऐतिहासिक परिस्थितियो, प्रगतिशील विकास की

वर्ग का स्वरूप विरोधपूर्ण और द्वैध होता है। विदेशी साम्राज्यवाद और उसकी समर्थक आन्तरिक शक्तियो, विशेष रूप से सामती अभिजात वर्ग के विरुद्ध सघर्ष मे यह मेहनतकश लोगो का साथ देता है, उन पर निर्भर करता है और अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए उनकी क्रान्तिकारी शक्ति का उपयोग करता है। परन्तु साथ ही यह क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग और किसान समुदाय से भी भय खाता है, क्योकि उनमे यह अपने शोषण सम्बन्धी हितो के लिए खतरा देखता है और फलतः क्रान्ति के विकास को शिथिल बनाकर उसको अपने ही हितो के सकीर्ण ढाचे मे सीमित करने की कोशिश करता है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग की भूमिका की चर्चा करते समय इसे कभी भी विस्मृत नही करना चाहिए कि एक वर्ग के रूप मे समाज के आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर अपने अखण्ड प्रभुत्व तथा शोषण को कायम रखने के लिए यह विकास के पूजीवादी पथ का पोषक है। राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग अविचल साम्राज्यवाद विरोधी और सामतवाद विरोधी शक्ति नही हो सकता।

केवल मजदूर वर्ग के सुदृढ सगठन तथा उसकी विचारधारात्मक एकता और किसान समुदाय तथा अन्य गैर-सर्वहारा मेहनतकश लोगो के साथ इसके घनिष्ठ सश्रय से ही राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग की असगति तथा ढुलमुलपन को दूर किया जा सकता है और इसकी प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति पर अकुश लगाया जा सकता है।

**दरमियानी श्रेणियां** तथाकथित **दरमियानी** (निम्न-पूजीवादी) श्रेणिया —शिल्पकार, दस्तकार, छोटे व्यापारी और दूकानदार—पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो, विशेष रूप से अफ़्रीका मे बहुसख्यक और प्रभावशाली हैं।

अपने देश के आर्थिक पिछडेपन के कारण ये श्रेणिया अर्थव्यवस्था मे वस्तुतः महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। उनके छोटे-छोटे उद्यम काफी मात्रा मे ऐसी वस्तुए तैयार करते हैं, जिनकी आबादी को आवश्यकता पडती है। सार्वजनिक सेवाए, फुटकर व्यापार आदि इन्ही के हाथ मे है और वे ही उनकी व्यवस्था करते हैं। राजनीति मे उनकी भूमिका अर्थव्यवस्था मे उनकी भूमिका के अनुरूप है। इसी कारण राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का भविष्य कुछ हद तक दरमियानी श्रेणियो की स्थिति पर, इस

बात पर निर्भर रहता है कि वे प्रगतिशील शक्तियो का साथ देती हैं या प्रतिक्रियावादी शक्तियो का।

अपने सामाजिक स्वरूप मे ये श्रेणिया बहुत ही अन्तर्विरोधी हैं। एक ओर उनके पास सम्पत्ति होती है—यद्यपि आम तौर पर बहुत ही कम—और इससे वे पूजीपति वर्ग के निकट हो जाती हैं। दूसरी ओर, काम करने के लिए, अपने ही श्रम से अपनी रोजी कमाने के लिए विवश होने के कारण वे मजदूरो और विशेष रूप से किसानो के सन्निकट होती हैं। इसके अलावा, अन्य मेहनतकश लोगो की ही भाति विदेशी साम्राज्यवादी और स्थानीय धनिक दोनो ही उनका भी निर्मम शोषण करते हैं। इस परिस्थिति मे यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि उनमे से अधिकाश उग्रवादी विचारो की होती हैं और राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे भाग लेते हुए उसकी विजयपूर्ण परिणति मे गहरी दिलचस्पी रखती हैं।

परतु सभी देशो मे क्राति मे दरमियानी श्रेणियो की हिस्सेदारी की हद समान नही होती। जहा प्रतिक्रियावादी शक्तिया उन्हे भ्रम मे डालन तथा अपने पक्ष मे कर लेने मे सफल हो जाती हैं, वहा क्रान्ति के विकास मे बाधा पैदा होती है। परन्तु जहा वे प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी शक्तियो का साथ देती हैं, वहा साम्राज्यवाद और आन्तरिक प्रतिक्रिया के विरुद्ध क्रान्ति की वे सक्रिय सघर्षकर्त्ता बन जाती है।

**राष्ट्रीय-जनवादी बुद्धिजीवी**

राष्ट्रीय-जनवादी बुद्धिजीवी—वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक कर्मी, सरकारी कर्मचारी, प्रगतिशील फौजी अफसर, विद्यार्थी, दफ्तरी कर्मचारी, आदि—राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे बडी और कभी-कभी तो नेतृत्वकारी भूमिका तक अदा करते हैं। जिन देशो मे मजदूर वर्ग ने अभी तक अपने को स्वतत्र शक्ति के रूप मे कायम नही कर लिया है और राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग या तो कमजोर है अथवा साम्राज्यवाद की पोषक नीति का अनुसरण करता है, मिसाल के लिये अधिकाश अफ्रीकी देशो मे, वहा उन्हें विशेष रूप से प्रमुखता प्राप्त है। इन परिस्थितियो मे बहुधा बुद्धिजीवी क्रान्ति और राज्य के नेता हो जाते हैं। उनके नेतृत्व मे कई देशो ने न केवल राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त की है, बल्कि अनेक साम्राज्यवाद विरोधी, सामतवाद विरोधी और पूजीवाद विरोधी कदम भी उठाये हैं, जो जनता के हितो के अनुरूप है। ऐतिहासिक परिस्थितिया, प्रगतिशील विकास की

वस्तुगत अपेक्षाओ और नये जीवन के लिए जनता की आकाक्षा के प्रभाव मे बुद्धिजीवियो के कुछ प्रतिनिधियो ने जनता के क्रान्तिकारी उत्साह तथा नि स्वार्थ श्रम पर निर्भर करते हुए और सोवियत सघ एवं अन्य समाजवादी देशो द्वारा प्राप्त अनुभव का इस्तेमाल करते हुए अपने-अपने देशो का ग़ैर-पूजीवादी पथ पर नेतृत्व करने का इरादा प्रकट किया है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति की प्रेरक शक्तिया मोटे तौर पर ये ही हैं। विभिन्न देशो मे उनकी भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियो तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के भिन्न स्तरो के कारण इन शक्तियो का अन्योन्य सम्बन्ध और क्रान्ति मे उनकी भूमिका मे अन्तर है। परन्तु प्रत्येक देश मे क्रान्ति के विकास के साथ-साथ इन शक्तियो के पारस्परिक सम्बन्ध भी परिवर्तित होते हैं और इस कारण क्राति की प्रेरक शक्तियो का विश्लेषण बाहरी तथा भीतरी सभी परिस्थितियो पर समुचित ध्यान देते हुए ठोस ऐतिहासिक दृष्टिकोण से करना चाहिए।

## ४. आर्थिक स्वाधीनता—क्रांति का मुख्य लक्ष्य

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति की प्रथम, प्रारम्भिक अवस्था का अन्तर्य राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करना और साम्राज्यवाद के राजनीतिक प्रभुत्व से छुटकारा पाना है। कई भूतपूर्व पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो मे यह अवस्था सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी है और राजकीय सत्ता विदेशी साम्राज्यवादी पूजीपति वर्ग तथा स्थानीय सामंती अथवा कबायली सरदारो के हाथो से निकलकर प्रगतिशील, देशभक्त शक्तियो के हाथों मे आ गई है। राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका मे प्रभुतासम्पन्न राज्यो की स्थापना साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन का एक अत्यत महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम है।

परन्तु राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का एकमात्र और इससे भी बढकर सबसे मुख्य लक्ष्य नही है। सफलताओ को दृढ बनाकर विदेशी इजारेदारियो पर निर्भरता को समाप्त करना अनिवार्य है और आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त किये बिना यह अकल्पनीय है। लेनिन ने लिखा था कि साम्राज्यवाद के वैचारिक सामान्यतया "आर्थिक

स्वाधीनता पर ध्यान दिये बिना राष्ट्रीय स्वाधीनता की चर्चा किया करते हैं, परन्तु वास्तव मे आर्थिक स्वाधीनता ही मुख्य चीज है।'*

**क्रान्तिकारी विकास की नयी अवस्था**

साम्राज्यवादियो ने पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो मे सदा के लिए अपने प्रभुत्व को कायम रखने तथा उन्हे अपनी ही आर्थिक एव राजनीतिक प्रणाली से बाध रखने मे कोई कसर उठा न रखी। साम्राज्यवादियो ने इन देशो की अर्थव्यवस्था को तबाह करके उन्हे कृषि-उपज तथा कच्चे माल का स्रोत बनाकर उनकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से भारी उद्योगो के विकास के लिए उनके सभी प्रयासो को कुचला।

इस प्रकार साम्राज्यवाद ने दर्जनो अफ्रीकी, एशियाई और लैटिन अमरीकी देशो को आर्थिक पिछडेपन, गरीबी और अभाव के गर्त मे झोककर उन्हे पीछे धकेल दिया। ये देश, जिनकी आबादी गैर-समाजवादी दुनिया की जनसख्या की दो तिहाई से अधिक है, पूजीवादी दुनिया के विधायन उद्योग के कुल उत्पादन का ११.८ प्रतिशत, मशीनो तथा साजसामान का प्राय ३ प्रतिशत और धातु का ५ प्रतिशत तैयार करते हैं। इसके अलावा, उनकी फैक्टरियो का बहुत बडा भाग विदेशी पूजीपतियो के हाथ मे है। इसी कारण १९६६ मे जहा सयुक्त राज्य अमरीका मे प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय ३,७९६ डालर थी, वही भारत मे वह ७३ डालर, पाकिस्तान मे १२१ डालर, बर्मा मे ६७ डालर, कीनिया मे १०७ डालर, कागो (किन्शासा) मे ६२ डालर थी।

नवस्वाधीन देशो के लोग विदेशी इजारेदारियो पर अपनी आर्थिक निर्भरता समाप्त करके ही अपने प्रचुर प्राकृतिक साधनो का इस्तेमाल विदेशी साम्राज्यवादियो के लिए नही, बल्कि अपनी ही भलाई के लिए कर सकते हैं। यह कार्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विकसित करके ही किया जा सकता है। परन्तु यदि इन देशो के लोग आर्थिक दृष्टि से साम्राज्यवाद पर आश्रित बने रहें तो वे सामाजिक और आर्थिक प्रगति का रास्ता नहीं अपना पायेंगे। इससे भी बुरी बात यह है कि उनकी आर्थिक अधीनता से उनकी राजनीतिक स्वाधीनता के लिए सतत गभीर खतरा बना रहता है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'सेर्बो-बुल्गारियाई जीतो का सामाजिक महत्त्व'।

आर्थिक स्वाधीनता को प्राप्त करना राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति के विकास की नयी, दूसरी अवस्था का अन्तर्य है। इसमे अनेक आमूल सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन शामिल हैं, जिन्हे सक्षेप मे इस प्रकार रखा जा सकता है

१ उत्पादन के बुनियादी साधनो का राष्ट्रीयकरण और औद्योगीकरण तथा कृषि के पुनर्गठन द्वारा स्वतत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण तथा विकास।

२ कृषि मे सहकारिता को लागू करके क्रातिकारी ढग से सामती तथा कबायली सम्बन्धो के उन्मूलन के लिये कृषि सुधार।

३ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विकसित करते हुए जनता की भौतिक स्थिति तथा सास्कृतिक स्तर मे सुधार।

४ सार्वजनिक जीवन तथा राजकीय मामलो का पूर्ण जनवादीकरण।

आइए, इनमे से सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो पर विचार करे।

**राष्ट्रीयकरण और अर्थव्यवस्था के राजकीय क्षेत्र की स्थापना**

देश की आर्थिक पराधीनता को समाप्त करने का एक सबसे मूलभूत उपाय है राष्ट्रीयकरण, अर्थात् उद्योग, परिवहन, सचार, बैंक, व्यापार, सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठानो, स्कूलो और अन्य शिक्षा सस्थाओ को सरकार के अधिकार मे कर देना। राष्ट्रीयकरण का परिणाम है अर्थव्यवस्था के राजकीय क्षेत्र की स्थापना।

कुछ नवस्वतत्र देशो ने राष्ट्रीयकरण की दिशा मे ठोस सफलताए प्राप्त की है और राष्ट्रीकृत की जानेवाली पहली चीज विदेशी इजारेदारियो तथा साम्राज्यवाद के पोषक स्थानीय पूजीपति वर्ग की सम्पत्ति है। राष्ट्रीयकरण और राजकीय आर्थिक क्षेत्र की स्थापना से ये देश आर्थिक समस्याओ को स्वय हल करने, अपनी अपनी अर्थव्यवस्था पर मनोनुकूल प्रभाव कायम करने और आर्थिक नियोजन की व्यवस्था लागू करने मे सक्षम हो गये है। इससे औपनिवेशिक शोषण को गहरा आघात लगा है और उक्त देशो के आर्थिक विकास पर नियत्रणकारी प्रभाव लागू करने की विदेशी पूजी की सभावनाए काफी कम हो गई है।

देश के आर्थिक विकास को द्रुत गति प्रदान करने और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विदेशी इजारेदारियो पर निर्भरता से मुक्त करने के लिए राष्ट्रीयकरण एक अनिवार्य शर्त है। परन्तु इसका सकारात्मक प्रभाव तभी पड सकता है जब कि राज्य अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रो – विद्युत शक्ति, मशीनो

के निर्माण और परिवहन पर स्वामित्व ग्रहण कर ले। ऐसा न होने पर नवस्वतंत्र देशों की अर्थव्यवस्था के औपनिवेशिक ढांचे के कायम रहने के कारण राजकीय क्षेत्र विदेशी इजारेदारियों तथा स्थानीय पूंजीपति वर्ग के उद्यमों को कच्चा माल तथा अन्य सामग्री सप्लाई करनेवाला क्षेत्र ही बन कर रह जायेगा। इसके अलावा, घरेलू तथा विदेशी व्यापार और अन्य देशों के साथ उधार विषयक एवं वित्तीय सम्बन्धों पर राज्य के नियंत्रण के साथ राष्ट्रीयकरण का सम्बद्ध होना आवश्यक है, क्योंकि इसी प्रकार पूंजी और बहुमूल्य कच्चे माल को बाहर जाने से रोका जा सकता है तथा राष्ट्रीय उद्योग की साम्राज्यवादी होड और बाजार मे व्याप्त अराजकता के अव्यवस्थित प्रभाव से रक्षा की जा सकती है।

किन्तु घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण आम तौर पर विदेशी इजारेदारियों की सभी अथवा यहां तक कि काफी सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करना राज्य के लिए असंभव हो जाता है। इन अवस्थाओं मे राज्य इनके कार्यकलाप को नियंत्रित ही कर सकता है और जनता तथा देश के प्राकृतिक साधनों का शोषण करने की उनकी क्षमता पर अंकुश ही लगा सकता है। बहुधा राजकीय और विदेशी पूंजी सहित निजी पूंजी द्वारा संयुक्त उद्यम कायम किये जाते हैं। राजकीय क्षेत्र का सामाजिक स्वरूप सत्तारूढ सामाजिक शक्तियों के गठजोड तथा देश विशेष मे वर्ग शक्तियों के संतुलन पर निर्भर करता है। देशभक्त जनवादी शक्तियों के सत्तारूढ होने, देश और जनता के हितों मे राष्ट्रीयकरण को लागू करने पर ही राजकीय क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास के आधार तथा विदेशी इजारेदारियों पर उस की निर्भरता के उन्मूलन के मुख्य कारक के रूप मे काम आ सकता है।

**औद्योगीकरण**

**बहुत ही विकसित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना के जरिये, औद्योगीकरण के द्वारा ही आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त की जा सकती है।**

विकासमान देशों की कृषि सहित अर्थव्यवस्था के आधुनिक तकनीकी आधार का निर्माण और श्रम उत्पादिता के उच्च स्तर की उपलब्धि औद्योगीकरण से सुनिश्चित होती है। यह देश की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ बनाने और उसकी वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक प्रगति के लिए आधार का काम करता है। नवस्वाधीन देश औद्योगीकरण द्वारा ही

अपने पिछड़ेपन को दूर कर सकता है और साम्राज्यवादी देशों को कच्चा माल सप्लाई करनेवाले खेतिहर देश के रूप मे अपनी अवाछनीय भूमिका खत्म कर सकता है और सच्ची स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है। औद्योगीकरण जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने की अनिवार्य शर्त है।

कुदरती तौर पर सभी देशों के पास राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के तत्काल बाद औद्योगीकरण शुरू करने के लिए आवश्यक साधन नहीं होते। सबसे पहले उन्हे लोगो के लिए खाद्यान्न और वस्त्र की व्यवस्था करनी होती है, उनके लिए रोजी तथा रहने का प्रबन्ध करना होता है और इस पर ध्यान देना होता है कि निर्माणाधीन तथा चालू फैक्टरियो को जरूरी कच्चा माल सुलभ हो। फिर भी पहले के सभी परतत्र देशो के सम्मुख आधुनिक उद्योग को खडा करने का कार्यभार अनिवार्य रूप मे प्रस्तुत होता है—जब तक वे ऐसा नही कर लेते, तब तक सच्ची स्वतत्रता प्राप्त नही कर सकते। छोटे-छोटे देश आधुनिक उद्योग की सभी शाखाओ को विकसित करने की स्थिति मे नही हैं और इस कारण दूसरे देशो के साथ सहयोग तथा उत्पादन के विशेषीकरण की उनके औद्योगीकरण के विकास मे बहुत बडी भूमिका रहती है और ऐसा वे अपने आर्थिक संपर्कों का आपस मे तथा समाजवादी देशो और इसके साथ ही पूजीवादी देशो से भी प्रसार करके कर सकते हैं।

कई नवस्वतत्र देश औद्योगीकरण के पथ पर पहले कदम बढा रहे हैं। अपने साधनो और अन्य देशो, विशेष रूप से समाजवादी देशो से प्राप्त सहायता का उपयोग करते हुए वे देश का विद्युतीकरण तथा उद्योग की आधुनिक शाखाओ का निर्माण कर रहे हैं। स्पष्टत. प्राथमिकता आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने मे सहायक महत्वपूर्ण शाखाओ को दी जा रही है।

**कृषि सुधार**

नवस्वतंत्र देशो की आर्थिक स्वाधीनता के कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है **कृषि समस्या का समाधान, महत्त्वपूर्ण कृषि सुधारो को लागु करना।** अधिकाश नवस्वतंत्र देशो मे सबसे अच्छी जमीन विदेशी इजारेदारियों तथा स्थानीय जमीदारो के कब्जे मे थी और बहुधा आज भी है। इजारेदारी प्रभुत्व और सामती तथा प्राक्-सामती सम्बन्धो के प्रचलन से आर्थिक विकास मे बडी बाधा पहुचती है, क्योंकि मुख्यत एक ही फसलवाली कृषि से न तो उद्योग के

लिए आवश्यक कच्चा माल और न आवादी को पर्याप्त खाद्यान्न ही उपलब्ध हो सकता है।

इसस यह निष्कष निकलता है कि नवस्वाधीन देशो की कृषि के सुधार के लिए उठाये जानेवाले **आवश्यक बुनियादी कदम ये हैं—कृषि मे सामती एव प्राक्-सामती सम्बन्धो का उन्मूलन, जमीन पर सामती तथा विदेशी इजारेदारियो के स्वामित्व की समाप्ति ,किसानो को जमीन की जोताई-बोआई करने का अवसर और इसमे सहायता।**

कृषि समस्या के समाधान से एक ही फसल पैदा करने की प्रवृत्ति समाप्त हो जायेगी, पूजीवादी मण्डी पर उसकी निर्भरता का अन्त हो जायेगा और इस प्रकार लोगो को खाद्यान्न तथा उद्योग को कच्चा माल सप्लाई करने की स्थिति मे भी बहुत सुधार होगा। आमूल कृषि सुधारो से किसानो की आर्थिक दशा म सुधार करना, उनकी क्रय शक्ति को बढाना तथा इस प्रकार घरेलू बाजार को विस्तृत करना सभव हो जायेगा—और उद्योग के विकास के लिये यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है।

यही है कृषि सुधारो का **आर्थिक** महत्त्व। परन्तु ये सुधार **राजनीतिक** दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। एक ओर सामती भू-स्वामित्व के उन्मूलन से विदेशी इजारेदारियो का मुख्य सामाजिक आधार—बडे जमीदारो का वर्ग—समाप्त हो जाता है और इससे इजारेदारियो तथा उनका समर्थन करनेवाली प्रतिक्रियावादी शक्तियो की राजनीतिक स्थिति कमजोर हो जाती है। दूसरी ओर किसानो के सहयोग तथा कृषि समस्या के उनके हितो मे समाधान से वे राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति मे सक्रिय भाग लेने लगेंगे और उसके नतीजो तथा सभावनाओ पर इसका बडा प्रभाव पडेगा।

जैसा कि अनुभव से सिद्ध हो चुका है, कृषि सुधारो को लागू करने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं। कुछ देशो ने भू-स्वामित्व की सीमा को कम करने तथा जमीदारो एव विदेशी इजारेदारो की जब्त की गई जमीन को किसानो मे वितरित करने की ओर लक्षित आमूल कृषि सुधारो को लागू करना शुरू किया है। कृषि मे सहकारिता को लागू करना सबसे मूलभूत कृषि सुधार है, जो कुछ नवस्वतत्र देशो मे शुरू भी हो चुका है।

परन्तु यह ध्यान मे रखना चाहिए कि कुछ देशो मे कृषि समस्या को अभी तक बिल्कुल हल नही किया गया है और इस कारण इसका समाधान राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का एक मुख्य कार्यभार बना हुआ है।

सार्वजनिक जीवन तथा राज्य के मामलो का व्यापक जनवादीकरण किये बिना, निर्माण मे व्यापक जनसमुदाय का सहयोग प्राप्त किये बिना और उसके शैक्षिक एव सास्कृतिक स्तरो को ऊचा उठाये बिना आर्थिक विकास के कार्यभार पूरे नही हो सकते।

**सामाजिक-आर्थिक सुधारो के लिए सघर्ष**

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक समस्याओ का समाधान सदैव परस्पर विरोधी सामाजिक शक्तियो के बीच घोर सघर्ष से सम्बद्ध होता है। जहा क्रान्ति की प्रथम अवस्था का लक्ष्य, राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त करने का कार्यभार विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष मे राष्ट्र की सभी देशभक्त शक्तियो द्वारा पूरा किया जाता है, वहा इसकी दूसरी अवस्था का लक्ष्य, आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने का कार्यभार साम्राज्यवाद के विरुद्ध और देश के विभिन्न वर्गों तथा सामाजिक श्रेणियो के बीच सघर्ष के फलस्वरूप निष्पादित होता है। बुनियादी रूप मे यह सघर्ष आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने के तरीको और उपायो का सघर्ष है, समाज के भावी विकास के तरीको और उपायो का सघर्ष है।

इस सघर्ष मे दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तिया सामने आती हैं। इनमे से एक का प्रतिनिधित्व मुख्यत मेहनतकश लोग और उनका समर्थन करनेवाले क्रान्तिकारी जनवाद के पोषक करते हैं, जिससे क्रान्ति के कार्यभार का आमूल समाधान की आकाक्षा, भावी प्रगति की आकाक्षा प्रकट होती है। यह प्रवृत्ति केवल साम्राज्यवाद विरोधी नही, बल्कि पूजीवाद विरोधी भी है। दूसरी प्रवृत्ति से, जिसका प्रतिनिधित्व मुख्यत दक्षिणपथी पूजीपति वर्ग और उसके अनुयायी करते हैं, क्रान्ति के विकास को रोकने, सब कुछ अधूरे सुधारो तक सीमित रखने और इस प्रकार निजी सम्पत्ति तथा शोषण को कायम रखने की ख्वाहिश जाहिर होती है। ये परस्पर विरोधी रुझान और कुछ नही, बल्कि शोषको के हितो के साथ, जो एक वर्ग पर दूसरे वग के प्रभुत्व को कायम रखना चाहते है, मजदूरा के हितो के अनिवार्य टकराव के द्योतक हैं।

आर्थिक स्वाधीनता के लिए सघर्ष की प्रक्रिया म वर्ग शक्तिया पुनर्गठित होती है और राजनीतिक स्वतत्रता के सघर्ष म देशभक्त शक्तिया के बीच कायम एकता की जगह नयी एकता—सबसे आमूल क्रान्तिकारी शक्तिया की एकता—पैदा होती है।

केवल आमूल सामाजिक और आर्थिक परिवर्तना, अर्थात् राष्ट्रीय

मुक्ति क्रान्ति के कार्यभारो की अनवरत पूर्ति से ही प्रगतिशील विकास की, राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण की आवश्यक परिस्थितिया पैदा हो सकती हैं।

## ५. राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति का समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति अपने लिए फौरी समाजवादी रूपान्तरणो को लागू करने और पूजीवाद तथा निजी स्वामित्व के उन्मूलन का कार्यभार निर्धारित नही करती। यह क्रान्ति साम्राज्यवाद विरोधी, सामतवाद विरोधी और जनवादी स्वरूप की होती है। मजदूर वर्ग या तो होता ही नही या बहुत ही शिथिल ढग से सगठित होता है। फलत यह सदैव नेतृत्वकारी भूमिका अदा नही करता—सामान्यतया राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग अथवा क्रान्तिकारी जनवादी बुद्धिजीवी समुदाय यह भूमिका अदा करता है। इन अवस्थाओ मे, क्रान्ति की मुख्य शक्ति किसान समुदाय है।

इसी कारण लेनिन राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के रूप मे मानते थे। उन्होने लिखा था, " .चूकि पिछडे हुए देशो की आबादी मे पूजीवादी सम्बन्धो को प्रकट करनेवाले किसानो का भारी बहुमत है, इसलिए कोई भी राष्ट्रीय आन्दोलन केवल पूजीवादी-जनवादी आन्दोलन ही हो सकता है।"*

फलत राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण का सवाल बुनियादी रूप मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण का सवाल है।

लेनिन ने ही पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण का सिद्धान्त निरूपित किया था। आइये, इस सिद्धात की कुछ विस्तार से चर्चा की जाये।

---

* व्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी काग्रेस मे जातीय तथा औपनिवेशिक प्रश्नो मे सम्बन्धित आयोग की रिपोर्ट, २६ जुलाई, १९२०।

साम्राज्यवादी युग मे पूंजीवादी-जनवादी क्रान्तियो की विशेषताओ पर लेनिन के विचार

१९०५–१९०७ मे सारे रूस पर जिस क्रान्ति की ज्वाला फैली थी, वह अपने अन्तर्य की दृष्टि से पूंजीवादी क्रान्ति थी, क्योकि इसका लक्ष्य जारशाही निरकुशता का तख्ता उलटना और सामतवाद के अवशेषो का उन्मूलन था। परन्तु इसके बावजूद, जैसा कि लेनिन ने जोर दिया, यह पश्चिमी यूरोपीय देशो के उदीयमान पूजीवादी युग की पूजीवादी क्रान्तियो से काफी भिन्न थी।

पश्चिम की पूजीवादी क्रान्तियो के प्रतिकूल, जिनमे पूजीपति वर्ग ने नेतृत्वकारी भूमिका अदा की थी, रूसी क्रान्ति वस्तुत जन क्राति थी।

इस क्राति मे मेहनतकश लोगो, विशेष रूप से सर्वहारा वर्ग ने सक्रिय भाग लिया था। क्रान्ति की प्रेरक शक्ति और नेता होने के नाते सर्वहारा वर्ग ने निरकुशता के विरुद्ध सघर्ष के विशिष्ट रूप से सर्वहारा तरीको–हडतालो तथा सशस्त्र विद्रोह–को अपनाया।

रूसी क्रान्ति मे मजदूर वर्ग द्वारा नेतृत्वकारी भूमिका अदा करने और सघर्ष के सर्वहारा तरीको को अपनाने के कारण जहा यह सर्वहारा क्रान्ति थी, वही यह किसान क्रान्ति भी थी, क्योकि इसने भूदासता के अवशेषो के उन्मूलन और विशेष रूप से जमीन पर जमीदारो के स्वामित्व की समाप्ति को अपना एक कार्यभार निर्धारित किया था। किसान समुदाय इस क्रान्ति की एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक शक्ति, सर्वहारा वर्ग का पक्का सहयोगी था वह जानता था कि मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे ही जारशाही निरकुशता तथा जमीदारो के उत्पीडन से वह अपने को मुक्त कर सकता है और उनसे जब्त की गई जमीन पर स्वतन्त्रतापूर्वक खेती कर सकता है।

यहा यह उल्लेखनीय है कि न केवल जारशाही निरकुशता, बल्कि रूसी पूजीपति वर्ग भी, जो जारशाही के साथ घनिष्ठ रूप मे सम्बद्ध होने के कारण एक प्रतिक्रान्तिकारी शक्ति था, मेहनतकश लोगो, मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के विरुद्ध था। यह ठीक ही समझते हुए कि सर्वहारा वर्ग निरकुश जारशाही के साथ उसे भी समाप्त कर देगा, जनसमुदाय, विशेष रूप से मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारिता से वह डर के मारे अधमरा हो गया था। पूजीपति वर्ग क्रान्ति की प्रेरक शक्ति नही था; इससे भी बढकर उसने खुल्लमखुल्ला निरकुश जारशाही का साथ दिया और उसके साथ

मिलकर क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की। इसलिए जैसा कि लेनिन ने लिखा था, रूस मे पूजीवादी क्रान्ति की विजय को पूजीपति वर्ग की विजय नही माना जा सकता।

**लेनिन का क्रांतिकारी संक्रमण सिद्धान्त** रूस मे पहली जन क्रान्ति की विशेषताओ को ध्यान म रखते हुए लेनिन ने पूजीवादी जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे संक्रमण के सिद्धान्त को निरूपित किया।

स्थायी क्रान्ति और उसकी विजय की पूर्वापेक्षा के रूप मे मजदूर वग तथा किसान समुदाय के बीच सश्रय का विचार सबसे पहले मार्क्स ने प्रस्तुत किया था। दूसरे इटरनेशनल के अवसरवादियो ने इस विचार को भुला दिया। पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति म मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका, मजदूर वर्ग के मुख्य सहयोगी – किसान समुदाय के प्रति उसकी नेतृत्वकारी भूमिका को अस्वीकार करके अवसरवादियो ने यह दावा करते हुए कि पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति का समाजवादी क्रान्ति मे संक्रमण नही हो सकता तथा एकमात्र पूजीपति वर्ग ही पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति का नेता हो सकता है, पूजीवादी जनवादी और समाजवादी क्रान्तियो के बीच एक अलघ्य दीवार खडी करने की कोशिश की।

प्रथम रूसी क्रान्ति के अनुभव के सामान्यीकरण द्वारा यह सिद्ध करके कि अवसरवादियो के विचार गलत है, लेनिन ने स्पष्ट साबित किया कि पूजीवादी-जनवादी और समाजवादी क्रान्तियो म कोई अलघ्य खाई नही है तथा निश्चित अवस्थाओ मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति का समाजवादी क्रान्ति मे संक्रमण हो सकता है। लेनिन ने कहा कि क्रान्ति का नतीजा उस म मजदूर वर्ग तथा अन्य सभी मेहनतकश लोगो की भूमिका पर निर्भर करेगा। अगर मजदूर वर्ग क्रान्ति का नेतृत्व ग्रहण कर ले और प्रतिक्रियावादी शक्तियो पर उसकी शक्तिया हावी हो जायें, तो जारशाही के विरुद्ध क्रान्ति विजयी होगी। परन्तु अगर मजदूर वर्ग पर्याप्त मात्रा मे शक्तिशाली साबित न होगा, तो क्रान्ति पराजित हो जायेगी और उसका अंत निरकुश जारशाही और पूजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी तबको के बीच सौदेबाजी म होगा।

क्रान्तिकारी ढग स जारशाही का तख्ता उलटने तथा देश के आर्थिक विकास म बाधक भूदासता के अवशेषो के उन्मूलन और पूजीवाद के विरुद्ध, समाजवाद के लिए सघर्ष म किसी भी अन्य वर्ग की अपेक्षा मजदूर वर्ग की ही अधिक अभिरुचि थी। इसी कारण यह पूजीवादी-

जनवादी क्रान्ति का नेता बन गया। परन्तु क्रान्ति मे वस्तुत नेतृत्वकारी शक्ति बनने के पूर्व उसे सबसे पहले क्राति को सफल परिणति तक पहुचाने मे अभिरुचि रखनेवाले सहयोगी की जरूरत थी और दूसरे, उदारपथी, ढुलमुल पूजीपति वर्ग को अलग करना था, जो निरकुश जारशाही से समझौता करके क्रान्ति को श्रमिक जनता के विरुद्ध मोडना चाहता था।

मजदूर वर्ग का सबसे विश्वसनीय और सबसे स्वाभाविक सहयोगी किसान समुदाय है, क्योकि जमीन पर जमीदारो का स्वामित्व समाप्त करने और जनवादी सुधारो को लागू करने मे इसकी गहरी दिलचस्पी है।

जहा तक पूजीपति वर्ग का सबध है, उसकी दिलचस्पी क्राति द्वारा नही, बल्कि सुधारो के जरिये कुछ पूजीवादी-जनवादी परिवर्तनो को लागू करने मे ही है, ताकि वह जनता, विशेष रूप से मजदूरो के स्वतत्र क्रातिकारी कार्यकलाप और उपक्रम को सीमित कर सके। यह बात समझ मे आने योग्य है, क्योकि क्रान्ति की प्रक्रिया मे, जैसा कि लेनिन ने लिखा था, "बदूक को एक कधे से हटाकर दूसरे कधे पर रखना, अर्थात् पूजीवादी क्राति जो हथियार उनके हाथ मे देगी. उन्हे पूजीपति वर्ग के विरुद्ध इस्तेमाल करना "* आसान है।

सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति की विजय के फलस्वरूप पूजीपति वर्ग का अधिनायकत्व नही, जैसा कि पहले हुआ करता था, बल्कि **मजदूर वर्ग और किसान समुदाय का क्रान्तिकारी-जनवादी अधिनायकत्व** कायम होता है। अपने राजनीतिक निकाय – अस्थाई क्रान्तिकारी सरकार – द्वारा यह अधिनायकत्व राजतत्र, जमीदारो और प्रतिक्रियावादी पूजीपति वर्ग के प्रतिरोध को कुचल देता है तथा क्रान्ति के आगे के विकास को प्रोत्साहन प्रदान करते हुए जनवादी सुधारो को लागू करता है।

मजदूर वर्ग तथा किसान समुदाय के क्रान्तिकारी जनवादी अधिनायकत्व की स्थापना के साथ पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति मुख्यत पूरी हो जाती है। परन्तु लेनिन का मत था कि पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति को समाजवादी क्रान्ति मे विकसित करना मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी का निर्दिष्ट लक्ष्य

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'जनवादी क्रान्ति मे सामाजिक-जनवाद की दो कार्यनीतिया'।

है। उन्होने लिखा था, "जनवादी क्रान्ति से हम तत्काल समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण करने लगेगे। हम निरतर क्रान्ति के समर्थक है। हम ग्राधे रास्ते मे ही रुक नही सकेगे।' * समस्त जनता ग्रौर विशेष रूप से किसान समुदाय का नेतृत्व करते हुए मजदूर वर्ग को निरकुशता के विरुद्ध तथा स्वतत्रता एव निर्णायक जनवादी क्रान्ति के लिए ग्रौर सभी मेहनतकश व शोषित लोगो का नेतृत्व करते हुए समाजवाद के लिए उठ खडा होना था।

पूजीवादी-जनवादी क्राति का समाजवादी क्राति मे सक्रमण मजदूर वर्ग तथा किसान समुदाय के क्रान्तिकारी-जनवादी ग्रधिनायकत्व के सर्वहारा वर्ग के समाजवादी ग्रधिनायकत्व मे रूपान्तरण मे प्रकट होता है। इसमे मजदूर वर्ग को सबसे गरीब किसानो का समर्थन प्राप्त होता है। सर्वहारा वर्ग के ग्रधिनायकत्व के प्रादुर्भाव के साथ राष्ट्र का पूजीवाद से समाजवाद की ग्रोर सक्रमण शुरू हो जाता है।

दूसरे इटरनेशनल के ग्रवसरवादियो के इन दावो को ग्रस्वीकार करते हुए कि ग्रधिकाश कृपक ग्राबादीवाले देश मे समाजवादी क्रान्ति की बात सोची भी नही जा सकती, लेनिन ने सिद्ध किया कि इस क्रान्ति को पूरा करने के लिए **एक राष्ट्र की ग्राबादी मे सर्वहारा का बहुमत मे होना जरा भी ग्रनिवार्य नहीं है।** किन्तु सर्वहारा का एक सुसगठित शक्ति होना, सभी गैर-सर्वहारा लोगो का नेतृत्व करने मे सक्षम होना जरूरी है, जो इसके सघर्ष के विचारधारात्मक तथा व्यावहारिक नता–क्रान्तिकारी मार्क्सवादी पार्टी के होने पर ही सभव है। ग्रनेक नवस्वतत्र देशो के लिए लेनिन की यह थीसिस विशेष महत्त्व की है, जहा ग्रभी सर्वहारा वर्ग का बहुमत नही है–इससे सिद्ध होता है कि इसके बावजूद समाजवाद का पथ उनके लिए उन्मुक्त है।

लेनिन के पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रान्ति मे सक्रमण के सिद्धान्त ने रूस के मेहनतकश लोगो को जारशाही तथा पूजीवाद के विरुद्ध समाजवाद के लिए सघर्ष मे एक हथियार प्रदान किया। ग्राज यह नवोदित प्रभुसत्तासम्पन्न राष्ट्रो को स्वतत्रता तथा समृद्धि का पथ खोजने मे सहायता प्रदान कर रहा है।

---

* ब्ला० इ० लेनिन, 'किसान ग्रान्दोलन के प्रति सामाजिक-जनवाद का रुख'।

12*

### राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति और पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति मे अन्तर

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति बुनियादी तौर पर पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति होती है, इस कारण रूस तथा अन्य यूरोपीय और एशियाई देशो मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति के समाजवादी क्रांति मे सक्रमण के दौरान सचित अनुभव नवस्वतत्र राष्ट्रो के लिये बहुत व्यावहारिक उपयोगिता का है। परन्तु इसके बावजूद वर्तमान राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो मे इस अनुभव को बिना सोचे-समझे लागू करना बडी भूल होगी, जिनकी न केवल सामतवाद से पूजीवाद की ओर सक्रमण के युग की पूजीवादी-जनवादी क्रान्तियो से, बल्कि रूस मे हुई १६०५–१६०७ की क्रान्ति और १६१७ की फरवरी क्रान्ति से भिन्नता प्रकट करनेवाली अपनी विशिष्टताए है। समाजवादी क्रान्ति मे वर्तमान राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के सक्रमण के प्रश्न को ठीक-ठीक समझने के लिये इन विशिष्टताओ को ध्यान मे रखना आवश्यक है।

ये विशिष्टताए क्या है? सर्वप्रथम, अपने स्वरूप, ध्येयो और कार्यभारो की दृष्टि से ये क्रान्तिया एक दूसरी से भिन्न है। रूस की क्रान्तिया मुख्यत सामतवाद विरोधी थी। उनके सामने पूजीवादी जनवाद को कायम करने का कार्यभार था। परन्तु वर्तमान समय की राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया केवल सामतवाद विरोधी नही, बल्कि साम्राज्यवाद विरोधी और उपनिवेशवाद विरोधी भी है। रूस की पूजीवादी-जनवादी क्रान्तिया आन्तरिक प्रतिक्रिया – ज़ारशाही एव जमीदारो के विरुद्ध की गयी थी। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया घरेलू प्रतिक्रिया के विरुद्ध उतना नही, जितना विदेशी प्रभुत्व, विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध है। राष्ट्रीय स्वाधीनता की समस्या को हल करना उनका मुख्य उद्देश्य है।

दूसरे, इन क्रान्तियो मे प्रेरक शक्तियो की दृष्टि से भी अन्तर है। रूसी क्रान्तियो मे पूजीपति वर्ग प्रेरक शक्ति नही, बल्कि प्रतिक्रियावादी शक्ति थी। इसकी प्रेरक शक्ति मजदूर वर्ग और किसान समुदाय थे, जिनमे मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका थी। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो, विशेष रूप से उनके विकास के प्रथम, राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त करने के सघर्ष के दौर की प्रेरक शक्तियो मे मेहनतकश लोगो के अलावा राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग और राष्ट्रीय जनवादी बुद्धिजीवी समुदाय भी शामिल है। इसके अतिरिक्त ये परवर्ती बहुधा क्रान्ति और राज्य के नेता की भूमिका अदा करते है।

तीसरे, इन क्रान्तियो की निष्पत्ति के लिए अपनाये गए तरीको की दृष्टि से भी इनमे भिन्नता है। जहा रूस मे मुख्यत सशस्त्र विद्रोह द्वारा क्रान्तिया हुईं, वहीं परिस्थिति के अनुरूप शान्तिपूर्ण तरीका तथा शस्त्र-बल दोनो से राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया पूरी हो सकती है। उत्पीडित राष्ट्र उपनिवेशवाद के विरुद्ध अपने न्यायोचित सघर्ष मे कई तरीको का इस्तेमाल करते है। अगर उपनिवेशवादी हटने से इनकार करते है, तो वे, मिसाल के लिए जैसा कि अल्जीरिया मे हुआ, शस्त्र-बल का इस्तेमाल करने के लिए विवश हो जाते है।

चौथे, रूस की पूजीवादी-जनवादी क्रान्तिया अपेक्षत एक विकसित पूजीवादी देश मे हुई थी, जहा समाजवाद की भौतिक तथा सामाजिक दोनो पूर्वापेक्षाए परिपक्व थी। आधुनिक अर्थव्यवस्था, अत्यत सकेन्द्रित उत्पादन और सघर्षो मे इस्पाती दृढता प्राप्त मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व मे सुसगठित मजदूर वर्ग के अस्तित्व से इन क्रान्तियो का समाजवादी क्रान्ति मे प्रत्यक्ष सक्रमण सभव हो गया। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया पराधीन तथा औपनिवेशिक देशो मे होती है, जिनमे से अधिकाश आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से पिछडे हुए होते है तथा आज भी सामाजिक विकास की प्राक् पूजीवादी अवस्था मे है। सामान्यतया, उनमे सीधे समाजवाद की ओर सक्रमण के लिए भौतिक तथा वर्गीय परिस्थितिया परिपक्व नही होती। फलत , समाजवादी क्रान्ति उनके लिए फौरी व्यावहारिक समस्या नही है।

अन्त मे, रूस मे पूजीवादी-जनवादी क्रान्तिया तब हुई थी, जब सारी दुनिया मे पूजीवाद का एकच्छत्र प्रभुत्व कायम था। आज की राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया दो विरोधी प्रणालियो मे बटी दुनिया मे और एक ऐसे समय हो रही है, जब विश्व समाजवादी प्रणाली ससार के विकास मे निर्णायक कारक बनती जा रही है और जब विकसित पूजीवादी देशो के मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी सघर्ष मे लगने से पूजीवाद का आम सकट बहुत गभीर होता जा रहा है। इन सभी बातो का राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो के विकास तथा नतीजो पर प्रबल प्रभाव पडता है।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियो के विकास और सभावनाओ पर इन विशेष लक्षणो का असर पडता है तथा इनसे समाजवादी क्रान्तियो मे उनके सक्रमण का विशिष्ट स्वरूप पहले ही निर्धारित हो जाता है। अन्य बातो के साथ ही उनसे नवस्वतन्त्र देशो के लिए विकास के गैर-पूजीवादी पथ का अनुसरण

करन, अर्थात् विकास की पूजीवादी अवस्था से गुज़रे बिना समाजवाद की ओर उनके अग्रसर होने की वास्तविक सभावनाए पैदा हो जाती हैं।

निस्सन्देह, विकास का पूजीवादी पथ भी है। इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष मे राष्ट्रो के सम्मुख विकास के पूजीवादी और गैर-पूजीवादी पथा म से किसी एक को चुनने का प्रश्न प्रस्तुत हो जाता है। आइए, इस पर विचार करे कि ये रास्ते क्या है और नवस्वतत्र राष्ट्रो के सामने वे क्या सभावनाए प्रस्तुत करते हैं।

## ६. विकास के दो रास्ते–पूजीवादी और गैर-पूजीवादी

यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या है कि नवस्वतत्र राष्ट्र विकास के किस पथ को चुनें और इसका समाधान विभिन्न वर्ग शक्तियो के बीच मुठभेडो तथा सघर्षो से सम्बद्ध है, क्योकि सभी अपने अपने ढग से इसे हल करना चाहते हैं। प्रतिक्रियावादी शक्तिया, विशेष रूप से बडे पूजीपति और जमीदार चाहते हैं कि उनके देश पूजीवादी पथ को अपनायें, ताकि वे अपन विशेषाधिकारो, निजी स्वामित्व तथा शोषण को कायम रख सके। इसमे बहुधा साम्राज्यवाद आर्थिक, वित्तीय और फौजी रूप मे उन्हे अपना समर्थन प्रदान करता है।

दूसरी ओर, समाज की प्रगतिशील शक्तिया, विशेष रूप से मजदूर वर्ग, साम्राज्यवाद की साजिशो से जनता की रक्षा करने और अपने देश को वास्तविक स्वतत्रता, समृद्धि तथा प्रगति के पथ पर अग्रसर करने की कोशिश करते हैं।

नवस्वाधीन देशो द्वारा विकास के पथ का चयन गभीर विचारधारात्मक सघर्ष से सम्बद्ध है। चूकि इन देशो मे विभिन्न आर्थिक प्रणालिया के अशव मौजूद हैं और विभिन्न वर्ग तथा सामाजिक तबके हैं, जिनके अपने अपने ध्येय और विकास सम्बन्धी अपनी अपनी धारणाए हैं, इसलिए वहा कई तरह की विभिन्न विचारधारात्मक प्रवृत्तिया पैदा होती हैं। सामान्यतया इन रुझानो के बीच टकराव से दो परस्परविरोधी विश्वदृष्टिकोणो, दो परस्परविरोधी प्रणालियो–पूजीवाद तथा समाजवाद के बीच सघर्ष प्रकट

होना है। इस सघर्ष का मुख्य सवाल है राष्ट्रीय स्वाधीनता को सुदृढ बनाना एव विकसित करना तथा विकास के भावी पथ को चुनना।

नवस्वाधीन देशो के लोग अनुभव से यह समझ जाते हैं कि विकास के गैर पूजीवादी पथ से ही वास्तविक राष्ट्रीय पुनरुद्धार तथा सामाजिक प्रगति हो सकती है।

जैसा कि १९६९ मे मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन के निर्णय मे कहा गया है, गैर-पूजीवादी पथ ही "वह रास्ता है, जो औपनिवेशिक अतीत से विरासत मे प्राप्त पिछडेपन को दूर करने की सभावना और समाजवादी विकास की ओर सक्रमण के लिए परिस्थितिया पैदा करता है।"

**जनता पूजीवाद को अस्वीकार करती है**

नवस्वतत्र देशो के लोग पूजीवाद से नफरत करते हैं। उपनिवेशवाद की विभीषिका उन्हे भली भाति याद है और उन्हाने अपनी आजादी के लिए भारी मूल्य चुकाया है और वे नही चाहते कि पुन साम्राज्यवादिया के लुटेरू पजे म जकडे जायें। इतिहास से सिद्ध होता है कि पूजीवाद और साम्राज्यवाद का मतलब है युद्ध तथा औपनिवेशिक लूट खसोट, शोषण और बेकारी, भूख एव गरीबी। पूजीवाद जनवाद और प्रगति का शत्रु है। इसी कारण, पूजीवाद के विचारधारात्मक पोषको द्वारा उसके वास्तविक स्वरूप पर आवरण डालने का प्रयास करने और उसकी सराहना मे 'लोक पूजीवाद', "कल्याणकारी राज्य" जैसी प्रशसोक्तिया का प्रयोग करने के बावजूद, नवस्वतत्र देशो के लोग इसे सर्वथा अस्वीकार करते हैं। पूजीवाद की अलोकप्रियता इतनी स्पष्ट है कि अमरीका के सरकारी हलके भी इसे स्वीकार करते हैं १९६७ की गर्मियो मे अमरीका के सिनेटर जे० विलियम फुलब्राइट ने "न्यूयार्क टाइम्स मैगजीन" मे लिखा था, 'महान समाज एक रुग्ण समाज बन गया है अपने विदेशी मामलो और घरेलू जीवन दोनो म हम हिसा का चित्र प्रस्तुत करते हैं अमरीका हिसा का प्रतीक बन गया है।'

पूजीवादी पथ को अपनानेवाले अनेक देशो मे गभीर आर्थिक सकट की जो लहर व्याप्त है, उससे सिद्ध हो गया है कि नवस्वतत्र देशो के लिए विकास का पूजीवादी रास्ता ठीक नही है।

परन्तु एक अन्य पथ, गैर पूजीवादी पथ भी है।

**गैर-पूंजीवादी विकास का ऐतिहासिक अनुभव**

लेनिन ने सिद्ध किया था कि औद्योगिक दृष्टि से उन्नत पूंजीवाद की तो बात ही क्या, आर्थि रूप मे पिछडे हुए देशो का भी विकास व पूजीवादी अवस्था से सर्वथा गुज़रे बिना समाजवाद मे सक्रमण बिल्कुल सभ है। वह इस सभावना को अन्य, अधिक विकसित देशो मे समाजवाद वं प्रादुर्भाव तथा विकास के साथ जोडते थे, जहा का सर्वहारा वर्ग आर्थिव और राजनीतिक दृष्टि से पिछडे हुए देशो की सहायता कर सकता था। लेनिन ने लिखा था, 'विकसित देशो के सर्वहारा वर्ग की सहायता से विकास की पूजीवादी अवस्था से गुजरे बिना पिछडे हुए देश कम्युनिज्म की ओर सक्रमण कर सकते हैं।"*

लेनिन की यह प्रस्थापना उन देशो की विशिष्ट परिस्थितियो म समाजवादी क्रान्ति के मार्क्सवादी सिद्धान्त को लागू करने पर आधारित है, जो अभी विकास की पूजीवादी अवस्था मे नही पहुचे हैं।

पिछडे हुए देशो के गैर-पूजीवादी पथ से विकास की सभावना के बारे मे लेनिन के विचार ने अब मूर्त रूप ग्रहण कर लिया है। १९१७ मे रूस मे रहनेवाली साढे ६ करोड गैर-रूसी आबादी मे से मध्य एशियाई उपनिवेशो के ढाई करोड लोग न केवल उत्पादन की सामती व्यवस्था, बल्कि कबायली जीवन-पद्धति को भी कायम रखे हुए विकास की प्राक्-पूजीवादी अवस्था मे रह रहे थे। परन्तु आधी सदी से भी कम समय मे बन्धु जातियो, विशेष रूप से रूसी जनता की सहायता से पुराने रूस के ये सीमावर्ती प्रदेश अत्यत विकसित उद्योग, कृषि और सस्कृति से युक्त समृद्धिशाली समाजवादी जनतन्त्र बन गये हैं। अब इन जनतन्त्रो मे अपने धातु, मोटरगाडी, विद्युत इजीनियरी और अन्य आधुनिक उद्योग हैं। उनकी कृषि मे आमूल परिवर्तन हो गया है—यह सामूहिक तथा यन्त्रीकृत हो गई है। उन्होंने अपने सास्कृतिक पिछडेपन को दूर कर दिया है और उनके पास अपने सुयोग्य विशेषज्ञो का पूरा लशकर तैयार हो गया है। सोवियत मध्य एशियाई जनतन्त्र सास्कृतिक विकास के अपने स्तर मे न केवल पूर्व के पूजीवादी देशो से, बल्कि पश्चिम के कुछ विकसित पूजीवादी देशो

---

*ब्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी काग्रेस। राष्ट्रीय और औपनिवेशिक मामलो से सम्बन्धित आयोग की रिपोर्ट।

से भी आगे बढ गये हैं। विकास के जिस रास्ते को तय करने मे पश्चिमी यूरोप को सदिया लगी थी, उसे उन्होने तीन अथवा चार दशको म ही तय कर लिया है।

मगोलिया एक पिछडा हुआ, विदेशियो द्वारा अधिकृत एक अर्ध-औपनिवेशिक, प्रबल कबायली अवशेषो का सामती देश था। मगोलिया मे राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के फूट पडने के समय वहा न सर्वहारा वर्ग था और न राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग। जन क्रान्ति पार्टी के नेतृत्व मे किसान समुदाय ही वहा क्रान्ति की मुख्य प्रेरक शक्ति था। क्रान्ति का स्वरूप साम्राज्यवाद विरोधी, उपनिवेशवाद विरोधी होने के कारण बुद्धिजीवियो का एक भाग (मुख्यत लामा) और कुछ सामती सरदार राष्ट्रीय मोर्चे म शामिल हो गए।

क्रान्ति के प्रारम्भिक दौर मे, राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता के सघर्ष के दौरान वहा सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व नही था – उस समय मगोलिया सभी प्रगतिशील शक्तियो, विशेष रूप से मेहनतकशो का क्रान्तिकारी जनवादी राज्य था। वह सोवियत सघ के मजदूर वर्ग के साथ दृढ मैत्री के सूत्र मे आबद्ध था और इससे वह न केवल क्रमिक रूप से राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के कार्यभारो को पूरा करने, अर्थात साम्राज्यवाद पर अपनी राजनीतिक और आर्थिक निर्भरता को समाप्त करने तथा अपने आर्थिक एव सार्वजनिक जीवन से सामती और प्राक्-सामती सम्बन्धो के अवशेषो को दूर करने, बल्कि कई समाजवादी सुधारो को लागू करने मे भी सक्षम हो गया। मगोलिया ने राज्य द्वारा सचालित आधुनिक उद्योग खडा किया और कृषि सहकारिता को शुरू करके राजकीय फार्मों को कायम कर और निजी सम्पत्ति तथा शोषण को मिटाकर किसानो के हक मे जमीन की समस्या हल की। इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति समाजवादी क्रान्ति मे विकसित हो गई और इस सदी के पाचवे दशक मे मगोलिया ने समाजवाद का निर्माण शुरू कर दिया। इसमे विकासमान मजदूर वर्ग की भूमिका बहुत बडी थी, जो देश के औद्योगीकरण के साथ साथ निर्णायक सामाजिक शक्ति बनता जा रहा था।

अब मगोलिया ने निकट भविष्य मे अपने ही विशेषज्ञो से लैस पूर्णतया विकसित औद्योगिक-खेतिहर देश, उद्योग की आधुनिक शाखाओ और उच्च वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक स्तरो वाला देश बनने का कायभार अपने लिए

निर्धारित किया है। सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो की सहायता से पूजीवादी विकास की यातनाओं को भोगे बिना कुछ ही दशको मे मगोलिया ने अपने सदियो पुराने पिछडेपन को दूर कर दिया है।

सोवियत मध्य एशियाई जनतत्रो और मगोलिया के अनुभव से स्पष्ट सिद्ध होता है कि उपनिवेशवाद और शोषण के जुए से मुक्त हो जाने के बाद बन्धु देशो की सहायता से पहले के अविकसित राष्ट्र क्या उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। इससे एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के नवस्वतत्र राष्ट्रो को यह पता लग जाता है कि पूजीवादी विकास के कष्ट से बचने के लिए उन्हे कौनसा रास्ता अपनाना चाहिए। इससे साबित हो जाता है कि इन राष्ट्रो के लिए विकास का गैर-पूजीवादी पथ सच्ची स्वतत्रता और प्रगति का पथ है।

**गैर-पूजीवादी पथ** **गैर-पूजीवादी पथ उन देशो के लिए समाजवाद का पथ है, जो विकास की पूंजीवादी अवस्था मे नहीं पहुंचे हैं और अन्य देशो मे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना अथवा समाजवाद की विजय के कारण सामान्यतया पूजीवाद से पूर्णत: अथवा विकसित पूजीवाद की अवस्था से गुजरे बिना समाजवाद की ओर जाते हैं।**

समाजवाद की ओर सक्रमण के लिए सुनिश्चित भौतिक और सामाजिक पूर्वापेक्षाए, आर्थिक विकास का समुचित स्तर, मार्क्सवादी पार्टी द्वारा निर्देशित राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय मजदूर वर्ग का अस्तित्व आदि अपेक्षित है। सामान्यतया, ये पूर्वापेक्षाए सामाजिक विकास की पूजीवादी अवस्था मे परिपक्व होती है, और इसी लिए विकसित पूजीवादी देशो मे समाजवादी क्रान्ति की ओर सीधा सक्रमण पूर्णत सभव है। विकास के प्राक्-पूजीवादी अवस्था वाले देशो की स्थिति भिन्न है, जिनमे अधिकाश नवस्वतत्र राज्य शामिल है। अभी इन देशो मे समाजवाद की ओर सीधे सक्रमण के लिए भौतिक तथा सामाजिक परिस्थितिया नही पैदा हो पायी हैं और इन्ह पैदा करने के लिए कुछ समय अपेक्षित है। तैयारी का यह काल, जिसमे आमूल समाजवादी परिवर्तनो की दिशा मे प्रारम्भिक कदम उठये जाते हैं, विकास के गैर-पूजीवादी पथ के लिए अपरिहार्य है।

इस अवधि के दौरान घटनेवाली सामाजिक आर्थिक प्रक्रियाए (अर्थव्यवस्था का विकास और उसके कारण वर्ग-शक्तियो का मेहनतकश

लोगों के पक्ष में हो जाना ) कुछ हद तक पूजीवादी विकास की विशिष्टताओ की लाक्षणिक प्रक्रियाओ के समान हैं। परन्तु गैर पूजीवादी विकास के कारण ये प्रक्रियाए अत्यधिक शीघ्रता के साथ घटित होती है और इसस भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग उन कष्टो से बहुत हद तक बच जाते है, जिनका उन्हे पूजीवादी विकास के रास्ते पर सामना करना पडता है। पूजीवादी जनवादी सुधारो के अलावा समाजवादी सुधार भी हैं ( निजी पूजी तथा शोषण पर नियत्रण, उत्पादन के कुछ साधनो को सार्वजनिक नियत्रण और प्रबध के अन्तर्गत करना, आर्थिक नियाजन, आदि )।

निस्सदेह, गैर-पूजीवादी विकास के प्रारम्भिक दौर म पूजीवादी-जनवादी सुधारो की तुलना मे समाजवादी सुधारा का अनुपात और उनका प्रभाव तथा महत्त्व सर्वत्र समान नही, बल्कि आर्थिक एव सामाजिक विकास के स्तर और वर्ग शक्ति सतुलन पर निर्भर होता है। समाजवादी कदमो को लागू करना गैर पूजीवादी विकास का अपरिहार्य लक्षण है। ऐसा न होने पर देश केवल सामान्य पूजीवादी पथ से विकसित होता है।

समाजवाद के लिए भौतिक एव सामाजिक पूर्वापेक्षाओ के पैदा होने के बाद क्रान्ति सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रा मे निर्णायक समाजवादी परिवर्तन करते हुए **समाजवाद की ओर सीधे सक्रमण** की अवस्था मे प्रविष्ट होती है।

जितनी सक्रियता के साथ लोग क्रान्ति मे भाग लेते हैं, सामाजिक एव राजनीतिक जीवन मे जनवादी रूपान्तरण जितने गहरे होते हैं, मजदूर वर्ग की भूमिका जितनी तेजी से बढती है, किसान समुदाय के साथ उसकी मैत्री जितनी सुदृढ होती है और क्रान्ति के नेता जितना शीघ्र मेहनतकश लोगा के ध्येय को अपनाते तथा नये, समाजवादी समाज के समर्थक बनते हैं, उतनी ही शीघ्रता से यह नयी अवस्था अस्तित्व म आती है।

इस तथ्य पर जोर देना चाहिए कि विकास के गैर पूजीवादी पथ को अपनाना **केवल वर्तमान युग में,** मानवजाति के पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण के इस युग मे ही **सभव है,** जब समाजवाद की विश्व प्रणाली अस्तित्व मे आ चुकी है जिसकी निस्स्वार्थ और सर्वतोमुखी सहायता पर विकास का गैर पूजीवादी पथ अपनानेवाले देश भरोसा कर सकते हैं। लेनिन ने लिखा था ' सोवियत जनतत्रो के विजयी सर्वहारा वर्ग द्वारा पिछडे हुए देशों के जनसमुदाया को सहायता देने तथा उसके उन्हे समर्थन प्रदान करने की स्थिति मे हाने पर

ही ये देश विकास की अपनी वर्तमान अवस्था से उभरकर नयी अवस्था मे प्रविष्ट हो सकते हैं।"*

**नवस्वतन्त्र देशो द्वारा समाजवाद का वरण**

ज्यो-ज्यो राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति जोर पकडती जाती है, त्यो-त्यो विकास के पूजीवादी पथ का पोषक पूजीपति वर्ग सामाजिक प्रगति के लिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष का नेतृत्व करने मे अधिकाधिक असमर्थ होता जाता है। वास्तव मे, कुछ देशो मे वह राजनीतिक स्वतन्त्रता को कायम रखने मे भी असमर्थ सिद्ध हो चुका है और जहा तक सामाजिक-आर्थिक सुधारो का सम्बन्ध है, इस दिशा मे भी वह विफल हो गया है। एक शोषक वर्ग होने के कारण वह अपनी सम्पत्ति तथा अपने विशेषाधिकारो को खोने और क्रान्तिकारी जनता से भय खाता है। वह राष्ट्रीयकरण का विरोध करता है और कृषि समस्या को हल करने, अर्थव्यवस्था एव सार्वजनिक जीवन के औपनिवेशिक ढाचे को नष्ट करने अथवा व्यापक स्तर पर जनवाद को लागू करने के लिए निर्णायक कदम नही उठाता। पूजीपति वर्ग की इस नीति से जनता निराश हो जाती है, उसमे उसके प्रति अविश्वास की भावना पैदा होती है और वह न केवल विदेशी साम्राज्यवाद, बल्कि अपने पूजीपति वर्ग के खिलाफ भी दृढता के साथ सघर्ष करने के लिए बाध्य हो जाती है।

क्रान्तिकारी विकास और राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष की प्रक्रिया मे मजदूर वर्ग अनिवार्यत विकसित और सुसगठित होता है, किसान समुदाय भी अधिक सक्रिय होता है और साम्राज्यवाद के विरुद्ध सयुक्त सघर्ष मे सर्वहारा वर्ग के साथ अधिकाधिक सम्बन्धित होने लगता है। इसके फलस्वरूप वह सामाजिक शक्ति प्रादुर्भूत होती है, जो न केवल समाज के समाजवादी पुनर्गठन मे दिलचस्पी लेती है, बल्कि जो उसकी सिद्धि भी करती है।

साम्राज्यवाद द्वारा प्रतिक्रान्ति के निर्यात के प्रयासो और उसके आर्थिक तथा विचारधारात्मक प्रसार के कारण नवस्वाधीन देश और राष्ट्रीय-जनवादी

---

*व्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस, १९ जुलाई—७ अगस्त, १९२०। जातीय तथा औपनिवेशिक प्रश्नो से सम्बन्धित आयोग की रिपोर्ट, २६ जुलाई।

बुद्धिजीवियो की बातो से आये उनके नेता विकास के गैर-पूजीवादी पथ को अपनाने के लिए विवश हो जाते हैं। साम्राज्यवाद के आक्रमण को विफल करने की आवश्यकता इन देशो के नेताओ को अधिकाधिक आमूलवादी नीति अपनाने, जनता पर भरोसा करने और उसके हितो तथा उसकी आकाक्षाओ को ध्यान मे रखने के लिए मजबूर करती है।

जनता की इच्छा और समाजवाद तथा नये सुखद जीवन के लिए उसकी आकाक्षा को अभिव्यक्त करते हुए कुछ नवस्वतत्र देशो के नेता विकास के गैर-पूजीवादी पथ के पक्ष मे होने की घोषणा कर चुके हैं और उन्होंने इस दिशा मे समुचित कदम भी उठाये हैं।

पार्टी की २४वी काग्रेस मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि अफ्रीका और एशिया मे कई देश विकास के गैर-पूजीवादी रास्ते को, अर्थात् भविष्य मे समाजवादी समाज के निर्माण के रास्ते को अपना रहे हैं। इस समय कितने ही राज्य इस रास्ते को अपना रहे हैं और अधिकाधिक गहन सामाजिक परिवर्तनो को क्रियान्वित कर रहे हैं, जो सर्वसाधारण के हितो के अनुकूल हैं और जिनके फलस्वरूप राष्ट्रीय स्वाधीनता सुदृढ होती है।

राष्ट्रीयकरण द्वारा अर्थव्यवस्था मे राजकीय क्षेत्र की स्थापना की जा रही है और आर्थिक आयोजन लागू किया जा रहा है। विदेशी पूजी अर्थव्यवस्था से निकाली जा रही है, शोषण पर अकुश लगाया जा रहा है, स्थानीय पूजीपति वर्ग की आर्थिक स्थितियो की जडे खोखली की जा रही है और शोषक वर्गों को राजनीति पर प्रभाव डालने की सभावना से वचित किया जा रहा है। औद्योगीकरण के आधार पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जा रहा है, कृषि सुधार लागू किये जा रहे हैं तथा कृषि-सहकारिता को प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है, साम्राज्यवाद विरोधी स्वतत्र विदेश नीति का अनुसरण किया जा रहा है और समाजवादी देशो से दोस्ती तथा सहयोगपूर्ण सम्बन्ध कायम किये जा रहे हैं। भौतिक कल्याण तथा सस्कृति के स्तरो को ऊचा उठाने और शिक्षा के विकास तथा इंजीनियरो एव वैज्ञानिको के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, मुख्यत. उद्योग की स्थापना के दौरान समाजवाद के आधुनिक भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण होता है। इसके निर्माण के फलस्वरूप समाजवाद की स्थापना के लिए पूर्वापेक्षित सामाजिक

परिस्थितिया भी परिपक्व होती है उद्योग के विकास के साथ ही साथ मजदूर वर्ग का प्रादुर्भाव और विकास होता है, समाज मे उसकी भूमिका बढती जाती है और गैर सर्वहारा तबको, विशेष रूप से किसान समुदाय के साथ उसका सश्रय कायम तथा सुदृढ होता जाता है।

सर्वहारा वर्ग की भूमिका के महत्त्वपूर्ण होने का मतलब यह नही है कि गैर पूजीवादी विकास के पथ पर प्रगति की सभी अवस्थाओ मे वह सर्वत्र और सदैव समाज की पथ-प्रदर्शक शक्ति बना रहता है। चूकि अधिकाश विकासमान देशो मे सख्या, सगठन और विचारधारा की दृष्टियो से मजदूर वर्ग कमजोर है तथा राजनीतिक अर्थ मे केवल अभी सक्रिय होने लगा है, इसलिए विकास के गैर-पूजीवादी पथ पर विशेष रूप से प्रारम्भिक अवस्थाओ मे क्रान्तिकारी-जनवादी शक्तिया आन्दोलन का नेतृत्व कर सकती है।

हम कह चुके है कि इस बारे मे तेज विचारधारात्मक सघर्ष जारी है कि विकास के किस पथ को अपनाया जाये, किसी हद तक इस कारण कि समाजवाद और उसे कायम किये जाने के बारे मे विभिन्न वर्गों की अपनी-अपनी धारणाए है। कभी-कभी इस प्रकार की धारणाए वैज्ञानिक समाजवाद से बहुत दूर होती है और कभी-कभी पूजीपति वर्ग के देश को पूजीवाद की ओर अग्रसर करने के प्रयासो पर आवरण डालने के काम भी आती है। किन्तु, इसका यह मतलब नही कि मार्क्सवादी, कम्युनिस्ट, समाजवाद के बारे मे गैर-मार्क्सवादी अवधारणाओ को कतई अस्वीकार कर देते है। इनमे से कुछ विचार पूजीवाद तथा शोषण को समाप्त करने और सामूहिक स्वामित्व पर आधारित समाज के निर्माण की प्रगतिशील आकाक्षा के द्योतक है। कम्युनिस्ट विविध समाजवादी सिद्धान्तो की इस प्रगतिशील आकाक्षा तथा उपनिवेशवाद विरोधी अन्तर्य का समर्थन करते है। परन्तु समाजवाद की पोषक विविध सामाजिक शक्तिया मे वे अपने को सर्वथा सविलयित नही कर देते, वे प्रत्येक समाजवादी आन्दोलन मे वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त और व्यवहार को लागू करने की कोशिश करते है।

अपनी राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तिया के दौरान कुछ विकासमान देशा क नेताओ के समाजवादी विचारो मे काफी परिवर्त्तन हुए। जहा शुरू म वे वैज्ञानिक समाजवाद के तत्त्वो और काल्पनिक तथा धार्मिक विचारो के विचित्र मिश्रण थे, वहा अब वे धीरे धीरे वैज्ञानिक, मार्क्सवादी-लेनिनवादी

समाजवाद के अधिकाधिक निकट आते जा रहे हैं। मार्क्सवाद लेनिनवाद की ओर यह प्रगति राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के विकास की वस्तुगत अवस्थाओं के अनुरूप एक नियम नियन्त्रित प्रक्रिया है। वास्तविक जन क्रान्ति जिसका लक्ष्य देश की स्वतन्त्रता, समृद्धि, जन कल्याण और सुख है, मार्क्सवाद लेनिनवाद के पथप्रदर्शन मे ही विजयी हो सकती है।

निस्सन्देह, यह दावा करना कि सभी देशो तथा सभी परिस्थितियो मे क्रान्तिकारी जनवादी शक्तिया, विशेष रूप से राष्ट्रीय जनवादी बुद्धिजीविया का मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है बात को जरूरत से ज्यादा आसान बनाने के बराबर होगा। वास्तव मे यह सभावना मात्र है, जो किसी देश मे प्रगतिशील शक्तिया के पक्ष मे शक्ति-सतुलन के विकसित होने, क्रान्ति मे मजदूर वर्ग द्वारा अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने और क्रान्तिकारी जनवादी शक्तियो द्वारा दृढता के साथ जनता के हिता का समर्थन करने पर ही यथार्थ मे परिणत होती है।

इसके अलावा, वह प्रक्रिया जटिल, असगतिपूर्ण और क्रमबद्ध है। यह सोचना भोलापन होगा कि सत्तारूढ क्रान्तिकारी जनवाद की सबसे प्रगतिशील शक्तिया फौरन मार्क्सवाद लेनिनवाद को ग्रहण कर लेगी। वे शुरू मे कठिनाई, कभी-कभी विचलना तथा ढुलमुलपन के साथ मार्क्सवाद के अलग पहलुओ को आत्मसात् करती है। क्रान्तिकारी प्रक्रिया के, जिसके वस्तुगत तर्क ने क्रान्तिकारी जनवादी शक्तियो मे से कुछ को सत्तारूढ कर दिया है, विकसित और विस्तृत होने तथा इन क्रान्तिकारी जनवादिया के विचारा मे क्रान्ति के वस्तुगत विकास के समुचित रूप मे अभिव्यक्त होने पर ही इन कठिनाइया और ढुलमुलपन पर काबू पाया जा सकता है।

**गैर-पूजीवादी विकास मे सहायक परिस्थितिया**

इस समय आन्तरिक और बाह्य दोनो परिस्थितियो के फलस्वरूप गैर पूजीवादी पथ से प्रगति अपेक्षाकृत अधिक सुगम हो गई है। आन्तरिक परिस्थितिया इस प्रकार है

*नवस्वतन्त्र देशो की वस्तुगत आवश्यकताए*, विशेष रूप से आधुनिक विज्ञान एव तकनीक पर आधारित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता,

साम्राज्यवाद तथा आन्तरिक प्रतिक्रिया की स्थिति कमजोर होना और

पूजीवाद विरोधी प्रगतिशील शक्तियो, विशेष रूप से मार्क्सवादी पार्टियो के प्रभाव के बढने के साथ ही मजदूर वर्ग की स्थिति का सुदृढ होना,

किसान समुदाय के साथ मजदूर वर्ग के सश्रय का कायम तथा सुदृढ होना, मेहनतकश लोगो की बढी हुई राजनीतिक क्रियाशीलता और वर्ग तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास एव उनमे समाजवादी विचारो का प्रचार,

सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे जनवाद का, विशेष रूप से ट्रेड यूनियन आन्दोलन तथा अन्य जनवादी सगठनो का विकास,

आमूल सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनो को लागू करने अथवा राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता को सुनिश्चित करने मे भी पूजीपति वर्ग की असमर्थता,

नवस्वाधीन देशो के नेताओ द्वारा आमूल सुधारवादी स्थिति अपनाने, अर्थात्, वैज्ञानिक समाजवाद की ओर उनके आकर्षित होने की सभावना।

समाजवाद की ओर अग्रसर होने की बाह्य परिस्थितिया भी काफी अनुकूल है। उनमे निम्नाकित बाते शामिल है

अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की शक्ति मे तीव्र ह्रास और विश्व समाजवाद की विकासमान शक्ति, जो अब उपनिवेशवादियो की साजिशो को विफल बनाने मे सक्षम है,

आर्थिक विकास की दिशा मे समाजवादी प्रणाली की सफलताए और इनके फलस्वरूप लोगो के रहन सहन तथा सास्कृतिक स्तर मे सुधार,

समाजवादी निर्माण के प्रचुर अनुभव, विशेष रूप से पहले के पिछडे हुए देशो के गैर-पूजीवादी विकास सम्बन्धी अनुभव;

नवस्वतत्र देशो, विश्व समाजवादी प्रणाली और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट एव मजदूर आन्दोलन की बढती हुई एकता तथा साथ ही साम्राज्यवाद के विरुद्ध सयुक्त सघर्ष मे विकासमान देशो की एकता,

समाजवादी देशो द्वारा भूतपूर्व उत्पीडित राष्ट्रो को प्रदत्त नि स्वार्थ सर्वतोमुखी सहायता,

आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति, जिससे सामाजिक प्रगति काफी तीव्र हो सकती है।

इन अनुकूल परिस्थितियो के पैदा हो जाने का यह मतलब नहीं कि विकास के गैर-पूजीवादी पथ पर अग्रसर होना कोई सुगम है। इसके लिए देशभक्त शक्तिया से वृहत् प्रयास और वीरतापूर्ण सघर्ष अपेक्षित हैं।

# ७. विश्व समाजवादी प्रणाली—विकासमान देशों का मुख्य आधार

विकासमान देश समाजवादी देशो द्वारा सचित आर्थिक, राजनीतिक और सास्कृतिक विकास के प्रचुर अनुभव तथा साथ ही गैर-पूजीवादी विकास के अनुभव का उपयोग और साम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा राजनीतिक एव आर्थिक स्वाधीनता के लिए सघर्ष मे उनकी सर्वतोमुखी सहायता पर भरोसा कर सकते हैं।

लेनिन ने लिखा था: "हम मगोलो, ईरानियो, भारतीयो और मिस्रियो के साथ सम्बन्ध तथा मेलजोल कायम करने की पूरी कोशिश करेगे। हम ऐसा करना... मशीनों का इस्तेमाल करने मे उन्हे अग्रसर करने, श्रम को हलका करने, जनवाद और समाजवाद को अपनाने मे उन्हे सहायता प्रदान करना अपना फर्ज समझते हैं और यह **हमारे हित** मे है।"*

नवस्वतन्त्र देशो को समाजवादी राष्ट्रो से जो सहायता प्राप्त होती है, वह साम्राज्यवादी राज्यो द्वारा उन्हें दी जानेवाली मदद से बिलकुल भिन्न है। जहा साम्राज्यवादी राष्ट्र विकासमान देशो मे अपने प्रभुत्व को फिर से कायम करने, उसे बनाये रखने अथवा सुदृढ बनाने के लिए उन्हे सहायता प्रदान करते है, वही समाजवादी देश किसी भी फौजी अथवा राजनीतिक शर्त के बिना पूर्ण समानता और सहयोग के आधार पर उन्हे मदद देते हैं। समाजवादी देश भूतपूर्व उत्पीडित राष्ट्रो को राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने और सुदृढ बनाने, साम्राज्यवाद के आक्रामक प्रहारो का प्रतिरोध करने, अपने उद्योग खडे करने और जनता के सास्कृतिक स्तर को ऊचा उठाने, आदि के लिए सहायता प्रदान करते हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ५०वी सालगिरह सम्बन्धी थीसिस मे कहा गया है, "विश्व समाजवादी प्रणाली भूतपूर्व औपनिवेशिक तथा अर्ध-औपनिवेशिक विश्व की जनताओ के साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और नव-उपनिवेशवाद के विरुद्ध साहसपूर्ण सघर्ष का सक्रिय समर्थन करती है और उन्हे राजनीतिक

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा 'साम्राज्यवादी अर्थवाद'।

एव आर्थिक सहायता प्रदान करती है तथा आवश्यकतानुसार उनकी फौजो और प्रतिरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ बनाने मे भी मदद देती है। साम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा स्वतत्रता, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के लिए सघर्ष की सफलता की अनिवार्य शर्त है समाजवाद तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की शक्तियो की एकजुटता।"

सयुक्त राष्ट्र सघ ने औपनिवेशिक देशो तथा राष्ट्रो को स्वतत्रता प्रदान करने के घोषणापत्र को सोवियत सघ की पहलकदमी पर ही स्वीकार किया था। यह दस्तावेज उपनिवेशवाद के विरुद्ध सघर्ष मे महत्वपूर्ण योगदान है।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो ने डच उपनिवेशवादियो के पजे से पश्चिमी इरियन को मुक्त करने मे इन्डोनेशिया को सहायता प्रदान की। १६५६ मे उन्होंने मिस्र को साम्राज्यवादी आक्रमण को विफल करने के लिये मदद की और इस समय भी वे अरब देशो को उनके मुक्ति सघर्ष मे समर्थन प्रदान कर रहे है।

और यदि सोवियत सघ तथा सामान्यतया विश्व समाजवाद ने छोटे से देश क्यूबा को अपनी सक्रिय सहायता न प्रदान की होती, तो क्या वह अमरीकी साम्राज्यवाद के हमलो का प्रतिरोध कर पाता तथा समाजवादी जीवन का निर्माण करने मे सक्षम होता?

इस समय समाजवादी देश अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध वियतनामी जनता के वीरतापूर्ण सघर्ष मे उसे हर प्रकार की सहायता प्रदान कर रहे है।

**आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहायता**

विश्व समाजवादी प्रणाली विकासमान देशो को यथासभव सभी प्रकार की आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहायता प्रदान करती है। यह उन्हे आधुनिक उद्योग, अपनी कृषि तथा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रो का पुनर्गठन करने और इस प्रकार आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने मे सर्वतोमुखी मदद देती है।

सोवियत सघ ने तीस से अधिक अफ्रीकी-एशियाई देशो से आर्थिक और तकनीकी सहयोग सम्बन्धी समझौते किये है। इन समझौतो के अन्तर्गत उसने ६०० से अधिक परियोजनाओ के निर्माण मे उन्हे सहायता प्रदान करने का बीडा उठाया है।

सोवियत सहायता से निर्मित सबसे बडी परियोजना सयुक्त अरब

गणराज्य का अस्वान बाध है। इस बाध के बन जाने से १३० अरब घनमीटर से अधिक गुजाइश के विराट जलाशय का निर्माण हो चुका है, जिससे लाखो हेक्टर जमीन की सिचाई के लिए पर्याप्त पानी प्राप्त होता है। और इस समय निर्माणाधीन पनबिजलीघर से प्रति वर्ष १० अरब किलोवाट घटा बिजली पैदा होगी।

समाजवादी देश शिक्षा सस्थाओ, अस्पतालो, क्रीडागणो, छापेखानो, वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक सस्थानो और यहा तक कि परमाणविक रिएक्टरो के निर्माण मे भी सहायता प्रदान करते है। पिछले कुछ वर्षो मे सोवियत सहायता से विकासमान देशो मे २२० से अधिक उद्यमो का निर्माण पूरा हो चुका है, जिनमे एक भारत का भिलाई इस्पात कारखाना भी है।

विकासमान देशो मे अन्य समाजवादी देशो की सहायता से १ हजार अन्य औद्योगिक परियोजनाओ का निर्माण हो रहा है।

नवस्वाधीन देशो के राष्ट्रीय सगठन, सस्थाए और मेहनतकश लोग खुद इन सभी औद्योगिक तथा अन्य परियोजनाओ के निर्माण मे सक्रिय भाग लेते हैं। फलत , निर्माण तथा आधुनिक उत्पादन के प्रबन्ध मे वे प्रचुर अनुभव सचित करते है।

समाजवादी देश केवल परियोजनाओ के निर्माण मे ही सहायता नही प्रदान करते, बल्कि विकासमान देशो को बहुत ही कम ब्याज पर ऋण प्रदान कर निर्माण कार्यों के लिए वित्तीय मदद भी देते हैं।

समाजवादी देश आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सास्कृतिक क्षेत्रो मे अपने योग्य राष्ट्रीय विशेषज्ञो को प्रशिक्षित करने मे भी विकासमान देशो को बहुमूल्य सहायता प्रदान करते हैं। समाजवादी देशो की सहायता से विकासमान देशो मे औद्योगिक तथा अन्य परियोजनाओ के निर्माण के समय इन विशेषज्ञो को प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अलावा प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना मे भी मदद दी जाती है। केवल सोवियत विशेषज्ञो ने ही १ लाख २० हजार से अधिक तकनीशियनो तथा कुशल मजदूरो को प्रशिक्षित करने मे सहायता प्रदान की है।

विकासमान देशो के हजारो इजीनियर, तकनीशियन, वैज्ञानिक, अध्यापक, डाक्टर, सास्कृतिक एव कला कर्मी तथा साथ ही कुशल औद्योगिक और खेत मजदूर सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो मे प्रशिक्षण प्राप्त करते है। केवल सोवियत शिक्षा सस्थाओ मे ही ८० एशियाई, अफ्रीकी

13*

और लैटिन अमरीकी देशो के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है। मास्को स्थित पैट्रिस लुमुम्बा विश्वविद्यालय सारी दुनिया मे विख्यात और लोकप्रिय है। अन्य समाजवादी देशो मे भी इसी प्रकार की शिक्षा सस्थाए हैं–मिसाल के लिए प्राग (चेकोस्लोवाकिया) का १७ नवम्बर विश्वविद्यालय और लाइप्जिग (जर्मन जनवादी जनतत्र) का कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय।

समाजवादी देशो तथा विकासमान देशो के बीच पारस्परिक लाभ और विश्वास के सिद्धान्तो पर आधारित व्यापारिक सम्बन्ध भी काफी व्यापक हो गये हैं। नवोदित प्रभुसत्तासम्पन्न देशो का समाजवादी देशो के साथ व्यापार उनके लिए बहुत लाभजनक है, क्योकि इसमे स्वर्ण तथा मुद्रा-निधि को खर्च करने की आवश्यकता नही पडती और इसके साथ कोई भेदमूलक राजनीतिक शर्त भी नही है।

समाजवादी देशो द्वारा नवस्वतत्र राज्यो को दी जानेवाली इस सभी प्रकार की सहायता से साम्राज्यवादी राष्ट्र इन देशो के साथ अपने सम्बन्धो मे अधिक विनम्र होने को विवश हो गये है। यह बात सर्वथा समझ मे आने योग्य है, क्योकि यदि वे किसी देश को उसकी शर्तो पर सहायता देने से इनकार कर दें, तो वह समाजवादी देशो से अनुरोध कर सकता है और उसे यह अच्छी तरह ज्ञात है कि समाजवादी देशो से उसे सदैव सहानुभूति एव समर्थन प्राप्त होगा। उदाहरणार्थ, क्या अस्वान बाध के निर्माण मे यही बात नही हुई? वर्षों तक मिस्रियो ने शर्तो के प्रश्न पर सयुक्त राज्य अमरीका से समझौता वार्ता की, परन्तु कोई समझौता न हो सका। तब उन्होंने सोवियत सघ से अनुरोध किया और उसने तत्काल उन्हें सहायता प्रदान की। मिस्री और सोवियत लोगो ने सयुक्त प्रयासो से सफलता के साथ अस्वान बाध का निर्माण कर लिया है। १९७० मे जल इजीनियरी परियोजना के चालू हो जाने से प्यासी बजर जमीन को पानी प्राप्त होने लगा और उद्यमो, शहरो तथा गावो को बिजली मिलने लगी।

अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमरीका के राष्ट्र सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो द्वारा प्रदत्त इस मैत्रीपूर्ण सहायता को बहुत ही मूल्यवान समझते हैं और जिस ध्येय के लिए वे सघर्षरत है, उसकी सफलता के लिए इस मदद को एक गारटी मानते है।

**विश्व समाजवाद का क्रान्तिकारी प्रभाव**

नवस्वाधीन राष्ट्रो को अपनी अर्थव्यवस्था के विकास मे सहायता प्रदान कर समाजवादी देश नये समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करने मे अपना योगदान प्रस्तुत कर रहे हैं। नवस्वाधीन देशो मे आधुनिक अर्थव्यवस्था के निर्माण के फलस्वरूप वहा वर्ग शक्तियो का समाजवाद के पक्ष मे पुनर्गठन हो रहा है।

समाजवादी देशो के आदर्श से, जहा मजदूर वर्ग के बढते हुए प्रभाव के साथ कृषि समस्या किसानो के हक मे हल हो चुकी है, किसान समुदाय तथा मेहनतकश लोगो के अन्य गैर-सर्वहारा तबको मे क्रान्तिकारी चेतना पैदा होती है, वे सक्रिय राजनीतिक शक्ति बन जाते हैं और मजदूर वर्ग के साथ उनका सश्रय सुदृढ होता है।

क्रान्ति और राजकीय प्रशासन मे मेहनतकश लोगो, मुख्यत मजदूर वर्ग द्वारा अदा की जानेवाली भूमिका के अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाने से राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग मे वामपक्षीय प्रवृत्ति पैदा होती है, जो साम्राज्यवाद से साठगाठ करने से रोकती है तथा उसे जनता के हितो के अनुरूप आमूल सुधारवादी कदम उठाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

अन्त मे, विश्व समाजवाद की सहायता से आर्थिक विकास मे उपलब्ध सफलता और मेहनतकश लोगा, मजदूर वर्ग के बढते हुए राजनीतिक कार्यकलाप से कुछ नवस्वाधीन देशो मे सत्तारूढ क्रान्तिकारी जनवादियो के विचारो मे आमूल परिवर्तन होता है और इसके फलस्वरूप वे वैज्ञानिक समाजवाद को राष्ट्रीय पुनरुद्धार, स्वतत्रता तथा समृद्धि के एकमात्र मार्ग के रूप मे अधिकाधिक स्वीकार करने लगते हैं।

और लैटिन अमरीकी देशो के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त मास्को स्थित पैट्रिस लुमुम्बा विश्वविद्यालय सारी दुनिया मे लोकप्रिय है। अन्य समाजवादी देशो मे भी इसी प्रकार की है—मिसाल के लिए प्राग (चेकोस्लोवाकिया) का विश्वविद्यालय और लाइप्जिग (जर्मन जनवादी जनतंत्र) विश्वविद्यालय।

समाजवादी देशो तथा विकासमान देशो के बीच पा विश्वास के सिद्धान्तो पर आधारित व्यापारिक सम्बन्ध हो गये हैं। नवोदित प्रभुसत्तासम्पन्न देशो का समा व्यापार उनके लिए बहुत लाभजनक है, क्योंकि निधि को खर्च करने की आवश्यकता नही पडती औ भेदमूलक राजनीतिक शर्त भी नही है।

समाजवादी देशो द्वारा नवस्वतंत्र राज्यो को प्रकार की सहायता से साम्राज्यवादी राष्ट्र इन देशो मे अधिक विनम्र होने को विवश हो गये है। य आने योग्य है, क्योकि यदि वे किसी देश को देने से इनकार कर दें, तो वह समाजवादी दे है और उसे यह अच्छी तरह ज्ञात है कि समा सहानुभूति एव समर्थन प्राप्त होगा। उदाहरण निर्माण मे यही बात नही हुई? वर्षों तक सयुक्त राज्य अमरीका से समझौता वार्ता की, हो सका। तब उन्होने सोवियत सघ से अनुरो उन्हे सहायता प्रदान की। मिस्री और सोवियं सफलता के साथ अस्वान बाध का निर्माण इजीनियरी परियोजना के चालू हो जाने से प्राप्त होने लगा और उद्यमो, शहरो तथ लगी।

अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमरी अन्य समाजवादी देशो द्वारा प्रदत्त इस मूल्यवान समझते है और जिस ध्येय के लि के लिए इस मदद को एक गारटी मानने

अपनी बेहूदी नीतियों के फलस्वरूप जनता को जिन अन्य आपदाओ तथा विभीपिकाओं का सामना करना पडता है, उनके दायित्व से मुक्त करने की कोशिश करते थे और आज भी ऐसा ही करते है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने ही युद्ध के वास्तविक कारणों और उनके वास्तविक स्वरूप को प्रकट किया। युद्ध निश्चित सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों द्वारा उत्पन्न एक ऐतिहासिक, अस्थायी परिघटना है। आदिम समाज मे युद्ध नही होते थे, जब वर्ग अथवा राज्य नहीं थे और उत्पादन विकास के इतने निम्न-स्तर पर था कि निजी सम्पत्ति हथियाने की कोई सम्भावना नही थी। उत्पादन के विकास के फलस्वरूप निजी स्वामित्व और वर्ग अस्तित्व मे आये। **युद्ध वर्ग-विरोधपूर्ण समाज के स्वरूप तथा उसके आर्थिक आधार – निजी स्वामित्व और उसमें अन्तर्निहित असमाधेय अन्तर्विरोधों के कारण होते हैं।** लेनिन ने लिखा था: "युद्ध निजी स्वामित्व के आधार का विरोधी नही है, बल्कि उस आधार का प्रत्यक्ष तथा अनिवार्य परिणाम है।"*

केवल वर्ग-विरोधपूर्ण समाज, शोपक वर्गो के हितो के कारण युद्ध होते हैं। **युद्ध सत्तारूढ़ वर्गों की नीतियों का सिलसिला मात्र हैं।** शोपक मेहनतकशो पर जुल्म ढाते हैं और ऐसा करने मे वे बहुधा शस्त्र-बल का प्रयोग करते है। अधिकाधिक मुनाफा कमाने की भावना से वे दूसरे देशों, विशेष रूप से पिछडे हुए देशो के लोगो पर अपना प्रभुत्त्व कायम करते हैं, उन्हे लूटते तथा गुलाम बनाते हैं और एक दूसरे के विरुद्ध सतत युद्ध करते हैं।

स्विट्ज़रलैण्ड के वैज्ञानिक जान जाक बावेल ने इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर की सहायता से हिसाब लगाया है कि पिछले ५,५५६ वर्षों मे १४,५१३ युद्ध हो चुके हैं और दुनिया की वर्तमान आबादी से अधिक – ३ अरब ६४ करोड़ लोग इन युद्धो की भेंट चढ चुके हैं।

मानवजाति के विकास के साथ-साथ युद्ध के साधन अधिकाधिक भीपण तथा साघातिक होते गए और नरसहार एव भौतिक अर्थों मे युद्ध महगे होते गये। प्रथम विश्वयुद्ध चार साल चला और एक करोड लोग इसके शिकार हुए। दूसरा विश्वयुद्ध इससे अधिक समय तक चला और उसमे

---

* ब्ला० इ० लेनिन, 'यूरोप के सयुक्त राज्य का नारा'।

# विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व

हम पिछले अध्यायों मे साबित कर चुके है कि आधुनिक युग मे समाजवाद के लिये क्रान्तिकारी संघर्ष सामाजिक प्रगति और औपनिवेशिक शासन से मुक्ति सम्बन्धी विविध जनवादी आन्दोलनो से अविच्छिन्न रूप मे सम्बद्ध है। इनमे से एक सबसे बडा और सार्वभौमिक आन्दोलन है नये **विश्वयुद्ध के ख़तरे के विरुद्ध संघर्ष, शान्ति को क़ायम रखने और सुदृढ बनाने का संघर्ष।**

शान्ति का सघर्ष लेनिन द्वारा निरूपित विभिन्न सामाजिक प्रणालियो वाले देशो के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त के लागू किये जाने का तकाजा करता है। **या तो विश्वयुद्ध या शान्तिपूर्ण** सह-अस्तित्व–इनके अतिरिक्त कोई तीसरा विकल्प नही है। इस प्रकार मानवजाति के इतिहास की वर्तमान अवस्था मे शान्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सवाल है। परन्तु इसके महत्त्व को ठीक से समझने के लिए हमे पहले संक्षेप मे युद्ध के बारे मे मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की विवेचना करनी होगी।

## १. युद्धों के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण

**युद्ध के कारण**

शोषक वर्गो के वैचारिक सदियो से लोगो को यह समझाने का प्रयास करते रहे है कि युद्ध मानव स्वभाव के कारण ही होते है, कि सशस्त्र सघर्ष करना सहज मानव प्रवृत्ति है। यह विचार प्रस्तुत करके शोषक अपने को खूनी युद्धो और

अपनी बेहूदी नीतियो के फलस्वरूप जनता को जिन अन्य आपदाओ तथा विभीषिकाओ का सामना करना पडता है, उनके दायित्व से मुक्त करने की कोशिश करते थे और आज भी ऐसा ही करते हैं।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने ही युद्ध के वास्तविक कारणो और उनके वास्तविक स्वरूप को प्रकट किया। युद्ध निश्चित सामाजिक आर्थिक परिस्थितियो द्वारा उत्पन्न एक ऐतिहासिक, अस्थायी परिघटना है। आदिम समाज मे युद्ध नही होते थे, जब वर्ग अथवा राज्य नही थे और उत्पादन विकास के इतने निम्न-स्तर पर था कि निजी सम्पत्ति हथियाने की कोई सम्भावना नही थी। उत्पादन के विकास के फलस्वरूप निजी स्वामित्व और वर्ग अस्तित्व मे आये। **युद्ध वर्ग-विरोधपूर्ण समाज के स्वरूप तथा उसके आर्थिक आधार—निजी स्वामित्व और उसमे अन्तर्निहित असमाधेय अन्तर्विरोधों के कारण होते हैं।** लेनिन ने लिखा था "युद्ध निजी स्वामित्व के आधार का विरोधी नही है, बल्कि उस आधार का प्रत्यक्ष तथा अनिवार्य परिणाम है।"*

केवल वर्ग-विरोधपूर्ण समाज, शोषक वर्गों के हितो के कारण युद्ध होते हैं। **युद्ध सत्तारूढ़ वर्गों की नीतियो का सिलसिला मात्र हैं।** शोषक मेहनतकशो पर जुल्म ढाते हैं और ऐसा करने म वे बहुधा शस्त्र-बल का प्रयोग करते हैं। अधिकाधिक मुनाफा कमाने की भावना से वे दूसरे देशो, विशेष रूप से पिछडे हुए देशो के लोगो पर अपना प्रभुत्व कायम करते हैं, उन्हे लूटते तथा गुलाम बनाते हैं और एक दूसरे के विरुद्ध सतत युद्ध करते हैं।

स्विट्जरलैण्ड के वैज्ञानिक जान जाक बाबेल ने इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर की सहायता से हिसाब लगाया है कि पिछले ५,५५६ वर्षों मे १४,५१३ युद्ध हो चुके हैं और दुनिया की वर्तमान आबादी से अधिक—३ अरब ६४ करोड लोग इन युद्धो की भेंट चढ़ चुके हैं।

मानवजाति के विकास के साथ-साथ युद्ध के साधन अधिकाधिक भीषण तथा संहारक होते गए और नरसंहार एव भौतिक क्षतियों म युद्ध महगे होते गये। प्रथम विश्वयुद्ध चार साल चला और एक करोड लोग इसके शिकार हुए। दूसरा विश्वयुद्ध इससे अधिक समय तक चला और उसमे

* व्ला० इ० लेनिन, 'यूरोप मे संयुक्त राज्य का नारा'।

चार करोड़ लोग मौत के घाट उतरे। इन दो युद्धों में जो बर्बादी हुई तथा अन्य भौतिक क्षति पहुंची, उसका कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता। और निस्सन्देह, यदि विश्व नाभिकीय युद्ध को न रोका गया, तो उसका परिणाम तो और भी अधिक भयावह होगा।

**न्यायपूर्ण तथा अन्यायपूर्ण युद्ध**

युद्धों का स्वरूप वर्गीय होता है। परन्तु विभिन्न वर्गों की सामाजिक स्थितियों में अन्तर होने के कारण युद्धों के स्वरूप, उनके लक्ष्य और ठोस उद्देश्यों में भी अन्तर होता है।

युद्ध न्यायपूर्ण तथा क्रान्तिकारी और अन्यायपूर्ण एवं लुटेरे दोनों प्रकार के होते हैं।

राष्ट्रों द्वारा आत्मरक्षा में किये जानेवाले युद्ध, समाजवादी क्रान्ति के दौरान शोषकों के हथियार उठा लेने पर उनके विरुद्ध मजदूरों द्वारा किये जानेवाले युद्ध और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध न्यायपूर्ण युद्ध हैं। समाजवाद के प्रादुर्भाव के साथ एक अन्य प्रकार का युद्ध भी न्यायपूर्ण युद्ध हो गया है—समाजवादी राज्यों, विश्व समाजवादी प्रणाली की रक्षा के लिए युद्ध।

न्यायपूर्ण युद्धों का स्वरूप प्रगतिशील और क्रान्तिकारी होता है। उनसे सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहन मिलता है, क्योंकि वे कालातीत सामाजिक प्रणालियों, शोषण तथा औपनिवेशिक उत्पीडन के विरुद्ध किये जाते हैं और उनसे नयी, प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में सहायता मिलती है।

सोवियत जनता के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध, सभी शातिप्रेमी राष्ट्रों के नाजीवाद विरोधी युद्ध और हाल के राष्ट्रीय मुक्ति युद्धों से सामाजिक प्रगति को बढावा मिला। इसी कारण सामाजिक प्रगति के सबसे उत्कट पोषक कम्युनिस्ट सदैव न्यायपूर्ण, क्रान्तिकारी युद्धों का समर्थन करते हैं। कम्युनिस्ट साम्राज्यवादी अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध वियतनामी जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष का और इजराइल तथा उसके साम्राज्यवादी समर्थकों की आक्रामक कार्रवाइयों के खिलाफ अरब राष्ट्रों के न्यायपूर्ण संघर्ष का हर प्रकार से समर्थन कर रहे हैं।

समाजवादी देशों के विरुद्ध युद्ध, मेहनतकश जनता और क्रान्तिकारी तथा जनवादी आन्दोलनों के विरुद्ध शोषकों के युद्ध, आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए देशों के लोगों को गुलाम बनाने के लिए साम्राज्यवादियों के औपनिवेशिक

युद्ध और दुनिया मे अपना आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव बढाने के उद्देश्य से खुद शोषको के बीच होनेवाले युद्ध अन्यायपूर्ण युद्ध होते है।

अन्यायपूर्ण युद्ध प्रतिक्रियावादी होते है। शोषक वर्गो की प्रतिक्रियावादी नीतियो का सिलसिला होने के कारण वे सामाजिक विकास की अपेक्षाओ के प्रतिकूल होते है और सामाजिक प्रगति मे अवरोध खडा करते है। इतिहास के रगमच से विलुप्त होते प्रतिक्रियावादी वर्ग हर जर्जर तथा कालातीत चीज़ को बनाये रखने तथा सामाजिक एव राष्ट्रीय उत्पीडन को जारी रखने और तीव्र बनाने के उद्देश्य से हर नूतन तथा क्रान्तिकारी चीज़ के विरुद्ध अनुचित युद्ध करते है। प्रतिक्रियावादी, अन्यायपूर्ण युद्धो मे हम १९१८-१९२० मे नवोदित सोवियत जनतत्र के विरुद्ध १४ साम्राज्यवादी राष्ट्रो के युद्ध और आज भी साम्राज्यवादियो द्वारा किये जानेवाले अनेक औपनिवेशिक युद्धो का उल्लेख कर सकते है।

कम्युनिस्ट अन्यायपूर्ण, लुटेरू युद्धो के सख्त विरोधी है। लुटेरू युद्धो के विरुद्ध सघर्ष को वे **सामाजिक सघर्ष के साथ, शोषण के विरुद्ध सघर्ष के साथ समाजवाद की विजय के लिए सघर्ष के साथ** सम्बद्ध करते है। कम्युनिस्टो को पक्का विश्वास है कि समाजवाद की स्थापना से ही मानवजाति सदा के लिए युद्ध की विभीषिका से मुक्त हो सकेगी और नरसहार तथा मानव के श्रम और प्रतिभा से सर्जित विपुल भौतिक निधियो का विनाश समाप्त हो सकेगा। मार्क्स और एगेल्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' मे लिखा था कि राष्ट्रो के बीच वैर का अत तभी हो सकेगा जब कि वर्गो के बीच विरोधो का अन्त हो जायेगा। पुराने, पूजीवादी समाज और उसकी राजनीतिक विवेकशून्यता के स्थान पर एक नया समाज अस्तित्व मे आयेगा, "जिसका अन्तर्राष्ट्रीय नियम होगा शान्ति, क्योकि उसका राष्ट्रीय नियामक सर्वत्र एक ही होगा – श्रम।"*

वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तको की यह भविष्यवाणी सच साबित हो गई है। शान्ति और शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति दुनिया मे मेहनतकश जनता के प्रथम राज्य – सोवियत सघ – और उसके बाद विश्व समाजवादी प्रणाली के निर्माण के साथ अन्य समाजवादी देशो की राजकीय

---

* कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ की जनरल कौसिल युद्ध के बारे मे।

नीति बन गई है। अब हम विभिन्न सामाजिक प्रणालियोवाले देशो के बीच शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति के स्वरूप के बारे मे विस्तार के साथ विचार करेगे।

## २ शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति

**लेनिन का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त**

विभिन्न सामाजिक प्रणालियोवाले देशो के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को लेनिन ने ही निरूपित तथा प्रमाणित किया था। अक्तूबर क्रान्ति के दूसरे ही दिन सोवियतो की द्वितीय अखिल रूसी कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा था "हम लूट और हिंसा सम्बन्धी सभी धाराओ को अस्वीकार करते है, परन्तु हम दोस्ताना सम्बन्धो और आर्थिक समझौतो से सम्बन्धित धाराओ का स्वागत करेगे, हम इन्हे अस्वीकार नही कर सकते।" *

लेनिन को पक्का विश्वास था कि देर या सबेर समाजवाद सारी दुनिया मे विजयी होगा। परन्तु उनका कहना था कि सभी देशो मे एकसाथ इसकी विजय नही हो सकती। अपने आर्थिक स्तर, वर्ग संघर्ष की तीव्रता, सर्वहारा वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग की शक्तियो के सतुलन और अन्य परिस्थितियो के अनुसार कुछ देश अन्य राष्ट्रो के पहले समाजवाद को अपना लेगे। लेनिन इस निष्कर्ष पर पहुचे थे कि कुछ ऐतिहासिक काल तक समाजवादी तथा पूंजीवादी देश साथ साथ कायम रहेगे। वह शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के उत्कट समर्थक थे और सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार ने इस सिद्धान्त को अपनी विदेश नीति का आधार बना लिया है, जिसका मुख्य लक्ष्य सोवियत सघ मे कम्युनिस्ट निर्माण तथा विश्व समाजवादी प्रणाली के विकास के लिए शान्तिपूर्ण परिस्थितियो को सुनिश्चित बनाना और सभी शान्तिप्रेमी राष्ट्रो के साथ मिलकर मानवजाति को विनाशकारी नये विश्वयुद्ध के खतरे से मुक्त करना है।

---

* व्ला० इ० लेनिन, २६ अक्तूबर (८ नवम्बर), १९१७ को मजदूरो तथा सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस मे शान्ति के बारे मे रिपोर्ट पर उपसंहारी भाषण।

**समाजवादी और पूंजीवादी देशो का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व मानव समाज के विकास की वस्तुगत अनिवार्यता है।** इस समय जब भीषण विनाशकारी हथियार तथा दुनिया के किसी भी भाग म उन्ह पहुचाने क साधन मौजूद हैं, जब नये विश्वयुद्ध से भयानक क्षति और महाविनाश होगा, तो ऐसे समय स्वाभाविक रूप से मानवजाति के सम्मुख युद्ध और शान्ति का प्रश्न एक अत्यत महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। तापनाभिकीय युद्ध को रोकना सभी शान्तिप्रिय राष्ट्रो का मुख्य कार्यभार है।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मतलब है अन्तर्राष्ट्रीय विवादो को हल करने के साधन के रूप मे युद्ध का परित्याग और समझौता वार्ता द्वारा उनका समाधान, समानता, पारस्परिक समझ तथा देशो के बीच विश्वास और एक दूसरे के हितो का ध्यान, दूसरे देशो के आन्तरिक मामलो म अहस्तक्षेप और सभी देशो के अपनी सभी समस्याओ को खुद हल करने के अधिकार की स्वीकृति, सभी राष्ट्रो की प्रभुसत्ता तथा प्रादेशिक अखण्डता का सम्यक् सम्मान और पूर्ण समानता एव पारस्परिक लाभ के आधार पर आर्थिक तथा सास्कृतिक सहयोग को प्रोत्साहन। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सभी मार्क्सवादी पार्टिया इन भव्य कार्यभारो की ओर बहुत ध्यान देती हैं तथा इस दिशा में बहुत प्रयास करती हैं।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति आज के सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियो के सयत, वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है। लेनिन कहते थे कि किसी भी विरोधी सरकार अथवा वर्ग की इच्छाओ या निर्णयो की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध अधिक प्रबल होते हैं। वे ही विरोधी सरकारो अथवा वर्गों को समाजवादी देशो के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध कायम करने के लिए विवश करते हैं। जहा तक समाजवाद का निर्माण करनेवाले राष्ट्रो का सबध है, उनके लिये शाति अत्यावश्यक है। समाजवादी समाज मे युद्ध का आर्थिक आधार—निजी स्वामित्व—समाप्त कर दिया गया है और युद्ध तथा दूसरे लोगो एव देशो को लूटने और उन्ह गुलाम बनाने मे दिलचस्पी रखनेवाली सामाजिक शक्तिया उसम नही हैं। सृजन समाजवाद का ध्येय है और विनाशकारी युद्धो के विरुद्ध, शान्ति के लिए सघर्ष किये बिना सृजन करना असभव है। इसी कारण समाजवाद और शान्ति अविभाज्य हैं। शान्ति के लिए सघर्ष समाजवाद के लिये सघर्ष है और

नीति बन गई है। अब हम विभिन्न सामाजिक प्रणालियोंवाले देशों के बीच शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति के स्वरूप के बारे में विस्तार के साथ विचार करेंगे।

## २ शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति

**लेनिन का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त**

विभिन्न सामाजिक प्रणालियावाले देशों के शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्त को लेनिन ने ही निरूपित तथा प्रमाणित किया था। अक्तूबर क्रान्ति के दूसरे ही दिन सोवियतों की द्वितीय अखिल रूसी कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था "हम लूट और हिंसा सम्बन्धी सभी धाराओं को अस्वीकार करते हैं, परन्तु हम दोस्ताना सम्बन्धों और आर्थिक समझौतों से सम्बन्धित धाराओं का स्वागत करेंगे, हम इन्हें अस्वीकार नहीं कर सकते।" *

लेनिन को पक्का विश्वास था कि देर या सवेर समाजवाद सारी दुनिया में विजयी होगा। परन्तु उनका कहना था कि सभी देशों में एकसाथ इसकी विजय नहीं हो सकती। अपने आर्थिक स्तर, वर्ग संघर्ष की तीव्रता, सर्वहारा वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग की शक्तियों के संतुलन और अन्य परिस्थितियों के अनुसार कुछ देश अन्य राष्ट्रों के पहले समाजवाद को अपना लेंगे। लेनिन इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि कुछ ऐतिहासिक काल तक समाजवादी तथा पूंजीवादी देश साथ-साथ कायम रहेंगे। वह शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के उत्कट समर्थक थे और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार ने इस सिद्धान्त को अपनी विदेश नीति का आधार बना लिया है, जिसका मुख्य लक्ष्य सोवियत संघ में कम्युनिस्ट निर्माण तथा विश्व समाजवादी प्रणाली के विकास के लिए शान्तिपूर्ण परिस्थितियों को सुनिश्चित बनाना और सभी शान्तिप्रेमी राष्ट्रों के साथ मिलकर मानवजाति को विनाशकारी नये विश्वयुद्ध के खतरे से मुक्त करना है।

---

* व्ला० इ० लेनिन, २६ अक्तूबर (८ नवम्बर), १९१७ को मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में शान्ति के बारे में रिपोर्ट पर उपसंहारी भाषण।

समाजवादी और पूंजीवादी देशो का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व मानव समाज के विकास की वस्तुगत अनिवार्यता है। इस समय, जब भीषण विनाशकारी हथियार तथा दुनिया के किसी भी भाग मे उन्ह पहुचाने के साधन मौजूद हैं, जब नये विश्वयुद्ध से भयानक क्षति और महाविनाश होगा, तो ऐसे समय स्वाभाविक रूप से मानवजाति के सम्मुख युद्ध और शान्ति का प्रश्न एक अत्यत महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। तापनाभिकीय युद्ध को रोकना सभी शान्तिप्रिय राष्ट्रो का मुख्य कार्यभार है।

शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व का मतलब है अन्तर्राष्ट्रीय विवादो को हल करने के साधन के रूप मे युद्ध का परित्याग और समझौता वार्ता द्वारा उनका समाधान, समानता, पारस्परिक समझ तथा देशो के बीच विश्वास और एक दूसरे के हितो का ध्यान, दूसरे देशो के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप और सभी देशो के अपनी सभी समस्याओ को खुद हल करने के अधिकार की स्वीकृति, सभी राष्ट्रो की प्रभुसत्ता तथा प्रादेशिक अखण्डता का सम्यक् सम्मान और पूर्ण समानता एव पारस्परिक लाभ के आधार पर आर्थिक तथा सास्कृतिक सहयोग को प्रोत्साहन। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सभी मार्क्सवादी पार्टिया इन भव्य कार्यभारो की ओर बहुत ध्यान देती हैं तथा इस दिशा मे बहुत प्रयास करती है।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति आज के सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियो के सयत, वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है। लेनिन कहते थे कि किसी भी विरोधी सरकार अथवा वर्ग की इच्छाओ या निर्णयो की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध अधिक प्रबल होते हैं। वे ही विरोधी सरकारो अथवा वर्गो को समाजवादी देशो के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध कायम करने के लिए विवश करते हैं। जहा तक समाजवाद का निर्माण करनेवाले राष्ट्रो का सबध है, उनके लिये शाति अत्यावश्यक है। समाजवादी समाज मे युद्ध का आर्थिक आधार—निजी स्वामित्व—समाप्त कर दिया गया है और युद्ध तथा दूसरे लोगो एव देशो को लूटने और उन्हे गुलाम बनाने म दिलचस्पी रखनेवाली सामाजिक शक्तिया उसमे नही हैं। सृजन समाजवाद का ध्येय है और विनाशकारी युद्धो के विरुद्ध, शान्ति के लिए सघर्ष किये बिना सृजन करना असभव है। इसी कारण समाजवाद और शान्ति अविभाज्य है। शान्ति के लिए सघर्ष समाजवाद के लिये सघर्ष है और

इसी प्रकार समाजवादी व्यवस्था की सफलताओ से शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के ध्येय को प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के अनुसरण मे मार्क्सवादी पार्टिया इस तथ्य को दृष्टि मे रखकर चलती हैं कि इस समय दुनिया मे शान्ति को कायम रखने तथा सुदृढ बनाने मे सक्षम प्रभावकारी शक्तिया विद्यमान है और ये शक्तिया विकसित होती जा रही हैं।

ये शक्तिया निम्नांकित हैं

एक—**विश्व समाजवादी प्रणाली**, जिसकी आर्थिक तथा फौजी शक्ति सतत सुदृढ होती जा रही है और जो दुनिया की सभी शान्तिप्रेमी शक्तियो का स्वाभाविक आकर्षण केन्द्र हो गई है।

दो—**शान्तिप्रिय गैर-समाजवादी देशो** का बडा समूह, जो मुख्यत हाल मे औपनिवेशिक जुए से मुक्त हुए हैं। अधिकाधिक देश फौजी गुटो मे शामिल होने के खतरे से अपने को दूर रखने की कोशिश कर रहे हैं और तटस्थता की नीति का अनुसरण कर रहे हैं।

तीन—**अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग**, जो समाजवाद तथा सामाजिक प्रगति के लिए, साम्राज्यवाद और उसकी आक्रामक नीतियो के विरुद्ध सघर्ष करता है।

चार—**जनसाधारण का व्यापक युद्ध विरोधी आन्दोलन**, जो अब युद्ध और शान्ति की समस्या को हल करने का प्रश्न अपने हाथो मे ले रहे हैं।

इन्ही शान्तिप्रिय प्रबल शक्तियो के अस्तित्व मे आ जाने के फलस्वरूप सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा अन्य देशो की मार्क्सवादी पार्टिया इस ऐतिहासिक निष्कर्ष पर पहुच सकी हैं कि वर्तमान समय मे युद्ध अनिवार्य नही है और मानवजाति अन्तर्राष्ट्रीय विवादो को हल करने के साधन के रूप मे युद्ध को रोकने की स्थिति मे है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कहा गया है "शक्तिशाली समाजवादी शिविर, शान्तिप्रेमी गैर-समाजवादी देशो, अन्तर[illegible] मजदूर वर्ग और शान्ति की पोषक सभी [illegible] सयुक्त [illegible] को रोकना सभव है।"

शातिपूर्ण सह-अस्तित्[illegible] मे सशस्त्र सघर्ष का परित्याग नहीं [illegible] शुरू क[illegible] अथवा किसी भी देश पर

उत्पीडको और उत्पीडितो, उपनिवेशवादियो और उपनिवेशवाद से पीडितो के बीच यह सिद्धान्त नही लागू हो सकता। अपनी स्वतन्त्रता और आजादी की रक्षा करना तथा आक्रमण या साम्राज्यवादियो द्वारा उत्पीडन के विरुद्ध हथियार उठाना प्रत्येक राष्ट्र का पुनीत अधिकार है।

नये विश्वयुद्ध को रोकने की शान्तिप्रिय शक्तियो की क्षमता का मतलब यह नहीं है कि अब युद्धो के छिड जाने का खतरा नही रहा। यह खतरा तब तक बना रहेगा, जब तक पूजीवाद कायम है। वियतनाम म संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक युद्ध, साम्राज्यवादियो के सकेत पर अरबो के विरुद्ध इजराइली आक्रमण और क्यूबा के खिलाफ उत्तेजनामूलक कार्रवाइयो से इसकी पुष्टि होती है।

स्थायी शान्ति केवल कम्युनिज्म ही स्थापित कर सकता है। इस समय सोवियत सघ, अन्य समाजवादी देशो और सभी ईमानदार लोगो द्वारा शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को कायम रखने के लिए जो धैर्यपूर्वक दृढ सघर्ष किया जा रहा है, अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व मे आक्रामक शक्तियो उसका तीव्र प्रतिरोध कर रही हैं। वे हर सभव तरीके से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को तनावपूर्ण बनाती हैं, सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो को खुल्लमखुल्ला धमकी देती हैं, हथियारबन्दी की होड को तीव्र बनाती हैं और युद्धोन्माद पैदा करती है। नये विश्वयुद्ध के खतरे के दृष्टिगत सोवियत सघ अपनी प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ बनाने और सोवियत जनता तथा समाजवादी शिविर के लोगो की रक्षा करने के लिए उपयुक्त कदम उठाने को विवश है।

चूकि साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी शक्तियो ने न अपनी पाशविक योजनाओ का और न अपनी आक्रामक महत्त्वाकाक्षाओ का ही परित्याग किया है, इसलिए इसका मतलब यह है कि उनके विरुद्ध जनता के नि स्वार्थ सघर्ष द्वारा ही विभिन्न सामाजिक प्रणालीवाले राज्यो के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व को कायम रखा और सुरक्षित बनाया जा सकता है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय तनाव शान्ति कायम रखने की दिशा म प्रयत्नशील सभी लोगो की सतत सजगता और एकजुटता की अपेक्षा करता है। शान्ति के लिए सघर्ष का नेतृत्व कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियॉ कर रही हैं, जो साम्राज्यवादियो के कुचक्रो तथा उनकी आक्रामक साजिशो का अथक रूप मे भण्डाफोड कर रही हैं, जनता की सजगता को अधिकाधिक बढा रही

है और विभिन्न सामाजिक प्रणालीवाले राज्यो के शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की लेनिनवादी नीति का दृढता के साथ अनुसरण कर रही है।

१९६९ मे मास्को मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन द्वारा स्वीकृत 'शान्ति-रक्षा सम्बन्धी अपील' मे कहा गया है "सभी कठिनाइयो के बावजूद हम कम्युनिस्टो ने विश्व शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के बारे मे लेनिन के विचारो के प्रति अपनी निस्स्वार्थ निष्ठा कायम रखी है। हम, पूर्ववत्, आज भी सैन्यवाद, आक्रमण और युद्ध का विरोध करनेवालो के साथ इन उत्कृष्ट, मानवीय आदर्शों की रक्षा के लिए सघर्ष करते रहेगे। इन उद्देश्यो के लिए हम विविध सामाजिक और राजनीतिक शक्तियो के साथ सम्पर्क तथा सहयोग विकसित करने के लिए तैयार है।

"सभी प्रगतिशील शान्तिप्रेमी शक्तियो की एकता वर्तमान युग की माग है। घनिष्ठ रूप से एकजुट, हम दुनिया मे शान्ति के पवित्र ध्येय को विजयी बनायेगे।"

पार्टी की २४वी काग्रेस मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट शाति और राष्ट्रो की सुरक्षा के सघर्ष का एक व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। कार्यक्रम मे दक्षिण पूर्वी एशिया तथा मध्यपूर्व मे सैन्य उत्पातो के अड्डो के उन्मूलन, विवादास्पद प्रश्नो के निपटारे मे शक्ति के उपयोग और उसके उपयोग की धमकी के परित्याग, यूरोपीय महाद्वीप पर तनाव की कमी और शान्ति को सुनिश्चित करने के लिए अखिल यूरोपीय सम्मेलन के सफल समायोजन, नाभिकीय, रासायनिक और जैव अस्त्रो को वर्जित करनेवाली सधियो के सपन्न किये जाने, सभी प्रकार के अस्त्रो की होड को खत्म करने के सघर्ष के तेज किये जाने, विदेशी सैनिक अड्डो के खत्म किये जाने, शेष औपनिवेशिक शासनो के उन्मूलन, उन सभी राज्यो मे सभी क्षेत्रो मे पारस्परिक लाभदायी सहयोग के मजबूत किये जाने, जो उसमे दिलचस्पी लेते हो, आदि की परिकल्पना की गई है। ससार की सभी शातिप्रेमी शक्तियो ने इस कार्यक्रम का समर्थन किया है।

**शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व — वर्ग सघर्ष का एक रूप** कभी-कभी यह कहा जाता है कि शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मतलब समाजवाद और पूजीवाद, श्रम और पूजी के बीच अन्तर्विरोधो का सामजस्य और वर्ग सघर्ष एव समाजवादी क्रान्ति का परित्याग है। परन्तु विश्व शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री की हिमायत करते हुए भी कम्युनिस्ट

क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष मे लगे हुए है। शान्ति के सघर्ष को मेहनतकश जनता के क्रान्तिकारी सघर्ष अथवा राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष से पृथक् नही समझा जा सकता। सघर्ष के सभी रूप एक दूसरे से सम्बद्ध और एकीभूत है।

निश्चय ही शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मतलव समाजवाद और पूजीवाद के बीच अन्तर्विरोधो का सामजस्य अथवा वर्ग सघर्ष का परित्याग नही है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सदा से वर्ग सघर्ष और उसके सर्वोच्च रूप—समाजवादी क्रान्ति—के कट्टर समर्थक रहे हैं, जिस से ही पूजीवाद का उन्मूलन तथा नये, समाजवादी समाज की स्थापना की जा सकती है। विभिन्न सामाजिक प्रणालीवाले देशो के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से सघर्ष सुगम हो जाता है तथा पूंजीपति वर्ग पर अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता को विजय प्राप्त करने मे सहायता मिलती है, अर्थात् इससे विश्व समाजवादी क्रान्ति और मानवजाति के पूजीवाद से समाजवाद की ओर ऐतिहासिक सक्रमण को तीव्र बनाने मे मदद मिलती है। १९६० मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के सम्मेलन द्वारा स्वीकृत वक्तव्य मे कहा गया है· "विभिन्न सामाजिक प्रणालीवाले राज्यो का शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व समाजवाद और पूजीवाद के बीच वर्ग सघर्ष का ही एक रूप है।"

पूजीवाद का मुख्य अन्तर्विरोध श्रम और पूजी के बीच अन्तर्विरोध है, जो मजदूर वर्ग और पूजीपति वर्ग के बीच वर्ग सघर्ष मे अभिव्यक्त होता है। यह सघर्ष लम्बा और कठिन मार्ग तय कर चुका है। समाजवादी आन्दोलन के शुरू मे मजदूरो के छोटे-छोटे समूहो की पृथक् तथा असगठित कार्रवाइयो से मजदूर वर्ग और पूजीपति वर्ग के बीच सघर्ष एक विराट आन्दोलन मे विकसित हो गया है और उसने व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया है। इसके अलावा विश्व समाजवादी प्रणाली के प्रादुर्भाव के साथ यह अन्तर्राज्यीय क्षेत्र मे फैल गया है और अब मानवीय कार्यकलाप के सभी क्षेत्रो मे व्यापक रूप ग्रहण करके विस्तृत पूजीवादी तथा समाजवादी प्रणालियो के स्तर पर होता है।

श्रम और पूजी के बीच किसी भी सघर्ष की भाति शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की परिस्थितियो मे समाजवादी और पूजीवादी प्रणालियो के बीच वर्ग सघर्ष आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक क्षेत्रो मे होता है।

दोनो प्रणालियो के बीच सघर्ष का मुख्य क्षेत्र आर्थिक क्षेत्र है–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूजीवाद और समाजवाद के बीच शान्तिपूर्ण आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता हो रही है। यह प्रतिद्वन्द्विता उत्पादन तथा सस्कृति के विकास की सर्वोच्च गति तथा स्तर प्राप्त करने के लिये, समाज के सदस्यो की भौतिक और सास्कृतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए समाजवाद तथा पूजीवाद का सघर्ष है। इस सघर्ष के दौरान दुनिया के लोग खुद यह समझ जायेंगे कि किस प्रणाली से उनकी जरूरतो की बेहतर पूर्ति होती है और समाजवाद की श्रेष्ठता के बारे मे विश्वस्त हो जाने पर वे उसके सक्रिय सघर्षकर्ता बन जायेगे।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व मे दोनो प्रणालियो के बीच राजनीतिक सघर्ष और सामाजिक तथा राष्ट्रीय मुक्ति, जनवाद और समाजवाद के लिए सघर्ष के सभी रूपो को समाजवादी देशो द्वारा प्रदत्त सर्वतोमुखी समर्थन भी शामिल है। इससे पूजीवादी देशो के मेहनतकश लोगो द्वारा शोषको के विरुद्ध चलाया जानेवाला सघर्ष सुगमतर हो जाता है, और यह बात इन देशो के हडताल आन्दोलन के पैमाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट एव मजदूर आन्दोलन के विकास से प्रमाणित हो जाती है।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के लिए भी अनुकूल परिस्थितिया पैदा होती है। दर्जनो अफ्रीकी एशियाई देशो ने शान्तिपूर्ण परिस्थितियो मे ही अपने को औपनिवेशिक जुए से मुक्त किया, क्यूबा मे शानदार क्रान्ति विजयी हुई, बहादुर अल्जीरियाई जनता ने फ्रासीसी उपनिवेशवादियो को पराजित किया, भारत ने गोआ, दमण, दियु को पुर्तगाली उपनिवेशवादियो के पजे से मुक्त किया और इन्डोनेशियाइयो ने डच उपनिवेशवादियो को पश्चिमी इरियन से मार भगाया। शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की परिस्थितियो मे ही नवस्वतन्त्र देशो ने राष्ट्रीय पुनरुद्धार के कार्यभार को पूरा करने और गैर-पूजीवादी पथ पर विकास करने का अवसर प्राप्त किया है।

जिस प्रकार शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से पूजीवादी देशो मे वर्ग सघर्ष तथा औपनिवेशिक तथा पराधीन देशो के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा होती हैं, उसी प्रकार वर्ग सघर्ष और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की सफलताओ से शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व को सुदृढ बनाने मे सहायता प्राप्त होती है।

**शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की परिस्थितियो मे विचारधारात्मक सघर्ष**

**पूजीवादी और कम्युनिस्ट वैचारिकी मे मेल बिठाना असभव होने के कारण शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त विचारधारात्मक क्षेत्र तक नहीं फैल सकता।** कम्युनिस्ट वैचारिकी मजदूर वर्ग तथा सभी मेहनतकश लोगो की वैचारिकी है। इसका लक्ष्य समाजवाद और कम्युनिज्म की विजय की अपरिहार्यता को सिद्ध करना तथा नये समाज के स्वरूप, उसकी श्रेष्ठता और उसकी क्षमता को समझाते हुए इस विजय के पथ को प्रशस्त करना है। पूजीवादी वैचारिकी का लक्ष्य भिन्न है, यह सिद्ध करना है कि पूजीवादी समाज – निजी स्वामित्व और शोषण का समाज सदैव कायम रहेगा और इसे मिटाया नही जा सकता।

पूजीपति वर्ग के पैरोकारो के दावे के विपरीत विचारधारात्मक सघर्ष कम्युनिस्टो के दिमाग की उपज नही है। यह निजी स्वामित्व और वर्गों के अस्तित्व मे आने के बाद से ही जारी है। और जब तक नितान्त विपरीत हितावाले परस्पर विरोधी वर्गों का अस्तित्व बना रहेगा, तब तक यह जारी रहेगा।

**आज पूजी के विरुद्ध घोर सघर्ष मे समाजवाद विजय प्राप्त करता जा रहा है। कम्युनिस्ट और पूजीवादी विचारधाराओ का सघर्ष लोगो के विचारो मे पूजीवाद और समाजवाद के सघर्ष का प्रतिबिम्ब है।**

कम्युनिस्टो को पूरा विश्वास है कि अन्ततः उनकी विचारधारा की विजय होगी। मानव समाज के पूरे विकासक्रम से इसकी सत्यता प्रमाणित होती है। कम्युनिस्ट विचारा के प्रति आकर्षण और दुनिया के विभिन्न भागो मे उनमे प्रदर्शित जबरदस्त दिलचस्पी का कारण यह है कि ये विचार **मानवजाति के विकास की अपेक्षाओ के अनुरूप है।** यहा तक कि गैर-मार्क्सवादियो ने भी इस बात को स्वीकार किया है। विख्यात फ्रासीसी दार्शनिक और लेखक जान पाल सार्त्र का कहना है कि मार्क्सवादी विचारधारा ही "वह एकमात्र विचारधारा है, जो वर्तमान युग और ऐतिहासिक विकास के आधुनिक काल के अनुरूप है।" साम्राज्यवाद के वैचारिको का यह दावा कि कम्युनिस्ट विचार लोगो पर जबरन थोपे जाते हैं, सर्वथा निराधार है।

बहुधा पूजीवादी दुनिया से विचारधारात्मक सघर्ष को समाप्त करने की अपीले सुनाई पडती हैं। ये विचारधारात्मक शान्ति चाहनेवाले ऐसा

तर्क प्रस्तुत करते हैं कि वास्तव मे यदि विभिन्न सामाजिक प्रणालियोवाले राज्यो का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व सभव है, तो इसे वैचारिकी के क्षेत्र मे भी क्यो न लागू किया जाये? उनके मतानुसार विचारधारात्मक सघर्ष शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त के प्रतिकूल है और इसलिए उनका कहना है–विचारधारात्मक सघर्ष खत्म हो!

परन्तु वास्तव मे विचारधारात्मक सघर्ष से शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का खण्डन नही होता। फिनलैण्ड, भारत और अन्य पूजीवादी देशो के साथ सोवियत सघ के वास्तविक शान्तिपूर्ण, सम्मानपूर्ण और दोस्ताना सम्बन्धो से यह निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है कि विचारधारात्मक मतभेद तथा शान्ति एव शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व मे सगति है।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त अन्तर्राज्यीय सम्बन्धो का बहुत ही मानवीय और युक्तिसगत सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त की रक्षा और शान्ति एव शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के विरोधियो तथा "शीत युद्ध" और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के समर्थको से सतत सघर्ष को कम्युनिस्ट विचारधारात्मक मोर्चे के सघर्ष मे एक महत्त्वपूर्ण कार्यभार मानते हैं।

विचारधाराओ मे सामजस्य बिठाने के प्रयास निश्चय ही विफल होगे। **कम्युनिस्ट और पूंजीवादी विचारो मे इस सीधे-सादे कारण से मेल न है और न हो सकता है कि वर्ग शान्ति नहीं हो सकती, उन वर्गों के बीच मेल नहीं हो सकता, जिनके हितो को ये विचार प्रकट करते हैं।** कम्युनिस्टो के लिए विचारधारात्मक शान्ति का अर्थ होगा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धान्तो का परित्याग, मजदूर वर्ग तथा सारी मेहनतकश जनता के महत्त्वपूर्ण हितो का परित्याग। यहा इस बात का उल्लेख कर देना प्रासगिक होगा कि यद्यपि पूजीवादी दुनिया के प्रतिनिधि विचारधारात्मक शान्ति की चर्चा करते है, परन्तु वे अपने विचारधारात्मक सिद्धान्तो का परित्याग नही करना चाहते। वे कम्युनिस्ट विचारो के प्रसार को रोकने का हर सभव प्रयास करते हैं। फलत, विचारधारात्मक शान्ति के सम्बन्ध मे साम्राज्यवाद के पोपको की अपीलो को कोई महत्त्व नही देना चाहिए। वास्तव मे वे उनकी वैचारिकी को नतमस्तक होकर स्वीकार कर लेने की अपीले हैं और निस्सन्देह, मार्क्सवादी इसपर कभी सहमत न होगे।

ऐतिहासिक विकास की वर्तमान अवस्था की विशिष्टता पूजीवाद और

समाजवाद का बढ़ता हुआ संघर्ष है। समाजवादी देशो की एकता को क्षीण करने, प्रगतिशील शक्तियो मे फूट डालने और समाजवादी समाज की जड काटने के लिए विराट कम्युनिस्ट विरोधी प्रचार मशीनरी का उपयोग किया जा रहा है। साम्राज्यवाद, विशेष रूप से अमरीकी साम्राज्यवाद गभीर उथल-पुथल और गृह तथा विदेश नीति मे जबरदस्त विफलताओ के फलस्वरूप जोखिमभरी फौजी और राजनीतिक कार्रवाइयो के जरिये सकट से उबरने की कोशिश करने तथा समाजवादी देशो एव कम्युनिस्ट और श्राम जनवादी आन्दोलन के विरुद्ध ध्वंसात्मक राजनीतिक और विचारधारात्मक सघर्ष का अधिकाधिक आश्रय लेने के लिये विवश हो गया है। इस स्थिति मे साम्राज्यवादी वैचारिकी के विरुद्ध दृढ सघर्ष सभी कम्युनिस्टो और अन्य जनवादी शक्तियों का एक प्रमुख कर्त्तव्य है।

समाजवाद जितना ही सफल होता जाता है तथा पूजीवाद के अन्तर्विरोध जितने ही गंभीर एवं तीव्रतर होते जाते हैं, समाजवादी विचारो के विरुद्ध विचारधारात्मक सघर्ष मे साम्राज्यवादी उतना ही अधिक प्रपचपूर्ण तरीके अपनाते है। पूजीवादी प्रचारक सामाजिक अन्तर्विरोधो एव पूजीवाद की बुराइयो को छिपाने, मेहनतकश लोगो की राजनीतिक चेतना को कुण्ठित करने और राजनीति तथा महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्याओ को हल करने से विरत करने की आशा मे व्यक्तिवादी विचारो के प्रचार द्वारा समाजवाद के लिए संघर्ष करने की उनकी सकल्पशक्ति को पगु करने और सामान्यतया उन्हे यह समझाने की कोशिशें करते हैं कि पूजीवादी जीवन प्रणाली ही सर्वोत्कृष्ट है, इसलिये समाजवाद के लिए उनका प्रयास करना बेकार है।

परन्तु विचारो के लोगो को प्रभावित करने के अपने ही विशिष्ट ढग, प्रसार के उनके अपने ही नियम होते हैं। वे न राजकीय सीमाओ मे बधते हैं और न फौजी अड्डो अथवा परमाणविक पनडुब्बियो से भयभीत होते हैं। प्रचार और सचार के वर्तमान साधनो के जरिये विचार बहुत दूर-दूर तक फैल सकते हैं। और यदि वे सच्चे *तथा जनता के बुनियादी हितो के* अनुरूप हो, तो उसके दिलोदिमाग पर उनका पूरा प्रभाव पड़ता है।

निस्सन्देह, विचारधारात्मक सघर्ष को युक्तिसगत ढग से चलाना चाहिए। निराशा, भय, स्वार्थपरता, अविश्वास और घृणा की भावनाए पैदा कर मुख्यत. मानवीय भावो को प्रभावित करने की ओर लक्षित "मनोवैज्ञानिक

जाती था। लेनिन ने लिखा था: "निशस्त्रीकरण समाजवाद का आदर्श है। समाजवादी समाज मे युद्ध न होगे, फलत निशस्त्रीकरण का लक्ष्य पूरा हो जायेगा।"*

युद्धोत्तर काल मे—विश्व तापनाभिकीय युद्ध का खतरा पैदा हो जाने के बाद, जिससे मानवजाति के सम्मुख अपार कष्टो का खतरा प्रस्तुत है—सोवियत सघ ने आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण पर विशेष रूप से जोर दिया और निशस्त्रीकरण को प्रोत्साहन प्रदान करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने की ओर लक्षित कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये है।

सभी मेहनतकश तथा प्रगतिशील लोग और समस्त शान्तिप्रेमी राष्ट्र निशस्त्रीकरण के क्षेत्र म सोवियत सघ के प्रयासो का हृदय से समथन करते है। हथियारबन्दी की जिस होड मे मानवजाति को झोक दिया गया है उसकी निरर्थकता और जबरदस्त खतरे को अधिकाधिक लोग समझने लगे है।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण सम्बन्धी सघर्ष मे दूसरे राष्ट्रो के मार्क्सवादी लेनिनवादी एक है। १९६० मे हुए कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के सम्मेलन के वक्तव्य मे कहा गया है "**सम्मेलन का मत है कि सोवियत सघ द्वारा प्रस्तुत आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण के कार्यक्रम को अमली जामा पहनाना मानवजाति के भविष्य के लिए ऐतिहासिक महत्त्व की बात होगी।** इस कार्यक्रम को मूर्त्त रूप प्रदान करने का मतलब है राष्ट्रो के बीच युद्ध शुरू होने के खतरे को दूर करना।"

मेहनतकश लोग सर्वत्र पूरे जोर के साथ हथियारबन्दी की होड समाप्त करने की माग कर रहे है, जिन पर इसका मुख्य भार पडता है। वे अच्छी तरह जानते है कि इस समय हथियारो पर जो धन राशि फूकी जाती है, उसे युक्तिसगत रूप मे खर्च करने से उनकी भौतिक स्थिति मे काफी सुधार हो जायेगा। निस्सन्देह हथियारो पर भारी धन राशि फूकी जा रही है। १९०० से १९५३ के बीच सभी देशो ने युद्धो और युद्धो की तैयारियो पर ४० खरब डालर की विराट धन राशि व्यय की। यह धन सारी मानवजाति का दस साल तक पेट भरने को काफी होता।

---

*व्ला० इ० लेनिन, ''निशस्त्रीकरण' का नारा'।

युद्ध" से उसका कोई सम्बन्ध नही होना चाहिए। "मनोवैज्ञानिक युद्ध" मे जो मुख्य तरीका अपनाया जाता है, वह है समाजवादी देशो द्वारा प्रस्तुत तथाकथित फौजी खतरे की मनगढत कथाओ से जनता को आतकित करना, फौजी तथा परमाणविक उन्माद पैदा करना। इसके विपरीत विचारधारात्मक सघर्ष का एकमात्र सही तरीका **समझाने-बुझाने, मानवीय विवेक को प्रभावित करने का तरीका है।** तथ्यो, विरोध पक्ष की वास्तविक नीतियो एव लक्ष्यो का विरूपण नही होना चाहिए, झूठी निन्दा नही करनी चाहिए तथा अपमानजनक बाते नही की जानी चाहिए, खतरनाक आवेशो तथा भावनाओ को नही उभाडना चाहिए। विचारधारात्मक सघर्ष लोगो के दिलोदिमाग को प्रभावित करने का सघर्ष है, जिसमे शक्ति का, हथियार का इस्तेमाल सर्वथा वर्जित है। इसके लिए न हथियारबन्दी की होड और न अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे तनाव पैदा करना आवश्यक है।

विचारधारात्मक सघर्ष शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तो के सर्वथा अनुरूप है और उसका न समाजवादी तथा पूजीवादी देशो की आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता और न उनके वैज्ञानिक, तकनीकी एव सास्कृतिक सहयोग से कोई टकराव है। कम्युनिस्ट दृढता के साथ मार्क्सवादी लेनिनवादी वैचारिकी का पालन करते है और उन्हे पूरा विश्वास है कि समाजवादी व्यवस्था पूजीवाद की अपेक्षा श्रेष्ठ है और इस कारण अन्तत विजयी होगी। वे अपने काम मे त्रुटियो को छिपाने की कोशिश नही करते, वे उनसे भली भाति अवगत है और उन्हे दूर करने की कोशिश करते है। वे विचारधारात्मक सघर्ष का समर्थन करते है और उससे दूर नही भागते, क्योकि उन्हे अपने विचारधारात्मक सिद्धान्तो और अपने ध्येय के औचित्य मे विश्वास है।

**निरशस्त्रीकरण**

जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व दो परस्पर विरोधी सामाजक प्रणालियो के बीच वर्ग सघर्ष का एक रूप है, एक ऐसा रूप, जो बल प्रयोग के बिना, युद्धो के बिना शान्तिपूर्ण तरीको को ही अपनाता है।

सोवियत सघ ने शुरू से ही बारबार आम और पूर्ण निरशस्त्रीकरण का सुझाव दिया है। समाजवादी समाज सदा से हथियारो पर धन फूकने का विरोधी रहा है, जिसका भार मुख्यत मेहनतकश लोगो को उठाना पडता है और जिसके कारण उनके द्वारा उत्पन्न भौतिक सम्पदा की विशाल मात्रा के सार्वजनिक हित मे इस्तेमाल किये जाने की सभावना समाप्त हो

जाती था। लेनिन ने लिखा था: "निशस्त्रीकरण समाजवाद का आदर्श है। समाजवादी समाज मे युद्ध न होगे, फलत निशस्त्रीकरण का लक्ष्य पूरा हो जायेगा।"*

युद्धोत्तर काल मे—विश्व तापनाभिकीय युद्ध का खतरा पैदा हो जाने के बाद, जिससे मानवजाति के सम्मुख अपार कष्टो का खतरा प्रस्तुत है—सोवियत सघ ने आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण पर विशेष रूप से जोर दिया और निशस्त्रीकरण को प्रोत्साहन प्रदान करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने की ओर लक्षित कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं।

सभी मेहनतकश तथा प्रगतिशील लोग और समस्त शान्तिप्रेमी राष्ट्र निशस्त्रीकरण के क्षेत्र मे सोवियत सघ के प्रयासो का हृदय से समर्थन करते हैं। हथियारबन्दी की जिस होड मे मानवजाति को झोक दिया गया है, उसकी निरर्थकता और जबरदस्त खतरे को अधिकाधिक लोग समझने लगे हैं।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण सम्बन्धी सघर्ष मे दूसरे राष्ट्रो के मार्क्सवादी-लेनिनवादी एक हैं। १९६० मे हुए कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के सम्मेलन के वक्तव्य मे कहा गया है "**सम्मेलन का मत है कि सोवियत सघ द्वारा प्रस्तुत आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण के कार्यक्रम को अमली जामा पहनाना मानवजाति के भविष्य के लिए ऐतिहासिक महत्त्व की बात होगी।** इस कार्यक्रम को मूर्त रूप प्रदान करने का मतलब है राष्ट्रो के बीच युद्ध शुरू होने के खतरे को दूर करना।"

मेहनतकश लोग सर्वत्र पूरे जोर के साथ हथियारबन्दी की होड समाप्त करने की माग कर रहे हैं, जिन पर इसका मुख्य भार पडता है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि इस समय हथियारो पर जो धन राशि फूकी जाती है, उसे युक्तिसगत रूप मे खर्च करने से उनकी भौतिक स्थिति मे काफी सुधार हो जायेगा। निस्सन्देह हथियारो पर भारी धन राशि फूकी जा रही है। १९०० से १९५३ के बीच सभी देशो ने युद्धो और युद्धो की तैयारियो पर ४० खरब डालर की विराट धन राशि व्यय की। यह धन सारी मानवजाति का दस साल तक पेट भरने को काफी होता।

---

*व्ला० इ० लेनिन, ''निशस्त्रीकरण' का नारा'।

युद्ध" से उसका कोई सम्बन्ध नही होना चाहिए। "मनोवैज्ञानिक युद्ध" मे जो मुख्य तरीका अपनाया जाता है, वह है समाजवादी देशो द्वारा प्रस्तुत तथाकथित फौजी खतरे की मनगढत कथाओ से जनता को आतकित करना, फौजी तथा परमाणविक उन्माद पैदा करना। इसके विपरीत विचारधारात्मक सघर्ष का एकमात्र सही तरीका समझाने-बुझाने, मानवीय विवेक को प्रभावित करने का तरीका है। तथ्यो, विरोध पक्ष की वास्तविक नीतियो एव लक्ष्यो का विरूपण नही होना चाहिए, झूठी निन्दा नही करनी चाहिए तथा अपमानजनक बाते नही की जानी चाहिए, खतरनाक आवेशो तथा भावनाओ को नही उभाडना चाहिए। विचारधारात्मक सघर्ष लोगो के दिलोदिमाग को प्रभावित करने का सघर्ष है, जिसमे शक्ति का, हथियार का इस्तेमाल सर्वथा वर्जित है। इसके लिए न हथियारबन्दी की होड और न अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे तनाव पैदा करना आवश्यक है।

विचारधारात्मक सघर्ष शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तो के सर्वथा अनुरूप है और उसका न समाजवादी तथा पूजीवादी देशो की आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता और न उनके वैज्ञानिक, तकनीकी एव सास्कृतिक सहयोग से कोई टकराव है। कम्युनिस्ट दृढता के साथ मार्क्सवादी-लेनिनवादी वैचारिकी का पालन करते है और उन्हे पूरा विश्वास है कि समाजवादी व्यवस्था पूजीवाद की अपेक्षा श्रेष्ठ है और इस कारण अन्तत विजयी होगी। वे अपने काम मे त्रुटियो को छिपाने की कोशिश नही करते, वे उनसे भली भाति अवगत है और उन्हे दूर करने की कोशिश करते है। वे विचारधारात्मक सघर्ष का समर्थन करते है और उससे दूर नही भागते, क्योकि उन्हे अपने विचारधारात्मक सिद्धान्तो और अपने ध्येय के औचित्य म विश्वास है।

### निशस्त्रीकरण

जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व दो परस्पर विरोधी सामाजक प्रणालियो के बीच वर्ग सघर्ष का एक रूप है, एक ऐसा रूप, जो बल प्रयोग के बिना, युद्धो के बिना शान्तिपूर्ण तरीका को ही अपनाता है।

सोवियत सघ ने शुरू से ही बारबार आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण का सुझाव दिया है। समाजवादी समाज सदा से हथियारो पर धन फूकने का विरोधी रहा है, जिसका भार मुख्यत मेहनतकश लोगो को उठाना पडता है और जिसके कारण उनके द्वारा उत्पन्न भौतिक सम्पदा की विशाल मात्रा के सार्वजनिक हित म इस्तमाल किय जान की सभावना समाप्त हो

जाती था। लेनिन ने लिखा था: "निश्शस्त्रीकरण समाजवाद का आदर्श है। समाजवादी समाज मे युद्ध न होगे, फलत निश्शस्त्रीकरण का लक्ष्य पूरा हो जायेगा।"*

युद्धोत्तर काल म – विश्व तापनाभिकीय युद्ध का खतरा पैदा हो जाने के बाद, जिससे मानवजाति के सम्मुख अपार कष्टो का खतरा प्रस्तुत है – सोवियत सघ ने आम और पूर्ण निश्शस्त्रीकरण पर विशेष रूप से जोर दिया और निश्शस्त्रीकरण को प्रोत्साहन प्रदान करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने की ओर लक्षित कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं।

सभी मेहनतकश तथा प्रगतिशील लोग और समस्त शान्तिप्रेमी राष्ट्र निश्शस्त्रीकरण के क्षेत्र मे सोवियत सघ के प्रयासो का हृदय से समर्थन करते हैं। हथियारबन्दी की जिस होड मे मानवजाति को झोक दिया गया है, उसकी निरर्थकता और जबरदस्त खतरे को अधिकाधिक लोग समझने लगे हैं।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के आम और पूर्ण निश्शस्त्रीकरण सम्बन्धी सघर्ष मे दूसरे राष्ट्रो के मार्क्सवादी-लेनिनवादी एक हैं। १९६० मे हुए कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो के सम्मेलन के वक्तव्य मे कहा गया है "**सम्मेलन का मत है कि सोवियत संघ द्वारा प्रस्तुत आम और पूर्ण निश्शस्त्रीकरण के कार्यक्रम को अमली जामा पहनाना मानवजाति के भविष्य के लिए ऐतिहासिक महत्त्व की बात होगी।** इस कार्यक्रम को मूर्त्त रूप प्रदान करने का मतलब है राष्ट्रो के बीच युद्ध शुरू होने के खतरे को दूर करना।"

मेहनतकश लोग सर्वत्र पूरे जोर के साथ हथियारबन्दी की होड समाप्त करने की माग कर रहे हैं, जिन पर इसका मुख्य भार पडता है। वे अच्छी तरह जानते है कि इस समय हथियारो पर जो धन राशि फूकी जाती है, उसे युक्तिसगत रूप मे खर्च करने से उनकी भौतिक स्थिति मे काफी सुधार हो जायेगा। निस्सन्देह हथियारो पर भारी धन-राशि फूकी जा रही है। १९०० से १९५३ के बीच सभी देशो ने युद्धो और युद्धो की तैयारियो पर ४० खरब डालर की विराट धन राशि व्यय की। यह धन सारी मानवजाति का दस साल तक पेट भरने को काफी होता।

---

*व्ला० इ० लेनिन, ''निश्शस्त्रीकरण' का नारा'।

१९६८ मे दुनिया के मुख्य देशो का फौजी व्यय १५,५३५ ५ करोड डालर था। यह रकम एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के सभी विकासमान देशो की सम्मिलित कुल राष्ट्रीय आय से भी अधिक थी, जहा मानवजाति का दो तिहाई भाग निवास करता है। यदि इस धन का केवल पाचवा भाग नवस्वतत्र राज्यो के विकास पर खर्च किया जाता, तो वे २५ साल म ब्रिटेन और फ्रास के वर्तमान आर्थिक स्तर पर पहुच जाते।

सत्तारूढ साम्राज्यवादी हलके निशस्त्रीकरण के विरुद्ध है, क्योकि हथियार न केवल क्रान्तिकारी शक्तियो को कुचलने तथा दूसरे राष्ट्रो को गुलाम बनाने और उन्हे लूटने के साधन हैं, बल्कि भारी मुनाफा कमाने के भी साधन हैं। क्या इसका मतलब यह है कि आम और पूर्ण निशस्त्रीकरण का कार्यक्रम अवास्तविक है और निश्चय ही विफल होगा?

नही, इसका यह अर्थ नही है। यह नही भूलना चाहिए कि इस समय, जब परमाणविक हथियार और दुनिया के किसी भी भाग मे उनसे प्रहार करने के साधन उपलब्ध हैं, पूजीवाद अपने दुस्साहसिक कार्य का दण्ड पाये बिना नही रह सकता। आज के युग मे मौत के सौदागर समुद्रो के पार भी सुरक्षित नही रह पायेगे, इसलिए युद्ध होने न होने का प्रश्न खुद पूजीवाद के जीवित रहने का सवाल है। यह सोचना सर्वथा युक्तिसगत है कि अन्तत सदविवेक से काम लिया जायेगा और साम्राज्यवादी दुनिया के नेता हथियारबन्दी की होड की निरर्थकता तथा स्वय अपने लिए अपनी आक्रामक नीतियो के खतरे को समझ लेगे। वे जनसाधारण और अधिकाधिक दृढता के साथ शान्ति तथा निशस्त्रीकरण की माग करनेवाले राष्ट्रो की इच्छाओ की सदा अवहेलना नही कर सकते।

**समाजवादी उपलब्धियो की रक्षा**

समाजवादी तथा अन्य सभी प्रगतिशील शक्तियो द्वारा आम एव पूर्ण निशस्त्रीकरण के लिए सघर्ष का मतलब साम्राज्यवाद के सम्मुख आत्म समर्पण नहीं हैं। प्रश्न समाजवादी और पूजीवादी दोनो शिविर के देशो के एक साथ निशस्त्रीकरण का है। परन्तु जब तक साम्राज्यवादी निशस्त्रीकरण का प्रतिरोध करेंगे, तब तक समाजवादी देश अपनी प्रतिरक्षा को सुदृढ बनाते रहेगें और साम्राज्यवादी आक्रमण होने पर उसे विफल बनाने के उद्देश्य से अपनी फौजो को शक्तिशाली हथियारो से लैस करते रहेगे। यह धधा महगा है, परन्तु सोवियत जनता इसे अच्छी तरह समझती है

कि यह अनिवार्य है और इसे वह अपना महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानती है।

पूंजीवादी देशो की फौजें पूंजीपति वर्ग के हितो की रक्षा करती है और प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तियो की आक्रामक साजिशो का, मेहनतकश लोगो के क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने का साधन हैं। इसके प्रतिकूल, सोवियत फौजें समाजवादी उपलब्धियो की रक्षा करती है और इस प्रकार शान्ति के साधन का कार्य करती हैं। अपने इस पवित्र ध्येय को वे अन्य समाजवादी देशो की फौजो के घनिष्ठ सहयोग से पूरा करती है।

सात यूरोपीय समाजवादी देशो की फौजें आक्रमण की साम्राज्यवादी नीति, विशेष रूप से नाटो फौजी गुट द्वारा अनुसरित आक्रामक नीति का अधिक सफलता के साथ विरोध करने के लिए ही वार्सा सन्धि सगठन मे एकजुट हुई है। एक दूसरे की आधुनिक हथियारो से सहायता करके तथा युद्ध करने के आधुनिक तरीको की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर समाजवाद की रक्षा करते हुए वे एक शक्तिशाली दुर्ग का निर्माण करती हैं, जिसपर विकासमान देश प्रतिक्रान्ति के निर्यात तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध अपने सघर्ष मे निर्भर कर सकते हैं।

सोवियत फौजो के पास अपने कार्यभार को पूरा करने के लिए जरूरत की सभी चीजें है। उनके पास सामरिक परमाणविक हथियार और ऐसी मिसाइले है जो जल, स्थल और नभ मे किसी भी लक्ष्य पर प्रहार कर सकती है। ये हथियार अब सोवियत सेना और नौसेना के मुख्य हथियार हैं। सोवियत नभ सेना के पास शक्तिशाली राकेटो से युक्त तेज आधुनिकतम विमान हैं। सोवियत नौसेना के पास मिसाइलो और तारपीडो से लैस परमाणविक पनडुब्बिया है, जो सैकडो-हजारो किलोमीटर दूर के लक्ष्यो पर भी प्रहार कर सकती है। स्वचालन के आधुनिकतम साधनो और यन्त्रीकरण के व्यापक उपयोग से जल, स्थल तथा नभ मे और पानी के अन्दर फौजी कार्रवाइयो मे समन्वय कायम करना सभव हो गया है।

यह सब प्रतिरक्षा सामग्री बहुत ही प्रशिक्षित फौजी विशेषज्ञो के नियन्त्रण मे है, जो जनता और पार्टी के प्रति निष्ठावान है और जो समाजवाद की महान उपलब्धियो की रक्षा करने को सदैव प्रस्तुत है।

इसलिए यह कहना सर्वथा सही है कि समाजवाद की उपलब्धियो की रक्षा विश्वसनीय हाथो मे है और यदि साम्राज्यवादियो ने नया विश्वयुद्ध शुरू किया, तो कुत्सित पूजीवादी प्रणाली मिट ही जायेगी।

अध्याय ७

# समाज के आमूल रूपान्तरण की ओर प्रारम्भिक कदम। पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण का काल

## १ सक्रमण-काल की अनिवार्यता

जिस प्रकार घर अथवा किसी अन्य इमारत का निर्माण निर्माताओ को उपलब्ध सामग्री से ही करना पडता है, उसी प्रकार इस नये सामाजिक भवन – समाजवाद – का निर्माण भी पूजीवाद से विरासत मे प्राप्त सामग्री से ही किया जाता है। समाजवाद का निर्माण पूजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षित लोगो द्वारा पूजीवादी उत्पादन, विज्ञान, तकनीक तथा सस्कृति के आधार पर किया जाता है। गुणात्मक दृष्टि से समाजवादी समाज एक नया समाज है, जिसका निर्माण राजनीतिक और सामाजिक सम्बन्धो के बुनियादी रूप मे परिवर्तित हुए बिना नही हो सकता। इस बात पर जोर देना चाहिये कि अपदस्थ शोषक वर्ग, मुख्यत पूजीपति वर्ग इन परिवर्तनो का भयानक रूप से प्रतिरोध करता है।

अपदस्थ शोषको के प्रतिरोध को खत्म करना, राज्य सत्ता को रूपान्तरित करना, मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व के रूप मे नयी राजकीय मशीनरी को कायम करना, मेहनतकश लोगो के गैर-सर्वहारा तबको के साथ उसके सश्रय को सुदृढ बनाना, सार्वजनिक मामलो के प्रशासन मे जनसमुदाय को खीचना – ये है वे राजनीतिक समस्याए, जिन्हे पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल मे हल करना होता है।

इस काल मे निम्नाकित महत्त्वपूर्ण आर्थिक समस्याए भी हल की जाती है उत्पादन-साधनो पर निजी स्वामित्व का उन्मूलन और समाजवादी स्वामित्व की स्थापना; उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धो को लागू करना, समाजवादी सहकारिता के आधार पर किसानो के फार्मों तथा दस्तकारो की कर्मशालाओ का पुनर्गठन, अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध

विकास और जीवन-स्तर को ऊचा उठाने के निमित्त समाजवादी उत्पादन मे सतत वृद्धि।

इस सक्रमण-काल मे समाज के आध्यात्मिक जीवन मे भी निम्न प्रकार के आमूल परिवर्तन लागू किय जाते हैं शिक्षा, विज्ञान और तकनीक की प्रणाली का समाजवादी पुनर्गठन, श्रम के प्रति समाजवादी दृष्टिकोण का पैदा किया जाना, मेहनतकश लोगो को समाजवादी नैतिकता की भावना मे शिक्षित करना और नूतन विश्वदृष्टिकोण—वैज्ञानिक समाजवाद के विचार—का पैदा किया जाना।

सक्षेप मे, **शोषको के प्रतिरोध को समाप्त करने और अर्थव्यवस्था, सामाजिक सम्बन्धो तथा समाज के आध्यात्मिक जीवन मे बुनियादी समाजवादी सुधारो को लागू करने के लिए पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल अत्यावश्यक है।**

यह वह काल है, जिसमे पूजीपति वर्ग अपदस्थ किया जा चुका होता है, परन्तु पूजीवाद का पूर्ण उन्मूलन नही हो चुका होता है और सत्तारूढ न रहने पर भी शोषक वर्गो का विजयी मजदूर वर्ग के विरुद्ध सघर्ष जारी रहता है, यह वह काल है जिसम आधारभूत समाजवादी रूपान्तरण लागू किये जा रहे होते है, परन्तु समाजवाद का निर्माण अभी तक हुआ नही है।

लेनिन ने लिखा है कि "सक्रमण की यह अवस्था—पुरातन स नूतन की ओर सक्रमण—इस नूतन के विकास की अवस्था है।"* दूसरे शब्दो मे सक्रमण-काल समाजवादी समाज के निर्माण तथा विकास का काल है, मरणासन्न पूजीवाद और उदीयमान समाजवाद के बीच सघर्ष का काल है।

उत्पादन की सभी प्राक् समाजवादी पद्धतिया स्वत स्फूर्त ढग से, अर्थात् पूर्ववर्ती पुराने समाज के भीतर से मनुष्य की इच्छाशक्ति और चेतना से असम्बद्ध उभरी थीं। उत्पादन की पुरानी पद्धति के भीतर से नयी पद्धति का इस प्रकार का आविर्भाव इस कारण सभव था कि दोनो समाजो का आर्थिक *आधार एक ही था—उत्पादन-साधना पर निजी स्वामित्व। उत्पादक शक्तियो* के विकास के साथ साथ केवल उत्पादन के रूप बदले, पर दास स्वामी,

---

*व्ला० इ० लेनिन, ''सोवियत सत्ता के तात्कालिक काम' का पहला रूप'।

सामत अथवा पूजीपति का निजी स्वामित्व उनका सतत आधार बना रहा। चूकि मूलत निजी स्वामित्व के रूप एक दूसरे से भिन्न नही होते, इसलिए वे साथ-साथ कायम रह सकते हैं और विकसित हो सकते हैं। सब जानते हैं कि दास स्वामियो के साथ-साथ सामत बने रह सकते हैं कि आज भी कुछ उपनिवेशो मे बडी पूजीवादी इजारेदारियो का सामतो तथा दास-स्वामियो से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसके अलावा अपना प्रभुत्व सुदृढ बनाने के लिए वे इन पुराने आर्थिक रूपो को कायम रखने का हर तरह से प्रयास करती हैं।

परन्तु समाजवाद किसी एक ही देश मे अर्थव्यवस्था के विभिन्न शोषक रूपो के साथ शान्तिपूर्ण ढग से रहते हुए पूर्ववर्ती पुरानी प्रणाली के ढाचे के अन्तर्गत स्वत स्फूर्त ढग से आविर्भूत और विकसित नही हो सकता। समाजवादी समाज सभी पूर्ववर्ती समाजो से बुनियादी रूप मे भिन्न है, क्योकि **उसका आधार सार्वजनिक स्वामित्व है और यह मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को नहीं मानता।**

समाजवादी क्रान्ति पहले की सभी क्रान्तियो से भिन्न है, क्योकि यह समाज को धनी और निर्धन, उत्पीडक और उत्पीडित मे विभक्त करनेवाले कारण को ही दूर कर देती है, अर्थात् उत्पादन-साधना पर निजी स्वामित्व को खत्म कर देती है। यह क्रान्ति सार्वजनिक, समाजवादी स्वामित्व कायम करती है। सार्वजनिक स्वामित्व निजी स्वामित्व से अपने आप विकसित नही हो सकता। बडे जमीदार अथवा पूजीपति स्वेच्छा से कभी भी जमीन, कारखानो तथा मिलो, रेलवे और बैंको का परित्याग नही करेगे, जिन पर उनका स्वामित्व है। यद्यपि यह सम्पदा साधारण लोगो के श्रम से ही पैदा की गई है, लेकिन जब तक निजी स्वामित्व को सार्वजनिक स्वामित्व मे रूपान्तरित करने का साधन उनके हाथो मे नही आ जाता, तब तक व इस सम्पदा के मालिक नही हो सकते। यह साधन है राजनीतिक, राजकीय सत्ता, विजयी वर्ग द्वारा समाज का नेतृत्व, अर्थात **सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व।** स्वामित्व का रूपान्तरण करके, सार्वजनिक स्वामित्व की व्यवस्था लागू करके सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व सार्वजनिक जीवन के अन्य सभी क्षेत्रो का रूपान्तरण करता है। अब हम सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व और समाजवाद के निर्माण म उसकी भूमिका तथा महत्व पर विचार करेंगे।

## २ सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व

**सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सार और कार्यसार**

मार्क्स ने लिखा है कि पूजीवादी और कम्युनिस्ट समाज के बीच "एक के दूसरे म क्रान्तिकारी रूपान्तरण का काल होता है। इसका समवर्ती एक राजनीतिक सक्रमण काल भी होता है, जिसमे राज्य सर्वहारा के क्रान्तिकारी अधिनायकत्व के सिवा और कुछ नही हो सकता।"*

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का प्रादुर्भाव सफल समाजवादी क्रान्ति के फलस्वरूप, पूजीवादी राजकीय मशीनरी के ध्वस्त किये जाने के आधार पर होता है। यह गुणात्मक दृष्टि से नये प्रकार का राज्य है, जो अपने वर्ग स्वरूप, राजकीय सगठन के रूपो और अपनी अपेक्षित भूमिका मे पहले के सभी राज्यो से बुनियादी तौर पर भिन्न होता है।

पहले के सभी प्रकार के राज्य शोषक वर्गों के हथियार थे, मेहनतकश लोगो को कुचलने के साधन थे और उनका उद्देश्य था शोषण की प्रणाली को सुदृढ करना तथा उत्पीडको और उत्पीडितो म समाज के विभाजन को कायम रखना। **सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का मतलब है मजदूर वर्ग की सत्ता, जो अन्य सभी मेहनतकशो के साथ मिलकर पूजीवाद का अत करता है और एक नये समाज का, विरोधी वर्गों और शोषण से हीन समाज का निर्माण करता है।**

लेनिन ने लिखा था 'यदि हम लैटिन भाषा के, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक दार्शनिक शब्दो «proletarii dictatura» (सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व) का अनुवाद सीधे सादे शब्दो मे करे, तो उसका मतलब यह होता है

'केवल एक निश्चित वर्ग, यानी शहरो के मजदूर तथा आम तौर से फैक्टरियो के औद्योगिक मजदूर पूजी की गुलामी का जुआ उतार फकने के सघर्ष मे, उसका तख्ता उलटने की प्रक्रिया मे, विजय को कायम रखने तथा सुदृढ बनाने के सघर्ष मे, नयी समाजवादी समाज-व्यवस्था की रचना

---

*कार्ल मार्क्स, 'गोथा-कार्यक्रम की आलोचना'।

करने के काम मे, वर्गों का पूर्ण रूप से उन्मूलन करने के पूरे संघर्ष मे समस्त मेहनतकशो तथा शोषितो का नेतृत्व कर सकते है।"*

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के बुनियादी कार्यभार क्या है?

वर्ग संघर्ष संक्रमण-काल मे समाप्त नही हो जाता। राजनीतिक सत्ता से वंचित शोषक वर्ग, मुख्यत पूजीपति वर्ग, अपनी पराजय, सत्ता तथा विशेषाधिकारो का खोना बर्दाश्त नही कर पाते और इस कारण नयी सत्ता का निर्ममतापूर्वक प्रतिरोध करते है। चूकि समाज मे दीर्घकाल तक उनका जबरदस्त दबदबा और उनका प्रभाव कायम रहता है, इसलिए वे अपनी खोयी हुई सत्ता को फिर से कायम करने की आशा नही छोडते। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि **अपदस्थ शोषक वर्गों के प्रतिरोध को कुचल देने, उत्पादन के साधनो को जनता के हाथो मे दे देने और भीतरी तथा बाहरी शत्रुओ के हस्तक्षेप से क्रान्तिकारी उपलब्धियों की रक्षा करने और उन्हें** सुदृढ बनाने के लिए सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व नितान्त आवश्यक है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का यह पहला कार्यभार है, जो शोषको के विरुद्ध **बल-प्रयोग** से सम्बद्ध है।

परन्तु पूजीपति वर्ग को कुचल देना ही सर्वहारा वर्ग के कार्य की इतिश्री नही है। उसका प्रधान कार्य समाजवादी समाज, नूतन, समाजवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। यहा कठिनाई यह है कि समाजवादी क्रान्ति शुरू होने के समय कोई बनी बनाई समाजवादी आर्थिक पद्धति नही होती। इस कारण सर्वहारा अधिनायकत्व से, सर्वहारा राज्य से **समाज के आर्थिक जीवन को नये ढग से सगठित करने, पूजीवाद से श्रेष्ठतर नये प्रकार** की अर्थव्यवस्था – समाजवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण करने की अपेक्षा की जाती है। जैसा कि लेनिन ने कहा था, "सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व शोषको के खिलाफ केवल बल प्रयोग, या मुख्यत बल प्रयोग ही नही है सर्वहारा वर्ग पूजीवाद की तुलना मे श्रम के एक उच्चतर कोटि के सामाजिक सगठन का प्रतिनिधित्व तथा उसकी तामील करता है। यही असली सारतत्त्व है। यही कम्युनिज्म की शक्ति का स्रोत तथा उसकी अनिवार्य, पूर्ण विजय की गारटी है।"**

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'एक शानदार शुरूआत'।

**वही।

सर्वहारा अधिनायकत्व का यह दूसरा, सृजनात्मक कार्यभार है।

सर्वहारा वर्ग अकेले नही, बल्कि गैर-सर्वहारा मेहनतकश जनसमुदाय, मुख्यत किसानो के साथ घनिष्ठ सश्रय कायम करके नये, समाजवादी समाज का निर्माण करता है। पूजीपति वर्ग के विरुद्ध सघर्ष और समाजवादी निर्माण के दौरान मजदूर वर्ग जनसमुदाय को नये साचे मे ढालता और पुनर्शिक्षित करता है। यह बहुत ही कठिन कार्यभार है, पूजीपति वर्ग के विरुद्ध खुले सघर्ष की अपेक्षा अधिक कठिन कार्यभार है। इसके लिए मेहनतकश लोगो के गैर-सर्वहारा तबको को समाजवाद के फ़ायदे समझाने का दीर्घकालीन, श्रमसाध्य शैक्षिक काय अपेक्षित है। इस प्रक्रिया मे मजदूर वर्ग स्वय अपने को भी शिक्षित करता है, वह समाज के आध्यात्मिक जीवन और उसकी सस्कृति मे गहन परिवर्तन करता है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का यह तीसरा, शैक्षिक कार्यभार है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के उक्त बुनियादी पहलुओ के सम्बन्ध म यह दृष्टव्य है कि वे सभी मूलत एक दूसरे से सम्बद्ध है और तत्वत एक ही है। परन्तु **सर्वहारा वर्ग के इस अधिनायकत्व का बुनियादी पहलू है सृजनात्मक कार्य, नये समाज का निर्माण, मेहनतकश लोगो को शिक्षित करना और उन्हे समाजवाद के सक्रिय निर्माताओ मे बदलना।** इसके साथ ही सर्वहारा अधिनायकत्व के बल-प्रयोग सम्बन्धी पहलू को भी कम महत्त्वपूर्ण नही समझना चाहिए। मजदूर वर्ग ने इस पहलू के महत्त्व की उपेक्षा करने, अपनी अत्यधिक सहृदयता और विनम्रता की कीमत बार-बार अपने खून से चुकाई है। इसके उदाहरण है १८७१ के पेरिस कम्यून का और १९१८–१९१९ मे हुई जर्मनी, हगरी और फिनलैण्ड की क्रातियो का खून मे डुबाकर कुचला जाना। १९५६ के अक्तूबर मे प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियो ने हगेरियाई मजदूर वर्ग के हजारो सपूतो को मौत के घाट उतार दिया था।

सर्वहारा अधिनायकत्व राजकीय तथा गैर-राजकीय सगठनो (पार्टी और सार्वजनिक सगठनो) की प्रणाली है। इस प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी है, जो समाजवाद के निर्माण का निर्देशन करती है। सामाजिक विकास के नियमो की अपनी जानकारी को आधार मानकर राजकीय और सार्वजनिक सगठनो के जरिये काम करते हुए पार्टी सक्रमण-काल मे शोषक वर्गों के विरुद्ध जन सघर्ष का नेतृत्व और समाजवादी सुधारो को लागू करती है। पूजीवाद के विरुद्ध सघर्ष के दौरान जनसमुदाय स पार्टी के

व्यापक सम्पर्क उसके तथा जनता के बीच एकता के रूप मे विकसित होते हैं। **पार्टी और जनता के बीच एकता – समाजवादी समाज के सफल निर्माण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है।**

इसे ध्यान मे रखना चाहिये कि सर्वहारा अधिनायकत्व न तो शासन के पुराने, मिसाल के लिए ससदीय रूपो को अस्वीकार करता है और न सभी गैर-कम्युनिस्ट पार्टियो तथा सगठनो को भग करता है। इसके साथ-साथ वह इन रूपो मे आमूल परिवर्तन करता है और उन्हे मेहनतकश जनता की सत्ता के साधन मे बदल देता है। समाज की नेतृत्वकारी शक्ति होते हुए भी कम्युनिस्ट पार्टी समाज के समाजवादी रूपान्तरण म दिलचस्पी रखनेवाली अन्य पार्टियो और सगठनो से सहयोग से इनकार नही करती।

समाजवादी निर्माण के दौरान सर्वहारा अधिनायकत्व की प्रणाली के अन्तर्गत कम्युनिस्ट पार्टी के स्थान के प्रश्न पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद और अवसरवाद के बीच सदा से विवाद रहा है, जो समाजवादी निर्माण मे पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका को स्वीकार नही करता। मिसाल के लिए चीन मे माओ त्से-तुग का वामपथी गुट यही करने की कोशिश कर रहा है। सारत यह मजदूर वर्ग की पार्टी को खत्म करने की और उसकी निम्नपूजीवादी दु साहसिकता और राष्ट्रवाद की पार्टी से प्रतिस्थापना करने की कोशिश कर रहा है। दक्षिणपथी अवसरवादी भी इसी की माग कर रहे हैं। वे कम्युनिस्ट पार्टी पर हमला कर रहे है और उसे पार्टी की छद्म तानाशाही से स्वतत्रता और जनवाद को बचाने और समाजवादी व्यवस्था का "उदारीकरण" और "जनवादीकरण" करने के बहाने नेतृत्व से हटाने की कोशिश कर रहे हैं।

सोवियत सघ का पचास साल का अनुभव और अन्य समाजवादी देशो का अनुभव पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका के सम्बन्ध मे लेनिन के सिद्धान्त की सत्यता की व्यावहारिक कसौटी और अभिपुष्टि रहा है और इसने निश्चयात्मक रूप मे दिखा दिया है कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के बिना नये, समाजवादी समाज का निर्माण और वास्तविक समाजवादी जनवाद की स्थापना असभव है।

**जनवाद का उच्चतर प्रकार**

पूजीवादी वैचारिक और सुधारवादी पूजीवादी दुनिया मे कथित रूप मे विद्यमान "सार्वजनिक जनवाद", "सभी और हरेक के लिए जनवाद" के गुण गाते हैं। वे सर्वहारा अधिनायकत्व के मुकाबले "विशुद्ध" पूजीवादी जनवाद को रखने की कोशिश करते हैं। वास्तव मे बात बिल्कुल उलटी है।

बहुप्रशसित पूजीवादी जनवाद बहुधा केवल एक आवरण ही होता है, जिसके पीछे थैलीशाहो की सर्वशक्तिमत्ता और मेहनतकशो की अधिकारहीनता ही छिपी रहती है। पूजीवादी जनवाद का उद्देश्य पूजीवादी सामाजिक व्यवस्था, धनिको के छोटे समूह द्वारा करोडो श्रमिको के शोषण को कायम रखना है। एकमात्र सर्वहारा राज्य–सर्वहारा अधिनायकत्व–ही वस्तुत जनवादी राज्य है। **गुणात्मक दृष्टि से नया और उच्चतर प्रकार का जनवाद है।** यह जनता के भारी बहुमत के लिए जनवाद और शोषको तथा उत्पीडको के जनवाद से अपवर्जन का द्योतक है। अपने विकास के दौरान यह **समस्त जनता के लिए** समाजवादी जनवाद बन जाता है।

सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत गुणात्मक दृष्टि से नये प्रकार का जनवाद इस अधिनायकत्व के स्वरूप और उसके द्वारा अपने लिए निर्दिष्ट लक्ष्यो तथा कार्यभारो से आविर्भूत होता है। सभी मेहनतकश लोगो, सभी जनवादी शक्तियो के साथ सुदृढ सश्रय के आधार पर ही सर्वहारा वर्ग शोषक वर्गो के प्रतिरोध को भग कर सकता है, राजनीतिक सत्ता को अपने हाथो मे रख सकता है, समाजवाद का निर्माण पूरा कर सकता है और इस प्रकार जनता के जीवन को सुखी बना सकता है। इसी कारण, **मजदूर वर्ग और शहरो तथा गावो के अर्धसर्वहारा तबकों, मुख्यतः किसानो के साथ सश्रय, जिसमे मजदूर वर्ग नेतृत्वकारी भूमिका अदा करता है, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का आधार और उच्चतर सिद्धान्त है,** सर्वहारा राज्य के वास्तविक जनवाद की सर्वथा पूर्ण तथा सर्वांगीण अभिव्यक्ति है।

मजदूर वर्ग और शहरो तथा गावो की मेहनतकश आबादी के साथ यह सश्रय उनके समान राजनीतिक और आर्थिक हितो, शोषण के उन्मूलन तथा समाजवाद के निर्माण के लिए उनके सयुक्त प्रयास पर आधारित है। एकमात्र समाजवाद पूजीवादी उजरती गुलामी से मजदूरो को और तबाही एव गरीबी से किसानो तथा अन्य गैर सर्वहारा श्रमजीवी तबको को मुक्त कर सकता है। मजदूर वर्ग और सभी श्रमजीवी तथा जनवादी शक्तियो के बीच यह सश्रय– सर्वहारा अधिनायकत्व की अक्षय शक्ति का यह आधार–शोषको के विरुद्ध और नूतन, समाजवादी प्रणाली के लिए उनके सयुक्त सघर्ष मे पैदा हुआ है और विकसित होता जा रहा है।

सर्वहारा जनवाद का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि मेहनतकश लोगों के अधिकारों की उद्‌घोषणा करने के अलावा, वह उनकी सक्रिय क्रियान्विती का भी ध्यान रखता है। सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत मेहनतकश लोगों को केवल अमूर्त अधिकार प्राप्त नहीं होते, जैसा कि पूजीवादी राज्यों में होता है, बल्कि वास्तव में वे ही प्रत्यक्षत अथवा अपने प्रतिनिधियों के जरिये देश के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मामलों की व्यवस्था करते हैं।

आवश्यक भौतिक आधार प्रस्तुत करके राज्य मेहनतकशों द्वारा जनवादी अधिकारों के पूर्ण उपयोग की गारंटी प्रदान करता है। उत्पादन के सभी साधन मेहनतकशों के अधिकार में होते हैं, जिससे राष्ट्र के आर्थिक जीवन पर नियत्रण कायम करने और श्रम करने के अपने अधिकार का लाभ उठाने का उन्हें पूरा-पूरा अवसर प्राप्त होता है। शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सस्थाए, अवकाश गृह तथा स्वास्थ्य केन्द्र उनके अधिकार मे होते हैं, जिससे शिक्षा प्राप्त करने तथा विश्राम करने के अपने अधिकार का लाभ उठाना उनके लिए सर्वथा सभव रहता है। छापेखाने, रेडियो तथा टेलीविजन स्टेशन आदि उनकी पहुच मे होते है और इस कारण वे वाक् तथा प्रेस-स्वातत्र्य तथा साहचर्य-स्वातत्र्य का उपयोग कर सकते हैं।

सोवियतों या अन्य राजकीय निकायों मे अपने व्यापक प्रतिनिधित्व के जरिये, इन निकायों की विविध समितियो एव आयोगो के जरिये तथा अपने सार्वजनिक सगठनो के जरिये मेहनतकश लोग राष्ट्र के राजनीतिक जीवन तथा राज्य के मामलो की व्यवस्था मे सक्रिय भूमिका अदा करते हैं। सक्षेप मे, लेनिन के शब्दो मे, सर्वहारा जनवाद किसी भी पूजीवादी जनवाद की तुलना मे लाखो गुना अधिक जनवादी है।

## ३. आर्थिक सुधार

अर्थव्यवस्था सामाजिक जीवन का आधार है और इसी लिए आर्थिक सुधार, मुख्यत निजी स्वामित्व का उन्मूलन तथा सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना सक्रमण-काल मे बडे महत्त्वपूर्ण होते हैं। सार्वजनिक स्वामित्व स्थापित करने का मुख्य साधन समाजवादी राष्ट्रीयकरण है।

**समाजवादी राष्ट्रीयकरण**

समाजवादी राष्ट्रीयकरण का मतलब है उत्पादन के बुनियादी साधनो पर पूंजीपति वर्ग के स्वामित्व को समाप्त करना और उन्हे सर्वहारा राज्य की सम्पत्ति बनाना। उनमे कारखाने, रेलवे, समुद्री तथा नदी परिवहन, बिजलीघर, बडे कृषि और व्यापारिक उद्यम, आदि शामिल है। इस प्रकार बडे पूजीवादी स्वामित्व का क्रान्तिकारी ढग से उन्मूलन कर दिया जाता है और सार्वजनिक समाजवादी स्वामित्व की स्थापना हो जाती है। बडे उद्योगो, बैंको का राष्ट्रीयकरण और विदेश व्यापार पर एकाधिकार कायम करना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योकि इससे राज्य को जनता की भलाई के लिए आर्थिक विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने, उत्पादन, हिसाब-किताब एव वितरण के योजनाबद्ध प्रबन्ध को सगठित करने और पूजीवाद से देश की आर्थिक स्वतत्रता को सुनिश्चित बनाने का महत्त्वपूर्ण आधार प्राप्त हो जाता है।

राष्ट्रीयकरण के फलस्वरूप उत्पादन के सम्बन्धो मे निहित सहयोग एव पारस्परिक सहायता और श्रम के अनुरूप वितरण के सामाजिक रूपो से युक्त सार्वजनिक स्वामित्व पर आधारित अर्थव्यवस्था की **समाजवादी प्रणाली** कायम हो जाती है। समाजवादी प्रणाली के अन्तर्गत शोषण का उन्मूलन किया जाता है तथा उत्पादन के सार्वजनिक स्वरूप और स्वामित्व के निजी स्वरूप के बीच पूजीवादी समाज मे अन्तर्निहित अन्तर्विरोध को दूर करने मे सहायता मिलती है।

राष्ट्रीयकृत उद्यमो से सर्वहारा राज्य को दृढ तथा स्थिर आर्थिक आधार प्राप्त होता है, जो समाजवाद की ओर प्रगति के साथ विस्तृत तथा सुदृढ होता जाता है।

ठोस परिस्थितियो के अनुरूप राष्ट्रीयकरण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे, अर्थात् कई दरमियानी सक्रमक दौरो मे पूरा किया जा सकता है। इनमे से एक दौर **राजकोय पूंजीवाद*** का दौर है। इसके ठोस

---

*सर्वहारा राज्य के अन्तर्गत राजकीय पूजीवाद मे पूजीवादी राज्य के अन्तर्गत राजकीय पूजीवाद की भिन्नता समझनी चाहिए। पूजीवादी राज्य के अन्तर्गत राजकीय पूजीवाद का मतलब है राष्ट्रीयकृत उद्यमो पर मजदूर वर्ग का नही, बल्कि पूजीपति वर्ग का नियत्रण। जनवादी

रूप भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, जनता के राज्य ने एक बडे पूजीवादी उद्यम का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। धन अथवा प्रशासकीय अनुभव की कमी या किसी अन्य कारण से राज्य उसे निश्चित सरक्षणो के साथ कुछ उद्योगपतियो को निश्चित अवधि के लिए निर्दिष्ट शर्तो पर पट्टे पर दे देता है और इस प्रकार उन्हे उत्पादन बढाने, कर अदा करने तथा मुनाफे का कुछ अश राज्य को देने के लिए मजबूर करता है। राज्य आवश्यकता पडने पर सम्बन्धित उद्यम को अपनी ओर से कच्चा माल सप्लाई करने मे सहायता और निश्चित मूल्या पर उसके उत्पादो की बिक्री की गारटी प्रदान करता है। सयुक्त पूजी वाले उद्यम भी इसी कोटि मे आते हैं। राज्य और उद्योगपतियो दोनो का उन पर सयुक्त स्वामित्व रहता है और उत्पादन तथा मुनाफे मे दोना पक्षो को समुचित हिस्सा मिलता है। राज्य के साथ किये गए अनुबन्ध के अनुसार व्यापार करनेवाली बडी पूजीवादी फर्म राजकीय पूजीवाद का एक अन्य रूप है। राज्य खरीद और बिक्री, फुटकर और थोक मूल्यो के निर्धारण, कर आदि की व्यवस्था को नियत्रित करता है।

मेहनतकश लोगो के शासन के अन्तर्गत निजी पूजीवादी क्षेत्र की अपेक्षा राजकीय पूजीवाद की अपनी कुछ अच्छाइया हैं, क्योकि राज्य जनता के हित मे राजकीय पूजीवाद के विकास को नियत्रित करता है। सरकारी कानूनो, प्रतिमानो, मूल्यो और करो से बचने मे समर्थ निजी पूजीवादी उद्यमो पर अपेक्षाकृत बहुत कम राजकीय नियत्रण लागू हो पाता है।

क्रान्ति के पूर्व कोई देश आर्थिक दृष्टि से जितना ही कम विकसित होता है और उसके लघु पण्य और सामान्यतया प्राक्-पूजीवादी उत्पादन का स्तर जितना ही बडा होता है, उसके लिए अर्थव्यवस्था के राजकीय पूजीवादी रूपो को अपनाना उतना ही अधिक आवश्यक होता है।

राष्ट्रीयकरण की ओर सक्रमण का एक अन्य रूप है पूजीवादी उद्यमो पर उनके मजदूरो तथा कर्मचारियो का नियत्रण। इस नियत्रण मे उत्पादन की व्यवस्था एव प्रबन्ध, मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारिया की

---

राष्ट्रीयकरण और इजारेदारियो के प्रभाव पर अकुश लगाने के लिए मेहनतकश लोगा के सघर्ष से ही पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्र के हिता मे राजकीय क्षेत्र के इस्तेमाल की कुछ सभावना पैदा हो सकती है। —स०

भर्ती और बर्खास्तगी, माल की क्वालिटी-नियंत्रण तथा वितरण, वेतन प्रणाली आदि शामिल होते हैं। इस नियंत्रण की प्रक्रिया में मजदूर उत्पादन, वितरण आदि की व्यवस्था का अनुभव प्राप्त करते हैं।

रूस में पूंजीवादी उद्यमों पर मजदूरों के नियंत्रण के विविध रूप प्रचलित थे और इस क्षेत्र में संचित अनुभव का समाजवाद का पथ अपनानेवाले अन्य देशों में उपयोग और विकास किया गया। इन देशों में गठित मजदूर परिषदें, कारखाना समितियां अथवा उत्पादन समितियां राष्ट्रीयकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम थीं।

संक्रमण-काल में बड़े जमींदारों की जमीन का भी राष्ट्रीयकरण (पूर्णतः या आंशिक रूप में) किया जाता है। सोवियत संघ में सारी जमीन का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था और उसका बड़ा भाग सदा के लिए किसानों को मुफ्त दे दिया गया था। दूसरे हिस्से का इस्तेमाल सरकार ने राजकीय फार्मों को कायम करने के लिए किया। महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के फलस्वरूप सोवियत सरकार से रूस के किसानों को १५ करोड़ हेक्टर से अधिक जमीन प्राप्त हुई, जो पहले बड़े जमींदारों के कब्जे में थी। सोवियत सरकार ने किसानों को जमीन की खरीद के लिए मूल्य और मालगुजारी के रूप में जमींदारों को लगभग ७० करोड़ स्वर्ण रूबल अदा करने से मुक्त कर दिया।

**संक्रमण-काल में बहुक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था**

सबसे पहले उन बड़े पूंजीवादी उद्यमों का राष्ट्रीयकरण किया जाता है, जो सार्वजनिक राजकीय सम्पत्ति के रूप में रूपान्तरण के लिए तैयार होते हैं। पूंजीवादी देशों में इस प्रकार के उद्यम उद्योग, व्यापार, परिवहन और कृषि (बड़े पूंजीवादी फार्म तथा बागान जिनमें उजरती श्रम का उपयोग किया जाता है) के क्षेत्र में पाये जाते हैं। अगर सभी पूंजीवादी देशों में केवल बड़े पैमाने का पूंजीवादी उत्पादन ही होता, तो निजी सम्पत्ति का सार्वजनिक सम्पत्ति में रूपान्तरण और समाजवाद का निर्माण बहुत आसान होता। पूर्ण राष्ट्रीयकरण का अर्थ होता सार्वजनिक स्वामित्व का एकच्छत्र प्रभुत्व। परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है।

सभी और यहां तक कि सबसे विकसित पूंजीवादी देशों में भी बड़े पैमाने की पूंजीवादी कृषि के साथ-साथ कृषि के प्राक् पूंजीवादी रूपों सहित

उसके अनेक लघु पण्य उत्पादक रूप भी है। मिसाल के लिए, क्रान्ति के पहले रूस म किसानो की दो करोड से अधिक मिल्कियते थी, जिनमे ६५ प्रतिशत गरीब किसाना की, २० प्रतिशत दरमियानी किसाना की और १५ प्रतिशत धनी किसानो (कुलको) की थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाजवादी पथ पर अग्रसर होनेवाले लगभग एक दर्जन देशा मे पूजीवादी विकास के उच्च स्तर वाले केवल दो देश थे– चेकोस्लोवाकिया और जर्मन जनवादी जनतन्त्र। अन्य देशो के पूजीवादी विकास का स्तर औसत था और क्रान्ति की विजय के पहले उनमे से कुछ (चीनी लोक जनतन्त्र, वियतनामी जनवादी जनतन्त्र और कोरियाई लोक जनवादी जनतन्त्र) औपनिवेशिक तथा अर्ध औपनिवेशिक देश थे, जिनमे लघु पण्य उत्पादन प्रचलित था और अर्थव्यवस्था मे सामती कृषि का हिस्सा बहुत बडा था।

इन फार्मो का विपुल बहुलाश छोटे छाटे मालिका – किसाना, दस्तकारो, शिल्पकारो और दुकानदारो –की निजी सम्पत्ति है। लघु **पण्य-उत्पादन के क्षेत्र** मे आनेवाली इस विशाल सख्या मे खेतो के मालिक प्रत्यक्ष उत्पादक ही है, वे या तो अशत निजी खपत और अशत बेचने के लिए उत्पादन करते है (किसान), या अपनी कुल पैदावार को बेच देते है (शिल्पकार)। सामान्यतया इन सभी के पास पुराने ढग के औजार और उपकरण है, उनकी उत्पादन क्षमता निम्न कोटि की है और बडे पैमाने के उद्योग से उनके उत्पादनकारी तथा व्यापारिक सम्बन्ध कमज़ोर तथा अस्थिर होते है।

जैसा कि समाजवादी निर्माण के अनुभव से प्रमाणित होता है, कई समाजवादी देशो मे लघु पण्य उत्पादन के क्षेत्र को उत्तर क्रान्तिकारी अर्थव्यवस्था के प्रारम्भिक दौर मे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। निम्नाकित मिसाल को ही ले लीजिये। रूस मे अक्तूबर क्राति के सात साल बाद, १९२४ मे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन मे छोटे फार्मो का हिस्सा आधे से अधिक था।

क्रान्ति के बाद देश मे काफी समय तक **निजी पूजीवादी क्षेत्र** का अस्तित्व बना रहता है, जिसमे वे उद्यम शामिल रहते है, जिनका फौरन राष्ट्रीयकरण नही किया जाता और जो अभी पूजीपतियो के अधिकार मे बने रहते है। लघु पण्य उत्पादन का क्षेत्र निजी पूजीवादी क्षेत्र का शक्ति

स्रोत है, क्योकि छोटे फार्मों का एक हिस्सा (छोटा सा जरूर) उजरती श्रम का शोषण करता है और अन्तत समृद्ध हो जाता है।

कुल उत्पादन मे निजी पूजीवादी क्षेत्र का हिस्सा सामान्यतया नगण्य-सा होता है। परन्तु अर्थव्यवस्था मे अपने हिस्से की तुलना मे इसकी भूमिका बडी होती है। अपदस्थ, परन्तु अभी तक पूर्ण रूप से अपराजित पूजीपति वर्ग की शक्ति के बने रहने का मुख्य कारण यह है कि दीर्घकाल तक हर समय नये पूजीवादी तत्वो को पैदा करने मे सक्षम लघु पण्य उत्पादन के रूप मे उसके लिए शक्ति स्रोत कायम रहता है।

इस प्रकार पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल के दौरान निम्नाकित तीन आर्थिक क्षेत्र अनिवार्यत कायम रहते हैं **समाजवादी क्षेत्र**, जो राष्ट्रीयकरण के दौरान अस्तित्व मे आता है, **लघु पण्य उत्पादन क्षेत्र**, जो क्रान्ति के पहले से कायम रहता है और **निजी पूजीवादी क्षेत्र**, जो कुछ हद तक अपनी स्थिति बनाये रखता है और जिसे लघु पण्य उत्पादन क्षेत्र से सतत शक्ति प्राप्त होती रहती हैं।

विभिन्न देशो की विशिष्ट ऐतिहासिक और आर्थिक परिस्थितिया के अनुसार अन्य आर्थिक क्षेत्र भी हो सकते हैं। मिसाल के लिए उनमे **पितृसत्तात्मक** कृषक (विनिमयहीन) अर्थव्यवस्था, अर्थात उद्योग एव बाजार से असम्बद्ध और खुद उत्पादको द्वारा अपनी खपत के लिए प्रयुक्त छोटे पैमाने की निजी, अविकसित अर्थव्यवस्था शामिल है, जिसमे कबायली सबधो के प्रभावकारी अवशेष विद्यमान रहते हैं। राजकीय पूजीवाद के विविध रूपो का द्योतक **राजकीय पूजीवादी क्षेत्र** भी काफी व्यापक है।

अन्य सभी आर्थिक क्षेत्रो की तुलना मे समाजवादी क्षेत्र प्रमुख भूमिका अदा करता है। इसमे उद्योग, परिवहन, बैंक, थोक व्यापार, अर्थात वे सभी तत्त्व शामिल हैं, जिनके बिना आधुनिक अर्थव्यवस्था चल नही सकती। अन्य सभी क्षेत्रो की अपेक्षा समाजवादी क्षेत्र अधिक प्रगतिशील है। इस क्षेत्र के उद्यम और फार्म मेहनतकश लोगो के होते हैं, इसका विकास योजनानुसार और बिना होड तथा सकट के होता है। इस विशेषता के कारण, निजी पूजीवादी क्षेत्र की तुलना मे समाजवादी क्षेत्र के आर्थिक विकास और श्रम-उत्पादिता की गति तीव्र होती है और उत्पादन का विकास जनता की जरूरतो को पूरा करने के उद्देश्य से होता है। सरकार इस क्षेत्र को अपना पूरा समर्थन प्रदान करती है और अपने सभी साधनो का

इस्तेमाल कर इसे विकसित करती है। इस क्षेत्र को मजदूर वर्ग का समर्थन प्राप्त होता है, जो पूंजीपति वर्ग की बात को छोडिये, किसानो और अन्य मेहनतकश लोगो की अपेक्षा भी कही अधिक सगठित तथा बहुत अधिक क्रान्तिकारी होता है।

उक्त बातो से यह निष्कर्ष निकलता है कि सक्रमण-काल की अर्थव्यवस्था समाजवादी क्षेत्र से लेकर पितृसत्तात्मक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र तक विभिन्न क्षेत्रो का जटिल अतर्गथन है। यह अर्थव्यवस्था अन्तर्विरोधो से परिपूर्ण है तथा नये, **समाजवादी क्षेत्र और पुराने निजी पूंजीवादी क्षेत्र के बीच संघर्ष आर्थिक सघर्ष का मुख्य तत्त्व है।** ज्यो-ज्यो समाजवाद अधिकाधिक सफलताए प्राप्त करता जाता है, त्यो-त्यो समाजवादी क्षेत्र अधिक विस्तृत तथा शक्तिशाली होता जाता है और अन्तत समाज के सम्पूर्ण आर्थिक जीवन पर उसका एकच्छत्र प्रभुत्त्व स्थापित हो जाता है।

**नयी आर्थिक नीति**

नयी आर्थिक नीति सक्रमणकालीन अर्थव्यवस्था के बहुक्षेत्रीय स्वरूप को समाप्त करने और सभी मोर्चों पर समाजवादी क्षेत्र को विजयी बनाने का एक नितान्त आवश्यक साधन है।

नयी आर्थिक नीति को कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत राज्य के अस्तित्व की प्रारम्भिक अवस्थाओ मे लेनिन की प्रत्यक्ष सहभागिता के साथ निरूपित किया था। सोवियत सघ मे यह नीति पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण की एक महत्त्वपूर्ण मजिल साबित हुई। यह नीति आर्थिक तबाही को दूर करने, समाजवाद की आर्थिक आधारशिला बनाने, बडे पैमाने के उद्योग को विकसित करने, शहर और गाव के बीच घनिष्ठ आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने, मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के बीच सश्रय को सुदृढ बनाने, पूजीवादी तत्त्वो को अपदस्थ करने और समाजवाद को विजयी बनाने के लिए निकाली गई थी।

ये लक्ष्य सर्वतोमुखी सहकारिता तथा व्यापार के व्यापक विस्तार और भौतिक प्रेरणा के जरिये तथा आर्थिक स्वावलबन लेखा प्रणाली को लागू कर प्राप्त किये गये। सर्वहारा राज्य ने अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रो पर अपना नियत्रण कायम रखते हुए, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार और विकास के काम मे निजी पूजी को लगाने की अनुमति प्रदान की, जिसके कारण वह निजी पूजी पर कारगर नियत्रण रखकर उसका

मेहनतकश जनता के हितो तथा नये समाज के निर्माण मे उपयोग कर सका।

नयी आर्थिक नीति के बुनियादी सिद्धान्त, विशेष रूप से माल मुद्रा सम्बन्धो और उनसे सबधित कीमत, मुनाफे और उधार आदि जैसे प्रवर्गों का इस्तेमाल करने, समाजवादी प्रबन्ध के बुनियादी ढग के रूप मे आर्थिक स्वावलबन लेखा प्रणाली को लागू करने, सहकारिता और व्यापार का विकास करने तथा निजी पूजी का सहयोग प्राप्त करने के सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के है और अन्य देशो मे भी समाजवादी निर्माण के दौरान व्यापक रूप मे लागू किये जाते है।

यह ध्यान मे रखना चाहिए कि नयी आर्थिक नीति, विशेष रूप से जिस ढग से सोवियत सघ मे यह लागू की गई, समाजवादी पथ पर अग्रसर होनेवाले सभी देशो के लिए अनिवार्य नही है। स्थानीय परिस्थितियो को दृष्टि मे रखते हुए प्रत्येक राष्ट्र अर्थव्यवस्था के बहुक्षेत्रीय स्वरूप को खत्म करने और पूजीवादी तत्त्वो को उखाड फेकने के लिए अपने विशिष्ट तरीके निर्धारित करता है।

समाजवाद की पूर्ण विजय और समाजवादी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि के क्षेत्र मे निजी सम्पत्ति का समाजवादी सम्पत्ति मे रूपान्तरण अनिवार्य माना जाता है। यह लक्ष्य **कृषि उत्पादन मे सहकारिता** के जरिये प्राप्त किया जाता है।

**कृषि के क्षेत्र मे सहकारिता**

दो कारणो से कृषि का समाजवादी पुनर्गठन नितान्त आवश्यक है।

सर्वप्रथम, अपने आर्थिक स्वरूप के कारण लघु पण्य उत्पादन क्षेत्र सहज पण्य पूजीवादी विकास की प्रवृत्ति है, जिसके फलस्वरूप जहा बडी सख्या मे छोटे छोटे किसान निर्धन हो जाते है, वही किसानो का छोटा समूह उजरती श्रम का इस्तेमाल तथा शोषण करते हुए समृद्ध बन जाता है। इसका मतलब यह है कि जब तक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे लघु पण्य उत्पादन क्षेत्र कायम रहता है, तब तक पूजीवादी अर्थव्यवस्था के फिर से कायम होने का, अर्थात् पूजीवाद के पुनरुद्धार का आधार बना रहता है।

दूसरा कारण यह है कि जहा राष्ट्रीयकरण के फलस्वरूप उद्योग मे स्थापित समाजवादी सम्बन्धो से औद्योगिक विकास की तीव्र गति सुनिश्चित

हो जाती है, वही पिछडी हुई तकनीक पर आधारित छोटे-छोटे बिखरे हुए खेत आबादी तथा उद्योग की जरूरतो को पूरा करने के लिए खाद्य पदार्थों तथा कच्चे माल की पर्याप्त उपज को सुनिश्चित नही बना सकते।

लगता तो यही है कि छोटे-छोटे खेतो का राष्ट्रीयकरण करने तथा इस प्रकार उन्हें सार्वजनिक सम्पत्ति बना देनें से अधिक कोई सुगम उपाय नही है। परन्तु यह किसी भी दशा मे नही किया जाना चाहिए, क्योकि यद्यपि किसान सम्पत्ति का मालिक है, परन्तु वह शोषक नही है। वह अपने श्रम से अपनी रोजी कमाता है और स्वाभाविक रूप से बडे पूजीपति अथवा जमीदार की भाति उसकी सम्पत्ति उससे नही छीनी जा सकती। इसके अलावा, ज़मीन के अपने छोटे टुकडे, अपने घर और खेती के अपने औज़ारो से चिपके हुए किसान की मनोवृत्ति को भी ध्यान मे रखना चाहिए।

न ही छोटे-छोटे खेतो को कोई लाभकारी मुआवज़ा प्रदान कर और उनकी पहले की आय के स्तर की मज़दूरी देकर सभी लघु उत्पादको को राजकीय उद्यमो मे काम पर लगाकर राजकीय फार्मों मे परिवर्तित किया जा सकता है। इस प्रकार के छोटे-छोटे फार्मो के कायम रहने से उत्पादक शक्तियो के अपर्याप्त विकास और उत्पादन के पूजीवादी ढग से अपूर्ण समाजीकरण का आभास मिलता है। यदि सभी लघु उत्पादक अपनी-अपनी सम्पत्ति का परित्याग कर दे और जन राज्य के लोक-सेवक बनना स्वीकार कर ले, तो भी राज्य ऐसा नही कर पायेगा।

स्पष्टत कोरी इच्छा ही पर्याप्त नही होती। औपचारिक रूप से, कानूनन, अथवा कागजी कार्रवाई द्वारा छोटे-छोटे खेतो का समाजीकरण किया जा सकता है, परन्तु वास्तव मे पुराने औज़ारो तथा कालातीत श्रम-सगठन पर आधारित छोटी-छोटी इकाइया यथावत् बनी रहेगी, जिन के उत्पादक बिखरे हुए छोटे-छोटे खेतो पर अलग-अलग काम करेगे।

ज़मीन के भूखे तथा सर्वथा भूमिरहित किसान और खेत मज़दूर ज़मीन प्राप्त करने और इस प्रकार अधिक ख़ुशहाल गृहस्थ बनने की आशा से क्रान्ति मे सक्रिय भाग लेते हैं। विजयी क्रान्ति को उन्हे निराश नही करना चाहिए। क्रान्ति के दौरान बडे जमीदारो और पूजीपतियो की काफी जमीन सामान्यतया उसे जोतने-बोनेवालो को दे दी जाती है, जिसके फलस्वरूप क्राति के बाद समामेलित होने की जगह छोटे उत्पादको की सख्या बढ जाने के कारण कृषि और अधिक बिखर जाती है।

का मतलब निजी सम्पत्ति का उन्मूलन नही है। सहकारी समिति के हर सदस्य के पास अपना घर, मवेशी और उसे दिये गये ज़मीन के टुकडे की जोताई-बोआई के लिए खेती के अपने औजार होते हैं।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो द्वारा सचित अनुभव से प्रकट होता है कि कृषि सहकारी समितिया का कार्यभार बहुत ही कठिन और जटिल है। इसके लिए काफी धन, बडी सख्या मे प्रशिक्षित कर्मचारियो और कम्युनिस्ट पार्टी तथा सर्वहारा राज्य की ओर से किया जानेवाला काफी सगठनात्मक एव शैक्षिक कार्य अपेक्षित है। कृषि सहकारिता अनिवार्यत वर्ग शत्रुओ – ग्रामीण पूजीपति वर्ग और उसके भाडे के टट्टुओ के प्रतिरोध को भग करने, किसानो की निजी स्वामित्व से सबधित मनोवृत्ति को दूर करने, ग्रामीण जीवन की निष्क्रियता तथा रुढिवादिता, पुराने, आदिकालीन दस्तूरो तथा आदता से उनके लगाव और पुराने शोषक समाज से विरासत मे प्राप्त शहर के प्रति, मजदूर वर्ग के प्रति उनके अविश्वास की भावना को दूर करने के साथ सम्बद्ध है। जटिलता तथा कठिनाई के बावजूद कृषि सहकारिता सर्वथा व्यावहारिक कार्यभार है, जिसकी निष्पत्ति समाजवादी निर्माण के लिए बडे महत्त्व की है।

कृषि सहकारी समितिया बनाने की सोवियत योजना लेनिन ने तैयार की थी। इसका बुनियादी सिद्धान्त यह है कि **किसानो को सहकारी समितियो मे स्वैच्छिक आधार पर शामिल होना चाहिए।** लेनिन के नेतृत्व मे कम्युनिस्ट पार्टी किसानो की इच्छा के प्रतिकूल सहकारी समितियो की बलात स्थापना के विरुद्ध थी और इस पर ज़ोर दिया करती थी कि किसानो को समझा बुझाकर, लघु पण्य उत्पादन, निजी अर्थव्यवस्था के मुकाबले सहकारिता की अच्छाइयो को दिखाकर सहकारी समितियो म शामिल होने के लिए आकृष्ट करना चाहिए।

लेनिन की समाजवादी सहकारिता योजना मे ग्रामीण क्षेत्रो मे क्रमिक समाजवादी सुधारो की भौगोलिक, आर्थिक, जातीय और अन्य खास परिस्थितियो को ध्यान मे रखते हुए निम्नतम से उच्चतम प्रकार की सहकारी समितियो मे सक्रमण की परिकल्पना की गई थी। इसका मतलब है सहकारी समितियो के प्रबन्ध म अविचल जनवाद तथा व्यक्तिगत और सामाजिक हितो मे समन्वय कायम करना। सावियत सघ मे कृषि सहकारिता का लक्ष्य लगभग दस वर्ष की अवधि म पूरा हुआ।

लेनिन सर्वहारा राज्य द्वारा सहकारी समितियो को प्रदत्त सहायता तथा मजदूर वर्ग और किसानो के बीच सश्रय के सुदृढीकरण एव विकास को विशेष महत्त्व प्रदान करते थे। सहकारी समितियो को खेती की मशीनें सप्लाई करके, *कृषि के आधुनिक तरीको को काम मे लाने के लिए सहायता* प्रदान करके, ज़मीन का सुधार तथा उसकी सिचाई की व्यवस्था करके और शहर तथा गाव के बीच राजकीय एव सहकारी व्यापार को प्रोत्साहन प्रदान करके राज्य कृषि उपज और किसानो के कल्याण मे वृद्धि के लिए सहायता प्रदान करता है। जहा तक किसानो का सम्बन्ध है, सत्तारूढ मजदूर वर्ग द्वारा प्रदत्त दैनदिन सहायता और समर्थन को अनुभव करते हुए वे उसका आदर और उसपर विश्वास करते है और समाजवाद के निर्माण मे सक्रिय भाग लेने लगते है।

सहकारिता के फलस्वरूप कृषि उपज मे तेजी से वृद्धि हुई। किसानो के फार्मों को समामेलित करके सयुक्त जनशक्ति तथा उत्पादन के समाजीकृत साधनो (भूमि, खेती के औजार आदि) का अधिक युक्तिसगत उपयोग सभव हो गया। नयी तकनीक को काम मे लाये बिना भी किसानो के सामान्यतया सम्मिलित उत्पादन के साधनो से सामूहिक खेती की उपयुक्त व्यवस्था के ज़रिये उत्पादिता मे वृद्धि होती है। इस प्रकार सोवियत सघ मे अलग-अलग किसान फार्मों की तुलना मे सोवियत कृषि के प्रारम्भिक समूहीकरण से उत्पादिता मे २५ से ३० प्रतिशत तक की वृद्धि करना सभव हो गया।

ऐसे देशो मे जहा सामान्यतया उद्योग और विशेष रूप से कृषि मशीन उद्योग का बहुत कम विकास हो पाया है, तथा जहा बडी सख्या मे खेत मजदूर बेकार अथवा आशिक रूप से काम पर लगे हुए है, सहकारी समितियो की यह अवस्था (एकीकृत, किन्तु यत्रीकृत नही) काफी लम्बे समय तक फलदायक हो सकती है। सहकारी समितियो को खेती की नयी मशीनें सप्लाई करके राज्य कृषि को धीरे धीरे पूर्ण यत्रीकृत कृषि मे रूपान्तरित करता है।

अगर सम्बन्धित देश खेती की बहुत कम मशीनें तैयार करता है और सहकारी समितिया अभी सुदृढ नही होती तथा नयी मशीनें खरीदने के लिए उनके पास पर्याप्त धन नही होता, तो राज्य किसानो की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए अपने अथवा अपने तथा सहकारी समितियो के साधनो

से राजकीय या राजकीय तथा सहकारी मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन कायम करता है।

इन स्टेशनो मे काम करनेवाले मजदूर और तक्नीशियन स्थानीय परिस्थितियो के अनुरूप नक्दी अथवा जिन्सी भुगतान के आधार पर सहकारी समितियो की जमीन को जोतने, बोने और फसल काटने के लिए खेती की मशीनो का इस्तेमाल करते हैं। मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन मशीनो को चलाने के साथ ही किसानो को कृषि के आधुनिक तरीको की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने मे भी मदद करते हैं। वे किसानो के लिए अच्छे स्कूल के समान हैं, जो वहा ट्रैक्टर-ड्राइवर, कम्बाइन-आपरेटर और मेकेनिक के काम का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

ज्यो-ज्यो देश मे खेती की मशीनो का उत्पादन बढता जाता है तथा सहकारी समितियो की आय मे वृद्धि होती जाती है, त्यो-त्यो वे राज्य से अपनी आवश्यकतानुसार मशीनें खरीदने की स्थिति मे आती जाती है।

उत्पादन-तक्नीकी सहायता के रूप मे मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन सर्वप्रथम सोवियत सघ मे ही कायम किये गये थे। वे ३० साल तक अस्तित्व मे रहे और सामूहिक फार्मों को विकसित तथा सुदृढ करने और कृषिकर्मियो को प्रशिक्षण प्रदान करने मे उनकी भूमिका बहुत बडी थी। इस समय खेती की अधिकाश मशीनें खुद सहकारी समितियो की हैं। परन्तु इन मशीनो के रख-रखाव, उनकी मरम्मत तथा उनकी जगह दूसरी मशीनो को उपयोग मे लाने का दायित्व सामूहिक फार्मों से अनुबन्धो के अनुसार विशेष रूप से सगठित राजकीय उद्यमो पर है।

अधिकाश जनवादी जनतत्रो मे मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन विभिन्न रूपो और विभिन्न शर्तों पर आज भी काम करते है। वे उत्पादन बढाने, उसे बेहतर, अधिक दक्ष और लाभजनक बनाने मे कृषि सहकारी समितियो की सहायता करते हैं।

इस प्रकार कृषि अर्थव्यवस्था का सामाजिक और तक्नीकी पुनर्गठन हो रहा है। छोटे-छोटे निजी फार्म मिलकर विस्तारित पुनरुत्पादन मे सक्षम बडे पैमाने के सामूहिक उद्यम बन जाते है। सहकारी समितियो की स्थापना से किसानो की गरीबी, शोषण और गरीब, दरमियानी तथा धनी किसानो मे उनका स्तरीकरण समाप्त हो जाता है। किसान काम करने तथा विप

गए काम की किस्म और मात्रा के अनुसार पारिश्रमिक पाने के अधिकार के साथ सहकारी समितियो के समान अधिकारप्राप्त सदस्य बन जाते हैं। सम्पूर्ण जनता के अधिकार मे राजकीय उद्योग तथा बडे पैमाने की यन्त्रीकृत तथा समाजीकृत कृषि समाजवादी अर्थव्यवस्था की आधारशिला है।

सहकारिता से नये पूजीवादी तत्त्वो—व्यापारियो और कुलको—के अस्तित्व मे आने की कोई आशका नही रहती। इस प्रकार देश मे समाजवाद की पूर्ण विजय सुनिश्चित हो जाती है।

किसानो के समूहीकरण तथा दस्तकारो, शिल्पकारो और छोटे-छोटे दूकानदारो की सहकारी समितियो की स्थापना का काम पूरा हो जाने से सक्रमण-काल की अर्थव्यवस्था का बहुक्षेत्रीय स्वरूप समाप्त हो जाता है। समाजवादी क्षेत्र कई क्षेत्रो मे एक नही रह जाता और समाजवादी व्यवस्था मे परिणत हो जाता है, जिसकी परिधि मे उत्पादन की सभी शाखाए आ जाती हैं।

कौन किसे पराजित करेगा—समाजवाद विजयी होगा अथवा पूजीवाद—यह प्रश्न सक्रमण-काल के दौरान हल हो जाता है। **ज्यो ही समाजवाद कई आर्थिक क्षेत्रो मे एक नहीं रह जाता और पूरी अर्थव्यवस्था को परिवेष्टित कर लेता है, त्यो ही समाजवाद की आर्थिक विजय हो जाती है।**

इससे यह निष्कर्ष निकलता है सार्वजनिक स्वामित्व पर आधारित होने के कारण समाजवाद क्रान्ति के पहले पूर्ववर्ती प्रणाली के गर्भ से उत्पन्न नही हो सकता। और न ही क्रान्ति के बाद वह पूर्वनिष्पन्न रूप मे आविर्भूत हो सकता है। समाजवादी निर्माण के लिए विशेष अवधि—सक्रमण-काल अपेक्षित है। इस काल की बहुक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था मे विकास के समाजवादी तथा पूजीवादी—दोनो—रास्तो की वस्तुगत क्षमताए निहित रहती हैं। इन दोनो मे कौन विजयी होगा, इसका निर्णय सत्तारूढ वर्गो की आर्थिक नीति और जनसाधारण के चेतन और रचनात्मक कार्यकलाप द्वारा होना है।

**समाजवादी औद्योगीकरण**

नवीनतम वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियो पर आधारित बडे पैमाने के आधुनिक उद्योग का निर्माण, विशेषकर कम अथवा अपर्याप्त रूप मे विकसित उद्योग वाले देशो मे समाजवाद के निर्माण की एक अनिवार्य पूर्वापेक्षा है।

औद्योगीकरण, भारी उद्योग का विकास समाजवादी समाज का आधार-स्तम्भ है, जो पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल मे निर्मित होता है। जैसा कि लेनिन ने लिखा था, "समाजवाद के लिए एकमात्र संभव भौतिक आधार बडे पैमाने का ऐसा मशीन-उद्योग हो सकता है, जो कृषि को भी पुनर्गठित कर सकता हो।"* औद्योगीकरण विशेष रूप से उन देशो के लिए महत्त्वपूर्ण है, जो समाजवाद का निर्माण कर रहे है, किन्तु जिनका अपना विकसित उद्योग नही है, अर्थात जो अर्थव्यवस्था के प्राक्-पूजीवादी रूपोवाले खेतिहर देश है। जो देश इस समय समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण कर रहे है, उनमे से अधिकांश अतीत मे खेतिहर देश थे।

मिसाल के लिए क्रान्ति के पहले के रूस को ही लीजिए। जहां तक औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा का सम्बन्ध है, उसे दुनिया मे पाचवा स्थान (सयुक्त राज्य अमरीका, जर्मनी, ब्रिटेन और फ़ास के बाद) प्राप्त था। अर्थव्यवस्था मे औद्योगिक और निर्माण क्षेत्र का हिस्सा ४२.५ प्रतिशत और शेष—५७.५ प्रतिशत—कृषि का था। क्रान्ति के पहले के रूस मे ब्रिटेन की अपेक्षा चार गुना, जर्मनी की अपेक्षा पाच गुना और सयुक्त राज्य अमरीका की अपेक्षा दस गुना कम आधुनिक मशीनें थी। उस समय उसकी लगभग आधी मशीनें तथा साजसामान दूसरे देशो से मगाये जाते थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाजवादी पथ पर अग्रसर होनेवाले अधिकाश देशो की अर्थव्यवस्था मे कृषि क्षेत्र की प्रमुखता थी। यह सर्वथा तर्कसगत है कि इन देशो मे समाजवाद के सफल निर्माण में औद्योगीकरण बहुत ही सहायक रहा।

समाजवादी औद्योगीकरण समाजवाद की भौतिक एवं तक्नीकी आधारशिला रखता है, अर्थव्यवस्था मे अबाधित वैज्ञानिक तथा तक्नीकी प्रगति सुनिश्चित करता है, श्रम-उत्पादिता और मशीन-मजदूर अनुपात बढाता है और काम की परिस्थितियो मे सुधार करता है। इससे अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ के पुनर्गठन का तक्नीकी आधार सुलभ होना

---

*व्ला० इ० लेनिन, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की तीसरी काग्रेस मे पेश की गई रिपोर्ट।

है, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सास्कृतिक प्रगति का पथ प्रशस्त होता है, देश आर्थिक एव राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त करने मे सक्षम होता है और साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी शक्तियो के मुकाबले उसकी प्रतिरक्षात्मक क्षमता सुदृढ होती है।

देश के जीवन पर भी औद्योगीकरण का बहुत बडा सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव पडता है। इससे अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्र मे सार्वजनिक स्वामित्व सुदृढ होता है, शहरी पूजीवादी तत्वो को निकालने मे सहायता मिलती है और इस प्रकार उद्योग मे समाजवादी क्षेत्र को विजय प्राप्त होती है। बडे पैमाने के उद्योग का विकास मजदूर वर्ग की सख्या मे बढोतरी और सामाजिक जीवन मे उसकी भूमिका तथा महत्त्व और अन्य वर्गों एव सामाजिक तबको पर उसके प्रभाव मे सतत वृद्धि से सम्बद्ध है। सक्षेप मे, औद्योगीकरण से सर्वहारा राज्य का आर्थिक और राजनीतिक आधार विस्तृत तथा सुदृढ होता है और इस प्रकार समाजवादी सामाजिक शक्तियो की स्थिति मजबूत होती है।

इसे दृष्टि मे रखना आवश्यक है कि समाजवादी औद्योगीकरण पूजीवादी औद्योगीकरण से अपने रूपो तथा तरीको मे मूलत. भिन्न होता है। पूजीवादी औद्योगीकरण मेहनतकश लोगो के शोपण, कम विकसित देशों की लूटखसोट अथवा पराजित राष्ट्रो से प्राप्त फौजी खिराज पर आधारित होता है। इसके प्रतिकूल समाजवादी औद्योगीकरण मुख्यतः श्रम-उत्पादिता मे वृद्धि के फलस्वरुप आन्तरिक सचय, योजनाबद्ध आर्थिक विकास और भौतिक, श्रम तथा वित्तीय साधनों के युक्तिसगत उपयोग के द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।

समाजवादी औद्योगीकरण के ध्येय भी मूलत. भिन्न है। जहा पूजीपतियो को पूजीवादी औद्योगीकरण से यथासभव अधिक मुनाफा कमाना आवश्यक होता है, वही समाजवादी औद्योगीकरण के जरिये मेहनतकशो की भलाई करने, उनकी जरूरतो को पूरा करने और उनके सर्वतोमुखी विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने के मानवीय ध्येय का पालन किया जाता है।

जाहिर है कि औद्योगीकरण कोई आसान काम नही है। इसके लिए लोगो से वृहत श्रम-प्रयास, भारी पूजी निवेश और बहुधा त्याग अपेक्षित होता है। सोवियत जनता द्वारा, जिसने समाजवाद के निर्माण का पथ

प्रशस्त किया, झेली गयी कठिनाइया विशेष रूप से दुर्धर्ष थी। आर्थिक दृष्टि से वह एक पिछडा हुआ देश था, जिसकी अर्थव्यवस्था प्रथम विश्वयुद्ध और बाद मे गृहयुद्ध के कारण तबाह हो गई थी। नवोदित सोवियत जनतत्र चारो ओर से शत्रुओ से घिरा हुआ था और उन्होने समाजवाद के निर्माण को रोकने के लिए आर्थिक नाकेबन्दी से लेकर सशस्त्र हस्तक्षेप तक सभी साधनो का इस्तेमाल किया। सोवियत रूस ऋण प्राप्त करने की सभावना से वचित था, क्योकि साम्राज्यवादी अन्य राष्ट्रो को उनकी राजनीतिक स्वाधीनता के बदले ही ऋण दिया करते थे और निसन्देह यह ऐसी बात थी, जिसे स्वीकार करने को रूस के मजदूर और किसान तैयार नही थे। उन्होने अपने देश मे पूजीपतियो को विदेशी पूजीपतियो के पजे म फसने के लिए नही निकाला था।

इस परिस्थिति मे बस एक ही उपाय शेष था क्रान्तिकारी जनता की सकल्पशक्ति, क्रियाशीलता और श्रम पर भरोसा करना। कठिनाइयो और कष्टो को झेलते हुए सोवियत जनता ने प्रथम कोटि का उद्योग खडा कर दिया, जिसका वह विस्तार और सुधार करती जा रही है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप सोवियत सघ बिल्कुल बदल गया। देश भर मे नये नये उद्योग तथा बडे बडे कारखानो और बिजलीघरो का जाल सा फैल गया। १६१३ की तुलना मे १६४० मे कुल औद्योगिक उत्पादन मे ७ ७ गुना वृद्धि हुई, जबकि भारी उद्योग के उत्पादन मे करीब १२ गुना और विद्युत के उत्पादन मे २५ गुना बढोतरी हुई। जो देश पहले अपनी जरूरत की प्राय सभी मशीनें आयात करने को विवश था, वह औद्योगीकरण के फलस्वरूप आधुनिक मशीनो तथा साजसामान का निर्माण और निर्यात तक करने लगा। औद्योगीकरण से बडे पैमाने पर सामूहिक खेती को विकसित करना, उसे नवीनतम प्रकार की मशीने सप्लाई करना, उपभोक्ता वस्तुओ के उत्पादन मे काफी वृद्धि करना तथा सोवियत सघ की और इस प्रकार सम्पूर्ण समाजवादी शिविर की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ बनाना सभव हो गया।

अन्य समाजवादी देशो मे भी औद्योगीकरण की योजना सफल रही है। अपना आधुनिक उद्योग खडा करने मे इन देशो ने सोवियत सघ के औद्योगीकरण के प्रचुर अनुभव से लाभ उठाया है और उन्हे सम्पूर्ण

समाजवादी शिविर से सतत समर्थन तथा सहायता मिली है। स्वाभाविक रूप से इससे उन्हें समाजवाद की ओर अपनी प्रगति में भी सहायता मिली है।

वैज्ञानिक समाजवाद के शत्रु दावा करते हैं कि औद्योगीकरण जन कल्याण व सुधार में बाधक है और कृषि के विकास में रुकावट डालता है। उनका तर्क कुछ इस तरह का होता है जन कल्याण का मतलब है सर्वप्रथम लोगों के लिए खाद्य पदार्थ, वस्त्र, जूते और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की व्यवस्था। चूंकि रोटी, गोश्त, दूध और अन्य खाद्य पदार्थ तथा साथ ही इनके उद्योगों के लिये कच्चा माल (ऊन, रुई, चमड़ा आदि) कृषि ही पैदा करती है, इसलिए इसका मतलब यह है कि उद्योग को नहीं, बल्कि कृषि को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। हम इस दावे का खण्डन नहीं करना है कि खाद्य पदार्थ और ऊन, चमड़ा आदि कच्चा माल औद्योगिक नगरों में नहीं पैदा होता और कृषि का विकास जन कल्याण का महत्त्वपूर्ण सूचक है। परन्तु, हम इस तथ्य को भी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि आजकल बहुत ही विकसित उद्योग के बिना कृषि का सफल विकास नहीं हो सकता। भोजन तथा कच्चे माल की आवश्यकताएं इतनी अधिक हैं कि उनकी पूर्ति केवल बहुत ही विकसित, यन्त्रीकृत और वैज्ञानिक रूप से संगठित कृषि ही कर सकती है, जिसके लिये निश्चय ही औद्योगिक विकास का उच्च स्तर अपेक्षित है। ग्रामीण क्षेत्रों को बहुत ही उत्पादक मशीनों, खनिज उर्वरकों, विकास उद्दीपकों और प्रतिजैविक पदार्थों की आवश्यकता है। अन्तिम बात यह है कि गांव वालों का कपड़े और जूते, बर्तन और सांस्कृतिक सुविधाओं के बिना भी काम नहीं चल सकता। ये चीजें उन्हें शहर से ही उपलब्ध हो सकती हैं। इसी कारण किसानों के लिए शहरी उद्योग केवल आवश्यक ही नहीं है, उसके बिना उनका जीवन मुश्किल है।

प्राचीन ग्रामीण जीवन के युगों पुराने पिछड़ेपन और भयानक अज्ञान को दूर कर गांवों का समाजवादी पथ पर अग्रसर होना केवल अत्यंत यन्त्रीकृत कृषि सुनिश्चित कर सकती है। लेनिन ने लिखा था आधुनिक, विकसित तकनीकी आधार पर उद्योग को संगठित करने से ही ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाना और देश के सुदूर भागों में भी

पिछड़ेपन, अनभिज्ञता, गरीबी, रोग और बर्बर अवस्था को दूर करना सभव होगा।"*

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो द्वारा सचित अनुभव से समुचित रूप मे सिद्ध हो गया है कि औद्योगीकरण के जरिये ही वे कृषि की उत्पादिता बढाने, किसानो को गरीबी तथा भूख से बचाने, उनकी चेतना, जीवन-पद्धति और सास्कृतिक स्तर मे परिवर्तन करने मे सक्षम हुए।

स्वाभाविक ही है कि गावो को जिन सभी चीजो की जरूरत होती है, उन्हे वे तत्काल तथा अपने मनोनुकूल शीघ्रातिशीघ्र शहर से नही पाते। कुछ समय तक, विशेष रूप से औद्योगीकरण की प्रारम्भिक अवस्थाओ मे गाव उद्योग को एक तरह की पेशगी देता है। परन्तु बाद मे, उद्योग के अपने पैरो पर खडा हो जाने के बाद, वह किसानो की माग पूरी करने लगता है। आज सभी समाजवादी देशो मे किसान औद्योगीकरण का लाभ उठाने लगे है। मिसाल के लिए रूसी गावो को ही लीजिए। पुराने जमाने के गरीबी से ग्रस्त तथा अधभूखे रूसी गाव अब बडे पैमाने के यत्रीकृत उत्पादन, बिजली, रेडियो, टेलीविजन, स्कूल और अस्पतालो से लैस समाजवादी गावो मे परिवर्तित हो गये है। जारशाही के दारुण काल से सोवियत सत्ता को विरासत मे प्राप्त पुराने, पिछडे हुए गावो का वह सतापकारी रूप सदा के लिए समाप्त हो गया है।

इस प्रकार औद्योगीकरण कृषि सहित सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समाजवादी आधार पर पुनर्गठन का साधन है।

किन्तु उक्त निष्कर्ष का तात्पर्य यह नही है कि समाजवाद के पथ पर अग्रसर होनेवाले प्रत्येक छोटे देश को वर्तमान परिस्थितियो मे आधुनिक उद्योग की सभी शाखाओ का विकास करना चाहिए। यह अव्यावहारिक और अनुपयुक्त बात है। वर्तमान औद्योगिक विशेषीकरण के उच्च स्तर और सहकारिता के कारण प्रत्येक देश के लिए उद्योग की अलग-अलग शाखाओ के विस्तार पर प्रयास सकेन्द्रित करना और अन्य समाजवादी देशो तथा कुछ हद तक पूजीवादी देशो से भी अन्य शाखाओ की उपज को पाना सभव हो गया है।

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और जन-कमिसार परिषद् के काम की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति को रिपोर्ट।

# ४. निर्बाध बाजार से योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था तक

**पूजीवादी अर्थव्यवस्था का स्वतःस्फूर्त विकास**

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, समाजवाद स्वतःस्फूर्त ढंग से नहीं उदित होता, बल्कि सर्वहारा राज्य और मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व मे मेहनतकश जनता के चेतन तथा उद्देश्यपरक कार्यकलाप से होता है। समाजवादी विकास में राज्य और पार्टी की उपयुक्त नीति, विशेष रूप से आर्थिक नीति, अर्थात् आर्थिक निर्माण का पथ-प्रदर्शन बहुत महत्त्वपूर्ण है। पूजीवाद से समाजवाद मे सक्रमण के काल मे आर्थिक पथ-प्रदर्शन का मुख्य कार्यभार तथाकथित निर्बाध बाजार को खत्म करना और योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था को सगठित करना है।

पूजीवादी समाज मे अर्थव्यवस्था का स्वतःस्फूर्त विकास होता है, यद्यपि राजकीय इजारेदार पूजीवाद के अन्तर्गत पूजीवादी राज्य अर्थव्यवस्था का आयोजन करने के सक्रिय प्रयास करता है। इस लक्ष्य के दृष्टिगत वह केन्द्र द्वारा प्रशासित निकाय और सगठन कायम करता है, जो अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन कार्यक्रम, योजनाए और तखमीने तैयार करते हैं। फिर भी अन्तिम लेखे मे प्रत्येक मालिक अपने कारोबार का मनोनुकूल तथा अपने निजी हितो के अनुसार सचालन करता है। कपड़ा मिल का मालिक कम मजदूरी पर मजदूरो को काम पर लगाना तथा कम मूल्य पर सूत खरीदना और अधिक कीमत पर कपडा बेचना चाहता है। कृषि पदार्थ पैदा करनेवाला किसान अपने परिवार की जरूरतो की पूर्ति के लिए वस्तुए खरीदने के उद्देश्य से यह पदार्थ मुनाफे पर बेचना चाहता है, जबकि एक बडी व्यावसायिक कम्पनी या दलाल उन्हे कम कीमत पर खरीदना और इस प्रकार अपने मालिक के लिए अधिक मुनाफा कमाना चाहता है। हरेक अपने हित मे, अपने दायित्व पर काम करता है। इसके फलस्वरूप पूजीवादी समाज स्वतःस्फूर्त, योजनाहीन रूप मे विकसित होता है। निजी स्वामित्व और शोषण पर आधारित समाज की अर्थव्यवस्था मनुष्य के नियन्त्रण के बिल्कुल बाहर होती है।

इन परिस्थितियों मे अर्थव्यवस्था के विकास का कारक क्या है? यह निर्णायक कारक निर्बाध बाजार है। बाजार मालिको को एक दूसरे से

जोडता है। बाजार के मूल्य-स्तर से जाहिर होता है कि किस वस्तु की माग है। यदि किसी वस्तु की माग अधिक और उसकी सप्लाई कम है, तो कीमत चढ जाती है। अगर माग कम और चीज की सप्लाई पर्याप्त हो, तो कीमत गिरती है। इस प्रकार कीमतो के उतार-चढाव के अनुरूप सम्बन्धित वस्तु का उत्पादन बढता या कम होता है। निजी स्वत्वाधिकारियो के समाज मे, जिनके हित एक दूसरे के प्रतिकूल होते हैं और जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था तथा समाज के कल्याण की कोई चिन्ता किये बिना अपना-अपना हित-साधन करने मे लगे रहते हैं, बाजार ही वह मुख्य शक्ति है, जो अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करती है।

यह सच है कि आधुनिक राजकीय इजारेदार पूजीवाद मे **राजकीय विनियमन** महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पूजीवादी राज्य सकट को टालने के लिए विविध उपाय काम मे लाता है, जिनमे अन्य बातों के अतिरिक्त इजारेदारियो को राज्य की ओर से दिये जानेवाले आर्डरो, विशेष रूप से फौजी आर्डरो मे वृद्धि, उन्हे तथा विशेष रूप से वित्तीय कठिनाइयो मे फसी इजारेदारियो को आर्थिक सहायता (मुफ्त अनुदान और परिदान) प्रदान करने और इजारेदारियो द्वारा उत्पादित अतिरिक्त वस्तुओ की खरीद के जरिये अतिरिक्त राजकीय आरक्षित स्टाक की व्यवस्था करना शामिल हैं। उपभोक्ता वस्तुओ के उत्पादन को कृत्रिम रूप से कम करने के अलावा, जिससे सप्लाई मे गिरावट आ जाती है, राज्य माग को बढाने के उद्देश्य से निम्नाकित कदम उठाता है: टिकाऊ वस्तुओ की उधार-बिक्री; व्यापक विज्ञापन; फैशन मे जल्दी-जल्दी परिवर्तन; समय-समय पर न बिकनेवाली वस्तुओ की कम कीमतो पर बिक्री, आदि। इन कदमो का भार मेहनतकश लोगो, अर्थात् करदाताओ पर पड़ता है, जिनसे करो के रूप मे प्राप्त धन से राजकीय बजट बनता है और जिसका सरकार अपने सकट विरोधी उपायो की क्रियान्विती का खर्च पूरा करने के लिए उपयोग करती है। फिर भी, इजारेदारियो को अधिकतम मुनाफा कमाने की गारटी दी जाती है।

पूजीवादी राज्य सरकार और निजी फार्मों के पूजी-निवेश सम्बन्धी कार्यक्रमो मे समन्वय कायम करता है, आर्डरो तथा दुर्लभ कच्चे माल का वितरण करता है, इजारेदारियो के लिए लाभजनक कीमते निर्धारित करता है, कर नीति द्वारा राष्ट्रीय आय का पुनर्वितरण करता है, और साजसामान

के नवीकरण के लिए उनके बीच ऋण तथा आर्थिक परिदान का वितरण करता है। राज्य अक्सर नये उद्योगों को खड़ा करता है, तकनीक की नयी शाखाओं को विकसित करने के लिए पहलकदमी करता है, प्रारम्भिक अवस्था में नये उद्योगों के विकास में पूंजी लगाने का जोखिम उठाता है, क्योंकि इस अवस्था में निजी इजारेदारियों को पर्याप्त मुनाफा कमाने की संभावना नहीं रहती। राज्य फौजी उत्पादन पर भी अपना नियंत्रण कायम रखता है और अतिमहत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक शोध को निदेशित करता है।

राजकीय इजारेदार कार्यक्रम अथवा योजनाएं (फ्रांसीसी आर्थिक योजनाएं, जापान की 'इकेदा" योजना, ब्रिटेन का लेबर आर्थिक कार्यक्रम आदि) निर्बाध बाज़ार को सीमित करने, विज्ञान तथा तकनीक को प्रोत्साहन प्रदान करने की ओर, और जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, आधुनिक उत्पादन के सार्वजनिक स्वरूप, जिसके लिए केन्द्रीकृत योजनाबद्ध निदेशन अपेक्षित है, तथा स्वामित्व के निजी स्वरूप, निजी पूंजीवादी स्वामित्व, जो निर्बाध बाज़ार को सतत बढ़ावा प्रदान करता है और जिसे पूर्ण रूप से नियंत्रित करने में लोग असमर्थ हैं, के अन्तर्विरोध को, चाहे आंशिक रूप में ही सही, दूर करने की ओर लक्षित हैं।

परन्तु पूंजीवाद के अन्तर्गत राजकीय विनियमन की भूमिका चाहे जितनी महत्त्वपूर्ण हो, सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के वैज्ञानिक प्रबन्ध अथवा आयोजन से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि दोनों बातें निजी पूंजीवादी स्वामित्व के प्रतिकूल हैं। राजकीय विनियमन से साम्राज्यवाद का सारतत्त्व नहीं बदल जाता, शोषण, निर्बाध बाज़ार, होड़ और उत्पादन में अव्यवस्था समाप्त नहीं होती।

संयुक्त राज्य अमरीका में युद्धोत्तरकाल का अतिउत्पादन का संकट, ब्रिटेन के मुद्रा संकट, कुछ पूंजीवादी देशों में मुद्रास्फीति, कीमतों में तीव्र वृद्धि, व्यापार-संतुलन एवं भुगतान संतुलन सम्बन्धी संकट, शेयर बाजारों में मंदी, दिवाले निकलना, अमरीकी स्वर्ण निधि की क्षीणता, आदि घटनाएं इसकी ठोस सबूत हैं। राजकीय विनियमन से कुछ औद्योगिक उद्यमों का ठप होना, बेरोज़गारी को दूर करना और आर्थिक विकास की स्थिर गति को सुनिश्चित बनाना संभव न हो सका।

राजकीय इजारेदार विनियमन से पूंजीवाद के स्वतःस्फूर्त विकास को

तीव्र अथवा मन्द बनाया जा सकता है, परन्तु पूर्णतया दूर नहीं किया जा सकता। बाजार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का मुख्य नियामक था और आज भी है।

**योजनाबद्ध विकास—समाजवाद का नियम**

पूंजीवाद के विपरीत जनता द्वारा तथा जनता के लिए, समाज के सभी सदस्यों के हित में और उनके कल्याण के लिए निर्मित हो रहा समाजवाद निर्बाध बाजार के असर के अनुरूप विकसित नहीं हो सकता। उत्पादन-साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व कायम हो जाने से सभी उत्पादक एक ही अर्थव्यवस्था में संयुक्त हो जाते हैं, जो राज्य के रूप में समाज के चेतन तथा योजनाबद्ध पथ-प्रदर्शन के बिना विकसित नहीं हो सकती। **अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध संतुलित विकास एक वस्तुगत अनिवार्यता है, समाजवाद के निर्माण को निर्यत्रित करनेवाला नियम है।**

बाजार की स्थितियों, अर्थात् मांग तथा पूर्ति और कीमतों में चढाव-उतार के अध्ययन से पूंजीवादी समाज के लिए निकट भविष्य में आर्थिक विकास को प्रभावित करनेवाले कारकों को कुछ हद तक पहले से ही भापना और उन्हें ध्यान में रखना संभव हो जाता है। परन्तु अराजकता तथा होड के नियमों की प्रमुखता के कारण पूंजीवादी समाज इन कारकों को बदलने, अपेक्षित आर्थिक वातावरण पैदा करने और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कुछ निश्चित दिशाओं में लक्षित करने में असमर्थ है। पूंजीवादी दूरदर्शिता की तुलना मौसमविज्ञान के काम से की जा सकती है, जो बहुधा मौसम सम्बन्धी सही भविष्यवाणी करता है, परन्तु खुद आवश्यक मौसमी दशाएं नहीं पैदा कर सकता।

समाजवाद के अन्तर्गत सार्वजनिक स्वामित्व और उत्पादकों के हितों तथा लक्ष्यों की एकरूपता से निकट भविष्य में उत्पादन, व्यापार और खपत के विकास का पूर्वानुमान लगाना ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को निर्दिष्ट ध्येय के अनुरूप संचालित करना संभव हो जाता है।

समाजवादी निर्माण में अव्यवस्थित उत्पादन और निर्बाध बाजार का स्थान योजनानुसार संगठित और सम्पूर्ण समाज तथा उसके प्रत्येक सदस्य की जरूरतों की पूर्ति की ओर लक्षित सार्वजनिक उत्पादन ले लेता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध होने के कारण राज्य को सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का प्रबन्ध करने, आर्थिक विकास में अनुकूलतम अनुपातों को कायम रखने,

उत्पादक शक्तियों का युक्तिसंगत वितरण करने और भौतिक, जनशक्ति तथा वित्तीय साधनों को बचाने का अवसर प्राप्त रहता है।

अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध प्रबन्ध भौतिक, श्रम तथा अन्य साधनों के बिल्कुल ठीक आकलन पर आधारित होता है। परन्तु समाजवादी योजना निकाय आर्थिक स्थिति का अध्ययन उसे अपरिवर्तित बनाये रखने के लिए नहीं करते। इसके प्रतिकूल, समाजवादी आयोजन अर्थव्यवस्था को नये समाज के निर्माण के बुनियादी कार्यभारों के अनुरूप विकसित करने की ओर लक्षित होता है। **समाजवादी आयोजन तत्वतः सक्रिय तथा रूपान्तरकारी होता है।**

समाजवादी आयोजन निजी स्वामित्व की जगह सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना और अर्थव्यवस्था के समाजवादी क्षेत्र के विकास से सम्बद्ध दीर्घकालीन क्रमिक प्रक्रिया होती है। राज्य द्वारा अर्थव्यवस्था—बड़े पैमाने के उद्योग, परिवहन एवं संचार, बैंकिंग और विदेश व्यापार—में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करना आयोजन को लागू करने की अनिवार्य पूर्वापेक्षा है। राष्ट्रीयकरण और उसके बाद के समाजवादी उद्योग तथा कृषि सहकारिता के विस्तार के फलस्वरूप संक्रमण-काल में यह सब कुछ सम्पन्न हो जाता है। समाजवादी स्वामित्व के विकास के साथ-साथ आयोजन का दायरा बढ़ता जाता है। समाजवादी क्षेत्र की पूर्ण प्रमुखता और निजी स्वामित्व के उन्मूलन, अर्थात समाजवाद की आर्थिक विजय से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में आयोजन लागू हो जाता है। एक ही राजकीय योजना अर्थव्यवस्था का पथ-प्रदर्शनकारी कारक बन जाती है। मांग और पूर्ति, कीमतों के मनमाना चढ़ाव उतार तथा विक्रेताओं और ग्राहकों के बीच होड़ से युक्त बाजार सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का नियामक नहीं रह जाता।

**संक्रमण-काल का कार्यभार—बाजार पर नियन्त्रण**

पूंजीवाद से समाजवाद की ओर पूरे संक्रमण-काल तथा समाजवाद के निर्माण के दौरान (पुस्तक में इस विषय पर आगे विचार किया गया है) बाजार कायम रहता है और आर्थिक विकास में निश्चित भूमिका अदा करता है। संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्था में बाजार की भूमिका विशेष महत्त्वपूर्ण होती है और यह सर्वथा तर्कसंगत है। बाजार कायम रहता है, क्योंकि जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, संक्रमण-काल में कई क्षेत्र रहते हैं समाजवादी क्षेत्र, लघु पण्य उत्पादन क्षेत्र, निजी पूंजीवादी

क्षेत्र, राजकीय पूँजीवादी क्षेत्र और पितृसत्तात्मक (विनिमयहीन) क्षेत्र।

प्रत्येक क्षेत्र निश्चित वस्तुए तैयार करता है, जो बाजार के जरिये उपभोक्ताओ तक पहुचती हैं। चूकि विभिन्न क्षेत्रों मे सम्बन्ध कायम रखने का और कोई ढग नही हो सकता, इसलिए बाजार के जरिये उनमे आर्थिक सम्बन्ध कायम रखा जाता है। और वस्तुओ के विनिमय के लिए उनमे आर्थिक सम्बन्ध नितान्त आवश्यक है, जिसके बिना सक्रमण-काल की अर्थव्यवस्था बिलकुल विकसित नही हो सकती। व्यापार अथवा बाजार के जरिए वस्तु-विनिमय एकमात्र वह रूप है, जिसमे मजदूरो और किसानो के बीच आर्थिक सश्रय सभव है। अन्य सभी गैर-राजकीय, गैर-समाजवादी उद्यमो के विकास को प्रभावित करने के निमित्त राज्य के लिए व्यापार अथवा बाजार नितान्त आवश्यक है। सार्वजनिक अथवा सहकारी स्वामित्व पर आधारित अर्थव्यवस्था होने पर ही प्रत्यक्ष योजनाबद्ध आर्थिक विकास सभव होता है। अलग-अलग निजी उत्पादको द्वारा चलाई जानेवाली अर्थव्यवस्था होने पर वह योजनाबद्ध नही बनाई जा सकती। परन्तु, समाजवादी निर्माण की प्रारम्भिक अवस्थाओ मे छोटे-छोटे निजी उद्यमो और फार्मो की प्रमुखता बनी रहती है। उनकी वस्तुओ की खरीद के सगठित रूपो, राज्य द्वारा निर्धारित कीमतो, ऋण और व्यापार से सम्बद्ध अन्य तरीको द्वारा राज्य उनके विकास को अपेक्षित दिशा मे प्रभावित करता है।

इस प्रकार क्रान्ति के शीघ्र ही बाद नये राज्य के सम्मुख एक ओर बाजार पर नियत्रण कायम करने, अर्थात् उसे राजकीय योजना के अनुसार सगठित करने और दूसरी ओर कीमत, मुद्रा, मुनाफा आदि जैसे पण्य-उत्पादन से सम्बद्ध सभी रूपो का युक्तिसगत उपयोग करने का बहुत ही जटिल कार्यभार प्रस्तुत हो जाता है। क्रान्ति के बाद व्यापार और मुद्रा ही नही, बल्कि पूजीपति वर्ग द्वारा सस्थापित वित्तीय तथा व्यापारिक सगठन (ऋण देनेवाली सस्थाए और बीमा कम्पनिया, उपभोक्ता तथा विपणन सहकारी समितिया) भी कायम रहते हैं। बाजार पर नियत्रण, अर्थात् पुराने व्यापार का नये, समाजवादी व्यापार मे रूपान्तरण उत्पादन के स्तर, व्यापारिक प्रतिष्ठानो की सख्या, आकार तथा सारे देश मे उनकी वितरण-व्यवस्था तथा नये व्यापार-कर्मचारियो के प्रशिक्षण और व्यापारिक उपकरण, भवन और विश्वसनीय कुशल विक्रेताओ की सुलभता पर अवलम्बित करता है।

क्रान्ति की प्रारम्भिक अवस्था में थोक व्यापार का राष्ट्रीयकरण करके और पूजीपतियो के स्वामित्व मे बने रहे औद्योगिक तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर मजदूरो का नियत्रण कायम करके राज्य बाजार को नियत्रित करता है।

राष्ट्रीयकृत व्यापारिक उद्यम राज्य द्वारा सचालित नये व्यापार का आधार बनते हैं।

परन्तु राज्य द्वारा सचालित व्यापार, विशेष रूप से फुटकर व्यापार बहुधा अपर्याप्त होता है और आबादी की सभी आवश्यक वस्तुओ का प्रदाय नही कर सकता। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपभोक्ता सहकारी प्रणाली की दीघकाल से स्थापित व्यापारिक मशीनरी का उपयोग किया जाता है।

नये व्यापार को सगठित करने मे सोवियत सघ मे उपभोक्ता सहकारी समितिया ने बहुत ही बडी भूमिका अदा की। थोक व्यापार मे मुख्य भूमिका राज्य अदा करता था, परन्तु फुटकर निजी व्यापारियो का स्थान धीरे-धीरे उपभोक्ता सहकारी समितियो ने ही ग्रहण किया। समाजवादी निर्माण काल के दौरान सोवियत राज्य ने उत्पादन, परिवहन और थोक व्यापार के विकास के लिए काफी रकम निर्धारित की। परन्तु फुटकर व्यापार मेहनतकश जनता के स्वतत्र जन सगठनो के रूप मे, स्वय जनता के वित्तीय साधनो को आकृष्ट करते हुए मुख्यत सहकारी समितिया के रूप म विकसित हुआ।

नया सोवियत व्यापार दो तरीको से सगठित किया गया शुरू मे पूजीवादी व्यापारिक प्रतिष्ठानो के राष्ट्रीयकरण के आधार पर सगठित राजकीय व्यापार और सहकारी व्यापार के जरिये। सहकारी व्यापार क्रान्ति के पहले ही अस्तित्व मे आ चुका था, परन्तु नूतन राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रभाव के अन्तर्गत इसका अन्तर्य तथा कार्य बदल गया।

आसान शर्तो पर उधार, अनुदान और अन्य प्रकार की आर्थिक सहायता के रूप मे राज्य की प्रत्यक्ष सहायता से राजकीय तथा सहकारी दोना प्रकार के व्यापार का विकास हुआ।

उत्पादन मे वृद्धि, नयी व्यापारिक मशीनरी के सुदृढ होने और फुटकर विक्रेताओ के प्रशिक्षित होने के साथ साथ बाजार पर राज्य का नियत्रण कायम होता गया। निजी दूकानदारो को व्यापार के क्षेत्र से मुख्यत आर्थिक कदमो को लागू करके, अर्थात चीजो को समाजीकृत वितरण प्रणाली के

जरिये कम परिसचरण-लागत पर कम कीमत पर, बेहतर और ज्यादा किस्मो मे बेचकर बाहर निकाल दिया गया। ज्यो-ज्यो समाजीकृत व्यापार विकसित होता गया, त्यो-त्यो व्यापार की कुल मात्रा मे कमी के बिना निजी दूकानदारो की जड उखाड दी गई।

राज्य और सहकारी समितियो द्वारा कृषि उपज की खरीद की व्यवस्था बाजार पर नियत्रण स्थापित करने के मामले मे बहुत ही सहायक सिद्ध हुई। शहर और गाव के बीच पण्य वस्तुओ के सगठित विनिमय का उद्देश्य दोमुखी है एक ओर शहरी आबादी के लिए खाद्य पदार्थ तथा उद्योग के लिए कच्चे माल की खरीद और दूसरी ओर समाजवाद के हित मे मजदूर वर्ग तथा किसान समुदाय के बीच आर्थिक संश्रय का सुदृढ़ीकरण।

राज्य द्वारा निर्धारित निश्चित कीमतो पर कृषि उपज की खरीद लघु पण्य कृषक खेती को समाजवाद के पक्ष मे प्रभावित करने का एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक साधन है। किसानो के प्रति समुचित आर्थिक नीति निर्धारित करके राज्य सामान्यतया अल्पकाल मे कृषि उपज की योजनाबद्ध खरीद की व्यवस्था कर लेता है और वस्तुओ का पर्याप्त स्टाक प्राप्त करके बाजार मे मुख्य भूमिका अदा करने लगता है और उस पर अपना नियत्रण कायम कर लेता है।

राज्य द्वारा योजनाबद्ध ढग से खरीदी जानेवाली कृषि उपज की कीमतो का इस प्रक्रिया मे बडा आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व है। किसानो तथा सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था दोनो के लिए कीमते लाभजनक होनी चाहिए। कीमते ऐसी होनी चाहिए, जिनसे उपज और उत्पादिता को बढाने मे किसानो की पहल और भौतिक रुचि को प्रोत्साहन मिले। कृषि उपज का क्रय मूल्य राज्य के लिए भी लाभजनक होना चाहिए, ताकि वह शहरी आबादी को उचित कीमत पर खाद्य पदार्थ सप्लाई कर सके और किसानो सहित सम्पूर्ण आबादी के कल्याण मे सुधार के निमित्त आवश्यक कारखानो के निर्माण मे धन लगाने के लिए कुछ मुनाफा अर्जित कर सके।

कम विकसित उद्योग तथा बडी सख्या मे किसान आबादी वाले खेतिहर देशो की सरकारे उद्योग को विकसित करने के उद्देश्य से कृत्रिम ढग से कृषि वस्तुओ की कीमत घटाकर और औद्योगिक उत्पादनो की कीमते चढाकर शीघ्रातिशीघ्र अधिक लाभ उठाने की ओर प्रवृत्त हो सकती है। परन्तु आर्थिक दृष्टि से यह गलत और हानिकर है। किसानो की खेती से अर्जित

धन का बहुत बडा भाग उद्योग मे लगाने से अनिवार्यतः उनमे असंतोष की भावना पैदा होगी और इसके फलस्वरूप राज्य और छोटे उत्पादकों के बीच राजनीतिक अनबन पैदा हो जायेगी। इस नीति के फलस्वरूप किसानों की खेती तबाह हो सकती है और खुद उद्योग, निर्यात तथा घरेलू व्यापार के आधार को क्षति पहुच सकती है, क्योकि औद्योगिक वस्तुओ के खरीदारो का बहुलांश किसान ही हैं। दूसरे शब्दों मे, इस प्रकार की नीति से सम्पूर्ण आर्थिक प्रणाली का संतुलन बिगड़ सकता है। दूसरी ओर, उद्योग के निर्माण में किसानों के साधनों का उपयोग बिलकुल न करना भी गलत बात होगी, क्योकि इससे आर्थिक प्रगति धीमी हो जायेगी, अर्थव्यवस्था का संतुलन गडबडा जायेगा और देश के औद्योगीकरण पर इसका बहुत बुरा असर पडेगा।

## ५. जातियों के आपसी सम्बन्धों में परिवर्तन

**जातियों के सम्बन्धों में समाजवादी परिवर्तन** सक्रमण-काल का एक मुख्य कार्यभार है। एक बहुजातीय देश मे, जहा शासक जाति द्वारा उत्पीडित अन्य जातिया निवास करती हैं, यह विशेषकर महत्त्वपूर्ण कार्यभार हो जाता है। क्रान्ति के पहले के रूस की यही दशा थी, जहा दर्जनों छोटी-बडी जातिया रहती थी।

निजी स्वामित्व और उत्पीडन पर आधारित पूंजीवादी समाज जातीय उत्पीडन का समाज भी है, जिसमे कुछ जातिया अन्य जातियो को गुलाम बनाती हैं। इसका मतलब यह है कि समाजवादी क्रान्ति के सम्मुख न केवल सामाजिक, वर्ग उत्पीडन को, बल्कि इसके अनिवार्य सहवर्ती जातीय उत्पीडन को भी समाप्त करने का कार्यभार प्रस्तुत रहता है। शोषण और वर्गो की शत्रुता का उन्मूलन कर समाजवाद जातीय उत्पीडन तथा दुश्मनी को दूर करता है और जातियो के विकास, उनके पारस्परिक विश्वास तथा उनकी एकता को सुनिश्चित बनाता है। मार्क्स और एंगेल्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' मे लिखा है: "जिस अनुपात मे एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति का शोषण खत्म होगा, उसी अनुपात मे एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण भी खत्म होगा।

"जिस अनुपात मे राष्ट्रो के अन्दर वर्गों का विरोध खत्म होगा, उसी अनुपात मे राष्ट्रो का आपसी वैरभाव भी दूर होगा।"*

लेनिन ने जातीय प्रश्न को हल करने, जातियो के चतुर्मुखी विकास और उन्हे एकजुट करने का ठोस कार्यक्रम तैयार किया था। इस कार्यक्रम मे निहित बुनियादी सिद्धान्त है सार्वजनिक जीवन का व्यापक जनवादीकरण, सभी नसलो और जातियो का वास्तविक समानाधिकार, पृथक राज्य कायम करने तक सभी जातियो का आत्मनिर्णय का अधिकार और देश की सभी जातियो के मजदूर वर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय एकता। बडी और छोटी सभी जातियो के लिए गहन सम्मान और उनकी चिरपोषित आकाक्षाओ तथा जरूरतो को पूरा करने की गहरी चिन्ता से ओतप्रोत लेनिन के जातीय कार्यक्रम से मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे रूस की विविध जातिया के मजदूर और किसान ऐसे सुदृढ सश्रय मे एकजुट हो गए, जो अक्तूबर क्रान्ति का मुख्य कारक साबित हुआ।

समाजवादी क्रान्ति ने जातीय उत्पीडन की जजीरे तोड दी, जातियो के बीच पुरानी शत्रुता मिटा दी और उनके बीच सर्वतोमुखी सहयोग तथा एकता का विस्तृत आधार तैयार किया। इसने जातियो को अपने भविष्य के बारे मे निर्णय करने और अपने राष्ट्रीय राज्यत्व, अपनी अर्थव्यवस्था तथा सस्कृति को विकसित करने का अधिकार प्रदान किया।

सोवियत जनतत्र की स्थापना के बाद से ही कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के लिए जातीय प्रश्न बडी चिन्ता का विषय रहा है। १५ नवम्बर, १९१७ को ही सोवियत सरकार ने 'रूस की जातियो के अधिकारो का घोषणापत्र' स्वीकार किया, जिसमे उसने सभी जातियो के समानाधिकार तथा उनकी प्रभुसत्ता, पृथक होने तथा स्वतत्र राज्यो की स्थापना तक उनके आत्मनिर्णय के असीमित अधिकार, सभी जातीय विशेषाधिकारो तथा प्रतिबन्धो के उन्मूलन और अल्पसख्यक जातियो के निर्बाध विकास की उद्घोषणा की थी।

इस 'घोषणापत्र' का मतलब था जातीय उत्पीडन का उन्मूलन और देश मे बसनेवाली सभी विविध जातियो के लिए राजनीतिक तथा वैधानिक समानता की स्थापना। इसने एक ही राज्य मे जातिया के

---

*कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'।

स्वैच्छिक एकीकरण की आधारशिला भी रखी। सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ की स्थापना ( ३० दिसम्बर, १६२२ को ) मे यह एकीकरण पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हुआ, जो जातीय समानता और स्वैच्छिक अधिमिलन के आधार पर दुनिया का प्रथम बहुजातीय राज्य बन गया। सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ की स्थापना से सभी सोवियत जनतन्त्रो की आर्थिक तथा फौजी शक्ति सुदृढ हुई, उनकी राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई और विभिन्न जातियो के बीच आगे सौहार्द-स्थापन तथा समाजवाद के लिए उनके सयुक्त सघर्ष की आवश्यक आधारशिला रखी गई।

यह सर्वथा युक्तिसगत है कि राष्ट्रो और जातियो की मुक्ति को जातीय उत्पीड़न के उन्मूलन और राजनीतिक तथा वैज्ञानिक समानता प्रदान करने तक ही सीमित नही किया जा सकता था। मुख्य बात थी रूसी निरकुश शासन से विरासत मे प्राप्त युगो पुराने आर्थिक और सास्कृतिक पिछडेपन को दूर करना। सोवियत समाजवादी राज्य ने बड़ी सफलता के साथ इस कठिन समस्या को हल किया। भूतपूर्व उत्पीडित जातियो को निर्बाध विकास का अधिकार प्रदान करने के साथ ही इसने उन्हे अपने पिछडेपन को दूर करने और आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास का उच्च स्तर उपलब्ध करने मे भी सहायता प्रदान की।

युद्धध्वस्त अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार करने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने तत्काल गैर-रूसी जनतन्त्रो मे औद्योगीकरण की नीति लागू की। पार्टी और सरकार की सतत सुचिन्ता तथा अन्य जातियों, मुख्यत· रूसी लोगो द्वारा प्रदत्त निस्स्वार्थ सहायता के फलस्वरूप पहले के पिछड़े हुए जनतन्त्रो मे अभूतपूर्व गति से नये उद्योगो का जाल फैल गया। यह उल्लेखनीय है कि पूरे सोवियत सघ मे औद्योगीकरण की गति की अपेक्षा उक्त पिछडे हुए जनतन्त्रो मे औद्योगिक विकास की गति बहुत अधिक थी। १६१३ के आकडो की तुलना मे १६४० मे पूरे सोवियत सघ के कुल औद्योगिक उत्पादन मे ७.७ गुना वृद्धि हुई, जबकि कज़ाखस्तान में १६.५ गुना, आर्मीनिया मे २२.६ गुना, किर्गीजिया मे १५३ गुना और ताजिकिस्तान मे २७५ गुना बढोतरी हुई। इन जनतंत्रो की कृषि मे आमूल परिवर्तन हो गया। वह समाजीकृत तथा यन्त्रीकृत हो गई। इस प्रकार गैर-रूसी जनतंत्रो ने अपने पहले के आर्थिक पिछडेपन को दूर किया।

आर्थिक विकास के फलस्वरूप सभी सोवियत जनतंत्रो मे सुप्रशिक्षित

जातीय विशेषज्ञो और बुद्धिजीवियो की विशाल वाहिनी तैयार हो गई है। सास्कृतिक पिछडापन अब अतीत की बात है। सोवियत सघ के जनतत्रो ने न केवल आमूल आर्थिक परिवर्तन, बल्कि एक महान सास्कृतिक क्रान्ति भी सम्पन्न कर ली है।

सभी सोवियत जनतत्रो में निरक्षरता खत्म हो चुकी है और उनमे स्कूलो, उच्च शिक्षा सस्थाओ, वैज्ञानिक अनुसधान सस्थानो और सास्कृतिक सगठनो का जाल फैला हुआ है। सास्कृतिक विकास की दृष्टि से सोवियत जनतत्र न केवल पूर्व के पूजीवादी देशो, बल्कि पश्चिम के अनेक विकसित पूजीवादी राष्ट्रो से भी आगे निकल गये है।

सोवियत सघ मे मातृभाषाओ के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है, जबकि पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत इनमे से कई जातियो की अपनी लिपि तक नही थी। सोवियत सत्ता-काल मे उन्हे अपनी वर्णमालाए तथा व्याकरण और अपनी अपनी भाषा मे अनूदित पाठ्यपुस्तके उपलब्ध हुई। उन्हे अपने अध्यापको के प्रशिक्षण मे भी सहायता दी गई।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के पहले बेलोरूस, आजरबैजान, आर्मीनिया, ताजिकिस्तान, कजाखस्तान, तुर्कमनिस्तान और किर्गीजिया मे अपनी उच्च शिक्षा सस्थाए नही थी। इस समय इन सभी जनतत्रो मे इजीनियरो, सस्यविज्ञानियो, डाक्टरो, अध्यापको और अन्य विशेषज्ञो को प्रशिक्षण प्रदान करने की दर्जनो उच्च शिक्षा सस्थाए है। सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के अतिरिक्त सभी सघीय जनतत्रो मे अपनी अपनी विज्ञान अकादमिया है।

क्रान्ति के पहले रूस की कई जातियो का अपना साहित्य और थियेटर नही था। इस समय वे साहित्य, सगीत, चित्रकला, वास्तुकला और नाटक के क्षेत्र मे अपनी उपलब्धियो पर गर्व कर सकते है। सोवियत सघ म बसनेवाली सभी जातियो की भाषाओ मे बडी सख्या मे पुस्तको, अखबारो और पत्रिकाओ का प्रकाशन होता है।

जातीय समस्या का समाधान इस दृष्टि से और भी महत्त्वपूर्ण है कि रूस मे बसनेवाली कई जातियो को समाजवादी विकास के पथ पर अग्रसर होते समय विकास की पूजीवादी अवस्था से नही गुजरना पडा। वे एक ही पीढी के जीवन-काल मे सामती और यहा तक कि प्राक्-सामती सम्बन्धो से सीधे समाजवाद मे प्रवेश करने मे समर्थ हो गई।

सोवियत सघ मे जातीय समस्या – मानवजाति के विकास की एक सर्वाधिक गभीर और जटिल समस्या – का सफल समाधान वैज्ञानिक समाजवाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचारो की विजय का ज्वलन्त प्रमाण है।

जातीय समस्या के समाधान के सोवियत अनुभव ने यह निर्णायक ढग से प्रमाणित कर दिया है कि केवल समाजवादी क्रान्ति से जातीय उत्पीडन के पूर्ण उन्मूलन, एक ही राज्य मे स्वतत्र एव समानाधिकार प्राप्त जातियो के स्वैच्छिक एकीकरण, उन्हे एक दूसरे के अधिकाधिक निकट लाने और उनकी वास्तविक समृद्धि को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए परिस्थितिया पैदा होती है। इस समय अन्य समाजवादी देश जातीय समस्या के समाधान मे इस अनुभव का इस्तेमाल कर रहे है तथा इसे समृद्ध कर रहे है। यह अनुभव औपनिवेशिक जुए से मुक्त हुए नवोदित प्रभुसत्तासपन्न देशो तथा उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए सघर्षरत राष्ट्रो के लिए भी बहुत उपयोगी है। सोवियत सघ की जातियो की उपलब्धिया साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध कठोर सघर्ष मे इन सभी राष्ट्रो के लिए प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है। वे समाजवादी देशो की वर्तमान प्रगति मे अपने भविष्य का आभास पाते है।

## ६. सांस्कृतिक क्रान्ति

सास्कृतिक क्रान्ति का अर्थ है पुरानी, पूजीवादी सस्कृति के स्थान पर नयी, समाजवादी सस्कृति का निर्माण। विजयी मजदूर वर्ग नयी सस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया मे पूजीवादी संस्कृति को पूर्ण रूप मे अस्वीकार नही करता। वह उस सस्कृति की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियो को अपना लेता है, उनका आलोचनात्मक पुनरावलोकन करता है और उन्हे जन सेवा के काम में लाता है। अतीत की सास्कृतिक विरासत को आत्मसात करने तथा उसका आलोचनात्मक पुनरावलोकन करने के बाद ही नयी समाजवादी संस्कृति निर्मित की जा सकती है। लेनिन ने इस प्रसग मे लिखा था: "सर्वहारा संस्कृति को उन ज्ञानराशियो के स्वाभाविक विकास की देन होना चाहिये, जिसे मानवजाति ने पूजीवादी समाज के, सामन्तवादी समाज के,

नौकरशाही समाज के जुए के नीचे अर्जित किया है।"* अतीत की उपलब्धियां को नये स्तर पर उठाकर मजदूर वर्ग ठीक यही काम करता है।

अतीत की सांस्कृतिक उपलब्धियों को अपनाने तथा उनका आलोचनात्मक पुनरावलोकन करने का क्या मतलब है? उनका अर्थ है वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों, साहित्य और कला की उन कृतियों का व्यापक अध्ययन, जो मुक्ति की जनवादी परम्पराओं से पूर्णत प्रभावित होती हैं, जनता के श्रम तथा संघर्ष की वास्तविक तसवीर प्रस्तुत करती हैं और उच्च कोटि की कलात्मकता जिनकी विशिष्टता है। उनका मतलब है साहित्यिक भाषा के सर्वोत्कृष्ट नमूनों, वास्तविकता के चित्रांकन की प्राचीन परिनिष्ठित शैलियों को अपनाना। परन्तु सच्ची समाजवादी संस्कृति के निर्माण का मतलब अतीत की सांस्कृतिक उपलब्धियों का अन्धानुकरण नहीं, बल्कि समाजवादी हितों की पूर्ति में सहायक उपलब्धियों का प्रतिक्रियावादी आवरण से अलग और नयी परिस्थितियों में अतीत के अनुभव का समुचित उपयोग करना है। उदाहरणार्थ, सोवियत जनता लेव तोलस्तोय और दोस्तोयेव्स्की की साहित्यिक प्रतिभा का सम्मान करती है, और उनसे वास्तविकता, सामाजिक जीवन और मानवीय भावों के गहरे अन्तराल में पैठने का ज्ञान प्राप्त करती है, परन्तु बुराइयों का प्रतिरोध न करने के बारे में तोलस्तोय के सिद्धान्त तथा दोस्तोयेव्स्की के रहस्यवाद को स्वीकार नहीं करती।

सांस्कृतिक क्रान्ति के अन्तर्गत में केवल अतीत की भव्य सांस्कृतिक विरासत का आत्मसात्करण, नये समाज की भलाई के लिए पुराने बुद्धिजीवियों के अनुभव तथा ज्ञान का उपयोग, राष्ट्र के हित में बुद्धिजीवी समुदाय की पुनर्शिक्षा ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक और सर्वतोमुखी शिक्षा, जनवादी बुद्धिजीवियों का निर्माण, समाजवादी क्रान्ति की भावना में मनुष्य को प्रशिक्षित बनाना और मनुष्य का समाजवाद के सक्रिय निर्माता में रूपांतरण भी शामिल है।

**सच्ची जनवादी संस्कृति का निर्माण करना** सांस्कृतिक क्रान्ति का मुख्य कार्यभार है। सर्वप्रथम, शोषक समाज में संस्कृति से जनता को दूर रखनेवाली खाई को पाटकर (जिस में कुछ लोग तकनीक तथा संस्कृति के

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'युवक संघों के कार्यभार'।

सारे लाभ उठाते हैं, जबकि दूसरे अत्यत अनिवार्य बातो— शिक्षा तथा मानसिक विकास—से भी वचित रखे जाते हैं और जिसमे मानवीय मेधा और सृजनात्मक प्रतिभा का इस्तेमाल दमन तथा शोषण के लिए किया जाता है), सारी मानसिक सम्पदा, विज्ञान और कला की सभी उपलब्धियों को सम्पूर्ण जनता की सम्पत्ति बनाकर तथा दूसरे, मेहनतकश जनता के शिक्षात्मक एव सास्कृतिक स्तर को काफी ऊचा उठाकर, जनता की प्रतिभा और जनता की सृजनात्मक क्षमता के पूर्ण विकास की व्यापक सभावना पैदा करके यह कार्यभार पूरा किया जा सकता है। समाजवाद के निर्माण के दौरान वैज्ञानिक समाजवाद की वैचारिकी प्रसारित होती है और नये मनुष्य को ढालने के साथ-साथ वह लोगो के मन मे जड जमाती है।

सास्कृतिक क्रान्ति समाजवादी क्रान्ति का अविच्छिन्न अग है। सास्कृतिक दृष्टि से विकसित तथा पिछडे हुए दोनो प्रकार के देशो के लिये यह नितान्त आवश्यक है। सबसे विकसित पूजीवादी देश मे भी आबादी के बहुत बडे तबके, मेहनतकश जनता को सस्कृति की उपलब्धियो का लाभ उठाने से वचित रखा जाता है। सत्तारूढ वर्ग के लाभ के लिए श्रम करना ही उनकी तकदीर मे बदा होता है। मानसिक कार्यकलाप तथा मानसिक श्रम पर एकाधिकार स्थापित करके सत्तारूढ वर्ग मेहनतकश लोगो के सास्कृतिक विकास को पूजीवादी उत्पादन मे अपने कार्य को पूरा करने के लिए अपेक्षित न्यूनतम स्तर तक प्रतिबन्धित कर देता है। जहा तक विकासमान देशो का सम्बन्ध है, उनमे सास्कृतिक क्रान्ति का होना बहुत ही आवश्यक है।

सास्कृतिक क्रान्ति कोई आकस्मिक और क्षणिक कार्य नहीं है। एक बार मे शोषकों की राजनीतिक सत्ता को उखाड फेकना और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को कायम करना अथवा उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना बेशक सभव है। परन्तु सास्कृतिक क्रान्ति एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिसके लिए न्यूनाधिक दीर्घकाल तक श्रमसाध्य तथा अनथक प्रयास और कुशल व्यवस्था अपेक्षित है। समाज के सास्कृतिक रूपान्तरण की समस्याए आज्ञप्तियों और कागजी फरमानो से नहीं हल हो सकती। ज्ञान तथा सस्कृति मे लोगो की सहज चाह को पूर्ण रूप से तथा अपेक्षित दिशा मे मोडने के लिए जनसमुदाय को सास्कृतिक विकास की आवश्यकता समझानी चाहिए। नयी, समाजवादी सस्कृति की नींव रखने के लिए विशद भौतिक आधार भी

आवश्यक है। यह आधार समाजवादी आर्थिक सुधारो, अर्थात् राष्ट्रीयकरण, औद्योगीकरण और समूहीकरण के फलस्वरूप निर्मित होता है।

सर्वहारा राज्य सभी सास्कृतिक सस्थाओ और जनता के दृष्टिकोण को प्रभावित करनेवाले सभी साधनो—थियेटरो, सग्रहालयो, सिनेमाघरो, रेडियो और टेलीविजन, प्रेस आदि—का राष्ट्रीयकरण करता है तथा उन्हे उसके सुपुर्द कर देता है और नये सास्कृतिक केन्द्रों का निर्माण करता है। वह जनता के प्रशिक्षण तथा शिक्षा का भार उठाता है और लोगो के हित मे सामान्य एव विशेष माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा प्रणाली का आमूल रूप मे पुनर्गठन करता है और इस प्रकार सस्कृति की उपलब्धियो की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने तथा उनकी सामान्य एवं विशेष शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए उन्हे अभूतपूर्व अवसर प्रदान करता है। जीवन और समाजवादी निर्माण का सहज सम्बन्ध, समाज की भलाई के निमित्त उत्पादक श्रम के लिए युवको को आकृष्ट करना और उनका नये समाज के सक्रिय निर्माताओ मे रूपान्तरण—ये ही शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रणाली के वे बुनियादी सिद्धान्त है, जिन्हे सर्वहारा राज्य सक्रमण-काल के दौरान विकसित करता है।

मार्क्सवाद के शत्रु जोर देकर कहते थे कि जब तक निश्चित सास्कृतिक स्तर प्राप्त न हो जाये तथा पर्याप्त सख्या मे बुद्धिजीवी न हो जायें, तब तक मजदूर वर्ग को सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास नही करना चाहिए। उनका तर्क यह था कि "असस्कृत" जनसमुदाय राज्य के मामलो का प्रबन्ध करने और समाजवादी समाज का निर्माण करने योग्य नही होते। लेनिन ने इस तर्क का खण्डन करते हुए यह सिद्ध किया कि यदि पूर्वापेक्षित परिस्थितिया पैदा हो गई हो, तो सर्वहारा वर्ग को तत्काल सत्ता पर अधिकार जमा लेना चाहिए और इसके बाद जनता के सास्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाने का अथक प्रयास करना चाहिए, क्योकि सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व इसके लिए सबसे उपयुक्त परिस्थितिया पैदा करता है।

रूस के मजदूरो और सभी मेहनतकश लोगो ने ठीक इसी ढग से कार्य किया। उन्होंने सत्ता पर कब्जा करने के उद्देश्य से मार्क्सवाद के शत्रुओ द्वारा निर्धारित अज्ञात स्तर तक सास्कृतिक प्रतिमान के ऊचा उठने की प्रतीक्षा नही की। यो ऐसा करने पर भी उन्हे निरन्तर प्रतीक्षा ही करनी पड़ती। रूसी जमीदारो तथा पूजीपतियो ने जनता को अन्धेरे तथा अज्ञान

मे रखने की भरसक पूरी कोशिश की थी—निरक्षर और पददलित जनता का शोषण करना आसान जो था।

अन्य मेहनतकश लोगो के साथ मिलकर रूसी सर्वहारा वर्ग ने सास्कृतिक दृष्टि से पिछडे हुए देश मे, एक ऐसे देश मे, जहा आबादी का बहुत बडा भाग निरक्षर था और जहा शिक्षा तथा ज्ञान की स्थिति शोचनीय थी, सत्ता पर कब्जा कर लिया। सत्ता को अपने हाथ मे कर लेने के बाद उसने राष्ट्रीय सस्कृति के पुनरुद्धार का पथ प्रशस्त किया। १९३७ तक, अर्थात् सक्रमण-काल के अन्त तक निरक्षरता प्राय पूर्णत मिटाई जा चुकी थी। सारे देश मे हजारो की सख्या मे सामान्य तथा विशेष माध्यमिक एव उच्च शिक्षा सस्थाए, पुस्तकालय, वाचनालय, सग्रहालय, थियेटर, क्लब और अन्य सास्कृतिक सस्थाए कायम हो चुकी थी। इस काल के दौरान केवल सामान्य स्कूलो मे विद्यार्थियो की सख्या म करीब ३ ५ गुना वृद्धि हुई। जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, गैर-रूसी सोवियत जनतन्त्रो मे ज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र मे असाधारण प्रगति हुई।

अन्य समाजवादी देशो मे भी सास्कृतिक क्रान्ति ने बडी प्रगति की है। मिसाल के लिए क्रान्तिपूर्व पोलैण्ड म निरक्षरो की सख्या २३ प्रतिशत, रूमानिया मे ४३ प्रतिशत, बुल्गारिया मे २७ प्रतिशत थी। इस समय इन तथा अन्य समाजवादी देशो मे निरक्षरता लगभग समाप्त कर दी गई है। और यह काम असाधारणत अल्पकाल मे—केवल कुछ ही वर्षो के भीतर सम्पन्न किया गया है। सस्कृति को सम्पूर्ण आबादी की पहुच के भीतर करने के लिए बहुत कुछ किया गया है, सामान्य और विशेष शिक्षा प्रणाली कायम की गई है। जनता के अपने बुद्धिजीवी समुदाय का उदय हुआ है। विकसित पूजीवादी देशो की अपेक्षा कई समाजवादी देशो की उच्च शिक्षा सस्थाओ मे अधिक छात्र छात्राए है। १९६९–१९७० के शैक्षिक वर्ष मे उनमे आबादी के प्रति दस हजार लोगो पर विद्यार्थियो की सख्या जहा यूगोस्लाविया मे ११७, बुल्गारिया मे १०४, चेकोस्लोवाकिया मे ९९, रूमानिया मे ७६ थी, वहा ब्रिटेन मे (१९६७–१९६८)—७८, इटली मे (१९६७–१९६८)—७०, और जर्मन सघात्मक गणराज्य मे (१९६७–१९६८)—४८ थी।

आज विश्व जनमत चीन मे घट रही घटनाओ से, जिन्हे "महान सर्वहारा सास्कृतिक क्राति" का नाम दिया जाता है, आशकित है। वास्तव मे उनका सच्ची सस्कृति और सर्वहारा क्राति से कोई भी नाता नही है।

इसके विपरीत, इस "क्राति" के दौरान चीनी तथा अन्य लोगो द्वारा निर्मित अकूत सास्कृतिक निधियो को नष्ट कर दिया जाता है, आधुनिक चीनी तथा विश्व सस्कृति के प्रमुख प्रतिनिधियो की अवमानना की जाती है, देश के प्राचीन स्मारको को भ्रष्ट किया जाता है, आदि। जहा तक उसके राजनीतिक पहलू का सबध है, तो चीन मे "सास्कृतिक क्राति" सिर्फ माओ त्से-तुग और उनके गुट की एकच्छत्र सत्ता को कायम रखने, शासन के सवैधानिक और जनवादी स्वरूपो की माओ त्से-तुग के नेतृत्व मे एक निम्नपूजीवादी गुट की तानाशाही से प्रतिस्थापना करने और चीन के विकास मे निम्नपूजीवादी दु साहसिकता और राष्ट्रवाद की नीति को स्थापित करने की आकाक्षा पर परदा डालने का ही काम करती है।

## ७ विभिन्न देशो के समाजवाद की ओर सक्रमण के आम नियम और विशेष लक्षण

हमने अब तक सोवियत सघ तथा कुछ अन्य समाजवादी देशो द्वारा प्राप्त अनुभव की ओर सकेत करते हुए सत्तारूढ वर्गों और शोषण से शून्य समाज, नये समाजवादी समाज के निर्माण के बुनियादी तरीको और उपायो पर विचार किया था। समाजवादी पथ पर अग्रसर होनेवाले अन्य देशो मे इन तरीको तथा उपायो को अनिवार्यत अपनाना होगा, जिसके कारण ये पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण को नियत्रित करनेवाले आम नियमो का महत्त्व ग्रहण कर लेते हैं।

**समाजवादी निर्माण के आम नियम**

इन नियमो मे निम्नाकित बाते शामिल हैं

१) मजदूर वर्ग द्वारा मेहनतकश लोगो का नेतृत्व, जिसका केन्द्र वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त से लैस मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी है; सर्वहारा क्रान्ति की निष्पत्ति और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना।

२) मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के अधिकाश भाग तथा मेहनतकश लोगो के अन्य तबको के बीच सश्रय। मजदूर वर्ग सतत सभी मेहनतकश लोगो के हितो की अभिव्यक्ति करता है, उनस अलग रहकर नही, बल्कि मिलकर सघर्ष करता है और इस कारण सफलताए प्राप्त करता है।

समाजवाद के निर्माण की अवधि मे, जब भावी वर्गशून्य समाज की आधारशिला रख दी जाती है, इस सश्रय का महत्त्व और भी अधिक बढ जाता है।

३) **उत्पादन के बुनियादी साधनो पर पूजीवादी स्वामित्व का उन्मूलन और सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना।** निजी पूजीवादी स्वामित्व शोषण, वर्ग शत्रुता, समाज मे प्रभुत्व तथा दमन का आर्थिक आधार है। पूजीवादी स्वामित्व के उन्मूलन और समाजवादी स्वामित्व की स्थापना के बिना समाजवाद का प्रश्न ही नही पैदा होता।

४) **सहकारिता के आधार पर कृषि का क्रमिक समाजवादी रूपातरण।** कृषि मे सहकारिता के जरिये ही किसानो को सामूहिक रूप से समाजवादी निर्माण मे खीचा जाता है, उनके भौतिक तथा सास्कृतिक स्तरो को ऊचा उठाया जाता है और मजदूर वर्ग के साथ उनके सश्रय को सुदृढ बनाया जाता है। बडे पैमाने के समूहीकृत कृषि उत्पादन से तकनीक तथा सस्य विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियो को उपयोग मे लाने की असीम सभावनाए पैदा हो जाती है और मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त हो जाता है।

५) **समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण करने तथा मेहनतकश जनता के जीवन-स्तर को ऊचा उठाने की ओर लक्षित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध विकास।** समाजवाद से उत्पादन की पूजीवादी अराजकता समाप्त हो जाती है। एक ही केन्द्रीकृत योजना के अन्तर्गत आर्थिक विकास समाजवाद की विशेषता और समाज के सभी पूर्ववर्ती रूपो की तुलना मे उसकी बडी श्रेष्ठता है। इसके फलस्वरूप समाजवाद उत्पादन के तीव्र विकास को सुनिश्चित बनाता है और लोगो को अधिकाधिक भौतिक लाभ तथा सास्कृतिक विकास के असीमित अवसर प्रदान करता है।

६) **सास्कृतिक क्रान्ति की निष्पत्ति और मजदूर वर्ग, सारी मेहनतकश जनता और समाजवाद के ध्येय के प्रति निष्ठावान बहुसख्यक बुद्धिजीवियो का उदय।** सास्कृतिक क्रान्ति से मेहनतकश लोग विश्व सास्कृतिक उपलब्धियो को आत्मसात करने, उन्हें बढाने का अवसर प्राप्त करते है, राजकीय मामलो का प्रबन्ध करने, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास को निदेशित करने, समाजवादी वैचारिकी की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने और

नये समाज के सक्रिय निर्माता बनने का समृद्ध अनुभव और ज्ञान प्राप्त करते हैं।

७) जातीय उत्पीडन का उन्मूलन और जातियो के बीच समानाधिकारों तथा बन्धुत्वपूर्ण मैत्री की स्थापना। समाजवाद जातीय शत्रुता को, छोटी और आर्थिक दृष्टि से पिछडी हुई जातियो के उत्पीडन को मिटा देता है। सभी जातिया की समानता और बिरादराना दोस्ती को प्रोत्साहन प्रदान करना इसका एक मुख्य सिद्धान्त है।

८) समाजवादी राज्य का सुदृढ़ीकरण और विकास; भीतरी तथा बाहरी शत्रुओं से समाजवादी उपलब्धियो की रक्षा। समाजवादी निर्माण का यह पहलू साम्राज्यवाद की बढती हुई आक्रामकता की वर्तमान परिस्थिति मे बहुत महत्त्वपूर्ण है।

९) किसी एक देश और अन्य देशो के मजदूर वर्ग, दुनिया भर के मेहनतकश लोगो से एकता, अर्थात् सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद। समाजवाद से राष्ट्रो के बीच बिरादराना दोस्ती और सहयोग कायम होता है तथा दुनिया के मेहनतकश लोगो की एकता सुदृढ होती है। शोषक प्रणाली के अन्तर्गत राष्ट्रो मे फूट तथा शत्रुता की जो भावना बनी रहती है, वह समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत मिट जाती है, अतीत की बात हो जाती है।

**विभिन्न देशो के समाजवाद की ओर सक्रमण के विशेष लक्षण**

परन्तु, यह सोचना बहुत बडी भूल होगी कि समाजवाद का पथ अपनानेवाले विभिन्न देशो मे उक्त आम नियम सर्वथा समान रूप से लागू होते हैं। समाजवाद का निर्माण करनेवाले हरेक देश की अपनी विशिष्ट राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक परिस्थितिया होती हैं, उसका अपना इतिहास, प्राकृतिक दशाए, वर्ग शक्तियो का अपना सतुलन, जातीय विशेषताए, चिन्तन का अपना ढग, अपना मनोवैज्ञानिक गठन और परम्पराए आदि होती हैं। इसके अतिरिक्त जिन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो मे विभिन्न देश समाजवाद का निर्माण करते हैं, उनमे भी अन्तर होता है। फलत, **पूजीवाद से प्रत्येक देश के समाजवाद की ओर सक्रमण के अपने विशेष लक्षण होते हैं।** लेनिन ने लिखा था "सभी राष्ट्र समाजवाद को अपनायेगे – यह अनिवार्य है, परन्तु सभी ठीक एक ही ढग से ऐसा नही करेगे, बल्कि हरेक जनवाद के किसी रूप, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की किसी किस्म, सामाजिक जीवन के

विभिन्न पहलुओ के समाजवादी रूपान्तरणो की विविध गति को अपना विशिष्ट योगदान प्रस्तुत करेगा।"*

समाजवाद की ओर सक्रमण के किसी भी आम नियम के लागू होने मे विशिष्ट लक्षण पाया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, क्रान्ति के शान्तिपूर्ण और गैर-शान्तिपूर्ण विकास के प्रश्न को ही ले लीजिए। सोवियत देश मे गैर-शान्तिपूर्ण ढग से, बल प्रयोग से सत्ता पर कब्जा किया गया। गृहयुद्ध मे लडना भी पडा, क्योकि अपदस्थ पूजीपति वर्ग ने विदेशी साम्राज्यवादियो की सहायता से नयी सरकार के विरुद्ध हथियार उठा लिये थे। इन परिस्थितियो मे क्रान्तिकारी उपलब्धियो की रक्षा करने के लिये लडने के अतिरिक्त मजदूर वर्ग और सभी मेहनतकश लोगो के आगे और कोई चारा नही था।

पूर्वी यूरोपीय देशो की परिस्थिति भिन्न थी। फासिस्टो के विरुद्ध युद्ध के दौरान मुख्य प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियो को ध्वस्त कर दिया गया था और अपदस्थ पूजीपति वर्ग नयी सरकार के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध करने मे असमर्थ था। इन देशो के विरुद्ध सशस्त्र हस्तक्षेप करने की विदेशी साम्राज्यवादियो को हिम्मत न हुई, क्योकि इन देशो को मुक्त करनेवाली सशक्त सोवियत सेना उनकी रक्षा कर रही थी। इसी कारण इन देशो मे समाजवादी निर्माण का काम रक्तपात और गृहयुद्ध के बिना हुआ।

परन्तु कभी-कभी इन देशो मे भी वर्ग सघर्ष गभीरतम रूप ग्रहण कर लेता है और इस कारण मजदूर वर्ग तथा सभी मेहनतकश लोग समाजवाद विरोधी शक्तियो को कुचलने के लिए हथियार उठाने और फौजी सहायता सहित अन्य बधु समाजवादी देशो द्वारा प्रदत्त सभी प्रकार की मदद का लाभ उठाने को विवश हो जाते हैं (१९५६ मे हगरी तथा १९६८ मे चेकोस्लोवाकिया मे ऐसी ही स्थिति पैदा हुई थी)।

सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना और राज्य मे मार्क्सवादी पार्टी द्वारा अदा की जानेवाली नेतृत्वकारी भूमिका पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण का सबसे महत्त्वपूर्ण नियम है। परन्तु, यह अधिनायकत्व क्या रूप ग्रहण करेगा, यह विभिन्न देशो की ठोस ऐतिहासिक परिस्थितिया पर अवलम्बित

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा 'साम्राज्यवादी अर्थवाद''।

होता है। सोवियत सघ मे इसने मेहनतकशो के प्रतिनिधियो की सोवियतो का रूप तथा कुछ अन्य देशो मे लोक जनवाद का रूप ग्रहण किया। सोवियत सघ की एक पार्टी प्रणाली से पृथक् कुछ अन्य समाजवादी देशो मे बहु पार्टी प्रणाली है, जिसमे शामिल पार्टिया समाजवाद के निर्माण मे सत्तारूढ कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग करती हैं। सोवियत सघ मे एक पार्टी प्रणाली की स्थापना उन विषम परिस्थितियो के कारण हुई थी, जिनमे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व ने अपने आपको चारो ओर शत्रु पूजीवादी देशो से घिरे एक देश मे अकेले पाया था और जब निम्न पूजीवादी पार्टियो (मेंशेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टिया) ने नये समाज के निर्माण मे कम्युनिस्टो से सहयोग करने से इनकार कर दिया था तथा प्रतिक्रान्ति के पक्ष मे चली गयी थी।

क्यूबा मे एक विशेष प्रकार का सर्वहारा अधिनायकत्व अस्तित्व मे आया। सामान्य अर्थ मे इस देश मे अभी तक कोई आम चुनाव नही हुआ है और मेहनतकशो के प्रतिनिधियो की सोवियतो अथवा लोक जनवाद के निकायो की भाति वहा कोई प्रातिनिधिक निकाय नही हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे क्रान्तिकारी सरकार समाजवादी सुधारो को लागू करती है। राजकीय सत्ता की यह प्रणाली क्यूबा की क्रान्ति की विशिष्ट परिस्थितियो और अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध देश की रक्षा की आवश्यकता के दृष्टिगत कायम की गई। क्यूबाई जनतन्त्र मे राष्ट्रव्यापी विचार विनिमय के बाद सरकार बुनियादी कानूनो तथा मुख्य राजनीतिक निर्णयो को स्वीकार करती है और बहुधा खुद जनता सार्वजनिक रैलियो मे मतदान द्वारा इन्हे मजूर करती है। राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री और अन्य मन्त्री जनता के साथ सम्पर्क बनाये रखते हैं। समाचारपत्रो, रेडियो तथा टेलीविजन के जरिये सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर विचार किया जाता है और सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैं।

क्यूबा की मिसाल से प्रकट होता है कि क्रान्ति का कोई जड और बधा बधाया नमूना नही होता और इसका रूप यथार्थ, सजीव और सृजनात्मक होता है।

इसमे कोई सन्देह नही कि इतिहास पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल के अन्य राजनीतिक रूप भी प्रस्तुत करेगा।

विभिन्न देशा मे राष्ट्रीयकरण, औद्योगीकरण और कृषि समूहीकरण की भी अपनी-अपनी विशेषताए रही हैं। सोवियत देश म कुछ ही महीनो मे

( १९१७ के दिसम्बर से १९१८ के जून तक) उत्पादन के बुनियादी साधनो के राष्ट्रीयकरण का लक्ष्य पूरा हो गया था। कुछ सक्रमणात्मक रूप, विशेषत राजकीय पूजीवाद, प्रचलित न हो सके, क्योकि रूसी पूजीपति वर्ग ने इस रूप को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और जहा भी सभव हुआ, उसने तोडफोड की कार्रवाइया की। जनवादी जनतन्त्रो मे राष्ट्रीयकरण मे कई वर्ष लगे। शुरू मे नाज़ियो का साथ देनेवालो के उद्यमो को जब्त किया गया। फिर अन्य उद्यमो का क्रमिक राष्ट्रीयकरण हुआ। राजकीय पूजीवाद के विविध रूप, विशेषत सयुक्त उद्योगो का रूप भी काफी विकसित हुआ। कुछ देशो मे भूतपूर्व मालिको को जब्त किये गए उद्यमो के लिए मुआवजा दिया गया, परन्तु सोवियत सघ मे मुआवज़ा अदा नही किया गया।

सोवियत सघ के विपरीत, जहा, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, सारी ज़मीन का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था, अन्य समाजवादी देशो ने आशिक रूप मे, मुख्यत बडे ज़मीदारो की भू-सम्पदा का राष्ट्रीयकरण किया (उसे राजकीय फार्मो मे रूपान्तरित कर दिया गया)। अधिकाश ज़मीन किसानो की सम्पत्ति हो गई।

सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण की विशेष परिस्थितियो और विशेषत इस तथ्य के दृष्टिगत कि यह निर्माण एक अकेले, शत्रु साम्राज्यवादी शक्तियो से घिरे देश मे चल रहा था, सोवियत जनता के लिए तीव्र गति से औद्योगीकरण करना अनिवार्य हो गया। और यह बात समझ मे आने योग्य है, क्योकि सोवियत सघ इसी ढग से विश्वस्त रूप मे साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियो के विरुद्ध अपनी रक्षा कर सकता था। इसके लिए सोवियत जनता को अपार कठिनाइयो और कष्टो को झेलना पडा। जनवादी जनतन्त्र इस प्रकार की कई दिक्कतो और कष्टो को झेलने से बच गए। उन्हे तीव्र गति से औद्योगीकरण नही करना पडा, क्योकि उनके लिये सोवियत अनुभव तथा पारस्परिक सहायता से लाभ उठाना सभव हो गया था।

इसी प्रकार विभिन्न समाजवादी देशो मे कृषि के क्षेत्र मे सहकारिता को लागू करने के लिए भी भिन्न-भिन्न तरीके अपनाए गए। उदाहरणार्थ, चेकोस्लोवाकिया मे चार प्रकार की कृषि सहकारी समितिया थी, जिनमे श्रम, श्रम के औज़ारो तथा वितरण के समाजीकरण के स्तर मे अतर था। क्यूबा मे गन्ने के खेतो तथा अन्य बागान के साथ-साथ बडे-बडे

राजकीय फार्म—जन ज़मीदारिया—है, जिनपर अब कुल गन्ने का तीन-चौथाई भाग, सारी औद्योगिक फसलो और आधे पशुधन को पैदा किया जाता है। वहा सोवियत सामूहिक फार्मो जैसे सहकारी फार्म नही है।

**इस प्रकार, समाजवादी निर्माण के आम नियम विभिन्न देशो मे विभिन्न रूप से अभिव्यक्त होते हैं।**

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस मे कहा गया है "कई राष्ट्रो के उदाहरण से यह प्रकट हो गया है कि पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण को नियत्रित करनेवाले कई आम नियम हैं, जो सर्वप्रथम सोवियत सघ के समाजवादी रूपान्तरण के दौरान अभिव्यक्त हुए। इस बात की भी पुष्टि हो चुकी है कि प्रत्येक राष्ट्र इस सक्रमण के रूपो और तरीको मे अनेक नयी विशेषताओ को जोडता है। समाजवादी देशो द्वारा प्राप्त अनुभव ने इस की पूर्णतर समझ प्रदान की है कि ये आम नियम किस प्रकार काम करते हैं और विशिष्ट परिस्थितियो मे समाजवादी निर्माण के विभिन्न रूप तथा तरीके किस प्रकार लागू किये जाते है।"

इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि एकमात्र मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आम सिद्धान्तो, समाजवादी निर्माण के आम नियमो को सामने रखते हुए और प्रत्येक देश की ठोस परिस्थितियो के अनुसार उन्हे लागू करने से समाजवादी पथ पर सफलता प्राप्त करना सभव है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद, व्यावहारिक रूप मे परखे हुए समाजवादी निर्माण के आम नियमो से तनिक भी विचलन से समाजवाद के ध्येय को गभीर क्षति पहुचती है।

यह चीन मे हाल की घटनाओ से प्रत्यक्ष है।

चीन मे क्राति की विजय हुई। उसकी विजय के तुरत बाद के वर्षों मे चीनी जनता ने, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धातो से निदेशित हो रही थी और जिसे सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो से सर्वतोमुखी सहायता प्राप्त हुई, अर्थव्यवस्था, सामाजिक सबधो और बौद्धिक सस्कृति के विकास मे जबरदस्त सफलताए प्राप्त की।

लेकिन माओ त्से-तुग और उसके गुट ने एक विशेष गृह तथा विदेश नीति चलाई, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद, [illegible] अन्तर्राष्ट्रीयतावाद और समाजवादी निर्माण के [illegible] से [illegible] उन्होंने समाज [illegible] की आनेवाली मे मजदूर वर्ग और [illegible]

नेतृत्वकारी भूमिका को तज दिया, और समाजवादी जनवाद को खत्म करने, जनता द्वारा निर्वाचित सत्ता के सवैधानिक निकायो को माओ त्से-तुग के चेलो द्वारा निर्मित तथाकथित क्रातिकारी समितियो से प्रतिस्थापित करने की ओर और जनता की अत्यावश्यक भौतिक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ को तुष्ट करने, समाजवादी देशो से सहयोग और विश्व कम्युनिस्ट आदोलन की समन्वित आम नीति का अनुसरण करने से इन्कार की ओर लक्षित नीति पर चलने लगे। माओ त्से-तुग गुट एक ऐसी नीति का अनुसरण करने लगा, जो निम्नपूजीवादी दु साहसिकता और महाशक्ति अधराष्ट्रवाद का मिश्रण थी और जो "वामपथी" प्रतिक्रातिकारी लफ्फाजी की आड मे छिपी हुई थी और जो खुले तौर पर समाजवादी बिरादरी को कमजोर करने और विश्व कम्युनिस्ट आदोलन मे फूट डालने लगी।

माओ त्से-तुग और उनके सगी-साथियो की दु साहसिकता ने चीन मे कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग की स्थिति को गभीर क्षति पहुचाई। इसने गभीर आर्थिक कठिनाइयो और राजनीतिक कलह को जन्म दिया, जिसके फलस्वरूप विरोधी गुटो मे सशस्त्र मुठभेडें हुई और अराजकता तथा निम्नपूजीवादी तत्वो का नगा नाच हुआ। चीन मे समाजवादी उपलब्धिया गभीर खतरे मे पड गई।

सोवियत जनता और दुनिया के सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादियो को आशा है कि चीन मे स्वस्थ, मार्क्सवादी शक्तिया अतत विजयी होगी और महान चीनी जनता, जिसने मानवजाति की प्रगति मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, ससार की शाति, जनवाद और समाजवाद की शक्तियो द्वारा प्राप्त सफलताओ को आगे ले जायेगी।

## ८ पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण का काल और गैर-पूजीवादी विकास

हमे पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण के काल और गैर-पूजीवादी विकास के बीच अन्तर करना चाहिए, जो प्रत्यक्ष रूप मे पूजीवाद से नही, बल्कि प्राक्-पूजीवादी सामाजिक प्रणालियो (सामती और यहा तक कि पितृसत्तात्मक) से समाजवाद की ओर अग्रसर होने का द्योतक है। गैर पूजीवादी

राजकीय फार्म–जन जमीदारिया–है, जिनपर अब कुल गन्ने का तीन-चौथाई भाग, सारी औद्योगिक फसलो और आधे पशुधन को पैदा किया जाता है। वहा सोवियत सामूहिक फार्मो जैसे सहकारी फार्म नही है।

**इस प्रकार, समाजवादी निर्माण के आम नियम विभिन्न देशो मे विभिन्न रूप से अभिव्यक्त होते है।**

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस मे कहा गया है "कई राष्ट्रो के उदाहरण से यह प्रकट हो गया है कि पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण को नियत्रित करनेवाले कई आम नियम है, जो सर्वप्रथम सोवियत सघ के समाजवादी रूपान्तरण के दौरान अभिव्यक्त हुए। इस बात की भी पुष्टि हो चुकी है कि प्रत्येक राष्ट्र इस सक्रमण के रूपो और तरीको मे अनेक नयी विशेषताओ को जोडता है। समाजवादी देशो द्वारा प्राप्त अनुभव ने इस की पूर्णतर समझ प्रदान की है कि ये आम नियम किस प्रकार काम करते है और विशिष्ट परिस्थितियो मे समाजवादी निर्माण के विभिन्न रूप तथा तरीके किस प्रकार लागू किये जाते है।"

इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि एकमात्र मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आम सिद्धान्तो, समाजवादी निर्माण के आम नियमो को सामने रखते हुए और प्रत्येक देश की ठोस परिस्थितियो के अनुसार उन्हे लागू करने से समाजवादी पथ पर सफलता प्राप्त करना सभव है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद, व्यावहारिक रूप मे परखे हुए समाजवादी निर्माण के आम नियमो से तनिक भी विचलन से समाजवाद के ध्येय को गभीर क्षति पहुचती है। यह चीन मे हाल की घटनाओ से प्रत्यक्ष है।

चीन मे क्राति की विजय हुई। उसकी विजय के तुरत बाद के वर्षों मे चीनी जनता ने, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धातो से निदेशित हो रही थी और जिसे सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो से सर्वतोमुखी सहायता प्राप्त हुई, अर्थव्यवस्था, सामाजिक सबधो और बौद्धिक सस्कृति के विकास मे जबरदस्त सफलताए प्राप्त की।

लेकिन माओ त्से-तुग और उसके गुट ने एक विशेष गृह तथा विदेश नीति चलाई, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद और समाजवादी निर्माण के आम नियमो से असगत थी। सारत उन्होंने समाज मे मजदूर वर्ग और उसकी मार्क्सवादी पार्टी द्वारा अदा की जानेवाली

नेतृत्वकारी भूमिका को तज दिया, और समाजवादी जनवाद को खत्म करने, जनता द्वारा निर्वाचित सत्ता के संवैधानिक निकायों को माम्रो त्से-तुग के चेलों द्वारा निर्मित तथाकथित क्रांतिकारी समितियों से प्रतिस्थापित करने की ओर और जनता की अत्यावश्यक भौतिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं को तुष्ट करने, समाजवादी देशों से सहयोग और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन की समन्वित आम नीति का अनुसरण करने से इन्कार की ओर लक्षित नीति पर चलने लगे। माओ त्से-तुंग गुट एक ऐसी नीति का अनुसरण करने लगा, जो निम्नपूंजीवादी दुःसाहसिकता और महाशक्ति अंधराष्ट्रवाद का मिश्रण थी और जो "वामपंथी" अतिक्रांतिकारी लफ्फाजी की आड़ में छिपी हुई थी और जो खुले तौर पर समाजवादी बिरादरी को कमजोर करने और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन में फूट डालने लगी।

माओ त्से-तुंग और उनके संगी-साथियों की दुःसाहसिकता ने चीन में कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग की स्थिति को गंभीर क्षति पहुंचाई। इसने गंभीर आर्थिक कठिनाइयों और राजनीतिक कलह को जन्म दिया, जिसके फलस्वरूप विरोधी गुटों में सशस्त्र मुठभेड़ें हुईं और अराजकता तथा निम्नपूंजीवादी तत्वों का नंगा नाच हुआ। चीन में समाजवादी उपलब्धियां गंभीर खतरे में पड़ गईं।

सोवियत जनता और दुनिया के सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादियों को आशा है कि चीन में स्वस्थ, मार्क्सवादी शक्तियां अंततः विजयी होंगी और महान चीनी जनता, जिसने मानवजाति की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, संसार की शांति, जनवाद और समाजवाद की शक्तियों द्वारा प्राप्त सफलताओं को आगे ले जायेगी।

## ८. पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण का काल और गैर-पूंजीवादी विकास

हमें पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण के काल और गैर-पूंजीवादी विकास के बीच अन्तर करना चाहिए, जो प्रत्यक्ष रूप में पूंजीवाद से नहीं, बल्कि प्राक्-पूंजीवादी सामाजिक प्रणालियों (सामंती और यहां तक कि पितृसत्तात्मक) से समाजवाद की ओर अग्रसर होने का द्योतक है। गैर-पूंजीवादी

विकास का मतलब है सम्पूर्ण पूजीवादी व्यवस्था अथवा विकसित पूजीवादी दौर से गुजरे बिना सीधे समाजवाद की ओर अग्रसर होना।

भौतिक (पर्याप्त रूप मे विकसित अर्थव्यवस्था) और सामाजिक (मजदूर वर्ग और उसकी मार्क्सवादी पार्टी का अस्तित्व) परिस्थितियो के परिपक्व होने पर ही पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण होता है। परन्तु जब समाज प्राक्-पूजीवादी सम्बन्धो से समाजवाद की ओर अग्रसर होता है, तो ये परिस्थितिया या तो होतीं नही, अथवा इनका स्वरूप अपरिपक्व होता है। इस कारण यह स्वाभाविक है कि संक्रमण-काल मे समाजवाद के निर्माण को नियत्रित करनेवाले आम नियम अपने विशुद्ध, कहे कि शास्त्रीय रूप मे अप्रयोज्य होते हैं।

इस समस्या पर हम विस्तार से विचार करेंगे।

चूंकि गैर-पूजीवादी विकास के पथ पर अग्रसर होनेवाले कुछ देशो मे शायद ही कोई वर्ग विभाजन है और मजदूर वर्ग अभी अविकसित अवस्था मे है, इसलिए वहा क्रान्तिकारी-जनवादी सरकार के कायम होने पर सर्वहारा अधिनायकत्व के बिना समाजवादी सुधारो को लागू करने का काम शुरू किया जा सकता है। सम्बन्धित देश के मेहनतकशो द्वारा समर्थित यह सरकार नये समाज के लिए पूर्वापेक्षित परिस्थितिया पैदा करती है। अन्य देशो का विजयी सर्वहारा अधिनायकत्व ऐसे देश को प्रतिक्रान्ति के निर्यात के विरुद्ध अपनी रक्षा करने, अर्थव्यवस्था का निर्माण करने, सस्कृति को विकसित करने आदि मे सहायता प्रदान करता है। एक विकासमान देश समाजवादी देशो से सहायता और समर्थन प्राप्त करके समाजवाद के भौतिक तथा सामाजिक आधार के निर्माण का काम शुरू कर सकता है।

गैर-पूजीवादी विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए भी निजी स्वामित्व का उन्मूलन और उसके स्थान पर सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना अनिवार्य है। किन्तु यह प्रक्रिया भी विशिष्ट रूप ग्रहण कर सकती है। अधिकाश विकासमान देशों की अर्थव्यवस्था विदेशी इजारेदारियो पर अवलम्बित है और इस कारण तेजी से एक ही कार्रवाई के फलस्वरूप वहा राष्ट्रीयकरण नही किया जा सकता। उक्त देशों मे राष्ट्रीयकरण एक क्रमिक प्रक्रिया है और कई अवस्थाओ मे नये शासन के प्रति निष्ठावान पूजीपति वर्ग को मुआवजा देना सम्बन्धित सरकार के लिए लाभजनक रहता है। अनेक अवस्थाओ मे विदेशी और देशी पूजीपतियो से खरीदी गयी सम्पत्ति

से अर्थव्यवस्था के राजकीय, राष्ट्रीयकृत क्षेत्र का आधार स्थापित किया जाता है। मिसाल के लिए बर्मा मे राज्य द्वारा "बर्मा आयल कम्पनी" के शेयर खरीदकर तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया गया था। कुछ नवस्वतन्त्र अफ्रीकी देशो मे भी उद्यमो के भूतपूर्व मालिको को मुआवजा अदा किया जाता है। परन्तु इसका मतलब यह कदापि नही है कि राष्ट्रीयकरण अपने पूजीवाद-विरोधी स्वरूप को खो देता है।

गैर-पूजीवादी पथ पर विकास करनेवाले देशो मे औद्योगीकरण और कृषि सहकारिता भी विशिष्ट रूप ग्रहण करती है। राष्ट्रीय साधनो को जुटाने और समाजवादी देशो से सहायता प्राप्त करने के साथ ही साथ आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए विदेशी पूजी को भी आकृष्ट किया जाता है। कुछ अफ़्रीकी राज्य इस नीति का अनुसरण कर रहे है।

कई नवस्वाधीन देशो मे, विशेष रूप से अफ्रीका मे प्राक्-औपनिवेशिक काल, पण्य-उत्पादन के प्रादुर्भाव और साम्राज्यवादी शोषण की जड जमने के पहले के समय से जीवित सामुदायिक स्वामित्व के रूप या इन रूपो के अवशेष आज भी कायम है। समाजवाद से इनकी समानता इसी रूप मे है कि उत्पादन के साधन निजी नही, बल्कि सार्वजनिक सम्पत्ति है। मगर समानता यही समाप्त हो जाती है और, एगेल्स के कथनानुसार, इस एक लक्षण के कारण उत्पादन का यह प्राचीन रूप भावी समाजवादी समाज को अस्तित्व नही प्रदान कर पाता।

कबीला समुदाय के पास उत्पादन के केवल आदिकालीन साधन होते है। ऐसे समुदाय मे मुश्किल से सामान्य पुनरुत्पादन ही किया जाता है, श्रम की उत्पादन-क्षमता बहुत ही निम्नस्तरीय और उसका आर्थिक तथा पूरा जीवन गतिशून्य होता है। कबीला समुदाय एक स्थानीय, सख्या की दृष्टि से कम सदस्यो का छोटा-सा समूह होता है, जो बाहरी दुनिया से अलग-थलग, उत्पादन अथवा दूसरे आर्थिक हितो से ऐसे ही अन्य समूहों से असम्बद्ध रहता है। यह विशेषता प्राचीन कबायली सामाजिक व्यवस्था को समाजवादी समाज से अलग करती है, जिसकी विशेषता उत्पादक शक्तियों के विकास का उच्च स्तर और सार्वजनिक समाजवादी सपत्ति के आधार पर उत्पादक उद्यमो मे घनिष्ठ सम्बन्ध है।

सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टियो से सामुदायिक स्वामित्व की अफ्रीकी प्रणाली अन्य महाद्वीपो के ऐसे ही समुदायो की प्रणालियों, जैसे पूर्वी यूरोप

के पुराने कृपक समुदायो अथवा अमरीकी रेड इडियनो की कुल प्रणाली से मिलती-जुलती है। जब समाज का वर्गों मे विभाजन नही हुआ था, उस समय सभी राष्ट्रो मे उत्पादन के साधनो पर सयुक्त स्वामित्व वाले ऐसे समुदाय थे। परन्तु इतिहास सामुदायिक स्वामित्व के किसी ऐसे रूप का उदाहरण नही प्रस्तुत करता, जो कबायली प्रणाली का अवशेष होते हुए भी समाजवादी समाज की स्थापना करने मे समर्थ हो। किसी भी देश मे ये रूप इतने शक्तिशाली नही थे कि पण्य उत्पादन और विश्व बाजार के क्षयकारक प्रभाव को झेल सकते। इसके अलावा, कई देशो मे उपनिवेशवादियो ने उत्पीडित कबीलो की सामुदायिक प्रणाली को कुचल दिया। वे समुदाय के स्वतत्र सदस्यो को बागान मे काम करनेवाले गुलामो मे परिणत कर देते थे। इनमे से कई समुदायो मे निजी स्वत्त्वाधिकारियो का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने समुदाय की सम्पत्ति हडप ली और अपने सजातीयो का शोपण किया।

किन्तु, इसका मतलब यह नही है कि नये समाज के निर्माण म, विशेष रूप से कृषि सहकारी समितियो की स्थापना मे सामूहिक स्वामित्व और श्रम के पुरातन प्रचलित रूप कोई भूमिका अदा नही कर सकते। जनवादी सरकार कृपक समुदाय मे नवजीवन का सचार कर सकती है और भूमिधरो को उसे सहकारी समुदाय मे परिवर्तित करने मे सहायता कर सकती है। कुछ अफ्रीकी देशो के अनुभव से सिद्ध होता है कि साम्राज्यवाद विरोधी शक्तिया इन समुदायो मे पहलकदमी की भावना पैदा कर सकती हैं, उनके उत्साह को बढा सकती हैं और शोपण से उनकी रक्षा करके उन्हे नये जीवन के निर्माण की ओर लक्षित कर सकती हैं।

जहा तक समाजवादी निर्माण के अन्य नियमो का सम्बन्ध है (योजनाबद्ध आर्थिक विकास तथा जनता के जीवन स्तर को ऊचा उठाना, सास्कृतिक क्रान्ति, जातीय बुद्धिजीवी समुदाय का निर्माण, जातीय उत्पीडन का उन्मूलन, जातियो के बीच समानता और मैत्री तथा सारी दुनिया के मेहनतकश लोगो की एकता) तो वे पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण करते समाज और गैर-पूजीवादी पथ से विकास करनेवाले समाज—दानो—मे प्राय समान रूप से लागू किये जा सकते है।

# समाजवाद–नये समाज की प्रथम अवस्था

समाजवाद पर दृष्टिपात करने से पहले नये समाज की दो अवस्थाओं, उनकी समानता और अन्तर की सामान्य जानकारी हासिल करना आवश्यक है।

## १. समाजवाद और कम्युनिज़्म–नये समाज की दो अवस्थाएं

नये कम्युनिस्ट समाज की प्रथम अवस्था समाजवाद और द्वितीय अवस्था कम्युनिज़्म है। दोनो का बहुत ही विकसित भौतिक और तकनीकी आधार–उन्नत मशीन उद्योग और अति विकसित सामूहिक कृषि–होता है और वे नवीनतम वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियो को काम मे लाते हैं। उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का उन्मूलन उनका स्थिर आर्थिक आधार है।

चूकि नये समाज की दोनो अवस्थाओ–समाजवाद और कम्युनिज़्म–के अन्तर्गत निजी स्वामित्व, शोषक वर्गों और मनुष्य द्वारा मनुष्य के उत्पीडन का अन्त हो जाता है, इसलिए दोनो अवस्थाओ मे उत्पादन सम्बन्ध **बन्धुत्वपूर्ण सहयोग और पारस्परिक सहायता के सम्बन्ध होते है।**

समाजवाद और कम्युनिज़्म दोनो के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध, सतुलित विकास का नियम लागू होता है। अर्थव्यवस्था का प्रबन्ध निर्दिष्ट योजना के अनुसार किया जाता है, जिसके फलस्वरूप सकट, बेकारी और

भौतिक तथा जनशक्ति साधनो की घातक बर्बादी की स्थिति पैदा नही होने पाती। सार्वजनिक उत्पादन का लक्ष्य जनता की भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओ की अधिकतम तुष्टि करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने का तरीका – नवीनतम तकनीक के आधार पर उत्पादन मे सतत सुधार और वृद्धि – भी समाजवाद और कम्युनिज्म के अन्तर्गत समान है। चूकि समाजवादी और कम्युनिस्ट उत्पादन की व्यवस्था जनता के हित मे की जाती है, जो भौतिक तथा मानसिक सम्पदा की मालिक है, इसलिए दोनो समाजो के लोगो की अभिरुचि उत्पादन के सतत विकास और वृद्धि मे रहती है।

समाजवाद और कम्युनिज्म दोनो की विशेषता राष्ट्रो के बीच मैत्री तथा सहयोग के सम्बन्ध हैं और छोटे-बडे सभी देशो के बीच सम्बन्धो का आधार शान्ति को कायम रखना तथा सुदृढ बनाना है। दोनो समाजो मे सभी सदस्यो को अपनी योग्यतानुसार काम करने का समान अधिकार प्राप्त रहता है, दोनो मे व्यष्टि और समष्टि के बीच समन्वय कायम होता है और उनमे एक ही कम्युनिस्ट वैचारिकी अभिभावी होती है।

समाजवाद और कम्युनिज्म के मुख्य लक्षणो की समानता के कारण मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रवर्तको ने उन्हे एक ही **कम्युनिस्ट समाज की विभिन्न अवस्थाओ** (विकास के दौरो) के रूप मे माना है।

लेनिन ने लिखा था 'जिस हद तक उत्पादन के साधन **सब की** सम्पत्ति बन जाते हैं, उस हद तक यहा 'कम्युनिज्म' शब्द भी लागू हो सकता है, बशर्ते कि हम यह न भूले कि यह पूर्ण कम्युनिज्म नही है।"*

समाजवाद पूर्णत विकसित कम्युनिज्म का नही, बल्कि अपूर्ण कम्युनिज्म का द्योतक है, क्योकि सर्वप्रथम समाजवादी उत्पादन का स्तर अभी इतना ऊचा नही होता कि समाज के सभी सदस्यो की सतत बढती हुई आवश्यकताओ की पूर्ण रूप से तुष्टि हो सके। फलत जीवन के साधनो को आवश्यकता के अनुसार नही, श्रम के गुण और मात्रा के आधार पर वितरित किया जाता है। इसके फलस्वरूप आर्थिक असमानता पैदा होती है। उत्पादन के अपर्याप्त विकसित स्तर के कारण श्रम के पुराने विभाजन के अवशेष भी बने रहते हैं – मानसिक और शारीरिक श्रम, कुशल और गैर-कुशल, कठिन और अपक्षाकृत अधिक आसान श्रम बना

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'राज्य और क्रान्ति'।

रहता है। समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत श्रम मुख्य, अनिवार्य आवश्यकता, सभी लोगों का प्रिय सृजनात्मक कार्य नहीं हो पाता। श्रम को आज भी कर्त्तव्य के रूप में, बहुधा कष्टकर फर्ज के रूप में और रोजी कमाने के साधन के रूप मे मानने का रवैया बना हुआ है, काम करनेवाले का मुख्यत एक ही पेशे से सम्बन्ध होता है, जिससे व्यक्ति का एकतरफा विकास होता है।

समाजवाद का सीधे पूजीवाद से विकास होना है और इस कारण स्वाभाविक रूप से समाजवाद पर पूजीवाद की छाप, अथवा, मार्क्स के शब्दो में अतीत के "जन्मचिन्ह"—जैसा कि अभी हमने उल्लेख किया है—आर्थिक असमानता और श्रम के पुराने विभाजन के अवशेष परिलक्षित होते हैं। ये "जन्मचिन्ह" समाज के मानसिक जीवन, लोगो की चेतना मे विशेषकर प्रकट होते हैं। समाज के कुछ सदस्यो की मनोवृत्ति निजी स्वत्वधारियो की मनोवृत्ति होती है, वे स्वार्थी, लालची, आदि होते हैं।

ज्यो-ज्यो समाजवाद विकसित और कम्युनिस्ट समाज मे रूपान्तरित होता जाता है, त्यो-त्यो लोगो के मन से अतीत के ये अवशेष मिटते जाते हैं।

कम्युनिज्म कम्युनिस्ट व्यवस्था की उच्चतर तथा अधिक समुन्नत अवस्था है। इसके अन्तर्गत यन्त्रीकृत और स्वचालित मशीनो के जरिये उत्पादन का स्तर बहुत ही ऊचा हो जायेगा। उत्पादन मे इस हद तक वृद्धि हो जायेगी कि "हरेक से उसकी योग्यतानुसार, हरेक को उसके श्रमानुसार" के समाजवादी सिद्धान्त की जगह गुणात्मक दृष्टि से नये, कम्युनिस्ट सिद्धान्त "हरेक से उसकी योग्यतानुसार, हरेक को उसकी आवश्यकतानुसार" को अपनाना सभव हो जायेगा। श्रम का स्वरूप भी बुनियादी रूप से बदल जायेगा। श्रम सृजनात्मक और शारीरिक दृष्टि से गैर बोझिल हो जायेगा। समाज के सभी सदस्यो मे स्वेच्छा से और अपनी रुचि के अनुरूप सब की भलाई के लिए श्रम करने की आन्तरिक आवश्यकता विकसित हो जायेगी।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत केवल अर्थव्यवस्था मे ही नही, बल्कि सामाजिक सम्बन्धो, जीवन-पद्धति और लोगो के विचारो मे भी असाधारण गुणात्मक परिवर्तन होगे। शहर और गाव, शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच बुनियादी अन्तर दूर हो जायेगा। कम्युनिज्म के अन्तर्गत राज्य का अस्तित्व नही रह जायेगा, समाजवादी राज्यत्व कम्युनिस्ट सार्वजनिक

स्वशासन मे विकसित हो जायेगा। लोगो की चेतना और जीवन प्रणाली बदल जायेगी।

इतने गहरे गुणात्मक परिवर्तन करने के लिए समय और जो इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है, भौतिक, सामाजिक तथा मानसिक पूर्वापेक्षाए अपेक्षित है – अत्यत विकसित भौतिक तथा तकनीकी आधार, शोषण से मुक्त लोगो के समुन्नत सामाजिक सम्बन्ध, समृद्ध मानसिक संस्कृति और विकसित जन-चेतना। चूकि ये सभी पूर्वापेक्षाए **केवल समाजवाद के अतर्गत मूर्त रूप ग्रहण करती है, इसलिए विकास के समाजवादी दौर को टालना, पूजीवाद से छलाग लगाकर सीधे कम्युनिज्म की उच्चतर अवस्था मे पहुचना असम्भव है।**

लेनिन ने लिखा था "मानवजाति पूजीवाद से सीधे केवल समाजवाद, अर्थात् उत्पादन के साधनो के सार्वजनिक स्वामित्व और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये गये श्रम की मात्रा के अनुसार उत्पादन के वितरण की अवस्था मे पहुच सकती है।"* दूसरे शब्दो मे **समाज के विकास की एक विशेष अवस्था के रूप मे समाजवाद की अवस्था अपरिहार्य है।** जिस प्रकार बीज से वृक्ष नही, बल्कि नन्हा पौधा ही निकलता है, उसी प्रकार पूजीवाद से समाजवाद ही उभरता है। समाजवाद एक प्रकार का अकुर है, जो विकसित होकर कम्युनिस्ट समाज रूपी वृक्ष मे बदल जाता है।

अब हम समाजवाद पर विस्तार से दृष्टिपात करेगे। हम प्रारभ समाजवादी समाज की अर्थव्यवस्था की विवेचना से करेगे।

## २. समाजवादी अर्थव्यवस्था

**समाजवाद का भौतिक और तकनीकी आधार**

भौतिक तथा तकनीकी आधार तकनीकी साधनो और श्रम के औजारो का कुल योग होता है, जिनकी सहायता से मनुष्य श्रम की प्रक्रिया मे अपनी आवश्यकता की सभी भौतिक चीजें तैयार करता है। समाज की प्रौढता और उसके विकास के स्तर का यह महत्त्वपूर्ण सूचक है, क्योकि जैसा कि मार्क्स ने लिखा है, ऐतिहासिक युगो की एक दूसरे से भिन्नता

---

*व्ला० इ० लेनिन, 'हमारी क्राति मे सर्वहारा वर्ग के कार्यभार'।

कया पैदा किया जाता है, इससे नहीं, बल्कि भौतिक सम्पदा का पैदा करने मे काम आनेवाले औज़ारो से प्रकट होती है।

प्राचीन काल की भाति इस समय भी मनुष्य गल्ला और गोश्त, रुई और रेशम तथा अन्य कई प्रकार के खाद्य पदार्थ और वस्तुए पैदा करता है, परन्तु जिन औज़ारो का प्रयोग करके वह इन चीजो का पैदा करता है, उनमे बहुत ही परिवर्तन आ गया है। मिसाल के लिए लोग बहुत पुराने समय से गल्ले को पीसकर आटा बनाते रहे है। शुरू मे यह काम हाथ से किया जाता था, बाद मे यह पवन चक्की तथा पन चक्की की सहायता से और उसके पश्चात भाप चक्की मे होने लगा। इसी के अनुरूप ऐतिहासिक युग बदले और एक समाज का स्थान दूसरे समाज ने ग्रहण किया। मार्क्स ने 'दर्शन की दरिद्रता' मे लिखा है कि पन चक्की ने हमे सामती सरदारो के नेतृत्व मे सामती समाज दिया था, लेकिन भाप चक्की ने औद्योगिक पूजीपतियो के नेतृत्व मे पूजीवादी समाज प्रदान किया।

**समाज की प्रगति सर्वोपरि रूप मे उसके भौतिक और तकनीकी आधार की प्रगति है।**

बड़े पैमाने का मशीन उद्योग और विद्युत का व्यापक उपयोग समसामयिक पूजीवाद का भौतिक और तकनीकी आधार है।

यह सच है कि पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो मे मशीनो से उत्पादन नही होता। श्रम के यत्रीकरण का स्तर सामान्यतया जहा काफी ऊचा होता है, वही कई क्षेत्रो मे श्रम — ब्रिटेन तथा कुछ अन्य देशो के कोयला उद्योग की भाति — कष्टदायक तथा अल्प यत्रीकृत बना रहता है। यत्रीकरण की इस प्रकार की असमानता का कारण यह है कि पूजीपति नई मशीनो को तभी काम म लाता है, जब वे शारीरिक श्रम की तुलना मे अधिक मुनाफा देती हैं। मगर मजदूरो की सख्या अधिक और श्रम शक्ति सस्ती हो, तो पूजीपतियो के लिए नयी मशीनो का उपयोग करने की अपेक्षा अधिक मजदूरो को काम पर लगाना सामान्यतया अधिक लाभजनक रहता है।

तथापि कुल मिलाकर पूजीवाद ने सामतवाद की अपेक्षा अतुलनीय रूप मे अधिक विकसित भौतिक और तकनीकी आधार निर्मित किया है। इसी आधार के कारण पूजीवाद के लिए सामतवाद के अन्तर्गत उत्पादक श्रम उत्पादिता से आगे बढ़ जाना तथा उसे परास्त करना सभव हुआ।

ठीक इसी प्रकार समाजवाद अन्ततः पूजीवाद को परास्त कर सकता है और करेगा भी, क्योकि समाजवाद के अन्तर्गत श्रम-उत्पादिता का स्तर बहुत अधिक ऊचा होता है। पूजीवाद को यो ही अथवा खोखले क्रान्तिकारी नारो से नही परास्त किया जा सकता। जनता को न केवल शोषको का तख्ता उलटकर राजनीतिक सत्ता को अपने अधिकार मे कर लेना है, बल्कि उसे अर्थव्यवस्था का सचालन प्रभावकारी रूप मे करना चाहिए, और पूजीपतियो की अपेक्षा कम लागत पर बेहतर चीजे अधिक माता मे तैयार करनी चाहिए। समाजवाद की स्थापना और पूजीवाद पर उसकी विजय का कोई और रास्ता नही है। इसके लिए आधुनिक मशीनी उद्योग की आवश्यकता है, जो नये तकनीकी आधार पर कृषि उत्पादन की व्यवस्था करके कृषि सहित अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो का पुनर्गठन करने मे सक्षम हो। इसी कारण **न केवल उद्योग, बल्कि कृषि, निर्माण तथा अर्थव्यवस्था की अन्य सभी शाखाओ पर हावी होनेवाला बडे पैमाने का मशीनी उद्योग ही समाजवाद के भौतिक तथा तकनीकी आधार का काम दे सकता है।**

इस आधुनिक भौतिक और तकनीकी आधार का इस्तेमाल करते हुए मेहनतकश लोग सभी वस्तुओ के उत्पादन मे काफी वृद्धि करने और पूजीवादी व्यवस्था की तुलना मे अपने जीवन को अधिक समृद्ध तथा सुखी बनाने मे सक्षम हो सकते है।

समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण मे विद्युत शक्ति को प्रमुख स्थान प्राप्त है, क्योकि बिजली का इस्तेमाल करने पर ही बडे पैमाने के मशीनी उत्पादन का विकास हो सकता है। जहा विद्युत शक्ति पैदा की जाती है, वहा से वह सुदूर स्थानो तक पहुचायी जा सकती है। इसी से मशीनें चलती है और पूरे के पूरे कारखाने काम करते है। विद्युत की सहायता से ही पशु-पालन के क्षेत्र मे श्रम को यन्त्रीकृत करना—गायो को दुहना, भेडो का ऊन काटना, पानी पहुचाना और ढोरो के रख-रखाव की अन्य प्रक्रियाओं को चालू रखना—सभव है।

बिजली के बिना आधुनिक परिवहन और सचार व्यवस्था की बात सोची भी नही जा सकती। विद्युत शक्ति ही सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के तकनीकी पुनर्गठन मे प्रमुख भूमिका अदा करती है। इसी कारण समाजवादी उत्पादन के विकास के लिए अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रो की अपेक्षा

बिजली उद्योग और बिजलीकरण के विकास की तीव्रतर गति नितान्त आवश्यक है। सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो की अर्थव्यवस्था के निर्माण और विकास की सफलताए बिजलीकरण के ही फलस्वरूप सभव हुई हैं। इस प्रसग मे यही कहना पर्याप्त है कि सोवियत सघ मे बिजली का उत्पादन १६१३ के २० अरब किलोवाट-घटे से बढकर १६४० मे ४८ ३ अरब किलोवाट-घटा और १६७० मे ७४० अरब किलोवाट घटा हो गया था।

समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार मे **भारी मशीन निर्माण, धातु और रासायनिक उद्योगों को प्रमुख स्थान प्राप्त है।** हल्के उद्योग तथा कृषि इन्ही उद्योगो के आधार पर विकसित होते हैं। इसी कारण समाजवादी देशा म भारी उद्योग और विशेष रूप से उसकी मुख्य शाखाओं को प्राथमिकता प्राप्त है। उदाहरणार्थ, सोवियत सघ मे १६१३ की अपेक्षा १६६६ मे कुल औद्योगिक उत्पादन मे ७६ गुना वृद्धि हुई, जिसमे भारी मशीन निर्माण तथा धातुकर्म उद्योगो के उत्पादन म ७५४ गुना और रासायनिक तथा तेल-रासायनिक उद्योग मे ४१७ गुना वृद्धि हुई।

भारी उद्योग के विकास के फलस्वरूप इसी अवधि के दौरान हल्के उद्योग के उत्पादन मे २० ८ गुना और खाद्य उद्योग के उत्पादन मे १५ १ गुना वृद्धि करना सभव हो गया।

कृषि के क्षेत्र मे मशीनो और सस्यविज्ञान की उपलब्धियो पर आधारित बडे पैमाने की सामूहिक खेती समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार का द्योतक है। १६६६ के अन्त मे सोवियत कृषि मे १६ ०८,००० ट्रैक्टरो और ६,०५,००० फसल काटने की कम्बाइनो का उपयोग हो रहा था। कृषि मे बिजली का उपयोग क्रान्ति के पहले के स्तर की तुलना मे बीस गुना से अधिक बढ गया। गावो के जीवन मे बिजली का इस्तेमाल किया जाता है और कृषि उत्पादन मे भी उसका व्यापक उपयोग हो रहा है। समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार की यही सामान्य रूपरेखा है।

**उत्पादन के साधनो का सार्वजनिक स्वामित्व**

समाजवाद का आर्थिक आधार है सार्वजनिक समाजवादी स्वामित्व। इसका मतलब यह है कि उत्पादन के साधनो पर अलग अलग व्यक्तियो का नही, बल्कि खुद उत्पादको का स्वामित्व है, और वह भी सयुक्त, सामूहिक रूप मे। समाजवादी स्वामित्व के एकच्छत्र प्रचलन से

उत्पादन के साधनो का समाज के एक हिस्से द्वारा दूसरे हिस्से के शोषण के साधन के रूप मे रूपान्तरण पूर्णतया असभव हो जाता है। इस प्रकार स्वामित्व और श्रम, मालिक और मजदूर के बीच अन्तर्विरोध सदा के लिए दूर कर दिया जाता है। समाजवाद के अन्तर्गत समाज के सदस्यो का श्रमिको और मालिको मे विभाजन ही शब्दश समाप्त हो जाता है और सभी श्रमयोग्य लोग श्रमिक हो जाते हैं। सार्वजनिक स्वामित्व के आधार पर उनमे **सहयोग और पारस्परिक सहायता के सम्बन्ध कायम होते हैं।**

अधिकाश देशो मे जहा समाजवाद ने विजय प्राप्त कर ली है अथवा विजय प्राप्त करता जा रहा है, सार्वजनिक स्वामित्व दो रूपो मे विद्यमान है—**सारी जनता का** ( राजकीय ) और **सहकारी समितियो का** ( सामुदायिक अथवा जैसा कि सोवियत सघ मे है, सहकारी तथा सामूहिक फार्मीय )।

सारी जनता की सम्पत्ति **राष्ट्रीयकरण** के जरिये अस्तित्व मे आती है, अर्थात् उत्पादन के साधनो को राज्य के रूप मे समस्त जनता के अधिकार मे दे दिया जाता है।

किसानो, दस्तकारो और अन्य छोटे स्वत्वाधिकारियो के कुछ निश्चित समूहो के उत्पादन के साधनो का **समाजीकरण** करने के फलस्वरूप सहकारी सम्पत्ति अस्तित्व मे आती है और श्रमिको के सयुक्त प्रयास से इसम काफी वृद्धि होती है। यह लोगो के निश्चित समूह की सार्वजनिक सम्पत्ति है, जो सहकारी समितियो के सदस्य होते हैं।

समाजवादी अर्थव्यवस्था मे समस्त जनता की, राजकीय सम्पत्ति का स्थान प्रमुख, निर्णायक होता है। इसमे अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्र समाविष्ट रहते हैं भारी उद्योग म आनेवाले उद्यम, सभी प्रकार के परिवहन साधन ( रेल, मोटर, विमान, नदी और समुद्र पोत ), बैंक, विदेश तथा घरेलू व्यापार, सचार साधन ( डाक, तार, टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन ), नगरो तथा औद्योगिक बस्तियो मे रिहाइशी मकान और खनिज साधना, जगलो, नदियो आदि सहित जमीन। इसके अतिरिक्त अपन विकास तथा उत्पादन के साधना के समाजीकरण की मात्रा की दृष्टि से सहकारी सम्पत्ति की तुलना मे राजकीय सम्पत्ति श्रेष्ठ होती है। सहकारी सम्पत्ति जहां लोगा के एक समूह की सम्पत्ति होती है, राजकीय सम्पत्ति समाज के सभी सदस्यो, समस्त जनता की सम्पत्ति है।

दो प्रकार के समाजवादी उद्यम समाजवादी स्वामित्व के दो रूपो के

अनुरूप है १) राजकीय उद्यम – फैक्टरिया, कारखाने, राजकीय कृषि उद्यम (राजकीय फार्म), जनोपयोगी सेवाए, आदि, २) सहकारी उद्यम – किसानो के सामूहिक फार्म और उपभोक्ता सहकारी समितिया।

यहा इस पर जोर देना आवश्यक है कि स्वामित्व के राजकीय और सहकारी दोनो रूप एक ही सार्वजनिक समाजवादी स्वामित्व के रूप है। राजकीय उद्यमो के मजदूर और दफ्तरी कर्मचारी तथा सहकारी समितियो मे शामिल किसान और दस्तकार अपने अपने काम मे, उत्पादन के प्रबन्ध मे बराबरी के आधार पर भाग लेते है और अपने अपने श्रम की मात्रा तथा गुण के अनुरूप भौतिक और सास्कृतिक सुविधाए प्राप्त करते है। इसके अलावा, किसान अथवा दस्तकार अपनी सहकारी समितियो के उत्पादन के साधनो के ही नही, बल्कि साथ ही राजकीय स्वामित्व के भी मालिक है।

समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सार्वजनिक स्वामित्व की प्रमुखता से व्यक्तिगत स्वामित्व बिलकुल समाप्त नही हो जाता। नागरिको की व्यक्तिगत सम्पत्ति मे कपडे, फर्नीचर, रेफ्रिजेरेटर, रेडियो तथा टेलीविजन सेट, किताबें आदि शामिल है। शहरो और गावो मे अनेक नागरिको के अपने-अपने घर, मोटरकार तथा मोटरसाइकिल, बागबानी के लिए अपनी जमीन, ढोर और कृषि औजार होते है। समाजवाद व्यक्तिगत स्वामित्व को नही, बल्कि उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व को खत्म करता है, जो किसी अन्य व्यक्ति के श्रम के शोषण का मूलाधार है।

**श्रम-उत्पादिता मे सतत वृद्धि**

पुराने समाज पर हावी होने के निमित्त नये समाज के लिए श्रम-उत्पादिता मे उससे आगे बढ जाना आवश्यक है। चूकि समाजवाद पूजीवाद की अपेक्षा श्रम-उत्पादिता का उच्चतर स्तर प्राप्त कर सकता है, इसलिए, जैसा कि हम पहले ही कह चुके है, पूजीवाद को अपना स्थान अनिवार्यत समाजवाद को देना पडता है।

इससे भिन्न बात हो भी नही सकती। अगर नये कम्युनिस्ट समाज का प्रत्येक सदस्य उतनी ही मात्रा मे चीजें पैदा करे, जितनी वह पूजीवाद के अन्तर्गत किया करता था, तो समाज को जनता के जीवन-स्तर को उठाने के साधन कहा से उपलब्ध होगे? और जनसमुदाय के जीवन-स्तर को मनन ऊचा उठाना ही समाजवाद का लक्ष्य है। इसके अलावा, देश की जनसख्या

निरन्तर बढती जाती है, जिससे जीवन के साधनो के उत्पादन मे वृद्धि भी आवश्यक हो जाती है।

इसमे कोई सन्देह नही है कि मजदूरो की सख्या बढाकर ही किसी देश मे वस्तुओ के उत्पादन मे वृद्धि की जा सकती है। पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत श्रमयोग्य आबादी का एक भाग इसलिये काम नही करता कि समाज सभी लोगो को काम नही दे पाता और सदैव बेकारी बनी रहती है, जिस दूसरे भाग के हाथ मे पूजी होती है, वह भी काम नही करता, क्योकि वह काम का सारा बोझ निर्धनो पर लाद देता है। परन्तु समाजवादी समाज मे सभी श्रमयोग्य लोग काम कर सकते है और उन्हे काम करना भी होता है। जाहिर है कि इस कारण कुल आबादी मे काम पर लगे लोगो की सख्या अधिक होती है और अधिक चीजे तैयार की जाती है।

शुरू म देश के भीतर परोपजीवी शोषको की खपत को खत्म करके और विदेशो को मुनाफे के निर्यात को, जिससे उपनिवेशो को खासकर चोट पहुचती थी, रोककर लोगो के जीवन स्तर को कुछ ऊचा उठाया जा सकता है।

**परन्तु आबादी के जीवन-स्तर को ऊचा उठाने का एकमात्र स्थिर और दृढ मूलाधार है श्रम-उत्पादिता मे वृद्धि।**

पूजीवाद की तुलना मे अधिक श्रम-उत्पादिता का लक्ष्य प्राप्त करने मे समाजवादी प्रणाली की कई श्रेष्ठताए है। सर्वप्रथम, उत्पादक उत्पादन के सभी साधनो के और अपने द्वारा उत्पन्न सभी भौतिक सम्पदाओ के सामूहिक, सार्वजनिक मालिक हो जाते है। शोषको के लिए नही, बल्कि खुद अपने लिए, अपने ही समाज के लिए काम करने से श्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल जाता है और श्रम-उत्पादिता बढाने मे सच्ची अभिरुचि पैदा हो जाती है। दूसरे, सकटो से रहित और उनके फलस्वरूप होनेवाली क्षति उठाये बिना समाजवादी अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध ढग से विकसित होती है। तीसरे, समाजवादी समाज मे नयी तकनीक का इस्तेमाल करने से बेकारी नही पैदा होती, बल्कि काम आसान हो जाता है। इसी कारण मेहनतकश लोग यत्रीकृत उत्पादन म दिलचस्पी लेते है और ईजाद तथा अभिनवीकरण के काम मे सक्रिय भाग लेते है, जिससे उत्पादन बेहतर हो जाता है। चौथे, चूकि समाजवादी समाज मे निजी स्वत्वाधिकारी नही होते और उनके बीच प्रतिद्वन्द्विता नही रहती, इसलिए उसम उत्पादन सम्बन्धी गोपनीयता भी नही होती, जिसे प्रत्येक पूजीवादी कार-

खानेदार बडी सावधानी के साथ बनाये रखता है। प्रत्येक नवीन प्रक्रिया बेहतर मशीनो, अधिक *युक्तिसगत काय प्रणाली* और बहतर *श्रम व्यवस्था* को सम्पूण अथव्यवस्था के स्तर पर काम मे लाया जाता है।

एक ओर आबादी और उसकी जरूरतो मे वृद्धि के कारण श्रम उत्पादिता बढाने की वस्तुगत आवश्यकता और दूसरी ओर समाजवादी अर्थव्यवस्था की श्रेष्ठता की वजह से एसा करने की वस्तुगत सभावना के फलस्वरूप **श्रम-उत्पादिता में सतत वृद्धि समाजवाद का नियम बन जाता है।** समाजवादी देशो, विशेष रूप से सोवियत सघ के विकास से यह निर्विवाद रूप म प्रमाणित हो जाता है, जहा समाजवादी विकास-काल के दौरान श्रम *उत्पादिता मे उद्योग मे १८ ५ गुना और कृषि मे ५ २ गुना वृद्धि हुई है।*

श्रम उत्पादिता मे वृद्धि के फलस्वरूप सोवियत सघ मे प्रथम पचवर्षीय योजना के दौरान औद्योगिक उत्पादन म ५१ प्रतिशत, द्वितीय पचवर्षीय योजना के दौरान ७९ प्रतिशत, युद्ध-काल और चतुथ पचवर्षीय योजना के दौरान ६८ प्रतिशत, १९६१ स १९६५ तक ६२ प्रतिशत और १९६६–१९७० के बीच ७३ प्रतिशत कुल बढ़ोतरी हुई।

धातु उद्योग, भारी मशीन निर्माण, रासायनिक और विद्युत उद्योगा जैसे क्षत्रो का विकास सम्पूण अर्थव्यवस्था मे श्रम-उत्पादिता बढाने के लिए *निर्णायक महत्व का है, क्योकि उनसे श्रम के आधुनिक, अत्यत उत्पादक* औजार सुलभ होते है।

अनेक कारणा (अतीत की पिछडी हुई अथव्यवस्था, युद्ध, इत्यादि) से इस समय सयुक्त राज्य अमरीका की अपेक्षा सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो की श्रम-उत्पादिता का स्तर नीचा है। परन्तु यह पिछडापन अस्थाई है और भविष्य म वह दूर हो जायेगा, क्यांकि अन्य पूजीवादी देशो की बात तो छोडिए, सयुक्त राज्य अमरीका की अपेक्षा सोवियत सघ म श्रम उत्पादिता के विकास की गति अधिक तीव्र है।

**समाजवाद के अन्तगत वितरण**

समाजवादी समाज मे उत्पादन के साधना पर खुद मेहनतकश लागा का स्वामित्व होता है और इस कारण जो चीजें पैदा की जाती है, व समाज की, अर्थात सभी लोगो की होती हैं। श्रम फल स्वय मेहनतकश लोगा को प्राप्त होता है और फलत भौतिक सम्पदा के उत्पादन की सतत वृद्धि मे समाजवादी देशा के नागरिका की अभिरुचि बनी रहती है।

समाजवादी उत्पादन के इस सारतत्व से ही उसका लक्ष्य आविर्भूत होता है। समाज के सभी सदस्यों की सतत बढ़ती हुई जरूरतों की पूर्णतम तुष्टि और उनके सर्वतोमुखी विकास के उद्देश्य से विकसित तकनीक और सामूहिक श्रम के आधार पर सार्वजनिक उत्पादन मे निरन्तर वृद्धि और सुधार होता रहता है।

इसके साथ ही समाजवादी उत्पादन जीवन-साधनो के प्राचुर्य को नही सुनिश्चित कर सकता। श्रम सब की मुख्य आवश्यकता नही बन पाता है। फलत "हरेक से उसकी योग्यतानुसार, हरेक को उसके श्रमानुसार" के समाजवादी वितरण सिद्धान्त को लागू किया जाता है। इसका मतलब है कि समाज के प्रत्येक श्रमयोग्य सदस्य को काम करना है—और यह समाजवाद का अपरिहार्य नियम है।

श्रम करना समाज के सभी सदस्या का समान कर्त्तव्य और अपने काम की मात्रा तथा गुण के अनुसार सार्वजनिक उत्पाद को प्राप्त करना सब का समान अधिकार है। वितरण के समाजवादी सिद्धान्त से शोषक समाजो मे अतर्निहित लोगो के काम न करनेवाले, परन्तु जीवन की सभी अच्छी चीजो का सुख उठानेवाले अल्पसख्यक और कमरतोड मेहनत (जिससे अक्सर जीने लायक रोजी भी नही मिल पाती) करनेवाले भारी बहुसख्यक समुदाय मे विभाजन को खत्म करने मे सहायता मिलती है।

पूजीवाद के अन्तर्गत श्रम निजी मामला है। पूजीपति के हाथ अपने श्रम को बेचनेवाले सर्वहारा को केवल अपनी रोजी प्राप्त करने की चिन्ता बनी रहती है। वह काम करे अथवा न करे, यह उसका निजी मामला है, समाज से इसका कोई सम्बन्ध नही होता। समाजवाद के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति का श्रम सार्वजनिक श्रम के रूप मे प्रस्तुत होता है, यह व्यक्तिगत नही, सार्वजनिक मामला बन जाता है। समाजवादी समाज का नागरिक सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम मे भाग लेने को अपनी रोजी का साधन ही नही, बल्कि इसे अपने कर्त्तव्य का पालन, नये समाज के निर्माण मे अपना योगदान समझता है। इसलिए समाजवाद के अन्तर्गत श्रम पर श्रमिक के भौतिक हितो के साथ-साथ विचारधारात्मक, नैतिक प्रेरणा का भी असर पडता है। फलत समाजवादी प्रतियोगिता का प्रादुर्भाव होता है और मेहनतकश लोगो मे यह व्यापक रूप मे फैल जाती है। यह प्रतियोगिता आम विकास का लक्ष्य प्राप्त करने म पीछे रह जानेवाले

लोगो को आगे बढ गये लोगो से प्राप्त होनेवाली बिरादराना सहायता से भी अविच्छिन्न रूप मे सम्बद्ध है। आविष्कर्ताओ और नवीकारको का आन्दोलन बढता जा रहा है। जोर दबाव पर आधारित पुराने श्रम अनुशासन की जगह नूतन, चेतन अनुशासन की भावना पैदा होती है। यह अनुशासन श्रम मे प्रत्येक मजदूर की व्यक्तिगत अभिरुचि पर ही नही, बल्कि समाज के प्रति अपने कतव्य के प्रति गहरी जागरूकता पर आधारित है।

श्रम के पुराने पूजीवादी विभाजन के अवशेष समाजवाद के अन्तर्गत भी कायम रहते है। शारीरिक और दिमागी श्रम करनेवाले लोगो के बीच, शहर और गाव के बीच बुनियादी अन्तर अभी बने हुए हैं तथा कुशलता मे भी बडा अन्तर विद्यमान है। समाजवादी समाज मे सभी लोगो को समान रूप से उच्च कोटि की कुशलता प्राप्त नही है, जो उत्पादन के विकास से सम्बद्ध है कुछ सभी प्रकार की मशीनो और औजारो का इस्तेमाल करते हुए पेचीदा काम करते हैं, जबकि अन्य कम जटिल काम करते हैं। एक व्यक्ति अपनी इच्छानुकूल कार्य न तो हमेशा कर पाता है और न उसे हमेशा इसके लिए अवसर ही मिलते हैं। कभी कभी काम के चयन मे उसे अपने तथा अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय अर्जित करने का प्रश्न भी ध्यान मे रखना पडता है। श्रम अभी तक समाज के सभी सदस्यो के लिए मुख्य, सर्वावश्यक अपेक्षा नही बन पाया है और इस कारण सभी समान उत्साह के साथ काम नही करते। आज भी ऐसे लोग हैं, जो दूसरो के श्रम पर जीने की कोशिश करते है।

इस बात के दृष्टिगत समाजवाद के अन्तर्गत **श्रम की मात्रा और खपत की मात्रा पर सार्वजनिक नियन्त्रण आवश्यक होता है।** कुशलता मे अन्तर तथा काम की जटिलता को ध्यान मे रखना चाहिए और किये गए श्रम की मात्रा तथा गुण के अनुसार वेतन मिलना चाहिए। अधिक और बेहतर काम करनेवाले को अधिक वेतन मिलता है। पारिश्रमिक की इस प्रणाली से अधिक कुशलता प्राप्त करने, उत्पादन मे सक्रिय भाग लेने, तैयार माल की मात्रा बढाने और उसकी कोटि सुधारने मे मजदूरो को भौतिक प्रेरणा प्राप्त होती है।

यद्यपि समाजवाद के अन्तर्गत समाज के सभी सदस्यो का श्रम करने का समान कर्तव्य और किये गये काम के आधार पर पारिश्रमिक पाने का

समान अधिकार होता है, परन्तु समाजवादी समाज पूर्ण आर्थिक समानता को सुनिश्चित नही कर पाता है।

समाजवाद के अन्तर्गत प्रत्येक उत्पादक समाज से सामाजिक कोष म जमा होनेवाले हिस्से को छोडकर अपने योगदान के अनुरूप पारिश्रमिक पाता है। वहा वर्ग असमानता तो नही रहती, परन्तु समाज का प्रत्येक सदस्य वितरण मे जो हिस्सा प्राप्त करता है, उसमे असमानता बनी रहती है। इसे समझना आसान है कि समाजवाद के अन्तर्गत समान काम के लिए समान वेतन का अर्थ है विभिन्न लोगा पर एक ही प्रतिमान लागू करना। चूकि लोगो की कुशलता और क्षमता मे अन्तर होता है और परिवार के आकार भी भिन्न भिन्न होते हैं, इसलिए किय गए काम के अनुरूप वेतन होने के कारण वस्तुत उनकी आय म भी भिन्नता होती है।

वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का समानीकरण से कोई सम्बध नही है, जिसका तात्पर्य है किये गए काम की मात्रा और गुण पर कोई ध्यान दिये बिना सब को समान वेतन देना। समतावादी वितरण से मजदूर को अपनी कुशलता तथा श्रम उत्पादिता बढाने और तैयार माल की कोटि को सुधारने मे कोई दिलचस्पी न होगी, क्योकि उसे जीवनावश्यकताओ का सभी के साथ समान हिस्सा ही मिलता है। इससे उत्पादन को भारी क्षति पहुचेगी, उसके सतत एव तीव्र विकास मे बाधा पैदा होगी और समसामयिक वैज्ञानिक एव तकनीकी क्रान्ति की परिस्थितियो मे तो और भी अधिक अडचनें पैदा होगी, जो लोगो के व्यावसायिक प्रशिक्षण और उनकी आम शिक्षा का अधिकाधिक तकाजा करती हैं। इसी कारण कम्युनिस्ट समतावादी वितरण के विरुद्ध हैं।

समाजवादी उत्पादन मे वृद्धि और वितरण के समाजवादी सिद्धान्त के सतत क्रियान्वयन के फलस्वरूप **जनता के जीवन-स्तर को सतत ऊचा उठाना सुनिश्चित हो जाता है।** मिसाल के लिए सोवियत सघ म १९१३ की अपेक्षा १९७० म औद्योगिक मजदूरा और निर्माणकर्मियो की वास्तविक आय ८ गुना और प्रति कार्यरत व्यक्ति के हिसाब से किसानो की वास्तविक आय १२ गुना अधिक थी।

समाजवाद के अन्तर्गत जीवन-स्तर दो तरीका से सुधरता है।

पहला तरीका है मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारिया क वेतन तथा

सामूहिक फार्मो के किसाना की नकदी और जिसी आय को बढाना तथा फुटकर कीमतो को घटाना और करा को कम एव समाप्त करना।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान सोवियत सघ मे वेतन बढाने के लिए बहुत कुछ किया गया है।

१९६५ मे विभिन्न जन-सेवाओ (व्यापार सावजनिक भोजन व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य-सेवा, आदि) मे काम करनेवाले २ करोड लोगो के वेतन मे औसतन २० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

१ जनवरी, १९६५ से सामूहिक फार्मों के किसानो को राजकीय पशन देने की व्यवस्था लागू की गयी। १ जुलाई, १९६६ से सामूहिक फार्मो के किसानो को समान काम के लिये राजकीय फार्मों के मजदूरो के वेतन के बराबर सुनिश्चित मासिक पारिश्रमिक देने की व्यवस्था भी लागू की गई।

१९६७ के सितम्बर मे ५ करोड से अधिक लोगो के जीवन-स्तर को सुधारने के बारे म महत्त्वपूण नये निणय लिय गए।

न्यूनतम वेतन को बढाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। १ जनवरी, १९६८ से *न्यूनतम वेतन ६० रूबल है। कुछ श्रेणिया के* कमचारियो को न्यूनतम मजदूरी बढाकर ७० रूबल कर दी गई है।

दूसरा तरीका है **सार्वजनिक उपभोग कोष** को बढाना। इस कोष के जरिये किये गए काम की मात्रा और गुण पर कोई ध्यान दिये बिना लोगा की व्यक्तिगत आवश्यकताओ की पूर्ति मुफ्त की जाती है।

समाजवादी व्यवस्था के अन्तगत जनता की जरूरता को पूरा करने का नया ढग है सावजनिक कोष की स्थापना। किडरगाटना, शिशुसदना, बोर्डिंग स्कूला, स्वास्थ्य केन्द्रो, अवकाश गृहो, शिक्षा, डाक्टरी तथा सास्कृतिक सेवाओ पर होनेवाले खर्च की रकम इसी कोष से प्राप्त होती है और पेंशन, वजीफे, भत्ते, आदि दिये जाते हैं। यह उल्लेखनीय है कि व्यक्तिगत वेतन मे वृद्धि के साथ साथ सावजनिक कोष मे भी सतत वृद्धि होती जा रही है।

समाजवाद के अन्तगत मेहनतकश लोगो की आय का मुख्य स्रोत किय गए काम के लिए मिलनेवाला वेतन है, क्योकि समाजवादी समाज म कल्याण का एकमात्र आधार और साधन, समाज म व्यक्ति की, हैसियत की मुख्य कसौटी श्रम ही है।

इसके साथ ही ज्यो-ज्यो समाजवाद की प्रगति होती जाती है, त्यो-त्यो सार्वजनिक कोष से वितरित होनेवाली रकम भी बढती जाती है। इस प्रकार जहा १९४० मे सार्वजनिक कोष से लोगो को ४६ अरब रूबल प्राप्त हुए थे, वही १९७० मे यह रकम बढकर ६४ अरब रूबल हो गयी।

सार्वजनिक कोष की बदौलत पेंशन और सामाजिक बीमा मे सतत वृद्धि हो रही है। मिसाल के लिये, सोवियत सघ म सभी पेशो मे लगे ४१ करोड लोग वृद्धावस्था तथा विकलागता पेशन पा रहे हैं। आबादी को नि शुल्क शिक्षा और मुफ्त डाक्टरी सेवा प्राप्त होती है। लोगो का बडा भाग स्वास्थ्य केन्द्रो और अवकाश गृहो के लिए मुफ्त अथवा कम मूल्य पर पास प्राप्त करता है। बडे परिवारो को बच्चो की देखभाल एव पालन-पोषण के लिए आर्थिक सहायता, उच्च तथा विशेष माध्यमिक स्कूलो मे छात्रवृत्ति, अविवाहिता माताओ और अधिक बच्चोवाली माताओ को भत्ता देने, प्रसूति सुलाभो आदि पर काफी धन-राशि खर्च की जाती है। राज्य बडे पैमाने पर रिहाइशी मकानो के निर्माण मे सलग्न है। पिछले दस वर्षों मे प्राय आधी आबादी को या तो रहने के लिए नये फ्लैट मिले हैं अथवा उसकी रिहाइशी हालतो मे सुधार हुआ है।

सोवियत सघ मे हर मजदूर, दफ्तरी कर्मचारी अथवा सामूहिक कृपक परिवार पर सार्वजनिक कोष से प्रतिवर्ष ७५० रूबल खर्च किया जाता है। इसके अतिरिक्त घरो, स्कूलो, अस्पतालो, सास्कृतिक तथा अन्य जन सेवा प्रतिष्ठानो के निर्माण पर राज्य और सामूहिक फार्म प्रति वर्ष लगभग १५० रूबल प्रति परिवार व्यय करते हैं।

समाजवादी देशो मे अभी तक सार्वजनिक कोष से मिलनेवाली रकम की अपेक्षा व्यक्तिगत वेतन की रकम काफी अधिक है। परन्तु समाजवाद के प्रारम्भिक काल मे ही समाज के पूरे जीवन मे यह कोष बहुत बडी भूमिका अदा करने लगता है। वह सभी स्तरो पर सभी को शिक्षा, मुफ्त डाक्टरी सेवा और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का व्यापक विकास सुनिश्चित करता है, जो सर्वाधिक विकसित पूजीवादी देशो की सभी उपलब्धियो से भी श्रेष्ठ है। यह कोष सभी नागरिको को बडी सख्या मे सास्कृतिक और शैक्षिक सुविधाए (पुस्तकालय, सग्रहालय, क्लब, सस्कृति सदन, आदि) उपलब्ध करवाता है। सार्वजनिक कोष से लोगो को अपने आश्रितो—बच्चा, विद्यार्थियो, रोगियो और अपाहिजो—का पालन-पोषण करने मे सहायता

मिलती है और वृद्धो को उचित पेंशन दी जाती है। कुछ लोगो का परिवार छोटा, तो कुछ का बडा होता है। छोटे परिवारो की तुलना मे बडे परिवारो को सार्वजनिक कोष से बडा हिस्सा मिलने के फलस्वरूप कुछ हद तक समाज के सदस्यो की आर्थिक स्थिति समान हो जाती है।

सार्वजनिक कोष मे वृद्धि किसी भी रूप मे व्यक्तिगत हितो के प्रतिकूल नही है और न उससे उपभोग मे ही कोई कमी आती है। इसके विपरीत मनुष्य की जरूरतें अधिक पूर्ण रूप मे पूरी की जाती है और चूकि समाज आवश्यकताओ को पूरा करने का अधिकाधिक दायित्व ग्रहण करता जाता है, इसलिए मेहनतकश लोगो को अपना ज्ञान बढाने तथा विश्राम और मनोरजन के लिए अतिरिक्त समय मिल जाता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस के १९७१-१९७५ की पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना सबधी निदेशा मे जनता की खुशहाली बढाने का व्यापक कार्यक्रम सन्निहित है।

१९७१ से १९७५ के बीच जनता की वास्तविक आय मे लगभग ३० प्रतिशत की वृद्धि होगी। वास्तविक आय मे वृद्धि का तीन-चौथाई भाग श्रम के अधिक पारिश्रमिक के कारण होगा। न्यूनतम मासिक वेतन ७० रूबल हो जायेगा और उद्योग, परिवहन तथा भौतिक उत्पादन की अन्य शाखाओ मे काम करनेवाले बीच की आय के कर्मचारियो के वेतन तथा फार्मों पर काम करनेवाले मेकेनिको की वेतन-दरो मे वृद्धि होगी। इसके अलावा अध्यापको, डाक्टरो, चिकित्साकर्मियो तथा कितने ही अन्य विशेपज्ञो का वेतन बढेगा। उराल प्रदेश, उत्तरी यूरोपीय भाग, पश्चिमी साइबेरिया, कजाखस्तान (जनतत्र के दक्षिणी भाग को छोडकर) तथा सुदूर पूर्व, पूर्वी साइबेरिया और मध्य एशिया मे अनेक विशेपज्ञो को अधिक वेतन या अतिरिक्त वेतन मिलेगा। रात्रिकालीन काम के लिए अतिरिक्त वेतन मे काफी वृद्धि होगी।

इन उपायो को देश के प्रदेशो तथा आर्थिक क्षेत्रो मे क्रमश. लागू किया जायेगा और कुल मिलाकर कोई ९ करोड मजदूर और दफ्तरी कर्मचारी इनसे लाभान्वित होगे।

सामाजिक तथा उपभोग कोपो मे भी तेज वृद्धि होगी। १९७५ मे उनका कुल योग ९० अरब रूबल होगा, जो वर्तमान स्तर से ४० प्रतिशत अधिक है। इन कोपो का चिकित्सा सेवा को सुधारने,

शिक्षा का विकास करने और बडे तथा कम साधनोवाले परिवारो, औद्योगिक उद्यमो मे काम करनेवाली औरतो, पेशनरो और छात्रो के रहन-सहन की परिस्थितियो को सुधारने के लिए इस्तेमाल किया जायेगा।

छ साल के भीतर कुल ५६५–५७५ करोड वर्ग मीटर फर्शी रकबे के मकानो के बन जाने के कारण कोई ६ करोड लोगो की रिहाइशी हालत सुधर जायेगी। इसके अलावा खाद्य पदार्थो और उपभोक्ता वस्तुओ का उत्पादन बढेगा, व्यापार का और विस्तार होगा और जनता को उपलब्ध दैनंदिन सेवाओ मे सुधार होगा।

वितरण के समाजवादी सिद्धान्त की विशिष्टता का वर्णन करते समय समाजवाद और पूजीवाद के अन्तर्गत वेतन के सारतत्त्व मे जो बडा अन्तर है, उसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। पूजीवादी परिस्थितियो मे मजदूर को मिलनेवाला वेतन उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओ के मूल्य की आशिक प्रतिपूर्ति है। दूसरा भाग, जो बहुधा बडा होता है, मुनाफे के रूप मे पूजीपति द्वारा हडप लिया जाता है और जन-विरोधी प्रतिक्रियावादी विदेश एव गृह नीतियो, मिसला के लिए आक्रामक युद्धो, प्रगतिशील शक्तियो के विरुद्ध सघर्ष आदि पर खर्च करने के लिए राज्य द्वारा हस्तगत कर लिया जाता है। समाजवाद के अन्तर्गत सार्वजनिक कोप मे जमा होनेवाले हिस्से को छोडकर प्रत्येक श्रमजीवी अपने श्रम से खुद समाज को जो कुछ देता है, वह उससे ठीक उतना ही वेतन के रूप मे प्राप्त कर लेता है। परन्तु सार्वजनिक कोप खुद मेहनतकश लोगो के ही काम आता है। इसका एक भाग उत्पादन को बढाने, विज्ञान, तकनीक तथा सस्कृति के विकास, दूसरा भाग प्रतिरक्षा व्यवस्था को सुदृढ बनाने एव राजकीय मशीनरी के रख-रखाव पर खर्च किया जाता है, जो मेहनतकशो के हितो की रक्षा करती है, और जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके है, तीसरा हिस्सा मेहनतकशो मे पुन वितरित कर दिया जाता है, जिससे उनके वेतन मे काफी वृद्धि हो जाती है।

**आर्थिक सुधार**

सोवियत सघ सहित कई समाजवादी देशो मे इस समय जो आर्थिक सुधार लागू किये जा रहे है, वे आर्थिक विकास की योजनाओ का कार्यान्वित करने और प्रबन्ध के तरीको को सुधारने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इन सुधारो के

जरिये आयोजन, प्रबन्ध और आर्थिक प्रेरणा की नयी प्रणाली लागू करने की परिकल्पना की गई है। विभिन्न समाजवादी देशो मे लागू किये जानेवाले सुधारो मे कुछ भिन्नता के बावजूद उनका लक्ष्य एक सा है–उत्पादन को बेहतर बनाना, समाजवादी अर्थव्यवस्था की क्षमता को कार्यरूप मे परिणत करना और पूजीवाद से आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता मे नयी सफलताए प्राप्त करने के लिए पूर्वापेक्षित परिस्थितिया पैदा करना।

आर्थिक सुधार का सारतत्व क्या है?

पहली बात तो यही है कि यह उद्यमो के काम के आयोजन की प्रणाली को बदल देता है। सितम्बर, १९६५ तक उद्यमो के लिए योजना सम्बन्धी अनेक (शब्दश बीसियो) लक्ष्य और सूचक केंद्र द्वारा निर्धारित किये जाते थे और इस प्रकार उनके आर्थिक कार्यकलाप का सविस्तार नियमन किया जाता था। सुधार से जो प्रणाली लागू हो गई है, उसके अन्तर्गत केंद्र द्वारा केवल कुछ सूचक निर्धारित किये जाते है बिक्री के लिए वस्तुओ की मात्रा, उत्पादन का मुख्य चयन, मुनाफे की रकम और लाभदायकता, कुल वेतन-कोष, राजकीय बजट के लिए भुगतान और बजट से पूजी-विनियोजन, केन्द्रीकृत पूजी-निवेश की मात्रा तथा उत्पादक क्षमता और स्थायी परिसम्पत्ति का उपयोग म लाया जाना, नयी तकनीक को लागू करने के सम्बन्ध मे मुख्य निर्देश, सामग्री-प्रदाय के सूचक।

जहा पहले एक उद्यम के कार्य के सम्बन्ध मे वस्तुस्थिति के मूल्याकन का मुख्य सूचक कुल उत्पादन माना जाता था, वहा अब **बिक्री की मात्रा** मुख्य सूचक है। उपभोक्ताओ द्वारा स्वीकृत तथा खरीदी वस्तुओ को ही योजना-पूर्ति का अग माना जाता है। इसलिए कुल वेतन कोष, बोनस और सामान्य रूप से सम्बन्धित उद्योग मे लगे कर्मचारियो के कल्याण का निर्धारण बिक्री की मात्रा से ही होता है। इसे समझना कठिन नही है कि नयी परिस्थितिया मे सम्पूर्ण कर्मचारी समुदाय की रुचि केवल अधिक मात्रा मे वस्तुए तैयार करने मे ही नही, बल्कि उनकी किस्म बेहतर बनाने और विविध प्रकार की वस्तुए समय पर सप्लाई करने मे भी है। इसके लिए चीजो की माग का अध्ययन करना और भविष्य मे उपभोक्ताओ की ख्वाहिश को ध्यान मे रखना आवश्यक है। इससे कोटि को सुधारने के तरीका को जानने के लिए कर्मचारी मण्डल की पहलकदमी को प्रेरणा प्राप्त होती है।

शिक्षा का विकास करने और बडे तथा कम साधनोवाले परिवारो, औद्योगिक उद्यमो मे काम करनेवाली औरतो, पेशनरो और छात्रो के रहन-सहन की परिस्थितियो को सुधारने के लिए इस्तेमाल किया जायेगा।

छः साल के भीतर कुल ५६५ – ५७५ करोड वर्ग मीटर फर्शी रकवे के मकानो के बन जाने के कारण कोई ६ करोड लोगो की रिहाइशी हालत सुधर जायेगी। इसके अलावा खाद्य पदार्थों और उपभोक्ता वस्तुओ का उत्पादन बढेगा, व्यापार का और विस्तार होगा और जनता को उपलब्ध दैनंदिन सेवाओ मे सुधार होगा।

वितरण के समाजवादी सिद्धान्त की विशिष्टता का वर्णन करते समय समाजवाद और पूजीवाद के अन्तर्गत वेतन के सारतत्त्व मे जो बड़ा अन्तर है, उसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। पूजीवादी परिस्थितियो मे मजदूर को मिलनेवाला वेतन उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओ के मूल्य की आशिक प्रतिपूर्ति है। दूसरा भाग, जो बहुधा वडा होता है, मुनाफे के रूप मे पूजीपति द्वारा हड़प लिया जाता है और जन-विरोधी प्रतिक्रियावादी विदेश एव गृह नीतियो, मिसला के लिए आक्रामक युद्धो, प्रगतिशील शक्तियो के विरुद्ध सघर्ष आदि पर खर्च करने के लिए राज्य द्वारा हस्तगत कर लिया जाता है। समाजवाद के अन्तर्गत सार्वजनिक कोष मे जमा होनेवाले हिस्से को छोडकर प्रत्येक श्रमजीवी अपने श्रम से खुद समाज को जो कुछ देता है, वह उससे ठीक उतना ही वेतन के रूप मे प्राप्त कर लेता है। परन्तु सार्वजनिक कोष खुद मेहनतकश लोगो के ही काम आता है। इसका एक भाग उत्पादन को बढाने, विज्ञान, तकनीक तथा सस्कृति के विकास; दूसरा भाग प्रतिरक्षा व्यवस्था को सुदृढ बनाने एव राजकीय मशीनरी के रख-रखाव पर खर्च किया जाता है, जो मेहनतकशो के हितो की रक्षा करती है; और जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके है, तीसरा हिस्सा मेहनतकशों मे पुन. वितरित कर दिया जाता है, जिससे उसके वेतन मे काफी वृद्धि हो जाती है।

**आर्थिक सुधार**

सोवियत सघ सहित कई समाजवादी देशो मे इस समय जो **आर्थिक सुधार** लागू किये जा रहे है, वे आर्थिक विकास की योजनाओ को कार्यान्वित करने और प्रवन्ध के तरीको को सुधारने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इन सुधारो के

जरिये आयोजन, प्रबन्ध और आर्थिक प्रेरणा की नयी प्रणाली लागू करने की परिकल्पना की गई है। विभिन्न समाजवादी देशो मे लागू किये जानेवाले सुधारो मे कुछ भिन्नता के बावजूद उनका लक्ष्य एक-सा है—उत्पादन को बेहतर बनाना, समाजवादी अर्थव्यवस्था की क्षमता को कार्यरूप मे परिणत करना और पूजीवाद से आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता मे नयी सफलताए प्राप्त करने के लिए पूर्वापेक्षित परिस्थितिया पैदा करना।

आर्थिक सुधार का सारतत्व क्या है?

पहली बात तो यही है कि यह उद्यमो के काम के आयोजन की प्रणाली को बदल देना है। सितम्बर, १९६५ तक उद्यमो के लिए योजना सम्बन्धी अनेक (शब्दश बीसियो) लक्ष्य और सूचक केंद्र द्वारा निर्धारित किये जाते थे और इस प्रकार उनके आर्थिक कार्यकलाप का सविस्तार नियमन किया जाता था। सुधार से जो प्रणाली लागू हो गई है, उसके अन्तर्गत केंद्र द्वारा केवल कुछ सूचक निर्धारित किये जाते हैं: बिक्री के लिए वस्तुओ की मात्रा; उत्पादन का मुख्य चयन, मुनाफे की रकम और लाभदायकता; कुल वेतन-कोष; राजकीय बजट के लिए भुगतान और बजट से पूजी-विनियोजन; केन्द्रीकृत पूजी-निवेश की मात्रा तथा उत्पादक क्षमता और स्थायी परिसम्पत्ति का उपयोग मे लाया जाना, नयी तकनीक को लागू करने के सम्बन्ध मे मुख्य निर्देश; सामग्री-प्रदाय के सूचक।

जहा पहले एक उद्यम के कार्य के सम्बन्ध मे वस्तुस्थिति के मूल्याकन का मुख्य सूचक कुल उत्पादन माना जाता था, वहा अब **बिक्री की मात्रा** मुख्य सूचक है। उपभोक्ताओ द्वारा स्वीकृत तथा खरीदी वस्तुओ को ही योजना-पूर्ति का अग माना जाता है। इसलिए कुल वेतन-कोष, बोनस और सामान्य रूप से सम्बन्धित उद्योग मे लगे कर्मचारियो के कल्याण का निर्धारण बिक्री की मात्रा से ही होता है। इसे समझना कठिन नही है कि नयी परिस्थितियो मे सम्पूर्ण कर्मचारी समुदाय की रुचि केवल अधिक मात्रा मे वस्तुए तैयार करने मे ही नही, बल्कि उनकी किस्म बेहतर बनाने और विविध प्रकार की वस्तुए समय पर सप्लाई करने मे भी है। इसके लिए चीजो की माग का अध्ययन करना और भविष्य मे उपभोक्ताओ की ख्वाहिश को ध्यान मे रखना आवश्यक है। इससे कोटि को सुधारने के तरीको को जानने के लिए कर्मचारी-मण्डल की पहलकदमी को प्रेरणा प्राप्त होती है।

सुधार से समाजवादी आर्थिक प्रबन्ध का मुख्य सिद्धान्त, आर्थिक स्वावलम्बी लेखा प्रणाली पुष्ट होती है और आर्थिक कार्यकलाप में मुनाफे की भूमिका बढ जाती है। स्वावलम्बी लेखा प्रणाली आर्थिक कार्यकलाप के नतीजो और व्यय की नकद तुलना पर आधारित होती है। व्यय की पूर्ति खुद उद्यमो की आय से होती है। कुशल प्रबन्ध के फलस्वरूप स्वावलम्बी लेखा प्रणाली से उद्यम की लाभदायकता सुनिश्चित होती है। दूसरे शब्दो मे व्यय से इसकी आय-अधिक होती है।

सुधार से कर्मचारियो मे भौतिक अभिरुचि और भौतिक, जनशक्ति तथा वित्तीय साधनो को बचाने के लिए दायित्व की भावना पैदा होती है। एक उद्यम को दूसरे उद्यम के कारण जो क्षति उठानी पडती है, उसकी पूर्त्ति दोषी उद्यम को करनी पडती है। आर्थिक इकाइयो के बीच भुगतान को राजकीय बैंक नियन्त्रित करता है।

उद्यम के कार्यकलाप का मुख्य सूचक मुनाफा अथवा लाभदायकता होती है। मुनाफे की मात्रा उत्पादन एव बिक्री, उत्पादन के परिमाण और कोटि, सफलता या विफलता इत्यादि को प्रत्यक्षतः प्रकट करती है। सुधार से न केवल सभी समाजवादी उद्यमो को लाभजनक बनाने का कार्यभार, बल्कि मुनाफे के उपयोग की प्रणाली भी निर्धारित होती है। मुनाफे का कुछ अश उत्पादन विकास कोष, जिससे उद्यम तकनीक और उत्पादन प्रक्रियाओ को सुधारने मे सक्षम होते हैं, बोनस, वेतन-वृद्धि, इत्यादि के रूप मे कर्मचारियो को भौतिक प्रेरणा प्रदान करने के कोष और सामाजिक-सास्कृतिक विकास तथा भवन-निर्माण (राज्य द्वारा केन्द्रीकृत रूप मे इस उद्देश्य के लिए निर्धारित धन-राशि के अतिरिक्त) कोष की स्थापना के काम आता है।

मुनाफे की मात्रा मूल्य के नियम के आधार पर निर्धारित की जाती है। इस नियम की अपेक्षा यह है कि वस्तुओं की कीमते सामाजिक दृष्टि से आवश्यक लागतो के अनुरूप हो। इसका मतलब यह है कि पण्य-उत्पादक के रूप मे कार्य करनेवाले समाजवादी उद्यमो को अपने व्यय को सामाजिक दृष्टि से आवश्यक स्तर से नीचे घटाने का प्रयास करना चाहिए, क्योकि इसी सूरत मे उन्हे मुनाफा प्राप्त होगा। नही तो सामाजिक दृष्टि से आवश्यक औसत से अधिक व्यय होने पर इसी हद तक उद्यम को घाटा होगा। इस प्रकार मूल्य के नियम की नियन्त्रणकारी भूमिका इस बात मे

निहित है कि इससे उद्यमो के कर्मचारियो को व्यय घटाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

आर्थिक सुधार उद्यमो की आर्थिक स्वतत्रता को बहुत बढा देता है, ऐसी परिस्थितिया पैदा करता है, जिनमे तक्नीक सम्बन्धी तथा उत्पादन के नये तरीको को लागू करना, वस्तुओ की कोटि मे सुधार करना, लागत घटाना और अप्रकट रिजर्वो की तलाश और उपयोग करना उनके लिए लाभदायी हो जाता है। आर्थिक सुधार से जनसमुदाय के रचनात्मक प्रयास को और अधिक प्रेरणा प्राप्त होती है, उत्पादन मे उसकी भूमिका बढती है और समाजवादी अर्थव्यवस्था के भावी विकास को प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

अधिक आर्थिक प्रोत्साहन के जरिये उद्यमो की आर्थिक स्वतत्रता और पहलकदमी को बढाना किसी भी रूप मे इस बात का द्योतक नही है कि वे अप्रबन्धनीय खुदमुख्तार राज्य-से होते हैं। इसके प्रतिकूल आर्थिक स्वावलबी लेखा प्रणाली, मुनाफे, कीमत, वेतन, ऋण तथा पण्य-द्रव्य सम्बन्धो से सम्बद्ध इसी प्रकार की अन्य बातो के जरिये उद्यमो की आर्थिक अभिरुचि पर असर डालकर राज्य विशुद्ध प्रशासकीय तरीको (ऊपर से योजना, निर्देश, आदेश आदि) की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी रूप मे उनकी व्यवस्था कर सकता है। मेहनतकश लोगो के भौतिक हितो की चिन्ता और सटीक लेखा-विधि पर आधारित आर्थिक व्यवस्था निर्णायक महत्त्व ग्रहण कर लेती है।

१९६५ मे सोवियत सघ मे आर्थिक सुधार का लागू किया जाना शुरू हुआ। १९७० के अत तक ४१,०१४ उद्यम इस सुधार द्वारा उत्पन्न परिस्थितियो मे काम करने लगे थे। ये उद्यम सोवियत सघ के कुल उद्यमो का ८३ प्रतिशत हैं और कुल औद्योगिक उत्पादन का ९३ प्रतिशत पैदा करते और कुल औद्योगिक मुनाफे का ९५ प्रतिशत कमाते हैं। नवी पचवर्षीय योजना (१९७१–१९७५) द्वारा परिकल्पित अवधि के भीतर सोवियत सघ की समस्त अर्थव्यवस्था सुधार द्वारा उत्पन्न परिस्थितियो के अतर्गत काम करने लगेगी।

बुल्गारिया, जर्मन जनवादी जनतत्र, हगरी और अन्य यूरोपीय समाजवादी देशो मे भी आर्थिक सुधार सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो रहा है।

समाजवादी देशो के बीच आर्थिक प्रबन्ध सम्बन्धी अनुभव तथा ज्ञान

के व्यापक आदान प्रदान की व्यवस्था की गई है, जिससे समाजवाद की सुविधाओ तथा क्षमता का बेहतर इस्तेमाल करना सभव हो गया है।

मूल्य के नियम एव सबद्ध पण्य द्रव्य सम्बन्धो और पण्य, कीमत, ऋण तथा अन्य आर्थिक मदो का उपयोग आर्थिक सुधारो का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इनके आधार पर समाजवाद के शत्रु यह आरोप लगाते है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था का ह्रास हो रहा है और वह क्रमश पूजीवादी स्थितियो की ओर खिसक रही है।

परन्तु बात ऐसी नही है, क्योकि आर्थिक सुधार **सार्वजनिक समाजवादी स्वामित्व**—समाजवाद के मूल सिद्धान्त—के आधार पर तथा अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध सतुलित विकास के नियम के अन्तर्गत और शोषण से पूर्णतया मुक्त परिस्थितियो मे लागू होते है। इस प्रकार, आर्थिक सुधार **सुसगत रूप मे समाजवादी** है और वे किसी भी रूप मे समाजवादी समाज के सारतत्व को क्षति नही पहुचाते।

जहा तक मूल्य के नियम, पण्य द्रव्य सबधो और अन्य सबद्ध मदो (स्वावलबी लेखा प्रणाली, मुनाफा आदि) का सम्बन्ध है, तो पूजीवाद की तदनुरूप मदो से मिलती-जुलती होने पर भी समाजवादी समाज मे गुणात्मक दृष्टि से उनका अन्तर्य नया होता है। जहा पूजीवाद के अन्तर्गत वे शोषण, पूजीवादी मुनाफा कमाने के साधन है, वही समाजवाद के अन्तर्गत उनका लक्ष्य उत्पादन को बढाना और इस आधार पर लोगो के जीवन-स्तर को ऊचा उठाना है।

उदाहरणार्थ, मुनाफे को ही ले लीजिए। यह वास्तविकता है कि पूजीवाद के अन्तर्गत उत्पादन की प्रेरक शक्ति, उसका लक्ष्य मुनाफा कमाना है, यही शोषण और अतिरिक्त उपज को हडपने का सार्विक रूप है। समाजवाद के अन्तर्गत अतिरिक्त उपज का एक रूप होते हुए भी मुनाफे पर अन्य किसी का नही, मेहनतकशो का ही अधिकार रहता है। मुनाफे का एक भाग सम्पूर्ण समाज की जरूरतो की पूर्ति मे लगाया जाता है और दूसरा भाग उद्यम तथा उसके कर्मचारियो की आवश्यकताओ की तुष्टि पर खर्च किया जाता है। फलत मुनाफे की महत्वपूर्ण भूमिका केवल इस बात मे निहित नही है कि वह उद्यम के सुसचालन का द्योतक है, बल्कि उद्यम के विकास और उसकी सचालन-दक्षता बढ़ाने की प्रेरक शक्ति भी है। इस प्रकार मुनाफे से नियत्रण तथा प्रोत्साहन दोना प्रकार का कार्य पूरा होना है।

स्वावलबी लेखा प्रणाली की एक मद के नाते मुनाफे की भूमिका को सुदृढ करना समाजवादी अर्थव्यवस्था के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है।

* * *

निस्सन्देह, यह सोचना गलत होगा कि समाजवादी समाज का आर्थिक प्रवन्ध आदर्श है और यह कि इसका विकास किसी विघ्न-वाधा और कष्ट के विना होता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था मे, मुख्यत वस्तुगत स्वरूप की कोई कम दिक्कते और असगतिया नही होती। यह स्मरण रखना चाहिए कि सोवियत सघ मे (अधिकाश अन्य समाजवादी देशो मे भी) नये समाज का निर्माण निम्न आर्थिक स्तर से शुरू किया गया था और हमारे देश को भीतरी तथा बाहरी शत्रुओ से सशस्त्र सघर्ष करने और युद्ध से वर्वाद अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार मे काफी प्रयास करना और बहुत समय लगाना पडा था। इसके अलावा भौतिक तथा वित्तीय साधनो एव कुशल कर्मचारियो की कमी थी और नये समाज के निर्माण का कोई अनुभव नही था। विशेप रूप से व्यक्ति-पूजा से सम्वन्धित आत्मगत ढग की गलतिया भी हुईं, जिसका अर्थव्यवस्था और सभी सामाजिक सम्वन्धो के विकास पर बुरा असर पडा।

यह कहा जाता है कि सत्य की जानकारी तुलना से प्राप्त होती है और यह सही है। परन्तु समाजवाद और पूजीवाद, मिसाल के लिए सोवियत सघ और सयुक्त राज्य अमरीका की अर्थव्यवस्थाओ की तुलना करते समय कभी-कभी केवल आकडो को ध्यान मे रखा जाता है। उन आकडो के आधार पर, जिनसे यह प्रकट होता है कि सयुक्त राज्य अमरीका मे उत्पादन के विकास का स्तर, श्रम-उत्पादिता और वहा के कुछ मेहनतकश लोगो का जीवन-स्तर सोवियत सघ की अपेक्षा ऊचा है, समाजवाद के प्रतिकूल निष्कर्ष निकाले जा सकते है। परन्तु क्या इस तथ्य की उपेक्षा करना उचित होगा कि सयुक्त राज्य अमरीका मे लगभग १५० साल तक पूजीवाद का अवाध विकास हुआ, जिसके दौरान शत्रु के एक भी सैनिक ने उसकी भूमि पर पैर नही धरे और शत्रु के बमो अथवा गोलो से एक भी इमारत ध्वस्त नहीं हुई? इससे भी बढकर बात यह है कि अमरीकी पूजीपतियो ने युद्ध से भारी मुनाफा वटोरा और लोगो के खून

श्रौर पसीन से धन कमाया, जो थैलीशाहो की तिजोरियो मे जमा होता रहा।

इसी कारण समाजवाद श्रौर पूजीवाद की अर्थव्यवस्था की तुलना करते समय समाजवाद की **शुरुआत को, किन परिस्थितियो मे** वह कायम हुआ, **कितने समय** से वह कायम है श्रौर उसके विकास की **क्या समावनाए** है, इन सभी बातो को ध्यान मे रखना चाहिए। यदि इन सभी बातो पर विचार किया जाये, तो बहुत हद तक तुलना पूजीवाद के प्रतिकूल होगी।

हम यहा सोवियत सघ श्रौर सयुक्त राज्य अमरीका की अर्थव्यवस्था की पूर्ण तसवीर प्रस्तुत करनेवाले कुछ आकडे दे रहे है।

१९१३ मे जारशाही रूस का श्रौद्योगिक उत्पादन सयुक्त राज्य अमरीका के श्रौद्योगिक उत्पादन का १२.५ प्रतिशत था। १९७० मे सोवियत सघ का श्रौद्योगिक उत्पादन सयुक्त राज्य अमरीका के श्रौद्योगिक उत्पादन का ७५ प्रतिशत हो गया। १९१३ मे जारशाही रूस मे श्रौद्योगिक श्रम उत्पादिता अमरीका की ११ प्रतिशत थी। आज सोवियत सघ मे श्रौद्योगिक श्रम उत्पादिता अमरीका मे श्रम उत्पादिता की लगभग ५३ प्रतिशत है। पिछले २० वर्षो (१९५१-१९७०) मे राष्ट्रीय आय सयुक्त राज्य अमरीका मे औसतन ३.५ प्रतिशत श्रौर सोवियत सघ मे ८.७ प्रतिशत की दर से बढी है, श्रौद्योगिक उत्पादन मे क्रमश ४.१ श्रौर १०.१ प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई है।

यद्यपि सोवियत सघ ने सयुक्त राज्य अमरीका के मुकाबले कही कम अनुकूल परिस्थितियो मे विकास किया है, फिर भी वह तेजी से अमरीका की बराबरी पर पहुचता जा रहा है जो सर्वोन्नत पूजीवादी देश है।

समाजवाद ने एक पिछडे हुए, मुख्यत खेतिहर देश को अत्यत विकसित विज्ञान, तकनीक श्रौर सस्कृति से सपन्न दुनिया के दूसरे नम्बर के श्रौद्योगिक देश मे, सर्वाधिक प्रगतिशील सामाजिक सम्बन्धो के देश मे रूपान्तरित कर दिया है। यह कोई सयोग की बात नही है कि सबसे पहले कृत्रिम भू उपग्रह को छोडनेवाला, मानवयुक्त अन्तरिक्षयान को बाह्य अन्तरिक्ष मे भेजनेवाला श्रौर चद्रमा के प्रथम कृत्रिम उपग्रह को छोडनेवाला देश ससार का प्रथम समाजवादी देश सोवियत सघ ही था।

## ३. समाजवादी समाज का वर्गीय ढाचा और राजनीतिक गठन

**वर्गीय ढाचा**

समाजवाद के निर्माण के साथ समाज के वर्गीय ढाचे म बडे परिवर्तन होते है। उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण समाप्त हो जाता है तथा शहरो और गावो के शोषक वर्गों का तख्ता उलट दिया जाता है।

**समाजवाद के वर्गीय ढाचे की विशेषता है मैत्रीपूर्ण वर्गों और मेहनतकश लोगो के तबको का अस्तित्व तथा उनके बुनियादी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक हितो मे एकरूपता।**

सोवियत सघ मे, जहा समाजवाद ने पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है, दो मैत्रीपूर्ण वर्ग—मजदूर वर्ग और सामूहिक फार्मों के किसान समुदाय तथा श्रमजीवी बुद्धिजीवियो का सामाजिक तबका भी कायम है। सोवियत सत्ता-काल मे उनमे आमूल परिवर्तन आ गया है।

मजदूर वर्ग अब पूजीवाद के अन्तर्गत शोषित तथा अधिकारो से वस्तुत वचित पहले का सर्वहारा वर्ग नही है। सम्पूर्ण जनता के साथ उत्पादन के साधनो पर उसका स्वामित्व है और वह अपने देश का वास्तविक मालिक है।

उद्योग के विकास से मजदूर वर्ग की सख्या बहुत बढ गई है—इस समय सोवियत सघ के सभी मेहनतकश लोगो मे इसकी सख्या आधे से अधिक है। मजदूरो की कुशलता बढ गई है तथा तकनीकी एव सास्कृतिक स्तर ऊचा हो गया है और उनके श्रम का अन्तर्य तथा स्वरूप भी बदल गया है। करीब आधे सोवियत मजदूर पूर्ण अथवा अपूर्ण माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त है। इन परिवर्तनो मे श्रम-उत्पादिता मे वृद्धि हुई है, मजदूरो के सामाजिक कार्यकलाप को प्रोत्साहन मिला है और उनकी सास्कृतिक अभिरुचि व्यापक हो गई है। पेचीदा मशीनो एव उत्पादन प्रक्रियाओ को नियत्रित करनेवाले मजदूर का श्रम अपने अन्तर्य की दृष्टि से अब तकनीशियनो और इजीनियरो के श्रम के सन्निकट होता जा रहा है।

मजदूर वर्ग समाजवादी समाज की नेतृत्वकारी शक्ति है। उसने शोषक वर्गों का तख्ता उलटने और समाजवादी समाज के निर्माण के कार्य को

निदेशित किया। उद्योग से, समाजवाद के मुख्य भौतिक आधार से सम्बद्ध मजदूर वर्ग सबसे प्रगतिशील तथा सगठित शक्ति और सहयोग एव पारस्परिक सहायता के माध्यम के रूप ने समाजवादी समाज मे अपनी नेतृत्वकारी भूमिका अदा करता है।

वर्ग अन्तर को मिटाना और वर्गशून्य कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना मजदूर वर्ग का ध्येय है। देशप्रेम का एक अत्यत अविचल समर्थक होने के साथ ही यह राष्ट्रीय सकीर्णता से सर्वथा मुक्त और सभी देशो के मेहनतकशो की एकता के विचार के प्रति पूर्णत निष्ठावान है।

समाजवाद से **किसान समुदाय** की स्थिति मे आमूल परिवर्तन हो गया है। जमीदारो तथा धनी किसानो द्वारा शोषित एव विच्छिन्न तथा पददलित समुदाय से यह सचमुच स्वतत्र समुदाय मे परिवर्तित हो गया है, मजदूर वर्ग का विश्वसनीय साथी और सक्रिय सामाजिक शक्ति बन गया है। देश की भलाई के लिए सयुक्त श्रम से किसान समुदाय की युगो पुरानी पृथकता समाप्त हो गई है और उसकी निजी स्वामित्व की मनोवृति को दूर करन तथा सामूहिकता, मैत्री और भाईचारे की भावना विकसित करने मे आसानी हुई है।

किसानो की योग्यता तथा श्राम शिक्षा मे वृद्धि हुई है और उनका सास्कृतिक स्तर ऊचा उठा है। कृषि के यत्रीकरण ने अनेक कृषि मशीन चालको को प्रशिक्षित करना अनिवार्य बना दिया और इसके फलस्वरूप कृषि और औद्योगिक श्रम मे समरूपता कायम हो गई है। गावो का रूप बदलता जा रहा है। आधुनिक मशीनो और खेती के आधुनिक तरीको की पूर्ण जानकारी प्राप्त किसान श्रम-उत्पादिता को बढा और गावो की जीवन पद्धति बदल रहे हैं। समाजवाद के विकास के साथ साथ शहर और गाव के बुनियादी अतर धीरे धीरे मिटते जाते हैं।

सोवियत **बुद्धिजीवी समुदाय** भी काफी बदल गया है। ये लोग मुख्यत मजदूर वर्ग और किसान समुदाय की पातो से आते हैं और इस प्रकार वे वस्तुत जनता के अभिन्न अग हैं। जनता के बीच से उभरा हुआ यह समुदाय निष्ठापूर्वक उसकी सेवा करता है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति और विज्ञान के प्रत्यक्ष उत्पादनकारी शक्ति मे रूपान्तरण के सम्बन्ध मे बुद्धिजीवी समुदाय की भूमिका समाजवादी समाज मे सतत अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। उद्योग, विज्ञान और

तक्नीक की तीव्र प्रगति के फलस्वरूप बुद्धिजीवियो की सख्या मे भी द्रुत वृद्धि हुई है। जहा १९१३ मे उच्च अथवा माध्यमिक विशेष शिक्षाप्राप्त करीब २ लाख लोग अर्थव्यवस्था मे लगे हुए थे, वहा १९७० मे उनकी सख्या बढकर लगभग १ करोड ७० लाख हो गई। दसियो लाख शिक्षक, डाक्टर, इजीनियर, तक्नीशियन, वैज्ञानिक, वकील और अन्य सुयोग्य विशेषज्ञ जनता की भलाई के लिए काम कर रहे है।

समाजवाद बुद्धिजीवियो के सृजनात्मक काम, नयी तक्नीक के विकास और प्राकृतिक सम्पदा की खोज मे उनके ज्ञान तथा योग्यता का उपयोग करने, उत्पादन का प्रबन्ध करने, नयी पीढी को शिक्षित बनाने और सस्कृति, विज्ञान, साहित्य एव कला को विकसित करने की अनुकूल परिस्थितिया पैदा करता है।

समाजवाद से प्रभुता और अधीनता के सम्बन्ध सदा के लिए समाप्त हो जाते है। इसके अन्तर्गत विशेषाधिकारप्राप्त वर्ग अथवा तबके नही होते, उत्पादन के साधनो पर समाज के सभी सदस्यो का समानाधिकार प्राप्त होता है, जिससे शोषण तथा किसी अन्य व्यक्ति के श्रम-फल को हडपने की कोई सम्भावना नही रहती।

समाजवादी समाज मे शोषको और शोषितो के न होने से वर्ग सघर्ष नही होता।

समाजवादी समाज मे जनता की अखण्ड **सामाजिक-राजनीतिक तथा विचारधारात्मक एकता** प्रस्फुटित होती है। यह एकता मजदूर वर्ग, किसानो और बुद्धिजीवियो के एक-से बुनियादी आर्थिक तथा राजनीतिक लक्ष्यो, सामाजिक विकास के स्तर को और भी अधिक ऊचा उठाने तथा उन्हे अधिकतम भौतिक एव सास्कृतिक लाभ प्रदान करनेवाले कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए उनके सम्मिलित ठोस प्रयास मे निहित है। इस एकता के कारण समाजवादी समाज के सदस्यो के लिए सयुक्त कार्य करना, सयुक्त प्रयास द्वारा बडी बडी कठिनाइयो को दूर करना और ऐतिहासिक महत्व के कार्यभारो को पूरा करना सभव हो जाता है। करोडो लोग एक-से हितो, एक-से कार्यकलाप द्वारा आबद्ध होते है और कम्युनिज्म के उच्चादर्शो से अनुप्राणित महती शक्ति के प्रतीक बन जाते है।

उत्पादक शक्तियो एव समाजवादी सामाजिक सम्बन्धो के तीव्र विकास और सम्पूर्ण जनता के भौतिक तथा सास्कृतिक स्तर के ऊचा उठने के

आधार पर समाजवाद ज्यो ज्यो विकसित होना तथा कम्युनिज़म म प्रस्फुरित होना जाता है, त्यो-त्यो सामाजिक अन्तर मिटत जाते हैं। पार्टी की २४वी काग्रेस म सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति द्वारा पश की गई रिपोर्ट म कहा गया है कि पार्टी की नीति मजदूर वग, सामूहिक कृषका और बुद्धिजीविया को एक दूसरे के और अधिक निकट लाने और शहर तथा देहात के बीच, मानसिक तथा शारीरिक श्रम के बीच विद्यमान अतरो को शनै शनै खत्म करने की ओर लक्षित है। यह वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज के निर्माण का एक मुख्य क्षेत्र है।"

**जातीय सम्बन्ध** पूजीवादी व्यवस्था के विपरीत समाजवादी व्यवस्था के अन्तगत जातिया जातीय दीवारो को मजबूत करके तथा जातीय अलगाव और स्वार्थपरता को तीव्र बनाकर नही बल्कि सतत एक दूसरे के सन्निकट आकर, पारस्परिक सहायता और मैत्री के जरिए विकास करती हैं। एक ओर प्रत्यक जाति का सवतोमुखी विकास, उसकी अर्थव्यवस्था तथा सस्कृति की भावी प्रगति और दूसरी ओर सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तथा देशप्रेम के सिद्धान्तो क आधार पर समाजवादी जातिया मे अधिकाधिक घनिष्ठ एकता की स्थापना – ये हैं जातीय प्रश्न की परस्पर सम्बधित दो प्रगतिशील प्रवृत्तिया, जो समाजवादी समाज मे लागू रहती हैं।

इन प्रवृत्तिया ने सोवियत सघ मे मानवजाति के इतिहास मे जातियो की अभूतपूर्व नई बिरादरी – सोवियत जनता – को जन्म दिया है। इस अतर्जातीय बिरादरी का गठन करनेवाली समाजवादी जातिया सामाजिक तथा जातीय विरोध आपसी शत्रुता और अविश्वास की भावना से मुक्त हैं। उनका एक ही आर्थिक आधार है – समाजवादी स्वामित्व और एक ही विश्वदृष्टिकोण है – मार्क्सवाद लेनिनवाद । आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक एकता से बधी सोवियत जातियो की यह बिरादरी इस समय एक ही परिवार के रूप मे अपने सयुक्त ध्येय – कम्युनिज़म – की ओर अग्रसर है।

नयी जातीय बिरादरी – सोवियत जनता की उत्पत्ति का अभिप्राय जातियो का समानीकरण अथवा जातीय विशिष्टताओ, जातीय भाषाओ तथा जातीय सस्कृतियो की उपेक्षा नही है। विकासमान जातीय समुदाय सोवियत जनता के अविच्छिन्न अग हैं, जो प्रत्येक सोवियत समाजवादी

जाति के आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन के मुख्य, एकसे तथा स्थिर लक्षणों को आत्मसात करनेवाली जातियों की नई विरादरी का प्रतिनिधित्व करती है। सभी जातियों को पूर्ण समानाधिकार और जातीय जनतंत्रों के हितों के साथ सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ के हितों का समन्वय—सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य की जातीय नीति के महत्वपूर्ण लक्षण हैं।

सोवियत संघ में जातियों के बीच समानता, मैत्री और सहयोग के ऐसे सम्बन्ध पैदा हो गये हैं, जिनकी दुनिया में अन्यत्र कोई मिसाल नहीं है। उनकी भावी प्रगति और एकता की सुदृढ़ आधारशिला रख दी गई है। प्रत्येक जाति और सम्पूर्ण सोवियत जनता के हितों के सर्वथा अनुरूप ये सम्बन्ध सामाजिक प्रगति के प्रबल त्वरक हैं।

सोवियत जनतंत्रों में उत्पादक शक्तियों तथा आधुनिक उद्योग और कृषि का तीव्र गति से विकास हो रहा है। इन जनतंत्रों के बीच आर्थिक सहयोग विकसित तथा सुदृढ़ हो रहा है, उनके बीच श्रम-विभाजन की व्यवस्था को सुधारा जा रहा है, वर्तमान आर्थिक सम्बन्धों को व्यापक बनाया जा रहा है और नये आर्थिक सम्बन्ध पैदा हो रहे हैं। कम्युनिस्ट निर्माण के संयुक्त ध्येय में प्रत्येक सोवियत जनतंत्र का योगदान बढ़ता जा रहा है। सोवियत संघ के लोग सोवियत जनतंत्रों के बीच भौतिक और सांस्कृतिक निधियों के अधिकाधिक आदान-प्रदान का लाभजनक प्रभाव महसूस करते हैं, जो उनके लिए बहुत ही आवश्यक हो गया है।

यह आदान-प्रदान विभिन्न रूप ग्रहण कर रहा है: औद्योगिक सहयोग के जरिये प्रत्येक जनतंत्र के उद्यम दूसरे जनतंत्रों के उद्यमों से सम्पर्क क़ायम रखते हैं; सोवियत जनतंत्रों के बीच उत्पादन सम्बन्धी नवीनतम अनुभव, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विचारों, साहित्यिक तथा कला कृतियों, नाटक मण्डलियों, आदि का आदान-प्रदान सदा होता रहता है। उदाहरणार्थ, १९६८ की गरमी में सोवियत जनतंत्रों की २३ नाटक मण्डलियों ने उक्रइना के विभिन्न स्थानों में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए और इसी प्रकार उक्रइनी थियेटरों ने अपनी सर्वोत्कृष्ट मण्डलियों को विरादराना जनतंत्रों में भेजा।

पारस्परिक समर्थन और व्यापक सहायता सोवियत जनतंत्रों के सम्बन्धों का सहज प्रतिमान बन गया है। १९६६ में भीषण भूकम्प से उज़्बेक जनतंत्र की राजधानी ताशक़न्द के बहुत बड़े भाग के

विनष्ट हो जाने पर अन्य सभी सोवियत जनतत्रो ने उसे हर प्रकार की सहायता प्रदान की। उन्होने दसियो हजार निर्माणकर्मी और विराट मात्रा मे इमारती सामान भेजा तथा हजारो उज्बेक बच्चो को ग्रीष्मकालीन पायोनियर शिविरो, स्वास्थ्य केन्द्रो एव अवकाश गृहो मे भेजकर उन्हे आश्रय प्रदान किया। पुराने ताशकन्द के ध्वसावशेषो पर खडा नया ताशकन्द समाजवादी जातियो के बीच बढती हुई मैत्री का प्रतीक है।

प्रत्येक सोवियत जनतत्र अधिकाधिक बहुजातीय जनतत्र बनता जा रहा है। सभी जनतत्रो मे विविध जातियो के नागरिक मिल-जुलकर भाइयो की भाति एकसाथ काम करते और रहते हैं। समाजवादी उद्यमो मे भी विभिन्न जातियो के कर्मी एकसाथ भाईचारे की भावना से काम करते हैं।

जातियो की सामाजिक समरूपता बढती जा रही है मजदूर, सामूहिक कृषक और बुद्धिजीवी – समाजवाद के अन्तर्गत सभी जातिया का सामाजिक गठन इसी प्रकार का है। इसके अलावा समाजवादी समाज के विकास के साथ-साथ मनुष्य नये साचे मे ढलता जाता है। इस नये मनुष्य की मुख्य विशेषताए हैं कम्युनिज्म के प्रति आस्था, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो के प्रति निष्ठा, प्रगाढ अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तथा सोवियत देशानुराग, जातीय मर्यादाओ का सम्मान और पारस्परिक विश्वास तथा बन्धुत्व की भावना।

समाजवादी जातियो की सस्कृति, नैतिकता और जीवन पद्धति की एक-सी विशेषताए विकसित होती जा रही हैं, जिनसे उनके बीच पारस्परिक विश्वास तथा मैत्री की भावना का और अधिक सुदृढीकरण सुनिश्चित होता जाता है। जातियो की मानसिक एकता सुदृढ होती जा रही है। सोवियत सघ की सभी जातियो मे ऐसी सस्कृति विकसित हुई है, जो रूप मे जातीय और अन्तर्य मे समाजवादी है। समाजवाद के विकास के साथ-साथ जातीय सस्कृतिया विकसित होती हैं और एक दूसरे को समृद्ध करती हैं। सर्वोत्कृष्ट जातीय विशेषताओ तथा परम्पराओ को कायम रखते एव विकसित करते और कालातीत रूपो को मिटाते हुए प्रत्येक जातीय सस्कृति अन्य जातिया की सास्कृतिक उपलब्धियो का उपयोग करती है। इस प्रकार सभी जातिया के लिए एक-सी अन्तर्जातीय सस्कृति विकसित होती जा रही है। यह सामान्य मानवीय सस्कृति की सर्वोत्कृष्ट और चिरस्थायी उपलब्धिया को ग्रहण करती है। सोवियत सघ मे रूसी भाषा जातिया के बीच सम्पर्क तथा उनकी वैज्ञानिक और सास्कृतिक निधियो के आदान-प्रदान का माध्यम बन गई है।

ज्यो-ज्यो जातिया का विकास होता जाता है तथा वे एक दूसरे के सन्निकट होती जाती है, त्यो-त्यो जातीय अलगाव एव पृथकता के अवशेष और कालातीत जातीय प्रथाए तथा आचार मिटते जाते हैं। विशेष रूप से कुछ पूर्वी सोवियत जनतत्रो म स्त्रियो की असमानता परिवार तथा दैनिक जीवन म उनके प्रति सामती दृष्टिकोण के जो अवशेष कायम है, वे अन्तिम रूप से मिटाये जा रहे हैं।

समाजवाद के अन्तगत जातिया को एक दूसरे के सन्निकट लाना वस्तुगत, नियम नियत्रित प्रक्रिया है। परन्तु इसका मतलब यह नही है कि यह प्रक्रिया स्वत स्फूर्त और निर्बाध है। जातिया के विकास तथा उन्हे एकता के सूत्र म आबद्ध करने के प्रयासो को निदेशित तथा सगठित करते हुए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य जातीय अलगाव के अवशेषो, राष्ट्रवाद तथा अधराष्ट्रवाद की प्रत्येक अभिव्यक्ति के विरुद्ध सघर्ष कर रहे हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस म कहा गया है सोवियत अनुभव से दुनिया को जातिया के सम्बन्ध म लेनिनवादी नीति की सजीवता के बारे मे विश्वास होता जा रहा है। हमारे देश म जातीय प्रश्न के समाधान ने निर्विवाद रूप म सिद्ध कर दिया है कि इतिहास का सक्रिय और स्वतत्र निर्माण करना कुछ श्रेष्ठ जातियो का एकाधिकार नही है, बल्कि वह सभी जातियो को सुलभ है। बहुजातीय सोवियत समाजवादी राज्य व्यावहारिक रूप मे सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचारो की विजय को प्रकट करता है।'

समाजवाद के अतगत जातियो के सन्निकट आने की सामान्य प्रवृत्ति पर जोर देते समय इस बात को ध्यान मे रखना चाहिए कि चीनी लोक जनतत्र म जातीय नीति के लेनिनवादी सिद्धाता से हटा जा रहा है। मूल चीनी (हान) जाति के अलावा चीनी लोक जनतत्र म अय जातियो (तिब्बती, मगोल, उइगुर, आदि) के कोई ४३ करोड लोग हैं, जो देश के लगभग ६० प्रतिशत भाग पर आबाद है। माओ त्से-तुग और उनके गुटवाले इन जातिया के हितो की तनिक भी परवाह नही करते और उनका 'चीनीकरण' और आत्मसातकरण कर रहे हैं। उन्हे बहुत ही प्रतिबधित प्रादेशिक स्वायत्तता प्रदान करके चीनी नताशाही स्वशासी प्रदेशो पर चीनी लोगो को बसा रही है। इसके अलावा वह जातीय भाषाओ का दमन कर रही है, जातीय विशेषज्ञो

को सता रही है और जातीय भावनाओ को ठेस पहुचा रही है। माओवाद के सिद्धातकार और व्याख्याता वैज्ञानिक समाजवाद के इस प्रावधान को तिलाजलि दे रहे हैं कि विकसित कम्युनिस्ट समाज मे जातियो के विलयन की अवस्था के पहले समाजवाद के अतर्गत जातियो के सर्वतोमुखी विकास और सन्निकट आने की एक लबी अवधि होती है।

जातीय समस्या, जो सबसे कठिन सामाजिक समस्या है, के हल का एकमात्र मार्क्सवादी-लेनिनवादी तरीका ही छोटी से छोटी जाति के भी विकास को और उसके हितो के अन्य जातियो और लोगो के हितो के साथ समन्वय, और विभिन्न जातियो के मेहनतकशो के सर्वतोमुखी सहयोग और पारस्परिक सहायता को सुनिश्चित करता है।

राजनीतिक गठन

पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल के दौरान सर्वहारा अधिनायकत्व से एक नये, उत्कृष्ट ढग की सत्ता, **समाजवादी जनवाद** का प्रादुर्भाव होता है। जनवाद के विस्तार तथा विकास, बहुमत के जनवाद के **सब के, समस्त जनता के** जनवाद मे रूपान्तरण से समाजवाद की राजनीतिक व्यवस्था की विशेषता प्रकट होती है।

समाजवादी समाज सभी नागरिको के अधिकारो की केवल उद्घोषणा ही नही करता, बल्कि अधिकारो का इस्तेमाल करना भी सुनिश्चित करता है। वश, पेशा, लिग, जाति अथवा धर्म पर कोई ध्यान दिये बिना यह नागरिको को काम, विश्राम, शिक्षा, डाक्टरी इलाज, बुढापे तथा बीमारी एव अपाहिज होने की दशा मे भौतिक सुरक्षा पाने का अधिकार प्रदान करता है। प्रत्येक नागरिक की इन अधिकारो का उपभोग करने की व्यावहारिक सभावना कानून द्वारा प्रत्याभूत है और समाजवादी राज्य के सतत आर्थिक विकास से सुनिश्चित होती है। समाजवादी समाज के नागरिको को भाषण, प्रेस, सभा, जुलूस तथा प्रदर्शन की स्वतत्रता, धार्मिक स्वतत्रता और सस्था बनाने का अधिकार, व्यक्ति तथा आवास की अनुल्लघनीयता और पत्र-व्यवहार की गोपनीयता की प्रत्याभूति प्राप्त है। आर्थिक, राजकीय, सास्कृतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे स्त्रियो को पुरुषो के बराबर अधिकार प्राप्त है। उन्हे पुरुषो की भाति काम, विश्राम और शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही समान काम के लिए

समान वेतन पाने का अधिकार प्राप्त है। राज्य की ओर से मा तथा बच्चे के कल्याण की सुनिश्चित व्यवस्था है, अधिक बच्चावाली माताओं तथा अविवाहिता माताओं को सहायता प्रदान की जाती है और लम्बा सवेतन प्रसूति अवकाश दिया जाता है।

समाजवादी समाज के सदस्यों को एक ओर सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार प्रदान किये गये हैं और दूसरी ओर उनसे अपने कर्तव्यों का समुचित पालन करने—सामाजिक सम्पत्ति की रक्षा और वृद्धि करने, ईमानदारी से काम करने, सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखने और अपने देश की रक्षा करने—की अपेक्षा की जाती है। समाजवादी जनवाद व्यक्तिवाद, अव्यवस्था, अराजकता, नागरिक कर्तव्य की अवहेलना के प्रतिकूल है, समाज के हितों को क्षति पहुचानेवाले किसी भी कार्य के विरुद्ध है।

समाजवादी जनवाद समाजवादी समाज के साथ-साथ विकसित होता है। सर्वहारा अधिनायकत्व के सामाजिक आधार के विस्तार तथा सुदृढीकरण से, सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के सम्पूर्ण जनता की राजनीतिक व्यवस्था मे क्रमिक रूपान्तरण से, जिसमे मजदूर वर्ग नेतृत्वकारी भूमिका अदा करता है, समाजवादी जनवाद का विकास यथार्थ रूप मे प्रकट होता रहा है। यह प्रक्रिया समाजवाद की विजय और शोषक वर्गों के उन्मूलन के साथ सोवियत सघ मे चौथे दशक के उत्तरार्द्ध मे शुरू हुई थी।

पूजीवाद से समाजवाद की ओर सक्रमण-काल के दौरान मजदूर वर्ग शासनकारी तथा नेतृत्वकारी वर्ग—दोनो—होता है, समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण की अवस्थाओं मे समाज मे यह अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को कायम रखता है।

समाजवादी समाज मे मजदूर वर्ग नेतृत्वकारी शक्ति बना रहता है, क्योंकि वह औद्योगिक क्षेत्र मे काम करता है, जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का मूलाधार है और इस कारण भी कि इसका श्रम समाजवादी स्वामित्व के मुख्य, सर्वाधिक विकसित रूप, राजकीय स्वामित्व, सारी जनता के स्वामित्व पर आधारित होता है।

मजदूर वर्ग की समृद्ध क्रान्तिकारी परम्पराए हैं, पूजी के विरुद्ध घमासान सघर्ष मे तपकर वह फौलाद बन गया है और वह समाजवादी वैचारिकी का सबसे अविचल प्रचारक है। सख्या की दृष्टि से भी सबसे बडा वर्ग होने

के कारण वह सुसगठित तथा अनुशासित है और सोवियत समाज की सर्वाधिक प्रगतिशील सामाजिक शक्ति है। कम्युनिज्म के निर्माण का काम पूरा होने और वर्गों के पूर्ण विलोप के साथ ही मजदूर वर्ग समाज मे अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को पूरा करेगा।

मजदूर वर्ग का कोई स्वार्थपूर्ण लक्ष्य एव लिप्सापूर्ण हित नही है और न हो ही सकता है। जनता का अभिन्न अग होने के नाते मजदूर वर्ग उसके हितो को अभिव्यक्त करता है और उसके लक्ष्यो को पूरा करता है।

समाजवादी समाज मे मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका से अन्य सामाजिक शक्तियो—सामूहिक कृपको और बुद्धिजीवियो—की भूमिका का महत्त्व कम नही होता, जो मजदूर वर्ग के साथ मिलकर प्रत्यक क्षेत्र मे समाज के मुख्य कार्यभारो को पूरा कर रहे हैं।

शोपको के विरुद्ध और समाजवाद की विजय के सघर्ष मे सारी जनता से बडी प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित करके मजदूर वर्ग समाजवाद की विजय के साथ जन हित का सबसे अविचल, सबसे सगठित समर्थक भी बन जाता है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व और सम्पूर्ण जनता के राज्य के बीच कोई दीवार नही है, क्योकि वस्तुत वे एक ही, समाजवादी प्रकार के राज्य हैं, **समाजवादी राज्य के विकास के रूप, उसकी अवस्थाए हैं।** सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के सम्पूर्ण जनता के राज्य मे विकसित होने के साथ उसका समाजवादी स्वरूप नही बदल जाता, बल्कि कम्युनिस्ट निर्माण के दौरान विकसित और उत्कृष्ट ही होता जाता है। उसका सामाजिक आधार—मजदूर वर्ग तथा किसान समुदाय का सश्रय—कायम रखा और सुदृढ बनाया जाता है, मजदूर वर्ग की भूमिका सुरक्षित रखी तथा अधिक महत्त्वपूर्ण बनायी जाती है और सर्वहारा समाजवादी जनवाद का और अधिक प्रसार किया जाता है।

सम्पूर्ण जनता का राज्य सर्वहारा अधिनायकत्व का कार्य—कम्युनिज्म का निर्मान—जारी रखता है। अन्य समाजवादी राज्यो के साथ वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे साम्राज्यवाद के विरुद्ध वर्ग सघर्ष करता है। यह सर्वहारा अधिनायकत्व म शुरू से ही अन्तर्निहित मुख्य तत्व—मेहनतकशो के व्यापक जनवाद—का ऐतिहासिक अनुक्रम, उसकी परिणति है।

जनवाद का मूल्याकन करते समय मार्क्सवाद-लेनिनवाद, वैज्ञानिक समाजवाद

कुछ पश्चिमी वैचारिकों की भांति विरोधी पार्टियों की संख्या, संसदीय बहसों के शोरगुल अथवा राजनीतिक नेताओं के शब्दाडम्बरपूर्ण भाषणों को प्रतिमान के रूप में इस्तेमाल नहीं करता। समाजवादी जनवाद संपूर्ण सत्ता पर जनता के अधिकार, सभी नागरिकों द्वारा राज्य की नीति को प्रभावित करने तथा आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के निदेशन में सक्रिय भाग लेने की संभावना का द्योतक है। ये ही वे अधिकार तथा स्वतंत्रताएं हैं, जो लिंग, जाति, रंग, सामाजिक उद्गम, आवास तथा धर्म के लिहाज के बिना सभी नागरिकों को सुनिश्चित रूप में प्राप्त हैं।

सोवियत संघ में यही जनवाद विकसित हुआ है और इसने उत्कृष्ट रूप ग्रहण कर लिया है। संघीय जनतंत्रों, स्थानीय सरकारी निकायों और उद्यमों को सतत व्यापक अधिकार प्राप्त होते जा रहे हैं। फ़ौजदारी क़ानून, प्रशासकीय-क्षेत्रीय विभाजन तथा अन्य महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजकीय और सांस्कृतिक मामले संघीय जनतंत्रों के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत कर दिये गये हैं। अक्तूबर, १९६५ में स्वीकृत समाजवादी राजकीय उद्यमों को नियंत्रित करनेवाले अधिनियमों के अनुसार निर्धारित धन-राशि का उपयोग करने, कर्मचारियों को नियुक्त करने, वेतन के विभिन्न रूपों को लागू करने, योजना, बिक्री और अन्य औद्योगिक तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों से सम्बन्ध स्थापित करने आदि के बारे में उद्यमों के अधिकारों और आर्थिक स्वतंत्रता में काफ़ी वृद्धि हो गई है।

कम्युनिज़म के निर्माण की बुनियादी समस्याओं के समाधान में मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की भूमिका को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाना समाजवादी जनवाद की एक उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। सोवियतों की भूमिका को विस्तृत बनाकर ही लेनिन द्वारा प्रस्तुत कार्यभार–समाज के मामलों की व्यवस्था करने में बिना किसी अपवाद के सभी नागरिकों को खींचना–को पूरा किया जा रहा है।

अब सोवियतें मेहनतकश लोगों की सर्वाधिक प्रातिनिधिक निकाय हैं। उनके प्रतिनिधियों की संख्या क़रीब २० लाख है। इन प्रतिनिधियों का अधिकांश पेशेवर राजनीतिज्ञों का नहीं, बल्कि फ़ैक्टरियों एवं खानों, राजकीय तथा सामूहिक फ़ार्मों, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संस्थानों में काम करनेवाले लोगों का है। वे प्रतिनिधियों के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन अपने ख़ाली समय में बिना पारिश्रमिक के करते हैं।

प्रतिनिधियों के अतिरिक्त बड़ी सख्या मे समाज के सक्रिय, लगनशील सदस्य सोवियतों के कार्यकलाप मे भाग लेते हैं। इस प्रसग मे इतना ही कहना पर्याप्त है कि सोवियतों के काम मे स्वेच्छा से सहायता प्रदान करनेवालो की सख्या २ करोड ५० लाख से अधिक है।

सोवियत सदा से केवल राजकीय सगठन ही नही, बल्कि मेहनतकश लोगो के सार्वजनिक सगठन भी रही हैं। समाजवाद के विकास के साथ-साथ सोवियतो का सार्वजनिक पहलू अधिक स्पष्ट होता जाता है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कहा गया है: "राजकीय और सार्वजनिक सगठन के लक्षणो मे समन्वय स्थापित करनेवाली सोवियतें अधिकाधिक सार्वजनिक सगठनो की भाति कार्य करती हैं और उनके कार्यकलाप मे जनसमुदाय व्यापक तथा प्रत्यक्ष भाग लेता है।"

सोवियते अधिकाधिक ऐसे निकायों मे परिवर्तित होती जा रही है, जिनमे लाखों-करोडो लोगो को राजकीय प्रशासन की शिक्षा प्राप्त होती है, स्पष्टत, वे ही वह आधार हैं, जिसपर कम्युनिस्ट सार्वजनिक स्वशासन विकसित होगा। समाजवादी समाज मे सोवियतो की भूमिका के महत्त्वपूर्ण होने से समाज के मामलो की व्यवस्था करने मे विस्तृत जनसमुदाय काफी बडी भूमिका अदा करता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति द्वारा पार्टी की २४ वी कांग्रेस मे प्रस्तुत रिपोर्ट मे कहा गया है कि "सोवियतो को अपने कृत्यो का अधिक पूर्णता के साथ निर्वहन करना चाहिए, आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास पर और राष्ट्रीय कल्याण पर अधिक कारगर प्रभाव डालना चाहिए और जनता की सामाजिक और दैनंदिन सेवा तथा सार्वजनिक व्यवस्था को कायम रखने के प्रश्नो को निरतर हल करते रहना चाहिए।"

समाजवादी जनवाद के सुधार की दिशा मे एक अन्य महत्त्वपूर्ण रुझान है सार्वजनिक संगठनों—ट्रेड-यूनियनो, कोम्सोमोल, सहकारी समितियो तथा सास्कृतिक और शैक्षिक सस्थाओ के महत्त्व मे अभिवृद्धि।

प्रशासन तथा प्रबन्ध के स्कूल के रूप में ट्रेड-यूनियनो का महत्त्व बढता जाता है। अपनी पातो मे ८ करोड से अधिक मजदूरो और दफ्तरी कर्मचारियो को एकजुट करनेवाली ट्रेड-यूनियने अर्थव्यवस्था को विकसित करने, श्रम-उत्पादिता बढाने तथा वैज्ञानिक और तक्नीकी प्रगति को तीव्र

बनाने की एक महती संगठनात्मक शक्ति है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के आयोजन तथा प्रबन्ध में सोवियत ट्रेड-यूनियनें सक्रिय भाग लेती हैं। वे समाजवादी प्रतियोगिता को संगठित करने, तक्नीकी प्रयास को प्रोत्साहन प्रदान करने और सचेतन अनुशासन की भावना सुदृढ़ करने की दिशा में काफी काम कर रही हैं। उन्हें कानून बनवाने के लिए पहलकदमी करने का अधिकार प्राप्त है, वे राजकीय सामाजिक बीमा व्यवस्था का काम निदेशित करती हैं और राज्य के साथ श्रम तथा उपभोग की मात्रा और श्रमिक कानूनों के पालन पर नियंत्रण रखती हैं। काम तथा रहन-सहन की स्थितियों में सुधार करने, विश्राम एवं मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था करने, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक संस्थाओं का प्रबन्ध करने और व्यायाम, खेलकूद एवं पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने से भी ट्रेड-यूनियनों का सम्बन्ध है।

**अखिल संघीय लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल)** की भूमिका सतत अधिक महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। कोम्सोमोल एक सार्वजनिक संगठन है, जिसमें शामिल युवक-युवतियों की संख्या २८० लाख से अधिक है और जो नयी पीढ़ी को शिक्षित करने में पार्टी और सरकार को सहायता प्रदान करता है। सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, तक्नीकी, खेलकूद सम्बन्धी तथा अन्य सार्वजनिक संगठनों का व्यापक विकास किया गया है, ताकि वे समाजवादी समाज के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें।

समाजवादी जनवाद मेहनतकश जनता को राज्य के प्रशासन और आर्थिक तथा सामाजिक मामलों के प्रबन्ध में भाग लेने की व्यापक संभावनाएं सुनिश्चित करता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस में कहा गया है "सोवियतों तथा पार्टी एवं ट्रेड-यूनियनों की बैठकों और ग्राम सभाओं में, जन नियंत्रण निकायों तथा अखबारों, रेडियो और टेलीविजन के जरिये मेहनतकश लोग सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में अपने सुझाव प्रस्तुत करते हैं, विधेयकों पर विचार करते हैं, त्रुटियों एवं भूलों की आलोचना करते हैं, अव्यवस्था और कानून की अवहेलना का प्रतिरोध करते हैं।'

समाजवादी जनवाद का प्रसार और सार्वजनिक संगठनों की भूमिका की वृद्धि का समाजवादी राज्य के सुदृढ़ीकरण तथा विकास के साथ घनिष्ठ संबंध रहता है, जो सामाजिक प्रक्रियाओं और देश के आर्थिक,

राजनीतिक तथा बौद्धिक जीवन को निदेशित करता है। राज्य द्वारा प्रयुक्त मुख्य तरीका दबाव, ज़ोर नही, बल्कि समझाना-बुझाना, सभी नागरिकों मे नागरिक कर्त्तव्य की भावना और कानूनो तथा समाजवादी रहन-सहन के नियमो का पालन करने की आवश्यकता की समझ पैदा करना है। स्वाभाविक रूप से समाजवादी वैधता का उल्लघन करनेवालो और समाजवादी समाज मे आज भी विद्यमान समाज-विरोधी तत्त्वो के विरुद्ध निश्चित दबावमूलक कदम उठाये जाते है। परन्तु इन कदमो को सर्वहारा अधिनायकत्व मे अन्तर्निहित शोषको को कुचलने के कार्य के समरूप नही समझा जा सकता, क्योकि वे शत्रु वर्गो के विरुद्ध नही, बल्कि अतीत के अवशेषो से प्रभावित मजदूरो, किसानो अथवा बुद्धिजीवियो के पिछडे हुए तत्त्वो के विरुद्ध लक्षित होते हैं। समाजवादी राज्य शोषक वर्गों को कुचलने के काम को छोडकर, जो समाजवाद की विजय के फलस्वरूप इन वर्गों का उन्मूलन हो जाने के दृष्टिगत खत्म हो जाता है, सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के मुख्य कार्यो को पूरा करता है, उनका विकास और उन सुधार करता है।

प्रशासन के निकाय के रूप मे राज्य के **आन्तरिक** कार्य मे कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण का सगठन करना, समाजवादी सम्बन्धो को कम्युनिस्ट सम्बन्धो मे रूपान्तरित करना, श्रम एव उपभोग की मात्रा को नियत्रित करना, जनता के रहन सहन के स्तर को ऊचा उठाना, सोवियत नागरिको के अधिकारो तथा स्वतन्त्रताओ की रक्षा करना, समाजवादी कानून को कायम रखना एव समाजवादी सम्पत्ति की हिफाजत करना और जनता को चेतन अनुशासन तथा श्रम के प्रति कम्युनिस्ट भावना मे शिक्षित करना शामिल है।

**विदेश नीति** के जरिये राज्य समाजवादी देशो की एकता और घनिष्ठता को सुदृढ बनाने तथा उनमे बिरादराना सहयोग विकसित करने का प्रयास करता है। वह अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग, समस्त मानवजाति के प्रति ईमानदारी से अपने अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन करता है; विकसित पूजीवादी देशो मे सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी सघर्ष को हर प्रकार से सहायता प्रदान करता है, औपनिवेशिक जुए को उतार फेंकनेवाले विकासमान देशो और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सघर्षरत देशो को भी हर प्रकार की मदद देता है। सोवियत राज्य विश्व शांति की रक्षा और सभी देशो मे

सामान्य सम्बन्ध रखने की तरफ बहुत ध्यान देता है। इसके साथ ही साम्राज्यवादी शक्तियो की ओर से आक्रमण के खतरे के दृष्टिगत वह अपनी तथा सम्पूर्ण समाजवादी शिविर की रक्षा क्षमता को सुदृढ बनाता है।

सोवियत सघ मे समाजवादी जनवाद के विकास को कठिनाइयो का सामना करना पडा और यह असगतियो से रहित नही रहा। यह विशेष रूप से स्तालिन की व्यक्ति-पूजा से सबधित था, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना के विरुद्ध एव व्यक्ति की भूमिका को अतिरजित रूप मे प्रस्तुत करने, सामूहिक नेतृत्व के लेनिनवादी सिद्धान्त से विचलन, अनुचित दमन, जनवाद के प्रतिबन्धन तथा समाजवादी कानून की सोवियत समाज को क्षति पहुचानेवाली अन्य अवहेलनाओ मे अभिव्यक्त हुई।

वैज्ञानिक समाजवाद को कलकित करने के अपने कुप्रयास म पूजीवादी वैचारिक तथा राजनीतिज्ञ यह दावा करते हैं कि समाजवादी समाज का सारतत्त्व अनिवार्यत व्यक्ति-पूजा की भावना को जन्म देता है, परन्तु यह दावा बेबुनियाद है। हा, इसका यह अर्थ नही है कि व्यक्ति-पूजा का कोई कारण था ही नही। वास्तव मे बात यह है कि उचित सीमा से बाहर अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन के केन्द्रीयकरण से सत्ता के सकेन्द्रण, तथा कुछ निश्चित अवस्थाओ मे दुरुपयोग की आशका पैदा होती है, जिसका अगला चरण है व्यक्ति-पूजा। परन्तु इन परिस्थितियो के पैदा होने का कारण समाजवाद का स्वरूप नही है। वे देश के विकास के विशिष्ट लक्षणो और उसके नेताओ की निजी खासियतो से सम्बद्ध हैं। स्तालिन की निजी खासियतो (अक्खडपन, असहिष्णुता, सनकीपन आदि) से लेनिन के मन मे यह आशका पैदा हो गई थी कि अपने हाथो मे काफी अधिकार सकेन्द्रित कर लेने के बाद स्तालिन उनका समुचित रूप मे इस्तेमाल नही कर पायेंगे। इन निजी खासियतो के कारण ही स्तालिन की व्यक्ति-पूजा का प्रादुर्भाव हुआ। यह कोई सयोग की बात नही थी कि लेनिन ने अपने जीवन के अन्तिम काल के दौरान जनवाद से केन्द्रीयतावाद का समन्वय स्थापित करने, एक व्यक्ति के हाथ मे सत्ता के सकेन्द्रण और इससे भी बढकर सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के प्रश्न पर बडी गभीरता से विचार किया था। इसी काल के दौरान उन्होने जनवादी केन्द्रीयतावाद, सामूहिक नेतृत्व, जन नियत्रण की व्यवस्था, आदि प्रश्नो को अच्छी तरह से साफ किया था।

व्यक्ति पूजा को जिन परिस्थितियो ने बढावा दिया, उनमे सोवियत सघ मे नये समाज के निर्माण मे देश के चारो ग्रोर शत्रुतापूर्ण पूजीवादी घेरे से उत्पन्न विशेष कठिनाइया, नाज़ी ग्राक्रमणकारियो के विरुद्ध भीषण सघर्ष की ग्रावश्यक्ता ग्रादि भी शामिल थी।

इस तरह व्यक्ति पूजा समाजवाद के स्वरूप से ग्रनिवार्यत प्रादुर्भूत नही होती। यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद, वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धान्त ग्रौर समाजवादी समाज के विकास को नियन्त्रित करनेवाले वस्तुगत नियमो के प्रतिकूल है, जिसकी विशेषता है जनसत्ता ग्रौर समाजवादी जनवाद का सतत विस्तार। इसी कारण सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवी काग्रेस ने व्यक्ति-पूजा की भर्त्सना की तथा इसके दुष्परिणामो को दूर करने की दिशा मे कदम उठाये ग्रौर इस प्रकार समाजवादी प्रणाली के ग्रौर ग्रधिक जनवादीकरण की जमीन तैयार की।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नये कार्यक्रम मे समाजवादी जनवाद के विकास के लिए व्यापक कदम उठाने की परिकल्पना की गई है। सोवियत चुनाव प्रणाली के जन प्रतिनिधित्व के रूपो ग्रौर जनवादी सिद्धान्तो मे सुधार, कम्युनिस्ट निर्माण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रश्नो ग्रौर विधेयको पर राष्ट्रव्यापी विचार विनिमय प्रणाली का विस्तार, राज्य-सत्ता ग्रौर प्रशासन-निकायो के कार्यकलाप पर लोक नियन्त्रण के तरीको का ग्रधिकतम विस्तार ग्रौर इस नियन्त्रण को ग्रधिक प्रभावकारी बनाना, नेतृत्वकारी निकायो की सरचना का बाकायदा नवीकरण तथा नेताग्रो के चुनाव तथा उनकी जवाबदेही के सिद्धान्तो का ग्रविचल कार्यान्वयन ग्रौर राजकीय निकायो, सार्वजनिक सगठनो ग्रौर सास्कृतिक सस्थाग्रो के प्रमुख पदाधिकारियो पर भी इन सिद्धान्तो का धीरे-धीरे लागू किया जाना – ये हैं वे मुख्य कदम, जिनके ज़रिये पार्टी समाज के मामलो की व्यवस्था करने मे सभी नागरिको का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करती है।

**कम्युनिस्ट पार्टी– जनता का हरावल**

कम्युनिस्ट निर्माण के दौरान राजनीतिक सगठन का विकास सोवियत समाज की नेतृत्वकारी तथा निदेशकारी शक्ति–सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकलाप से ग्रविच्छिन्न रूप मे सम्बद्ध है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की नियमावली मे लिखा है कि वह सोवियत जनता का जुझारू, जाचा तथा परखा हुग्रा हरावल है, जो मज़दूर

वर्ग, सामूहिक कृषको और बुद्धिजीवियो के अग्रगामी, राजनीतिक दृष्टि से सबसे चेतन भाग को स्वैच्छिकता के आधार पर एकजुट करती है। इसम मजदूर वर्ग को नेतृत्वकारी स्थिति प्राप्त है और रहेगी। लेनिन द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने अस्तित्व के ६० वर्ष से अधिक समय के दौरान सघर्ष और विजयो के शानदार रास्ते को तय किया है। इसने मजदूर वर्ग और किसान समुदाय को महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति मे विजयी बनाया, सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना की और समाजवाद की पूर्ण तथा अन्तिम विजय को सुनिश्चित बनाया। पार्टी के जाचे और परखे नेतृत्व मे सोवियत समाज की सामाजिक राजनीतिक और विचारधारात्मक एकता पैदा और सुदृढ हुई। इससे पार्टी की प्रतिष्ठा बढी तथा उसमे सोवियत जनता का असीम विश्वास पैदा हुआ।

पार्टी की सदस्यसख्या अब १,४४,५५,३२१ है, जिसमे मजदूर वर्ग और अन्य सभी मेहनतकश लोगो के सबसे अग्रगामी और राजनीतिक दृष्टि से चेतन प्रतिनिधि शामिल हैं। पार्टी के अधिकाश सदस्य मजदूर और सामूहिक किसान हैं। पार्टी के सामाजिक ढाचे म मजदूर वर्ग की स्थिति प्रमुख है और प्रमुख बनी रहेगी। पार्टी सोवियत जनतत्रो की दोस्ती तथा बन्धुत्व को अभिव्यक्त करते हुए एव अन्तर्राष्ट्रीयतावादी राजनीतिक सगठन के रूप मे कार्य करती है। सोवियत सघ मे बसनेवाली प्राय सभी जातिया के प्रतिनिधि इसकी पातो मे शामिल हैं।

पार्टी की सम्पूर्ण नीति, देश के भीतर और बाहर उसका सारा कार्यकलाप जनता के हितो, उसके अतरतम के विचारो तथा हार्दिक आकाक्षाओ के सर्वथा अनुरूप है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कहा गया है **"पार्टी जनता के लिए है और जनसेवा को ही अपने कार्यकलाप का उद्देश्य समझती है।"** इसी कारण सोवियत जनता पार्टी के विचारो और कार्यों को अपने विचार तथा कार्य मानती है। इसी कारण वे मजदूरो, सामूहिक कृषको, बुद्धिजीवियो, विभिन्न वय, पेशे और जाति के लोगो के विचारा तथा कार्यों के समरूप हैं। पार्टी **हमारे युग, सोवियत जनता का मस्तिष्क, प्रतिष्ठा और अत करण है**, जो महान सामाजिक रूपान्तरण मे सलग्न है।

सभी कार्यों मे पार्टी का पथ प्रदर्शन मार्क्सवाद लेनिनवाद द्वारा होता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति द्वारा पार्टी की

निष्ठा तथा मसौदाबाज़ी, हुक्मबाज़ी एव डाट-डपट के ज़रिये प्रशासन चलाने की प्रवृत्ति, निष्कर्षों तथा निर्णयो की जल्दबाजी की प्रवृत्ति को अस्वीकार करते हुए और प्रशासन के नौकरशाही तरीको का मूलोच्छेदन करते हुए पार्टी वस्तुगत परिस्थितियो, समाज के आर्थिक, राजनीतिक और सास्कृतिक जीवन की जटिलतम प्रक्रियाओ के सूक्ष्म विश्लेषण पर अपना कार्यकलाप आधारित करती है।

पार्टी जीवन और राज्य के प्रशासन मे लेनिनवादी आदर्शों तथा सिद्धान्तो को सतत मूर्त रूप प्रदान करना पार्टी की चिन्ता का मुख्य विषय है। **इनमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है सामूहिक नेतृत्व का सिद्धान्त। यह जाचा और परखा सिद्धान्त है तथा पार्टी की सबसे महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति है।** पार्टी के कार्यक्रम और नियमावली मे इस सिद्धान्त की अखण्डता की पुन पुष्टि की गई है।

इस सिद्धान्त के आधार पर ही पार्टी तथा जनता की सतत वर्धमान सृजनात्मक क्रियाशीलता और सक्रियता को निदेशित तथा विकसित करना, वस्तुगत परिस्थिति एव प्राप्त सफलताओ का समुचित विश्लेषण एव सयत मूल्याकन करना और समय रहते त्रुटियो का पता लगाना तथा उन्हे दूर करना सभव है। इसी कारण पार्टी इसका पूरा उपाय करती है कि प्रारम्भिक सगठन से लेकर केन्द्रीय समिति तक उसके सभी सगठनो मे सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त का अविचल पालन हो।

पार्टी के जीवन और कार्य का सर्वोच्च नियम है जनसमुदाय के साथ अविच्छिन्न सम्बन्ध। पार्टी जनसाधारण को केवल शिक्षा और ज्ञान ही नही प्रदान करती, बल्कि खुद भी उससे शिक्षा ग्रहण करती है और उसके प्रचुर व्यावहारिक अनुभव का सामान्यीकरण करती है। समाजवादी प्रणाली की अविजेय शक्ति पार्टी और जनता की एकता, लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व, उसकी सगठनात्मक और पथ प्रदर्शनकारी क्रियाशीलता म ही सन्निहित है।

## ४ समाजवादी सस्कृति

अर्थव्यवस्था और सामाजिक राजनीतिक सम्बन्धो के समाजवादी रूपान्तरण के आधार पर की गयी सास्कृतिक क्रान्ति के फलस्वरूप गुणात्मक दृष्टि से नयी समाजवादी सस्कृति प्रादुर्भूत होती है। विज्ञान, कला, साहित्य

शिक्षा, नैतिकता आदि मे समाजवादी समाज की उपलब्धिया उसके सघटक अग है।

समाजवाद शत्रुतापूर्ण वर्ग समाज, विशेष रूप से पूजीवादी समाज मे अन्तर्निहित प्रभुत्वशाली वर्ग की सस्कृति और उत्पीडित वर्ग की सस्कृति के रूप मे सस्कृति के विभाजन को मिटा देता है। समाजवाद एक ही, सम्पूर्ण जनता की सस्कृति को पैदा करता है, जो सभी मेहनतकश लोगो, मजदूरो, किसानो, बुद्धिजीवियो के लिए सुलभ है। अन्तर्य मे **अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादी** सस्कृति का लक्ष्य समाजवाद को सुदृढ एव विकसित करना, विभिन्न जातियो के मेहनतकशो की दोस्ती तथा सहयोग को प्रोत्साहन प्रदान करना है और रूप म (इसके अन्तर्य को अभिव्यक्त करनेवाली भाषा तथा अन्य माध्यम) राष्ट्रीय होने के कारण यह बडी और छोटी सभी जातियो के लिए विशेषकर प्रिय तथा बोधगम्य है, यह उन्हे अन्य जातियो के सास्कृतिक जीवन की उपलब्धियो की जानकारी प्राप्त करने मे सहायता देती है और राष्ट्रीय सस्कृति को समृद्ध तथा सभी राष्ट्रो के लिए एक-सी अन्तर्राष्ट्रीय सस्कृति को विकसित करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। **समाजवादी सस्कृति का विचारधारात्मक आधार मार्क्सवाद-लेनिनवाद है**, वह एकमात्र वैज्ञानिक विश्वदृष्टिकोण है, जो सस्कृति के प्रस्फुटन को प्रोत्साहन देता है और सस्कृति को समाजवाद के महान ध्येय का सेवक बना देता है।

सोवियत सस्कृति की श्रेष्ठतम उपलब्धिया समस्त मानवजाति की प्रगतिशील सास्कृतिक निधि को समृद्ध बनाती है, उन्हे विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त है और वे जनता के सास्कृतिक जीवन का अविछिन्न अग बन गई है। समाजवादी सस्कृति किसी भी रूप मे प्रतिक्रियावादी वैचारिकी को, निराशावाद और पतनोन्मुखी रुझान को अस्वीकार करती है, जिनसे मनुष्य बौद्धिक दृष्टि से अन्धविश्वासी, शक्तिहीन तथा पतित होता है।

पूजीवाद के वैचारिक अपने प्रिय समाज की सभ्यता तथा सस्कृति और समाजवादी सस्कृति की तुलना मे पूजीवादी सस्कृति की श्रेष्ठता का बखान करते नही थकते। परन्तु विभिन्न सस्कृतियो की तुलना तथा उनका मूल्याकन करते समय वे इस बात को ध्यान मे नही रखते कि समाज के सास्कृतिक विकास का मुख्य प्रतिमान यह है कि **प्रकृति और समाज की शक्तियो पर किस हद तक नियत्रण कायम कर लिया गया है**, कहा तक सस्कृति मानव-

जाति के हितार्थ है; किस हद तक वह जनसाधारण की पहुंच के भीतर है और मेहनतकशो का शैक्षिक स्तर कैसा है। इन अत्यत महत्त्वपूर्ण बातो मे समाजवादी सस्कृति पूजीवादी समाज की सस्कृति से वहुत आगे है।

पूजीवाद के अन्तर्गत सास्कृतिक उपलब्धियो पर चन्द विशेषाधिकारप्राप्त लोगो का अधिकार रहता है। समाजवाद के अन्तर्गत यह सभी मेहनतकश लोगो की सम्पदा होती है। समाजवादी समाज के हरेक सदस्य को शिक्षा प्राप्त करने तथा उद्योग, विज्ञान एव कला के क्षेत्र मे सृजनात्मक काम और नैतिक सुधार के लिए व्यापक सभावनाए सुलभ है। परन्तु पूजीवादी समाज मे ये सभावनाए सीमित है, क्योकि सृजनात्मक कार्यकलाप पर सत्तारूढ वर्गो का एकाधिकार कायम रहता है। अपने सारतत्त्व तथा सहज स्वरूप के कारण समाजवादी सस्कृति वहुत ही मानवीय है। इसका सर्जन श्रमजीवी के लिए होता है। यह उसके बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन है और उच्च, सच्चे मानवीय आदर्शो को मूर्त रूप प्रदान करने मे सहायक है।

रूस मे क्रान्ति के पहले सामान्य स्कूलो मे विद्यार्थियो की सख्या ६६,५६,००० थी, जबकि १९७१ मे सोवियत सघ मे इनकी सख्या ४,९०,००,००० से अधिक थी। इसी प्रकार उच्च शिक्षा सस्थाओ मे छात्र-छात्राओ की सख्या १,२७,००० से वढकर ४५,८०,००० हो गई। १९६७ मे सोवियत सघ मे १,२६,६०० सावजनिक पुस्तकालय थे। यह सख्या क्रान्तिपूर्व की सख्या से १० गुना अधिक है। प्रेस, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा का व्यापक विकास हुआ है और वे जनता के बीच समाजवादी सस्कृति को फैलाते है।

अब हम सक्षेप मे समाजवादी सस्कृति के वुनियादी तत्त्वो पर विचार करेगे।

**विज्ञान**

स्वचालित मशीनो, रेडियो, इलेक्ट्रानिक्स तथा टेलीमैकेनिक्स की असाधारण सफलताओ, परमाणविक ऊर्जा के उपयोग, अन्तरिक्ष के अनुसन्धान, साइवरनेटिक्स, रसायन और जीव-विज्ञान की उल्लेखनीय उपलब्धियो से सम्वद्ध २०वी शताब्दी महानतम वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति की सदी है। विज्ञान अधिकाधिक समाज की प्रत्यक्ष उत्पादक शक्ति बनता जा रहा है। विज्ञान उत्पादन के औजारो के द्वारा, जिनमे यह अपनी भौतिक अभिव्यक्ति प्राप्त करता है, और विज्ञान की पूर्ण जानकारी प्राप्त एव उत्पादन मे उसकी उपलब्धियो का उपयोग

करनेवाले लोगो के जरिये उत्पादक शक्ति की भूमिका ग्रहण करता जा रहा है।

प्रत्यक्ष उत्पादक शक्ति मे विज्ञान का अधिकाधिक रूपान्तरण सर्वोपरि रूप ने आधुनिक उत्पादन के विकास मे, जो विज्ञान के बिना सम्भव नही है, सुनिश्चित होता है। इस समय उत्पादन और तक्नीक के पूरे के पूरे क्षेत्र (वहुलक रसायन, नाभिकीय ऊर्जा उद्योग, इलेक्ट्रानिक्स, आदि) विज्ञान के टेक्नालाजीकल उपयोग के द्योतक है। इसके अलावा, यह प्रक्रिया खुद विज्ञान की प्रगति द्वारा भी निर्धारित होती है। आज से करीब १००-१५० वर्ष पहले चन्द शोधकर्त्ता ही खुद अपने हाथो तैयार किये गए काच, धातु अथवा लकडी के उपकरणो द्वारा एकान्त प्रयोगशालाओ मे प्रयोग करते हुए विज्ञान के विकास की बात सोच सकते थे। आज परिस्थिति सर्वथा भिन्न है।

आधुनिक विज्ञान का विकास उद्योग से आंगिक सम्बन्ध के बिना असभव है। उद्योग से ही आधुनिक विज्ञान के लिए जटिलतम मशीने और सूक्ष्म यत्र और वैज्ञानिक उपकरण ठीक से लगाने तथा उपयोग मे लाने के लिए अपेक्षित इजीनियर, तक्नीशियन और कुशल मजदूर प्राप्त होते हैं तथा अनुसधानकार्य के लिए व्यापक प्रायोगिक सुविधाए उपलब्ध होती है। मिसाल के लिए आधुनिक उद्योग द्वारा तैयार किये गये अतिशक्तिशाली त्वरित्रो तथा अन्य अत्यत जटिल यत्रो एव मशीनो के बिना परमाणविक नाभिक के रहस्यो का पता लगाना असभव हो जाता। उदाहरणार्थ, १९५७ मे दुबना नगर (सोवियत सघ) मे निर्मित ससार के एक विशालतम मूल कण-त्वरित्र - १० अरब इलेक्ट्रोन-वोल्ट क्षमता के प्रोटान सिन्क्रोट्रोन मे लगभग ६० मीटर व्यास और ३६ हजार टन वजन का चुम्बक लगा है। इस त्वरित्र को चालू करने के लिए द्नेपर पनबिजलीघर से कुल जितनी बिजली पैदा होती है, उसके लगभग चौथाई भाग की आवश्यकता पडती है। इस त्वरित्र के निर्माण मे सैकडो फैक्टरियो तथा वैज्ञानिक सस्थानो और हजारो वैज्ञानिको, इजीनियरो तथा मजदूरो ने भाग लिया था। इलेक्ट्रानिक सूक्ष्मदर्शी, अन्तरिक्ष राकेट, रेडियो दूरदर्शी और अन्य यत्रो तथा उपकरणो के बिना आधुनिक विज्ञान की बात सोची भी नही जा सकती। ये सभी चीजें जनता के वैज्ञानिक तथा उत्पादक कार्यकलाप के फल है।

विज्ञान और उद्योग के सबध को उपयोगिता की ही दृष्टि से देखते हुए हुए

वैज्ञानिको से फौरी व्यावहारिक नतीजो की अपेक्षा नही करनी चाहिए। विज्ञान को केवल वर्तमान नही, बल्कि भविष्य को भी दृष्टि मे रखना चाहिए, लक्ष्य सिद्धि का आधार निर्मित करना चाहिए, मुख्य सैद्धान्तिक समस्याओ को हल करना चाहिए और विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्र मे नया पथ प्रशस्त करना चाहिए। हो सकता है कि कुछ समस्याए वाछित शीघ्रता से व्यावहारिक लाभ न दे सकें, परन्तु अन्त मे नये वैज्ञानिक तरीको से वे अवश्य ही प्राप्त होगे। परमाणविक ऊर्जा के प्रसग मे ठीक यही बात हुई। मनुष्य इसकी खोज के आधी सदी बाद ही जाकर इसे उपयोग मे लाना सीख सका था।

विज्ञान का भविष्य वास्तव मे उत्पादन का भविष्य है।

विभिन्न सामाजिक प्रणालियो – समाजवादी और पूजीवादी प्रणाली – मे वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति हो रही है। चूकि इन के सामाजिक विकास के नियमो तथा सार्वजनिक उत्पादन के लक्ष्य मे भी बुनियादी रूप से भिन्नता है, इसलिए वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के उत्प्रेरक कारणो तथा इसी प्रकार उसके सामाजिक-आर्थिक नतीजो और सभावनाओ मे भी अन्तर है।

पूजीपति को नवीनतम वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियो के आधार पर अपने उत्पादन मे सुधार करना पडता है, क्योकि ऐसा न करने पर वह तीव्र होड़ मे कुचल जायेगा और बर्बाद हो जायेगा। दूसरे शब्दो मे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति पूजीवाद के अन्तर्गत भी वस्तुगत अनिवार्यता है। यह उल्लेखनीय है कि सबसे विकसित पूजीवादी देशो के पूजीपति उत्पादन-क्षमता तथा श्रम-उत्पादिता को बढाने, वस्तुओ की कोटि को सुधारने आदि के लिए आधुनिक विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियो का योग्यतापूर्वक उपयोग करते है।

परन्तु पूजीवाद के अन्तर्गत वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति गहरे अन्तर्विरोधो से परिपूर्ण है। विज्ञान तथा तकनीक के विकास के कारण असीमित रूप से उत्पादन-वृद्धि की संभावना हो गई, जबकि आबादी की क्रय-शक्ति सीमित है और विदेशी मण्डियों मे वस्तुओ को बेचना होड के कारण ही कठिन होता है। अन्तत., बाजार की स्वल्प सभावनाए उत्पादन-वृद्धि सीमित कर देती हैं, स्वचालित मशीनो तथा अन्य नवीनतम वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियो के उपयोग को प्रतिबन्धित कर देती हैं, खासकर

इसलिए और भी अधिक कि मजदूरो की माग मे तद्जनित कमी के कारण बेकारो की फौज बढ जाती है और लोगो की क्रय-शक्ति और भी कम हो जाती है। पूजीवाद के अन्तर्गत स्वत स्फूर्ति, अराजकता और होड वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति मे बडी रुकावटे है, जिनके फलस्वरूप विज्ञान एव तकनीक के क्षेत्र मे व्यावसायिक गोपनीयता पैदा होती है और इस प्रकार वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग मे बाधा उपस्थित होती है। ऐसी स्थिति पूजीवाद के अन्तर्गत विकासमान उद्योग, विज्ञान और तकनीक का लक्ष्य मुनाफा होने के कारण ही पैदा होती है। फलत, मेहनतकशो की विशाल सख्या की दशा और खराब हो जाती है, बेकारी पैदा होती है, श्रम के क्षेत्र से लोग हटाये जाते है और इस कारण मनुष्य की क्षमता को विकसित करने की सभावना सीमित हो जाती है। जैसा मार्क्स ने लिखा था, पूजी "विज्ञान का शोषण करती है, उत्पादन की प्रक्रिया मे उस पर अपना अधिकार जमा लेती है।"

समाजवाद के अन्तर्गत विज्ञान के, वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्ति के ध्येय और सभावनाए सर्वथा भिन्न है। समाजवाद समाज के सभी सदस्यो के कल्याण तथा सर्वतोमुखी विकास को सुनिश्चित बनाने के लिए सार्वजनिक-उत्पादक प्रक्रिया का योजनाबद्ध सगठन करता है। इस कारण, वह नई वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति की सभावना पैदा करता है तथा लोगो के अनिष्ट के लिए नही, बल्कि उनके कल्याण के निमित्त वैज्ञानिक और औद्योगिक उपलब्धियो का उपयोग करता है। इन उपलब्धियो को काम मे लाने से समाजवादी समाज के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी दृष्टि से प्रगति करना, श्रम उत्पादिता को बढाना, सृजनात्मक कार्य तथा मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा करना सभव हो जाता है।

सोवियत सत्ता की स्थापना के पहले ही दिनो से विज्ञान एक ऐसा विषय हो गया है, जिसकी राज्य और सम्पूर्ण जनता को चिंता है। विज्ञान के विकास, अनुसधान सस्थानो तथा प्रायोगिक केद्रो के व्यापक जाल की स्थापना और विज्ञानकर्मियो के प्रशिक्षण के लिए सोवियत राज्य अपनी शक्ति तथा साधनो का इस्तेमाल करने मे कोई कसर बाकी नही रखता। इस प्रसग मे यही कहना पर्याप्त है कि दुनिया के कुल वैज्ञानिको का एक-चौथाई भाग, यानी ६,२७,४०० से अधिक अनुसधानकर्त्ता सोवियत सघ

मे काम कर रहे है। सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के अतिरिक्त सभी सघीय जनतत्रो और विभिन्न विज्ञान क्षेत्रो मे (कृषि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, आदि) अकादमिया कायम की गई है, जो देशव्यापी स्तर पर विज्ञान का निदेशन करने मे प्रमुख भूमिका अदा करती है।

समाजवाद के अन्तर्गत **जनता से घनिष्ठ सम्बन्ध** विज्ञान की विशेषता है। यह केवल इससे प्रकट नही होता कि विज्ञान जनता की सेवा करता है, बल्कि इससे भी कि विज्ञान के सभी क्षेत्र जनता की व्यापक पहुच के भीतर है। लाखो वैज्ञानिक साधारण जनता से आये है और वे अपना सम्पूर्ण ज्ञान तथा योग्यता जन-सेवा मे समर्पित करते है। वैज्ञानिको के साथ ही साथ मजदूरो तथा किसानो के बीच से निकले उत्पादन के क्षेत्र मे लाखो नवपयनिर्माता, अन्वेषक तथा नवीकारक विज्ञान की प्रगति मे अपना योगदान दे रहे है।

समाजवाद के अन्तर्गत विज्ञान उत्पादन, करोडो लोगो के जीवन तथा कार्य के साथ अविच्छिन्न रूप मे जुडा हुआ है। वैज्ञानिक अध्ययन का ध्येय है उत्पादन की सेवा करना। इसके अलावा, अनुसधान कार्य सीधे उत्पादन मे, और फैक्टरियो, कारखानो, सामूहिक तथा राजकीय फार्मों मे स्थापित विभिन्न वैज्ञानिक सस्थानो, डिज़ाइनिग कार्यालयो, प्रयोगशालाओ तथा अन्य सस्थाओ मे किया जाता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी कांग्रेस के केंद्रीय समिति की रिपोर्ट विषयक प्रस्ताव मे कहा गया है कि "विज्ञान और प्रविधि मे प्रगति का त्वरण सामाजिक उत्पादन की कारगरता की वृद्धि मे एक निर्णायक शर्त है," और यह कि "आधारभूत वैज्ञानिक अनुसधान का विकास किया जाना चाहिए, वैज्ञानिक तथा प्राविधिक उपलब्धियो का अधिक पूर्णतर उपयोग किया जाना चाहिए और सभी आर्थिक क्षेत्रो को आधुनिकतम अतिउत्पादक साजसामान से लगातार और बाकायदा पुनर्सज्जित किया जाना चाहिए, नई प्रविधियो और उन्नत टेक्नालाजी को निकालने और उसपर महारत पाने मे लगनेवाले समय को कम करने का यथासभव प्रयास किया जाना चाहिए और स्वदेश तथा विदेश मे अर्जित प्रगतिशील अनुभव का अधिक पूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए।"

समाजवादी प्रणाली से राष्ट्रीय योजना के अनुसार अनुसधान करना,

अनेक वैज्ञानिक सस्थानो के काम मे समन्वय स्थापित करना और मुख्य समस्याओं के समाधान मे वैज्ञानिको का ध्यान और प्रयास सकेन्द्रित करना सभव हो जाता है। समाजवादी समाज मे प्रचलित द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विश्वदृष्टिकोण से भाववाद के भ्रष्टकारी प्रभाव से विज्ञान मुक्त हो जाता है और प्रकृति तथा समाज की प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए अनुसधानकर्ताओं को एकमात्र वैज्ञानिक पद्धति से लैस करता है।

विज्ञान सोवियत समाजवादी समाज के विकास का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। इसकी उपलब्धिया महान और निर्विवाद है। सोवियत जनता को इस बात पर उचित ही गर्व है कि उसके बीच से प्रख्यात वैज्ञानिक पैदा हुए हैं, जो विश्व विज्ञान के गौरव हैं तथा जिन्होंने विज्ञान एव तकनीक के क्षेत्र मे मानवजाति की प्रगति के लिए अपरिमित योगदान किया है।

तकनीकी प्रगति के सवर्धन, तकनीक तथा लोगो की कुशलता के विकास और सुधार, उनके भौतिक और सास्कृतिक स्तर को उठाने मे प्रकृति विज्ञान महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस प्रकार समाजवादी उत्पादन के तीव्र विकास मे वैज्ञानिक उपलब्धियो का उपयोग महत्त्वपूर्ण कारक बनता जा रहा है।

सोवियत प्रकृतिविज्ञानियो ने अनेक नवीनतम मशीनो तथा उपकरणो और नयी उत्पादन-प्रक्रियाओं के विकास, आधुनिक ऊर्जा एव परमाणविक उद्योग को खडा करने, प्राकृतिक सम्पदा का पता लगाने तथा उद्देश्यपरक रूप मे इसका इस्तेमाल करने और ऊर्जा के नये प्रकारो तथा कच्चे माल एव अन्य सामग्रियो की खोज मे बड़ी सहायता की है। गणित, भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, चिकित्साविज्ञान, भूविज्ञान तथा विज्ञान के अन्य क्षेत्रो मे सोवियत वैज्ञानिको की महान उपलब्धिया सर्वविदित हैं। बाह्य अन्तरिक्ष की खोज मे वे पूर्णतया रूप मे प्रकट हुई हैं। सोवियत संघ को सर्वप्रथम पहले कृत्रिम भू-उपग्रह को प्रक्षिप्त करने और बाह्य अन्तरिक्ष मे पहले मनुष्य को भेजने का गौरव प्राप्त है।

समाजवादी समाज की प्रगति मे सामाजिक विज्ञानो का बहुत बडा महत्त्व है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर आधारित ये विज्ञान लोगो को सामाजिक नियमो के ज्ञान से लैस करते हैं, समाज के विकास का दिशा-निर्देश करने का वैज्ञानिक आधार बनते हैं और मेहनतकश लोगो को शिक्षित करने,

के साथ समाजवादी कला के घनिष्ठ सम्बन्ध को ध्यान मे रखते हुए लेनिन ने कहा था "कला जनता के लिए है। व्यापक श्रमिक समुदाय मे इसकी गहरी जडें होनी चाहिए। यह जनता के समझने तथा अनुराग की चीज होनी चाहिए। इसे उसकी भावनाओ, विचारो और आकाक्षाओ के साथ बद्धमूल तथा विकसित होना चाहिए। इसे उसकी कलात्मक भावना को जागृत तथा विकसित करना चाहिए।"*

समाजवादी कला यथार्थवादी कला है। इससे ऐतिहासिक दृष्टि से यथार्थ और बहुत ही कलात्मक रूप मे वास्तविकता को प्रकट करने की अपेक्षा की जाती है। इसे यथार्थ को गतिशील रूप मे, उसके क्रान्तिकारी विकास को दृष्टि मे रखते हुए चित्रित करना चाहिए। यह पुरानी, कालातीत पूंजीवादी दुनिया के विरुद्ध और नयी, समाजवादी दुनिया के लिए सघर्ष मे मजदूर वर्ग, सारी मेहनतकश जनता को सहायता प्रदान करती है। मजदूर वर्ग, सारी मेहनतकश जनता की यह प्रत्यक्ष तथा उन्मुक्त सेवा ही समाजवादी कला की पक्षधरता है। अपने रूप मे राष्ट्रीय होने के कारण यह मेहनतकश लोगो के विशेषकर सन्निकट और उनकी समझ मे आने योग्य होती है।

मार्क्सवाद के दुश्मन कला की पक्षधरता और वर्गीय सारतत्त्व के इस मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की कडी आलोचना करते हैं, क्योंकि उनके दावे के अनुसार इससे कलाकार के सृजन-कार्य की स्वतत्रता प्रतिबन्धित तथा उसकी सृजनात्मक विशिष्टता सीमित होती है। यह तर्क प्रस्तुत करते समय वे इस तथ्य को विस्मृत कर देते हैं कि वर्ग समाज मे न तो कोई "विशुद्ध" कला है और न हो ही सकती है। अपनी सुलभता, जबरदस्त उत्प्रेरक शक्ति और भावात्मक प्रभाव से कला वर्ग-सघर्ष का प्रबल साधन बन जाती है। इसी कारण वर्गों द्वारा अपने राजनीतिक, नैतिक तथा अन्य विचारो के माध्यम के रूप मे कला का उपयोग किया जाता है। जहा तक सोवियत कला की पक्षधरता का सम्बन्ध है, वह सृजन की स्वतत्रता पर अकुश नहीं लगाती बल्कि सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्नो की ओर कलाकार के प्रयासो को लक्षित करती है। समाजवाद सृजनात्मक प्रयास की स्वतत्रता प्रदान करता है, परन्तु यह जनता के हितो, समाज के हितो के प्रतिकूल

* क्लारा जेट्किन, 'लेनिन के संस्मरण'।

काय करने की आजादी नहा देता। समाजवादी समाज म एक नये प्रकार का कलाकार अस्तित्व म आया है जिसका नागरिक कर्त्तव्य नयी दुनिया के निमाण म सक्रिय भाग लना ह ग्रार जा जनता क प्रति समाज क प्रति दायित्व क अपन सहज भाव का अनुभव करता है।

सावियत कला लागा म उत्कृष्ट राजनीतिक नैतिक और सौदयबोधी गुणा का पैदा करती ह, समाज के कुछ सदस्या क विचार तथा आचार म विद्यमान अनैतिकता को दूर करन म सहायता करती ह। यह जनता के श्रम तथा सघष की गहराइ तथा सच्चाई स चित्रित करती है, समकालीना की मानसिक दुनिया, उनके विचारा उनकी भावनाग्रा तथा आकाक्षाओ का प्रकट करती है, नयी सफलताए प्राप्त करन के लिए लोगा को उत्प्रेरित करती है और जिन बाता स सावियत समाज की प्रगति म बाधा पहुचती है, दृढता स उनकी कठोर आलोचना करती है।

जनता की सौंदयबोधी, कलात्मक शिक्षा म कला की भूमिका विशष रूप स महत्त्वपूण ह। कला स प्रकृति का सौदय, उसकी प्रक्रियाग्रा का सामजस्य तथा तालमल और रग एव ध्वनि की प्रचुरता अभिव्यक्त होती है। यह मानव तथा मानवीय सम्बन्धा की चारुता मानवीय श्रम की सुदरता की सराहना करती ह। कोई कलाकृति जितनी ही प्रभावकारी होती है जितना ही अधिक आगिक रूप म उसम सर्वोत्कृष्ट कलात्मक शैली के साथ विचारधारात्मक सारतत्त्व का सामजस्य रहता है, मनुष्य पर कला का उतना ही अधिक सौदयबोधी प्रभाव पडता है। जहा तक उदात्त विचार से शून्य, रूपवादी और प्रकृतिवादी कला का सम्बन्ध है, वह लोगा को शिक्षित नही, बल्कि उनके सौदयबोधी सार को नष्ट करती है।

मनुष्य की कलात्मक प्रतिभा की सबसे बहुमूल्य उपलब्धि है यथार्थवाद, वास्तविकता का सच्चा चित्रण। एकमात्र यथार्थवाद, विशष रूप से समाजवादी यथार्थवाद, जनसमुदाय की सौदयबोधी शिक्षा का, कला को लोगा की पहुच के भीतर करने का विश्वसनीय साधन है।

सोवियत समाज की कलात्मक जिदगी और जनता की सौदयबोधी शिक्षा म शौकिया कलाकार अधिकाधिक महत्त्वपूण भूमिका अदा कर रहे है। शौकिया कलाग्रा से करोडो लोगो के लिए सास्कृतिक निधियो का लाभ उठाना सभव हो जाता है और इनसे उनकी प्रतिभा तथा सौदयबोध का विकास होता है।

के साथ समाजवादी कला के घनिष्ठ सम्बन्ध को ध्यान मे रखते हुए लेनिन ने कहा था "कला जनता के लिए है। व्यापक श्रमिक समुदाय मे इसकी गहरी जडे होनी चाहिए। यह जनता के समझने तथा अनुराग की चीज होनी चाहिए। इसे उसकी भावनाओ, विचारो और आकाक्षाओं के साथ बद्धमूल तथा विकसित होना चाहिए। इसे उसकी कलात्मक भावना को जागृत तथा विकसित करना चाहिए।"*

समाजवादी कला यथार्थवादी कला है। इससे ऐतिहासिक दृष्टि से यथार्थ और बहुत ही कलात्मक रूप मे वास्तविकता को प्रकट करने की अपेक्षा की जाती है। इसे यथार्थ को गतिशील रूप मे, उसके क्रान्तिकारी विकास को दृष्टि मे रखते हुए चित्रित करना चाहिए। यह पुरानी, कालातीत पूजीवादी दुनिया के विरुद्ध और नयी, समाजवादी दुनिया के लिए सघर्ष में मजदूर वर्ग, सारी मेहनतकश जनता को सहायता प्रदान करती है। मजदूर वर्ग, सारी मेहनतकश जनता की यह प्रत्यक्ष तथा उन्मुक्त सेवा ही समाजवादी कला की पक्षधरता है। अपने रूप मे राष्ट्रीय होने के कारण यह मेहनतकश लोगो के विशेषकर सन्निकट और उनकी समझ मे आने योग्य होती है।

मार्क्सवाद के दुश्मन कला की पक्षधरता और वर्गीय सारतत्व के इस मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की कडी आलोचना करते है, क्योकि उनके दावे के अनुसार इससे कलाकार के सृजन-कार्य की स्वतत्रता प्रतिबन्धित तथा उसकी सृजनात्मक विशिष्टता सीमित होती है। यह तर्क प्रस्तुत करते समय वे इस तथ्य को विस्मृत कर देते हैं कि वर्ग समाज मे न तो कोई "विशुद्ध" कला है और न हो ही सकती है। अपनी सुलभता, जबरदस्त उत्प्रेरक शक्ति और भावात्मक प्रभाव से कला वर्ग-सघर्ष का प्रबल साधन बन जाती है। इसी कारण वर्गों द्वारा अपने राजनीतिक, नैतिक तथा अन्य विचारो के माध्यम के रूप मे कला का उपयोग किया जाता है। जहा तक सोवियत कला की पक्षधरता का सम्बन्ध है, वह सृजन की स्वतत्रता पर अकुश नही लगाती बल्कि सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रश्नो की ओर कलाकार के प्रयासो को लक्षित करती है। समाजवाद सृजनात्मक प्रयास की स्वतत्रता प्रदान करता है, परन्तु वह जनता के हितो, समाज के हितो के प्रतिकूल

---

*क्लारा जेट्किन, 'लेनिन के सस्मरण'।

—कम्युनिस्ट ध्येय के प्रति निष्ठा, अपनी समाजवादी मातृभूमि और अन्य समाजवादी देशो के प्रति प्रेम,

—समाज की भलाई के लिए ईमानदारी से काम—जो काम नही करेगा, वह खायेगा भी नही,

—सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा तथा वृद्धि के लिए प्रत्येक व्यक्ति की सुचिन्ता;

—सामाजिक कर्त्तव्य की ऊची भावना, सामाजिक हितो के उल्लघन के प्रति असहिष्णुता;

—सामूहिकता और विरादराना पारस्परिक सहायता—हरेक सब के लिए और सब हरेक के लिए,

—व्यक्तियो के बीच मानवीय सम्बन्ध तथा एक दूसरे के प्रति आदर की भावना. मनुष्य मनुष्य का मित्र, साथी तथा भाई है;

—सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन मे ईमानदारी और सच्चाई, नैतिक शुद्धता, सादगी और आडम्बरहीनता,

—परिवार मे परस्पर सम्मान और बच्चो के पालन-पोषण के लिए सुचिन्ता;

—अन्याय, परोपजीविता, बेईमानी, स्वार्थजीविता और धनलोलुपता के प्रति असहिष्णुता,

—सोवियत सघ की सभी जातियो के बीच दोस्ती और भाईचारा, जातीय तथा नसली वैमनस्य के प्रति असहिष्णुता;

—कम्युनिज्म, शान्ति के ध्येय और जनता की आजादी के दुश्मनो के प्रति असहिष्णुता;

—सभी देशो के मेहनतकशो, सभी राष्ट्रो से भ्रातृत्वपूर्ण एकता।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के अनुभव से प्रकट हो गया है कि इन नियमो तथा अपेक्षाओ से समाजवादी समाज के अधिकाश सदस्यो का आचरण व्यवस्थित होने लगा है। समाजवाद के अन्तर्गत अधिकीश लोगो की नैतिक चेतना इन्ही के अनुरूप गठित होती है। आमूल आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनो के आधार पर समाजवादी समाज मे समाजवादी आदर्शों के प्रति स्वार्थशून्य निष्ठा की भावना मे शिक्षित पीढिया पदा हुई और सोवियत नागरिक के चरित्र—जुझारू, क्रान्तिकारी और राजनीतिक दृष्टि से चेतन श्रमिक के चरित्र का निर्माण

**समाजवादी नैतिकता** वर्ग समाज मे नैतिकता का स्वरूप भी वर्गीय होता है। परस्परविरोधी वर्गों मे विभाजित समाज मे शोषको की नैतिकता और शोषितो की नैतिकता अलग-अलग होती है, तथा शोषको की नैतिकता हावी रहती है।

पूजीवादी नैतिकता पूजीपति वर्ग के हितो का पोषण करती है। पूजीवाद की आधारशिला – निजी स्वामित्व और शोषण – को कायम रखना इसका मुख्य सामाजिक उद्देश्य है।

**समाजवादी, कम्युनिस्ट नैतिकता** दुनिया मे सर्वाधिक प्रगतिशील और मानवीय है। यह चन्द शोषको के हितो को नही, बल्कि समाज के सदस्यो के भारी बहुमत के हितो को, सभी मेहनतकश लोगो के हितो और आदर्शों को प्रकट करती है।

शोषण और दुराचार के विरुद्ध सघर्ष मे जनता द्वारा निरूपित नैतिकता के आम नियम समाजवादी नैतिकता मे समाविष्ट है। ईमानदारी तथा सादगी, दृढ सकल्पशक्ति एव साहस, एक दूसरे के प्रति, परिवार और बुजुर्गों के प्रति अपने कर्त्तव्य का अविचल पालन सदा से श्रमिक जनो की विशिष्टताए रही है। शोषको के विरुद्ध सघर्ष मे, अपने सयुक्त श्रम मे उन्होने पारस्परिक सहायता, बिरादराना एकता तथा काहिलो और परोपजीवियो के प्रति असहिष्णुता जैसे नैतिक गुणो को विकसित किया। ये गुन सदी-दर-सदी, पीढी-दर-पीढी लोगो को प्राप्त होनेवाले **नैतिकता के सामान्य नियमो** के आधार है। हमारे युग के सबसे प्रगतिशील वर्ग, नये, समाजवादी समाज के निर्माता, मजदूर वर्ग की नैतिकता समाज के नैतिक विकास मे, कम्युनिस्ट नैतिकता के नियमो तथा अपेक्षाओ को मूर्त रूप प्रदान करने मे विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

यद्यपि समाजवादी नैतिकता पूजीवाद के अन्तर्गत ही, शोषण तथा असमानता के विरुद्ध मजदूर वर्ग, सभी मेहनतकश लोगो के विरोध को प्रकट करते हुए अस्तित्व ग्रहण कर चुकी थी, तथापि इसका प्रभुत्व पूजीवाद के उन्मूलन और समाजवाद की विजय के साथ ही शुरू होता है।

समाजवादी, कम्युनिस्ट नैतिकता के नियम क्या है, इसकी अपेक्षाए क्या है?

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम ने कम्युनिज्म के निर्माता की नैतिक सहिता को सूत्रबद्ध किया गया है। उसमे निम्नाकित नैतिक सिद्धान्त समाविष्ट है.

–कम्युनिस्ट ध्येय के प्रति निष्ठा, अपनी समाजवादी मातृभूमि और अन्य समाजवादी देशो के प्रति प्रेम,

–समाज की भलाई के लिए ईमानदारी से काम–जो काम नही करेगा, वह खायेगा भी नही,

–सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा तथा वृद्धि के लिए प्रत्येक व्यक्ति की सुचिन्ता;

–सामाजिक कर्त्तव्य की ऊंची भावना, सामाजिक हितो के उल्लघन के प्रति असहिष्णुता,

–सामूहिकता और बिरादराना पारस्परिक सहायता–हरेक सब के लिए और सब हरेक के लिए,

–व्यक्तियो के बीच मानवीय सम्बन्ध तथा एक दूसरे के प्रति आदर की भावना मनुष्य मनुष्य का मित्र, साथी तथा भाई है,

–सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन मे ईमानदारी और सच्चाई, नैतिक शुद्धता, सादगी और आडम्बरहीनता,

–परिवार मे परस्पर सम्मान और बच्चो के पालन-पोषण के लिए सुचिन्ता,

–अन्याय, परोपजीविता, बेईमानी, स्वार्थजीविता और धनलोलुपता के प्रति असहिष्णुता,

–सोवियत सघ की सभी जातियो के बीच दोस्ती और भाईचारा, जातीय तथा नसली वैमनस्य के प्रति असहिष्णुता,

–कम्युनिज्म, शान्ति के ध्येय और जनता की आजादी के दुश्मनो के प्रति असहिष्णुता,

–सभी देशो के मेहनतकशो, सभी राष्ट्रो से भ्रातृत्वपूर्ण एकता।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के अनुभव से प्रकट हो गया है कि इन नियमो तथा अपेक्षाओ से समाजवादी समाज के अधिकाश सदस्यो का आचरण व्यवस्थित होने लगा है। समाजवाद के अन्तर्गत अधिकीश लोगो की नैतिक चेतना इन्ही के अनुरूप गठित होती है। आमूल आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनो के आधार पर समाजवादी समाज म समाजवादी आदर्शों के प्रति स्वार्थशून्य निष्ठा की भावना मे शिक्षित पीढिया पदा हुई और सोवियत नागरिक के चरित्र–जुझारू, क्रान्तिकारी और राजनीतिक दृष्टि से चेतन श्रमिक के चरित्र का निर्माण

हुआ। महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ५०वी वर्षगाठ से सबधित सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस मे कहा गया है "इन सभी बातो से कम्युनिस्ट शिक्षा के निम्नांकित नये और अधिक जटिल कार्यभारो को पूरा करने के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा होती है विचारनिष्ठा, काम के प्रति लगन, अनुशासन एव मानसिक समृद्धि, नैतिक शुद्धता और शारीरिक परिष्कृतता मे सामजस्यपूर्ण सगति कायम करते हुए व्यक्तित्व को ढालना।"

सर्वतोमुखी रूप मे विकसित व्यक्तित्व को ढालना एक लम्बी और जटिल प्रक्रिया है। यह सबसे अधिक आर्थिक विकास, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन, श्रम तथा विश्राम के लिए अनुकूलतम भौतिक परिस्थितियो के निर्माण से सम्बद्ध है। यह कुछ सामाजिक परिस्थितियो को पैदा करने से सम्बद्ध है—मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के बीच, मानसिक तथा शारीरिक श्रम के बीच और शहर एव गाव के बीच अन्तर का उन्मूलन, जिसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता और योग्यता के विकास तथा उपयोग के लिए समान अवसर सुलभ होगा। यह विचारधारात्मक तथा शैक्षिक कार्य को सुधारने और समाज के कुछ सदस्यो के विचार एव आचरण मे अभी भी विद्यमान निजी सम्पत्ति की मनोवृत्ति और नैतिकता के अवशेषो को मिटाने से सम्बद्ध है।

समाजवाद के अन्तर्गत आज भी परोपजीवी व्यक्ति है, जो सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम से जी चुराते है; अभी भी धनलोलुप, स्वार्थवादी और नौकरशाह है, जो सार्वजनिक हिता की उपेक्षा करते है तथा सबसे अधिक अपने निजी स्वार्थ पर ध्यान देते है; आज भी सार्वजनिक सम्पत्ति का गबन करनेवाले और श्रम अनुशासन तथा सार्वजनिक व्यवस्था का उल्लघन करनेवाले लोग है।

सामान्यतया समाज विरोधी विचारो तथा आचरण का कारण यह है कि समाजवाद पूजीवाद से प्रादुर्भूत होता है, जिससे पूजीवादी परम्पराए और आदते नये समाज मे कुछ हद तक बनी रहती है। और चूकि चेतना अपने विकास मे आम तौर पर स्वभाव के पीछे रहती है, इसलिए पुराने समाज की परम्पराए और आदते नये समाज के सदस्यो के विचारो और कार्यों मे दीर्घ काल तक बनी रहती है। इस प्रसग मे पूजीवादी वैचारिकी का भी उल्लेख किया जाता है, जो इस का पूरा प्रयास करती है कि

सोवियत जनता पर उसका असर पडे, पूजीवादी दस्तूरो तथा पूर्वाग्रहो को वह पुनः अपना ले और जीवन के स्वार्थवादी विचारो एव पूजीवादी दुनिया के आदर्शों को ग्रहण कर ले।

यह सब कुछ ठीक तो है, परन्तु समाजवादी समाज मे भ्रष्ट अनैतिकता की परिघटना का कारण केवल पूजीवादी प्रभाव नही हो सकता। पूजीवाद के प्रभाव के साथ-साथ समाज विरोधी विचारो तथा कार्यों के मूल कारण खुद समाजवाद मे निहित है. शुरू मे उसकी अर्थव्यवस्था मे कुछ अपरिपक्वता और पूर्ण आर्थिक समानता की कमी, समाज के विकास के नियमो का विरूपण तथा अतिक्रमण, श्रम तथा विश्राम के सगठन और जनता की जीवन-प्रणाली के निर्माण मे गलतिया आदि। क्या श्रम और उपभोग की मात्रा पर नियत्रण की शिथिलता से दुर्वृत्ति अथवा अपराध की भावना नही पैदा होती? शैक्षिक कार्य मे भी, विशेष रूप से परिवार तथा स्कूल मे नई पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा मे त्रुटियो के कारण ऐसी स्थिति पैदा होती है।

अतीत के अवशेपो से समाज के विकास मे बाधा पैदा होती है। इन अवशेपो से प्रभावित व्यक्ति सामान्य श्रम और विश्राम मे गडबडी पैदा करते हैं, राजकीय तथा नागरिको की व्यक्तिगत सम्पत्ति को अनुचित रूप से हथिया लेते हैं, पारिवारिक जीवन को अव्यवस्थित करते है, इत्यादि। सामान्यतया, अतीत के अवशेप बहुत समय तक बने रहते है, वे अपने आप नही विलुप्त हो जाते और जिन सामाजिक परिस्थितियो के कारण वे प्रादुर्भूत होते हैं, उनके मिट जाने के बाद भी दीर्घ काल तक लोगो के विचारो को प्रभावित करते हैं।

इसी कारण कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य कम्युनिस्ट नैतिकता के विकास पर इतना ध्यान देते है और इसके लिए पूरा प्रयास करते है।

## ५. समाजवाद और व्यष्टि

पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सामान्यतया श्रमिक जन जीवन की सभी सुविधाओं को प्राप्त करने, सभी भौतिक और सास्कृतिक उपलब्धियो का सुख उठाने के अवसर से वचित रहते हैं, तथा विकास एव उन्नति के लिए

उन्हे सीमित अवसर सुलभ होते हैं। इसके साथ ही श्रम के दौरान तथा शोषण के विरुद्ध सघर्ष के दौरान उनमे वास्तविक मानवीय गुण – सामूहिकता, सगठन एव अनुशासन, साहस एव दृढता, तथा मनुष्य को पतित और कुण्ठित बनानेवाली सभी बातो के प्रति नफरत की भावना जैसे गुण पैदा होते है। दूसरे शब्दो मे, पूजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत नये समाजवादी मानव को ढालने की पूर्वापेक्षाए पैदा होती हैं और उसके गुण तथा विशेष लक्षण रूप ग्रहण कर लेते है।

पूजीवाद के अन्तर्गत व्यष्टि और समष्टि के बीच अन्तर्विरोध बहुत तीव्र हो जाता है। समाज के वर्गों मे विभाजन के फलस्वरूप पैदा होनेवाला यह अन्तर्विरोध केवल समाजवादी क्रान्ति, समाजवाद की विजय से ही समाप्त होता है। व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास और उसकी बहुमुखी योग्यता को प्रकट करने की पूर्वापेक्षाए समाजवाद मे ही पैदा होती है।

निजी स्वामित्व तथा शोषण का उन्मूलन करके और सभी नागरिको के लिए समान राजनीतिक एव वैधानिक अधिकारो तथा कर्तव्यो को सुनिश्चित बनाकर समाजवाद व्यक्ति के विकास के लिए उपयुक्त राजनीतिक परिस्थितिया पैदा करता है। लिंग एव वय, वश एव पेशा, जाति एव धर्म मे भिन्नता सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रो मे प्रत्येक व्यक्ति के सक्रिय, सृजनात्मक कार्यकलाप मे बाधक नही होती। मनुष्य के श्रम को मुक्त करके तथा उसे शोषको के लिए किये जानेवाले श्रम की जगह, खुद अपने लिए, अपने ही समाज के लिए किये जानेवाले श्रम मे रूपान्तरित करके, समाजवाद ने श्रम को मनुष्य के सामाजिक मूल्य की कसौटी बना दिया है। श्रम से ही समाज मे व्यक्ति का स्थान निर्धारित होता है। भौतिक तथा नैतिक दृष्टि से उत्प्रेरित मुक्त श्रम मनुष्य के विकास का आधार बन गया है, उसकी क्षमता के उपयोग का एकमात्र मान्य क्षेत्र बन गया है। समाजवाद गुणात्मक दृष्टि से नया उत्पादन पैदा करता है, जिसका ध्येय मनुष्य को लाभ पहुचाना, उसकी जरूरतो और हितो को पूरा करना है। इससे मनुष्य के विकास की भौतिक पूर्वापेक्षाए पैदा होती हैं। यह विश्वास लोगो को अपनी व्यावसायिक कुशलता को बढाने तथा अपनी सामान्य शिक्षा एव सस्कृति के स्तर को ऊचा उठाने की प्रेरणा देता है कि व्यक्ति अपनी योग्यता का सदा उपयोग कर सकेगा, कि उसकी क्षमता का उपयोग करने के साथ ही समाज को उसकी आवश्यकताओ की तुष्टि की भी चिन्ता रहती

है और इसे वह श्रम की मात्रा तथा गुण पर अवलम्बित कर देता है। नयी संस्कृति पैदा करके और उसे जन सेवा मे लगाकर समाजवाद मनुष्य के बौद्धिक विकास तथा उसके नैतिक उत्कर्ष के लिए अनुकूलतम परिस्थितिया सुनिश्चित करता है। महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ५०वी वर्षगाठ के अवसर पर सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की थीसिस मे कहा गया है *"समाजवाद व्यक्तियो के निजी भाग्य और* सामाजिक रूपान्तरणो तथा सम्पूर्ण समाज की सफलताम्रो के बीच गहरे सम्बन्ध पैदा करता है। समाजवादी स्वामित्व से मेहनतकश जनता के सुखी तथा समृद्ध जीवन के लिए मुक्त श्रम के युग का शुभारम्भ होता है। श्रम की मुक्ति व्यक्ति की वास्तविक स्वतत्रता की बुनियादी शर्त है। समाजवाद ने भौतिक तथा बौद्धिक सस्कृति की उपलब्धियो को मेहनतकश लोगो की सेवा मे रख दिया है।"

*अर्थव्यवस्था, सामाजिक सम्बन्धो और सास्कृतिक जीवन मे आमूल* परिवर्तनो के आधार पर समाजवाद पूजीवाद के अन्तर्गत श्रमिक जन मे पैदा हुए मानवीय गुणो को कायम रखता है, विकसित करता है और उन्हे गुणात्मक दृष्टि से नये उच्चतर स्तर पर ले जाता है। इसके अलावा, वह पुराने समाज के सदस्यो मे न पाये जानेवाले नये गुणो को भी पैदा करता है। दूसरे शब्दो मे, समाजवाद नये **समाजवादी मानव** को ढालता है।

नये मानव को ढालना समाजवाद की महानतम उपलब्धि है और इतिहास मे ऐसा कोई अन्य उदाहरण नही है। नया मानव इतिहास का वास्तविक निर्माता, समाज का पूरा स्वामी, भौतिक तथा सास्कृतिक सम्पदा का एकमात्र उत्पादक और मालिक और नये सच्चे मानवीय सामाजिक सम्बन्धो का वाहक है।

समाजवादी मानव उत्पादन के साधनो के सामाजिक स्वामित्व पर आधारित समाजवादी उद्यमो मे काम करता है। उसका विशिष्ट लक्षण है उसका श्रम, सार्वजनिक सम्पदा की सुरक्षा तथा उसमे वृद्धि करने का उसका प्रयास, नया श्रम अनुशासन और नये श्रम सम्बन्ध–सहकर्मियो के साथ दोस्ती तथा सहयोग के सम्बन्ध। उसमे कम्युनिस्ट आदर्शों के प्रति निस्स्वार्थ निष्ठा, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना, नागरिक चेतना और सामाजिक दायित्व जैसे उत्कृष्ट बौद्धिक गुण भी होते है। कम्युनिस्ट नैतिकता के सिद्धान्त उसके जीवन और श्रम के अविच्छिन्न अग होते है। उसकी

अन्य उल्लेखनीय विशेषताए है समृद्ध बौद्धिक जीवन, उच्च सास्कृतिक विविध बौद्धिक आवश्यकताए, वैज्ञानिक तथा कलात्मक सृजन मे अ और सर्वतोमुखी विकास एव सुधार के लिए प्रयास।

परन्तु यह धारणा गलत होगी कि समाजवादी समाज के सभी स मे ये गुण पाये जाते है। कुछ लोग आज भी सामाजिक दृष्टि से उप श्रम से बचने की कोशिश करते है, सामाजिक निष्क्रियता और बौ क्रियाशून्यता के उदाहरण भी मिलते है। परन्तु ऊपर जिन गुणो उल्लेख किया गया है, वे समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत मनुष्य लाक्षणिक विशेषताए है। सर्वप्रथम इसलिए कि समाजवाद प्रत्येक व्य मे इन गुणो को पैदा करने के लिए वास्तविक सभावनाए पैदा करता और फिर, ये गुण समाजवादी समाज के अधिकांश सदस्यो मे अन्तर्निहित होते है

समाजवाद की विजय और समाजवादी मानव के उभरने के सा समष्टि और व्यष्टि के आपसी सम्बन्ध भी आमूल रूप मे बदल जाते है अन्तर्विरोधी वर्ग व्यवस्था मे **व्यष्टि और समष्टि** के बीच जो विरोध होत है, उसका स्थान **व्यष्टि और समष्टि की प्रगामी एकता** ग्रहण कर लेती है इस एकता का सुदृढ वस्तुगत आधार है—सामाजिक स्वामित्व, जं सामाजिक और व्यक्तिगत हितो मे सामजस्य को सुनिश्चित करता है। समाजवाद के अन्तर्गत, जिसमे शोषण नही होता और श्रम सार्विक कर्तव्य होता है, व्यक्ति के अपनी स्थिति को सुधारने के प्रयास समाज की भलाई के लिए किये जानेवाले श्रम से सफल होते है।

समाज और सामाजिक हितो के प्रति व्यक्ति का रवैया कई बातो मे प्रतिबिंबित हो सकता है। सबसे स्पष्ट रूप मे यह श्रम की प्रेरणा, श्रम के प्रति रवैये से ज़ाहिर होता है। श्रम के सामाजिक महत्त्व की चेतना को जानने के प्रयास मे लेनिनग्राद के समाजशास्त्रियो ने युवा मजदूरो से यह बताने को कहा कि श्रम के महत्त्व के बारे मे निम्नाकित निर्णयो मे से कौनसा निर्णय उनकी राय को प्रकट करता है।

| | सकारात्मक उत्तर |
|---|---|
| १. अच्छा काम वही है, जहा आप सबसे अधिक उपयोगी है, जहा आपकी आवश्यकता है। | ६१७ (२३.२ प्रतिशत) |

| | |
|---|---|
| २ वेतन भी महत्त्वपूर्ण है, परन्तु मुख्य बात है काम का उद्देश्य, उसकी सामाजिक उपयोगिता। | ८३० ( ३१ १ प्रतिशत ) |
| ३ वेतन मुख्य बात है, परन्तु काम के अभिप्राय तथा उद्देश्य पर भी गौर करना चाहिए। | ८१६ ( ३० ७ प्रतिशत ) |
| ४ यदि अच्छी मजदूरी मिले, तो कोई भी काम अच्छा है। | ३६६ ( १५ ० प्रतिशत ) |

उक्त सर्वेक्षण से पता चलता है कि मत प्रकट करनेवाले मजदूरो मे से ८५ प्रतिशत ने किसी न किसी रूप मे अपने काम को उसकी सामाजिक उपयोगिता से सम्बद्ध किया। समाजवाद के अन्तर्गत व्यष्टि तथा समष्टि के बीच सगति का यह सूचक है, यह इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति की उपलब्धिया समाज की भी उपलब्धिया है और व्यक्ति की सेवा करने, उसकी विविध आवश्यकताओ को पूरा करने तथा उसकी बहुमुखी क्षमताओ को विकसित करने के अलावा समाजवादी समाज का कोई अन्य लक्ष्य नही है। व्यष्टि तथा समष्टि की सगति सामाजिक हिता पर आधारित है, और इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तिगत हितो की तुलना मे सामाजिक हितो को प्रमुखता प्रदान करनी चाहिए।

व्यष्टि और समष्टि के बीच प्रगामी सगति वस्तुगत रुझान है, समाजवाद के विकास का नियम है, परन्तु यह प्रवृत्ति अतविरोधो के बिना काम नही करती। ये अतविरोध उस समाज म प्रकट होते है, जो व्यक्ति की जरूरतो को पूर्णत पूरा करने मे अभी असमर्थ है, आशिक रूप मे उनकी अभिवृद्धि को प्रतिबन्धित करता है, काम की मात्रा और गुण के अनुपात म उन्हे पूरा करता है। समाज अभी लोगो की पूण आर्थिक समानता को सुनिश्चित नही बनाता, बिना किसी अपवाद के सभी सदस्यो के विकास और उन्ह अपनी सृजनात्मक क्षमता को अभिव्यक्त करने के लिए समान परिस्थितिया पैदा नही करता। इसके अलावा, सावजनिक हिता के साथ अपन हिता का सामजस्य स्थापित करने की आवश्यकता के बारे मे व्यक्ति सदैव जागरूक नही रहता। कभी-कभी वह समाज से असाधारणत स्वाथपूण मागें करता

ग्रन्य उल्लेखनीय विशेषताए हैं समृद्ध बौद्धिक जीवन, उच्च सास्कृतिक स्तर, विविध बौद्धिक ग्रावश्यकताए, वैज्ञानिक तथा कलात्मक सृजन म ग्रभिरुचि ग्रौर सर्वतोमुखी विकास एव सुधार के लिए प्रयास।

परन्तु यह धारणा गलत होगी कि समाजवादी समाज के सभी सदस्यो मे ये गुण पाये जाते हैं। कुछ लोग ग्राज भी सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम से बचने की कोशिश करते हैं, सामाजिक निष्क्रियता ग्रौर बौद्धिक क्रियाशून्यता के उदाहरण भी मिलते हैं। परन्तु ऊपर जिन गुणा का उल्लेख किया गया है, वे समाजवादी व्यवस्था के ग्रन्तर्गत मनुष्य की लाक्षणिक विशेषताए हैं। सर्वप्रथम इसलिए कि समाजवाद प्रत्येक व्यक्ति मे इन गुणो को पैदा करने के लिए वास्तविक सभावनाए पैदा करता है, ग्रौर फिर ये गुण समाजवादी समाज के ग्रधिकाश सदस्यो मे ग्रन्तनिहित होते हैं।

समाजवाद की विजय ग्रौर समाजवादी मानव के उभरने के साथ समष्टि ग्रौर व्यष्टि के ग्रापसी सम्बन्ध भी ग्रामूल रूप मे बदल जाते हैं। ग्रन्तविरोधी वर्ग व्यवस्था मे **व्यष्टि ग्रौर समष्टि** के बीच जो विरोध होता है, उसका स्थान **व्यष्टि ग्रौर समष्टि की प्रगामी एकता** ग्रहण कर लेती है। इस एकता का सुदृढ वस्तुगत ग्राधार है—सामाजिक स्वामित्व, जो सामाजिक ग्रौर व्यक्तिगत हितो मे सामजस्य को सुनिश्चित करता है। समाजवाद के ग्रन्तगत, जिसमे शोषण नही होता ग्रौर श्रम सार्विक कर्तव्य होता है, व्यक्ति के ग्रपनी स्थिति को सुधारने के प्रयास समाज की भलाई के लिए किये जानेवाले श्रम से सफल होते हैं।

समाज ग्रौर सामाजिक हितो के प्रति व्यक्ति का रवैया कई बातो मे प्रतिबिबित हो सकता है। सबसे स्पष्ट रूप मे यह श्रम की प्रेरणा, श्रम के प्रति रवैये से ज़ाहिर होता है। श्रम के सामाजिक महत्त्व की चेतना को जानने के प्रयास मे लेनिनग्राद के समाजशास्त्रियो ने युवा मज़दूरो से यह बताने को कहा कि श्रम के महत्त्व के बारे मे निम्नाकित निणयो मे से कौनसा निणय उनकी राय को प्रकट करता है।

| | सकारात्मक उत्तर |
|---|---|
| १ ग्रच्छा काम वही है, जहा ग्राप सबसे ग्रधिक उपयोगी हैं, जहा ग्रापकी ग्रावश्यकता है। | ६१७ (२३ २ प्रतिशत) |

| | |
|---|---|
| २. वेतन भी महत्त्वपूर्ण है, परन्तु मुख्य वात है काम का उद्देश्य, उसकी सामाजिक उपयोगिता। | ८३० (३११ प्रतिशत) |
| ३. वेतन मुख्य वात है, परन्तु काम के अभिप्राय तथा उद्देश्य पर भी ग़ौर करना चाहिए। | ८१६ (३०७ प्रतिशत) |
| ४. यदि अच्छी मजदूरी मिले, तो कोई भी काम अच्छा है। | ३६६ (१५० प्रतिशत) |

उक्त सर्वेक्षण से पता चलता है कि मत प्रकट करनेवाले मजदूरो मे से ८५ प्रतिशत ने किसी न किसी रूप मे अपने काम को उसकी सामाजिक उपयोगिता से सम्वद्ध किया। समाजवाद के अन्तर्गत व्यष्टि तथा समष्टि के बीच सगति का यह सूचक है, यह इस वात का प्रमाण है कि व्यक्ति की उपलब्धिया समाज की भी उपलब्धिया है और व्यक्ति की सेवा करने, उसकी विविध आवश्यक्ताओ को पूरा करने तथा उसकी वहुमुखी क्षमताओ को विकसित करने के अलावा समाजवादी समाज का कोई अन्य लक्ष्य नही है। व्यष्टि तथा समष्टि की सगति सामाजिक हितो पर आधारित है, और इससे यह निष्कर्ष निकलता हे कि व्यक्तिगत हितो की तुलना मे सामाजिक हितो को प्रमुखता प्रदान करनी चाहिए।

व्यष्टि और समष्टि के वीच प्रगामी सगति वस्तुगत रुझान है, समाजवाद के विकास का नियम है, परन्तु यह प्रवृत्ति अतर्विरोधो के विना काम नही करती। ये अतर्विरोध उस समाज मे प्रकट होते है, जो व्यक्ति की जरूरतो को पूर्णत. पूरा करने मे अभी असमर्थ है, आशिक रूप मे उनकी अभिवृद्धि को प्रतिवन्धित करता है, काम की मात्रा और गुण के अनुपात मे उन्हे पूरा करता है। समाज अभी लोगो की पूर्ण आर्थिक समानता को सुनिश्चित नही वनाता, विना किसी अपवाद के सभी सदस्यो के विकास और उन्हे अपनी सृजनात्मक क्षमता को अभिव्यक्त करने के लिए समान परिस्थितिया पैदा नही करता। इसके अलावा, सार्वजनिक हितो के साथ अपने हितो का सामजस्य स्थापित करने की आवश्यकता के वारे मे व्यक्ति सदैव जागरूक नही रहता। कभी-कभी वह समाज से असाधारणत. स्वार्थपूर्ण मागे करता

है, जिसके फलस्वरूप समाज मे, उसके बहुलाश सदस्यो और पिछडे हुए सदस्यो के कुछ भाग मे अतर्विरोध पैदा हो जाता है। ज्यो-ज्यो कम्युनिस्ट समाज निर्मित होता जाता है, त्यो-त्यो ये अतर्विरोध दूर होते जाते है और व्यष्टि तथा समष्टि के बीच पूर्ण तालमेल कायम करने के लिये उनकी सगति गाढी होती जाती है। इस सामजस्य को स्थापित करने के लिए समाज और व्यक्ति दोनो मे परिवर्तन होते हैं। समाज का विकास और रूपान्तरण व्यक्ति के विकास का आधार है।

* * *

इस प्रकार हमने समाजवाद का, कम्युनिस्ट समाज की पहली अवस्था का चित्र प्रस्तुत किया है। यह चित्र केवल वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्त्तको के प्रतिभापूर्ण चिन्तन का ही फल नही, बल्कि सोवियत जनता तथा अन्य समाजवादी देशो की जनता के बीरतापूर्ण सघर्ष तथा निस्स्वार्थ श्रम से निर्मित वास्तविक समाजवादी समाज का चित्र भी है।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मुख्य दस्तावेज मे कहा गया है "समाजवाद ने मानवजाति के सम्मुख साम्राज्यवाद से मुक्ति की सभावना प्रस्तुत कर दी है। उत्पादन के साधनो पर सार्वजनिक स्वामित्व और मेहनतकश जनता की सत्ता पर आधारित नयी सामाजिक व्यवस्था जनहित मे अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध सकट-मुक्त विकास को सुनिश्चित करने , मेहनतकशो के सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकारो को प्रत्याभूत करने, वास्तविक जनवाद, समाज के प्रशासन मे व्यापक जनसमुदाय की वास्तविक सहभागिता, व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास और जातियो की समानता तथा उनके बीच दोस्ती के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा करने मे सक्षम है। वास्तव मे यह बात साबित हो गई है कि मानवजाति के सम्मुख जो बुनियादी समस्याए प्रस्तुत हैं, उन्हे हल करने मे केवल समाजवाद ही सक्षम है।"

अनेक अन्य राष्ट्र सोवियत सघ द्वारा प्रशस्त इस समाज के पथ का अनुसरण कर रहे हैं। देर-सबेर सभी राष्ट्र इस पथ पर अग्रसर होगे। समाजवादी समाज का निर्माण कर लेने के बाद सोवियत जनता रुक नही गई, वह नये समाज की दूसरी, उच्चतर अवस्था, कम्युनिज्म की ओर अग्रसर है।

कम्युनिज्म न तो कोरी इच्छा है और न खाली सपना। वस्तुगत नियमों के लागू होने से समाजवादी समाज विकसित तथा परिपक्व होता हुआ कम्युनिस्ट समाज में रूपान्तरित हो रहा है। यह केवल कम्युनिज्म की ओर अग्रसर हो सकता है। महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ५०वीं वर्षगांठ के अवसर पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की थीसिस में कहा गया है "कम्युनिज्म के निर्माण के लिए सभी अपेक्षित बातें सोवियत संघ को सुलभ हैं अत्यंत प्रशिक्षित कर्मी शक्तिशाली उद्योग तथा विकसित कृषि आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था, प्रचुर प्राकृतिक सम्पदा। सोवियत जनता की शक्ति और उसके विचार कम्युनिस्ट निर्माण के बड़े कार्यभार की सिद्धि की ओर लक्षित हैं। पार्टी के नेतृत्व में जनता के सृजनात्मक प्रयास से ये कार्यभार सफलतापूर्वक पूरे होंगे।"

अब अन्तिम अध्याय में हम नये समाज की उच्चतर अवस्था—कम्युनिज्म—और इसके विकास के मुख्य लक्षणों पर विचार करेंगे।

अध्याय ९

# कम्युनिज़्म–नये समाज की उच्चतर अवस्था

वैज्ञानिक कम्युनिज़्म ने मानवजाति को सुखद कम्युनिस्ट भविष्य का रास्ता दिखाया है। अपने विकसित रूप मे कम्युनिज़्म क्या है? मानवजाति के लिए यह क्या सभावनाए प्रस्तुत करता है? इस प्रश्न का उत्तर ही इस अध्याय की विषय-वस्तु है।

भावी कम्युनिस्ट समाज के बारे मे हमारे विचारो को पूर्ण अथवा किसी भी रूप मे सर्वांगीण नही समझा जा सकता। वे समाजवाद तथा कम्युनिज़्म के निर्माण के सचित अनुभव पर, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त पर आधारित है। ये विचार इस समाज के मुख्य लक्षणो के द्योतक है। उनका मूर्त रूप क्या होगा, यह तो भविष्य मे ही प्रकट होगा। भावी पीढिया कम्युनिज़्म की व्यवस्था, जनता के जीवन और श्रम की व्यवस्था के बारे मे खुद निर्णय करेगी। परन्तु कम्युनिज़्म की वैज्ञानिक धारणाओ, कम्युनिस्ट आदर्शों से वर्तमान युग की क्रान्तिकारी शक्तियो को सामाजिक प्रगति के लिए सघर्ष करने, उन सभावनाओ तथा लक्ष्य का अनुमान करने मे सहायता प्राप्त होती है जिनकी ओर मानवजाति के अग्रगामी भाग के प्रयास सकेन्द्रित है।

## १. भावी समाज के मुख्य लक्षण

हम भावी समाज का वर्णन उसके भौतिक और तकनीकी आधार से शुरू करेगे।

**कम्युनिज़्म का भौतिक और तकनीकी आधार**

समाजवादी उत्पादन बहुत ही विकसित उत्पादन है। परन्तु इसके बावजूद, जनता की सतत बढती हुई भौतिक और सास्कृतिक आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए इसका स्तर अभी अपर्याप्त है। और इसके बिना कम्युनिज़्म असभव है। कम्युनिज़्म प्रचुरता का ऐसा प्याला है, जिसे सदा लबरेज

रहना चाहिए। विराट पैमाने पर उत्पादक शक्तियो को विकसित करना ही इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है। दूसरे शब्दा म यह उपाय है कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना। इस आधारशिला को रख देने तथा समृद्धि का लक्ष्य प्राप्त कर लेने पर, जब समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार श्रम करने लगेगा, तब जाकर ही आवश्यकतानुसार वितरण के कम्युनिस्ट सिद्धान्त को अमल में लाना सभव होगा।

समृद्धि अपने आप मे लक्ष्य नही, बल्कि ऐतिहासिक प्रगति के मुख्य ध्येय – मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास के लिए परिस्थितिया को (आर्थिक, सामाजिक और *मानसिक*) पैदा करने *का साधन है। नये समाज का वैभव* भौतिक सम्पदा नही, बल्कि अपनी अत्यत बहुमुखी क्षमताओ और अपेक्षाओ वाला मानव होगा। मार्क्स न लिखा है कि कम्युनिज्म से "मानवीय शक्तियो का विकास होगा, जो अपने आप मे लक्ष्य, स्वतवता का वास्तविक राज है" और इसके अन्तर्गत मानवीय प्रकृति के सर्वथा उपयुक्त तथा इसके लिए यथेष्ट परिस्थितिया पैदा होगी।

कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार क्या है?

*कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी* आधार की विशेषताओ की चर्चा करते समय यह ध्यान मे रखना चाहिए कि इसके निर्माण का अभिप्राय उत्पादन क्षमता का परिमाणात्मक विस्तार ही नही है। सबसे बढकर यह उत्पादन प्रक्रियाओ के गुणात्मक स्वरूप मे भी आमूल परिवर्तना का द्योतक है। कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार की गुणात्मक विशेषताए है पूर्ण बिजलीकरण और इसी आधार पर टेक्नोलाजी, उत्पादन प्रक्रियाओ तथा अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रा मे सामाजिक उत्पादन के सगठन का सुधार; उत्पादन प्रक्रियाओ का पूर्ण यन्त्रीकरण और उनम निरन्तर अधिकाधिक स्वचलन, अर्थव्यवस्था मे रसायन का व्यापक उपयोग; नये, आर्थिक दृष्टि से *अधिक लाभप्रद तथा प्रभावकारी उद्योगो का अधिकतम विकास*, नये प्रकार की ऊर्जा तथा अन्य सामग्रियो की सुलभता, प्राकृतिक, भौतिक और जनशक्ति साधनो का व्यापक तथा युक्तिसगत उपयोग, विज्ञान और उत्पादन मे सहज समन्वय तथा वैज्ञानिक एव तकनीकी प्रगति की तीव्र गति; मेहनतकश जनता का उच्च व्यावसायिक तथा सास्कृतिक स्तर, अत्यत विकसित पूजीवादी देशा की तुलना मे श्रम-उत्पादिता के क्षेत्र मे काफी वृद्धि।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध प्रबन्ध के उच्च स्तर के साथ-साथ भौतिक साधनो और प्राकृतिक सम्पदा का अधिकतम युक्तिसगत उपयोग भी सन्निहित है। जनता को अत्यधिक विकसित तथा प्रभावकारी तकनीक से लैस करके कम्युनिज्म प्रकृति पर मनुष्य के प्रभुत्व मे प्रचड वृद्धि कर देता है, उसे उसकी नैसर्गिक शक्तियो को अधिकाधिक सीमा तक नियत्रित करने और उन्हे काम मे लाने मे समर्थ बना देता है। कम्युनिस्ट उत्पादन का लक्ष्य है सतत प्रगति को सुनिश्चित बनाना और समाज के प्रत्येक सदस्य की **बढ़ती** हुई जरूरतो, हितो और रुचियो के अनुरूप उसे भौतिक तथा सास्कृतिक लाभ प्रदान करना।

**कम्युनिज्म के अन्तर्गत उत्पादन पूर्णतः यंत्रीकृत और मुख्य रूप से स्वसचालित हो जायेगा।** स्वचालित कारखानो मे उत्पादन तथा परिवहन सम्बन्धी सभी काम मनुष्य के प्रत्यक्ष भाग लिये बिना होता है। वह केवल स्वचालित मशीनो तथा यत्रो को नियत्रित करता है, उन्हे फिट करता है और प्रक्रम तथा निर्माण-प्रक्रिया को निर्धारित करता है।

समाजवाद के अन्तर्गत सभी श्रम-प्रक्रियाए पूर्णत यत्रीकृत नही होती। सहायक क्रियाओ तथा माल को लादने और उतारने के कार्य के बारे मे यह बात विशेषकर लागू होती है। कम्युनिस्ट समाज मे स्वसचालन तथा यत्रीकरण की व्यवस्था व्यापक रूप से लागू होगी। "बुद्धिमान" मशीने निर्माणशालाओ तथा फैक्टरियो को ही नही, बल्कि विराट बिजलीघरो तथा सम्पूर्ण विद्युत प्रणालियो, तैल क्षेत्रो, खानो, हवाई जहाजो, जलपातो और रेलगाडियो की गति को भी नियत्रित करेगी।

बिजलीकरण कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार का केन्द्रबिन्दु है। परन्तु समाजवाद से पृथक, जिस के अन्तर्गत अभी पूर्ण बिजलीकरण नही हो पाता, कम्युनिज्म के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था का **पूर्ण बिजलीकरण** हो जायेगा। इससे भिन्न बात हो भी नही सकती, क्योकि **केवल पूर्ण बिजली-करण से** स्वसचालन तथा इलेक्ट्रानिक्स, साइबरनेटिक्स, रेडियो इजीनियरी और रसायन, सक्षेप मे कम्युनिज्म के पूर्णत यत्रीकृत तथा व्यापक रूप मे स्वचालित उद्योग के लिए अपेक्षित सभी वैज्ञानिक और तकनीकी सुविधाओ के विकास का आधार प्रस्तुत हो सकता है। इसी कारण सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे अर्थव्यवस्था के अन्य

क्षत्रों की अपेक्षा विजलीकरण की तीव्रतर वृद्धि दर की परिकल्पना की गई है।

पूर्ण विजलीकरण से भारी उद्योग—धातु इजीनियरी इधन रसायन और अन्य उद्योग—के अभूतपूर्व विकास का आधार प्रस्तुत होगा जो कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी अर्थव्यवस्था का केन्द्रविन्दु बना रहेगा। भारी उद्योग के तीव्र विकास से अर्थव्यवस्था के सभी क्षत्रो को उच्चतर स्तर पर विकसित करना सभव होगा—उपभोक्ता सामग्रिया तैयार करनेवाले उद्योग (वस्त्र, जूता, खाद्य-पदार्थ, घरेलू चीजें आदि) कृषि निर्माण-कार्य, परिवहन, सचार और जन-सेवा सम्बन्धी उद्योगो (व्यापार जलपान गृह स्वास्थ्य व्यवस्था, गृह तथा जनोपयोगी सेवा इत्यादि) का तीव्र गति से विकास सभव हो जायेगा।

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण मे विज्ञान का वडा महत्त्व है। कम्युनिस्ट निर्माण की प्रक्रिया मे विज्ञान का उद्योग से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इसी प्रक्रिया के अनुरूप उद्योग म व्यापक पैमाने पर वैज्ञानिक उपलब्धियो का उपयोग किया जाता है। वतमान युग म विज्ञान के विना उद्योग की सम्पूर्ण शाखाओ की बात सोची भी नही जा सकती। दूसरी ओर उद्योग के विना वहुत ही पेचीदा यन्त्रो तथा उपकरणो के विना, फैक्टरियो एव खानो के विना सामूहिक और राजकीय फार्मों के विना विज्ञान की बात भी सोची नही जा सकती, जो वडी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओ के रूप मे परिवर्तित हो जाते हैं।

नवीनतम सश्लिष्ट सामग्री, इधनो तथा कच्चे माल के विना अभूतपूर्व गति, अपरिमित दाव और अत्युच्च ताप से सम्वधित आधुनिक उत्पादन की बात भी कल्पनातीत है। इसी कारण, उत्पादन के साथ घनिष्ठ सम्बध स्थापित कर विज्ञान ने खुद प्रकृति के साथ बहतर किस्म की चीजो के लिए प्रतियोगिता शुरू कर दी है, जिसमे विज्ञान अधिकाधिक सफलताए प्राप्त करता जा रहा है। यहा हम प्लास्टिक कृत्रिम रवड तथा रेशे और आधुनिक वहुलक रसायन द्वारा उत्पादित अन्य चीजो की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहे है, जिसके विना आज भी अर्थव्यवस्था का कोई भी क्षत्र अपना काम नही चला सकता।

वडे पैमाने की अत्यत विकसित तथा उत्पादनशील कृषि कम्युनिज्म के

भौतिक तथा तकनीकी आधार का एक मुख्य तत्त्व है। आबादी में वृद्धि होती जा रही है, वेतन तथा लोगों की वास्तविक आय बढ़ती जा रही है और इस कारण समाज की खाद्य-पदार्थों एवं अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की आवश्यकताएं भी तेजी से बढ़ती जा रही हैं। भविष्य में इन जरूरतों में और भी तीव्र गति से वृद्धि होगी। इसी कारण सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने कृषि का तीव्र गति से विकसित करने तथा उसकी आय बढ़ाने की नीति अपनाई है।

ये हैं कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार के मुख्य लक्षण।

अर्थव्यवस्था को तीव्र गति से विकसित करने का लक्ष्य श्रम-उत्पादिता बढ़ने पर ही प्राप्त हो सकता है, जो प्रगति का स्पष्ट सूचक और प्रचुरता का महानतम स्रोत है। श्रम-उत्पादिता में वृद्धि विज्ञान तथा तकनीक के अभूतपूर्व विकास, जनशक्ति साधनों के अधिक युक्तिसंगत उपयोग और कुशलता में काफी उन्नति से सुनिश्चित होती है।

कम्युनिज्म के भौतिक तथा प्राविधिक आधार के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण मंजिल सोवियत संघ की १९७१–१९७५ की आर्थिक विकास योजना है, जिसके निदेशों को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस में स्वीकृति दी गई थी। इस योजना की पूर्ति सोवियत संघ को कम्युनिस्ट निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति करने, अपनी आर्थिक क्षमता और प्रतिरक्षा सामर्थ्य को और अधिक सुदृढ़ बनाने तथा अपनी संस्कृति का विकास करने में सक्षम बना देगी। योजना मुख्यतः सामाजिक उत्पादन की तीव्र विकास दरों, उसकी अधिक कारगरता, विज्ञान तथा तकनीक में प्रगति और श्रम उत्पादिता की त्वरित वृद्धि के आधार पर जनता के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तर को सुस्पष्ट रूप से उन्नत करने की ओर लक्षित है।

१९७१ से १९७५ तक योजना राष्ट्रीय आय में ३७ से ४० प्रतिशत, औद्योगिक उत्पादन में ४२ से ४६ प्रतिशत और कृषि उपज में २० से २२ प्रतिशत की वृद्धि की परिकल्पना करती है।

कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार से समाज भौतिक एवं बौद्धिक सम्पदा का प्राचुर्य प्राप्त कर सकेगा और उसके लिए आवश्यकतानुसार वितरण के कम्युनिस्ट सिद्धान्त को लागू करने के दौर में पहुंचना संभव हो जायेगा।

**हरेक से उसकी योग्यतानुसार, हरेक को उसकी आवश्यकतानुसार**

यह कम्युनिज्म का बुनियादी सिद्धान्त है और समाजवादी समाज के कम्युनिज्म मे क्रमिक विकास के साथ-साथ इसके कार्यान्वयन की तैयारी की जाती है।

समाजवादी प्रणाली करोडो लोगो को इतिहास के चेतन निर्माताओ मे परिणत कर देती है और वे अब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी असाधारण उपलब्धियो से दुनिया को चकित कर रहे है। मनुष्य की क्षमता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितिया पैदा करने के साथ ही समाजवाद उससे इस क्षमता को समाज की सेवा मे प्रयुक्त करने की भी अपेक्षा करता है। मनुष्य जिस हद तक इन अपेक्षाओ के अनुरूप आचरण करता है, अपनी बारी मे समाज उसके श्रम सम्बन्धी योगदान की मात्रा के आधार पर उसकी आवश्यकताओ को पूरा करता है। "हरेक से उसकी योग्यतानुसार, हरेक को उसके श्रमानुसार" के समाजवादी सिद्धान्त का यही सारतत्त्व है।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी "हरेक से उसकी योग्यतानुसार" की अपेक्षा बरकरार रहेगी, परन्तु अधिकाधिक प्रचुर तथा बहुविध होने के कारण यह अपेक्षा असाधारण रूप मे परिवर्तित हो जायेगी। कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी मुख्य तत्त्व श्रम है, परन्तु दायित्व के रूप मे नही, आजीविका के साधन के रूप मे नही, बल्कि आदत के रूप मे, महत्त्वपूर्ण अपेक्षा के रूप मे यह मनुष्य की पूर्ण क्षमता के अनुरूप श्रम होगा। कम्युनिज्म के अन्तर्गत मनुष्य जहा अपनी योग्यता को पूर्णत प्रदर्शित कर सकेगा तथा जहा समाज को उसकी सर्वाधिक आवश्यकता होगी, वही उत्साह के साथ सृजनात्मक रूप मे काम करेगा।

कम्युनिज्म के निर्माण के दौरान योग्यताओ मे परिवर्तन हो जाता है, वे समुन्नत तथा बहुविध हो जाती है।

समाजवाद अभी भी सबके लिए विकास, शिक्षा और योग्यताओ के उपयोग की समान परिस्थितिया सुनिश्चित करने मे असमर्थ है। राजनीतिक समानता तो मौजूद है, *परन्तु अभी तक आर्थिक और सामाजिक समानता* नही प्राप्त हो पायी है। योग्यताओ के विकास तथा उत्पादन और सृजनात्मक कार्यकलाप के अन्य सभी क्षेत्र मे उनके सर्वाधिक वाछनीय उपयोग की सब के लिए समान परिस्थितिया केवल कम्युनिस्ट समाज पैदा करता है।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत "हरेक से उसकी योग्यतानुसार" का मतलब केवल स्वेच्छामूलक, मनुष्य की पूर्ण योग्यता के अनुरूप समाज के लिए मुफ्त श्रम ही नही, बल्कि सामाजिक जीवन मे, सामाजिक मामलो के प्रबन्ध मे सक्रिय भाग लेना भी है। इससे भिन्न बात हो भी नही सकती। जैसा कि हम बाद मे देखेगे, कम्युनिज्म के प्रादुर्भाव के साथ राज्य विलुप्त हो जाता है और इसका स्थान सामाजिक स्वशासन ग्रहण कर लेता है।

अन्त मे, कम्युनिज्म के अन्तर्गत "हरेक से उसकी योग्यतानुसार" का अर्थ कम्युनिस्ट समाज के नियमो का आदर्श पालन भी है—इस तरह का पालन कि जो एक आदत मे बदल जाता है।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत "हरेक से उसकी योग्यतानुसार" की अपेक्षा का अन्तर्य है जीवन की मुख्य आवश्यकता के रूप मे अतिउत्पादक श्रम, सतत अध्ययन, निरन्तर व्यावसायिक, शैक्षिक एव सास्कृतिक प्रगति, समाज के प्रबन्ध-कार्य मे सभी की सहभागिता और कम्युनिस्ट नैतिकता के नियमो का स्वेच्छा से पालन क्योकि काम ही मुख्य तत्त्व है। कम्युनिज्म आलस्य और अकर्मण्यता का जीवन नही, बल्कि अध्यवसायी, सुसस्कृत और कर्मठ जीवन पैदा करेगा।

निजी स्वामित्व और शोषण को समाप्त कर समाजवाद किसी दूसरे के श्रम के सहारे धनवानो की जरूरतो को पूरा करने की सभावना को ही खत्म कर देता है। वह समाज के प्रत्येक सदस्य द्वारा किये जानेवाले श्रम की मात्रा तथा कोटि के आधार पर उसकी आवश्यकताओ को पूरा करने की सभावना पैदा करता है। परन्तु समाजवाद समाज के हरेक सदस्य की जरूरतो को पूर्ण रूप से पूरा करने मे असमर्थ है। आवश्यकतानुसार वितरण का सिद्धात केवल विकसित कम्युनिस्ट समाज मे लागू किया जाता है।

वितरण के कम्युनिस्ट सिद्धान्त को कलकित करने का कुप्रयास करते हुए वैज्ञानिक कम्युनिज्म के शत्रु दावा करते हैं कि यह मनुष्य के सर्वतोमुखी तथा सुसगत विकास और उसकी भौतिक एव बौद्धिक आवश्यकताओ की सम्यक् पूर्ति के प्रतिकूल है। वे एक प्रकार के सयमबद्ध समाजवाद की चर्चा करते है, जो मानो मानवीय व्यक्तित्व का समस्तरीकरण करता है और जिसके अन्तर्गत मनुष्य नही, बल्कि उत्पादन, तकनीक और मशीन मुख्य चीज बन जाती है। इसके अलावा उनका यह भी दावा है कि लोगो के वर्धमान कल्याण से व्यक्तिवाद पैदा होता है, जो वितरण के

कम्युनिस्ट सिद्धान्त के प्रतिकूल है। परन्तु वास्तविकता यह है कि लोगो का अधिकाधिक कल्याण किसी भी रूप मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के कार्यभार और खासकर व्यक्ति के हितो के भी प्रतिकूल नही है। इसके विपरीत, आवश्यकतानुसार वितरण से उत्पादन के अधिकतम विकास और समाज की तीव्र प्रगति मे सहायता प्राप्त होती है, क्योकि जैसा कि एगेल्स ने लिखा है, यह "समाज के सभी सदस्यो को अधिकतम सपूर्णता के साथ अपनी क्षमता को विकसित करने, कायम रखने और उसे काम मे लाने का अवसर प्रदान करता है।"* कम्युनिस्ट समाज इतना समृद्ध होगा कि नागरिको की भोजन, वस्त्र, आवास सम्बन्धी तथा अन्य मुख्य आवश्यकताओ को पूर्णतः पूरा कर सके और एक विकसित एव सुसस्कृत व्यक्ति अपने सक्रिय जीवन के लिए जो कुछ चाहता है, उसे उन्हे प्रदान कर सके। इस प्रकार आर्थिक असमानता—वितरण की असमानता—के अवशेषो को सदा के लिए मिटा दिया जायेगा। इसका मतलब यह है कि कम्युनिस्ट समाज के सभी सदस्यो को अपनी भौतिक तथा बौद्धिक आवश्यकताओ को प्रचुर रूप मे पूरा करने का समान अवसर प्राप्त होगा।

लोग मुनाफा और लाभ, लोभ और भौतिक सम्पदा प्राप्त करने की भावना से सदा के लिए मुक्त हो जायेगे। मुद्रा अनावश्यक हो जायेगी। अन्ततः मनुष्य को उत्कृष्ट हितो के लिए, जिनमे सामाजिक हित सर्वोपरि होगे, कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा।

वैज्ञानिक कम्युनिज्म त्याग-तपस्या के, लोगो की आवश्यकताओ और हितो का समानीकरण करने के प्रतिकूल है। वह आवश्यकताओ की समानता नही, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए अवसरो की समानता का द्योतक है।

इसका मतलब यह है कि समाज के सभी सदस्य अपनी-अपनी रुचि तथा शारीरिक एव मानसिक विशेषता के अनुरूप अपनी भौतिक जरूरतो को पूर्ण रूप से पूरा करेगे, जो एक समान न होगी, क्योकि लोगो की रुचि और दिलचस्पी मे भिन्नता होती है।

इसका अर्थ यह भी है कि समाज के सभी सदस्यो को अध्ययन करने, विज्ञान तथा सस्कृति को आत्मसात् करने, अर्थात् अपनी बौद्धिक आवश्यकताओ को पूरा करने का भी समान अवसर प्राप्त होगा। चूकि

---

*फ्रेडरिक एगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन'।

लोगो की योग्यता, अभिरुचि और आकाक्षाए समान नही होती, इसलिए भौतिक आवश्यकताओ की भाति उनकी बौद्धिक आवश्यकताए भी एक समान नही होगी। यदि हम इसे भी ध्यान मे रखें कि लोगो के पेशे तथा उम्र मे अन्तर होगा और वे विभिन्न जलवायविक परिस्थितियो मे रहेगे, तो यह पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जायेगा कि उनकी आवश्यकताए एक समान नही हो सकती।

कम्युनिस्ट समानता, आवश्यकतानुसार वितरण बिल्कुल एकरूप लोगो की समानता नही, बल्कि सजीव, क्रियाशील और विविध प्रकार के लोगो की समानता है। हर कोई अपनी अपनी योग्यता तथा जानकारी, जरूरतो और दिलचस्पी, रुचि एव प्रवृत्ति के साथ एक स्पष्टत अलग व्यक्तित्व होगा।

सभी लोग उत्साहपूर्वक सृजनात्मक कार्य करेगे और बहुमुखी सुखी जीवन व्यतीत करेगे। यह समानता तत्काल नही, बल्कि ज्यो-ज्यो कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार निर्मित होता जायेगा, कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्ध मूर्त रूप ग्रहण करते जायेंगे और नया मनुष्य ढलता जायेगा, त्यो-त्यो वह धीरे-धीरे कायम होती जायेगी।

स्वाभाविक रूप से कम्युनिज्म के निर्माण की प्रक्रिया मे जनता की आवश्यकताओ मे भी काफी परिवर्तन होगा। वे, विशेष रूप से बौद्धिक जरूरते, अधिक व्यापक तथा बहुमुखी हो जायेगी। परन्तु लोगो की आवश्यकताए अपव्यय, सनक और चलचित्तता से मुक्त होगी, जो शोषक वर्गों की विशेषताए हैं। वे **सर्वतोमुखी विकसित मनुष्य की उपयुक्त एव तर्कसगत आवश्यकताए** होगी। कम्युनिज्म अनेक नयी आवश्यकताए पैदा करेगा और उनकी तुष्टि के साधन भी उपलब्ध करेगा।

**कम्युनिज्म और श्रम**

वैज्ञानिक कम्युनिज्म समानीकरण तथा त्याग-तपस्या से असगत है। वह दूसरे चरम – इस धारणा को भी अस्वीकार करता है कि भावी समाज अकर्मण्यता और आलस्य का समाज होगा। आवश्यकतानुसार वितरण के सिद्धान्त का यह मतलब कतई नहीं है कि मनुष्य अपनी सभी मनोवाछित चीजें बिना प्रयास किये प्राप्त कर लेगा।

कम्युनिस्ट समानता और आवश्यकतानुसार वितरण की व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए भौतिक सम्पदा की प्रचुरता के अतिरिक्त अन्य और इतनी ही महत्त्वपूर्ण एक पूर्वापेक्षा अनिवार्य है – कम्युनिस्ट श्रम।

कम्युनिस्ट श्रम सार्वजनीन, योजना से बद्ध और सामाजिक स्वामित्व तथा नवीनतम तकनीक पर आधारित संगठित श्रम है। यह उच्च उत्पादक एवं वैज्ञानिक ढंग से संगठित श्रम है। शारीरिक तथा मानसिक प्रयास में सहज समन्वय करनेवाला सृजनात्मक श्रम है। मानव गौरव श्रम है। व्यक्ति की क्षमता के पूर्णतः अनुरूप सुखद श्रम है, जो जीवन की मुख्यतम आवश्यकता है।

जो काम नहीं करता वह खायेगा भी नहीं — समाजवादी समाज का यह नियम बहुत पहले ही उसके अधिकांश सदस्यों का जीवन नियम बन गया है। अनेक नागरिक आज भी अपनी योग्यतानुसार काम करते हैं और वे अपनी पसन्द के काम के बिना, श्रम के बिना अपने जीवन-क्रम की बात सोच भी नहीं सकते, जो उनके लिए सुख और आनन्द का स्रोत और एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। परन्तु समाजवाद के अन्तर्गत श्रम समाज के सभी सदस्यों की अनिवार्य आवश्यकता नहीं बन पाता। हम काहिलों और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी काम से जी चुरानेवालों तथा समाज के अन्य सदस्यों के श्रम के सहारे जीवित रहने का प्रयास करनेवालों की बात नहीं कर रहे हैं। ऐसे भी लोग होते हैं, जो ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते। परन्तु कम्युनिज्म के अन्तर्गत काम के प्रति उपेक्षापूर्ण रुख सदा के लिए समाप्त हो जायेगा।

कम्युनिज्म के अन्तर्गत श्रम का स्वरूप ही बदल जायेगा, कठोर शारीरिक श्रम तथा गन्दा, थकानेवाला और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियोंवाला श्रम समाप्त हो जायेगा, श्रम का मानसिक, सृजनात्मक पहलू विकसित होगा और वह सौंदर्यबोधी तथा आकर्षक हो जायेगा। श्रम सुख और आनन्द का स्रोत बन जायेगा। तभी वह व्यक्तित्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति और पूर्ण रूप में मनुष्य के सृजनात्मक सारतत्व के अनुरूप हो जायेगा।

कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार और सर्वोपरि रूप में उत्पादन-प्रक्रियाओं के पूर्ण बिजलीकरण, उनके सर्वांगीण यंत्रीकरण तथा व्यापक स्वसंचालन से इन कार्यभारों को पूरा करने का आधार प्रस्तुत होगा।

कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण के साथ सम्बद्ध तीव्र तकनीकी प्रगति उत्पादन-दक्षता और मेहनतकश लोगों के विशेष प्रशिक्षण तथा उनकी आम शिक्षा की माग को बढ़ा देती है। तकनीक के

विकास तथा सुधार के साथ-साथ मजदूरो की सास्कृतिक योग्यता और तकनीकी कुशलता वढती जाती है तथा शारीरिक और मानसिक काम करनेवाले श्रमिको के बीच का अन्तर दूर होता जाता है। श्रम के बौद्धिक, मानसिक पहलू का महत्त्व वढ जाता है और क्रमश सृजनात्मक श्रम इसका मुख्य लक्षण वन जाता है।

तकनीकी प्रगति के साथ श्रम का एकागीपन दूर हो जाता है, उसकी शारीरिक अथवा मानसिक प्रमुखता समाप्त हो जाती है, और गुणात्मक रूप मे नया श्रम अस्तित्व मे आ जाता है, जिसमे शारीरिक तथा मानसिक प्रयासो के बीच सहज समन्वय कायम होता है। श्रम के मुख्य रूप विविध प्रकार के सृजनात्मक कार्यकलाप मे परिवर्तित हो जाते है।

परन्तु क्या कम्युनिज्म के स्वचालित उत्पादन से ऐसी स्थिति नही पैदा होगी, जिसके फलस्वरूप लोगो को बटन दवाने के अतिरिक्त और कुछ नही करना पडेगा? नही, विल्कुल नही, इस प्रकार की आशका का कोई यथार्थ कारण नही है। स्वचालित मशीने कठोर, परिश्रान्तकारी श्रम को समाप्त कर देगी, परन्तु वे एक निश्चित हद तक शारीरिक तथा मानसिक श्रम करने की जरूरत को विल्कुल भी खत्म नही करेगी, वे श्रम को कभी बटन दवाने तक ही सीमित नही करेगी। काम के साथ कठिनाइया सदा बनी रहेगी, मानव की वुद्धि और बल के उपयोग की जरूरत सदा रहेगी।

**समाज की सामाजिक एकरूपता**

कम्युनिज्म की विजय सामाजिक सम्बन्धो मे भी आमूल परिवर्तन लायेगी। समाजवाद के अन्तर्गत अभी समाज श्रेणियो मे विभाजित रहता है। शहर और गाव, शारीरिक और मानसिक श्रम के वीच पुराने विभाजन के अवशेषो के वने रहने से मजदूर वर्ग, किसान समुदाय और वुद्धिजीवियो के वीच विभेद कायम रहते हैं। **कम्युनिज्म समाज के वर्गों और सामाजिक श्रेणियो मे विभाजन को समाप्त कर देता है।** कृषि श्रम को एक प्रकार से औद्योगिक श्रम मे रूपान्तरित करने तथा गावो की सामाजिक-आर्थिक एव सास्कृतिक स्थिति और जीवन-पद्धति को उठाकर शहरो के स्तर पर ले आने से नगर और गाव के अन्तर दूर हो जायेंगे। इस प्रकार समाज का मजदूर वर्ग और किसान समुदाय मे स्तरीकरण समाप्त हो जायेगा। वाद ने, मानसिक और शारीरिक श्रम के वीच का अन्तर भी दूर हो जायेगा। मजदूर वर्ग और किसान समुदाय के सास्कृतिक एव तकनीकी स्तर को

उठाकर इजीनियरो तथा तकनीशियनो के स्तर पर लाने से यह लक्ष्य पूरा होगा। फलतः, विशेष सामाजिक श्रेणी के रूप मे कोई बुद्धिजीवी समुदाय नही रह जायेगा। समाज का प्रत्येक सदस्य मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार का श्रम करेगा, इसके अलावा उसकी उत्पादक क्रियाशीलता में मानसिक और शारीरिक प्रयासों मे सहज समन्वय कायम हो जायेगा।

कम्युनिस्ट निर्माण की सफलताओ, वर्ग विभेदो के लोप और कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्धो के विकास से समाजवादी जातियो की और अधिक घनिष्ठ एकता, उनके पारस्परिक सम्बन्धों के विस्तार और उत्पादन सम्बन्धी अनुभव तथा सास्कृतिक उपलब्धियो के आदान-प्रदान का आधार प्रस्तुत हो जाता है।

जातियों की सामाजिक एकरूपता व्यापक होती जायेगी, उनकी सस्कृति, नैतिकता और जीवन-पद्धति के एक-से कम्युनिस्ट लक्षण विकसित होगे, जिससे जातियो के बीच विश्वास तथा दोस्ती की भावना का और अधिक सुदृढीकरण सुनिश्चित हो जाता है। जातियो की बौद्धिक एकता निरन्तर अधिक सुदृढ़ होती जायेगी। समाजवादी सस्कृति का सर्वांगीण विकास होगा और राष्ट्रीय सस्कृतिया एक दूसरे को समृद्ध बनायेगी तथा एक दूसरे के अधिक निकट आती जायेगी। मानवजाति की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियो को आत्मसात् करनेवाली सभी जातियो के लिए एक-सी अन्तर्राष्ट्रीय सस्कृति विकसित होगी। प्रत्येक जाति की सास्कृतिक निधि अन्तर्राष्ट्रीय लक्षणोवाली कृतियो से समृद्ध होती जायेगी, जिसका मतलब है कम्युनिस्ट समाज की भावी एक ही सस्कृति का प्रस्फुटन।

जातियो के सन्निकट आते जाने की अतिम परिणति होगी उनका विलयन। परन्तु वर्गों के लोप होने की अपेक्षा जातियो का विलयन, उनके बीच विभेद का उन्मूलन कही ज्यादा लम्बी प्रक्रिया है। कम्युनिज्म की विजय के साथ वर्ग विभेद मिट जायेगे, परन्तु राष्ट्रीय विभेद, विशेष रूप से भाषा सम्बन्धी भिन्नता बहुत समय तक कायम रहेगी।

**सार्वजनिक स्वशासन**

समाजवाद ने विशाल जनसमुदाय को सामाजिक मामलो के प्रबन्ध मे भाग लेने के लिए उत्प्रेरित किया है। समाजवादी समाज के करोडो व्यक्ति उत्पादन के प्रबन्ध, देश के राजनीतिक तथा सास्कृतिक मामलो के प्रशासन मे भाग

के अन्तगत समाज के प्रशासन का स्वरूप और ढग भिन्न होगा। कम्युनिज्म की ओर विकास के दौरान ज्यो ज्यो वर्ग विभेद मिटते जायेगे त्यो-त्यो राज्य के प्रशासकीय निकाय क्रमश अपना राजनीतिक, वर्ग स्वरूप को खाते जायेगे। कम्युनिज्म के अन्तगत वर्गों के उन्मूलन के साथ ही य राज्य के अभिकरण अतत सावजनिक सगठनो मे विलयित होकर सावजनिक स्वशासन के निकाय बन जायेगे, जिनके जरिये समाज के सभी सदस्य आर्थिक और सास्कृतिक जीवन का निदेशित करेगे। यह लोगो को प्रशासित करना नही बल्कि चीजो की व्यवस्था और सामाजिक प्रक्रियाओ का नक्षित करना होगा। यह काय राजकीय अथवा राजनीतिक सगठनो द्वारा नही बल्कि सावजनिक सगठनो द्वारा होगा। बल प्रयोग की आवश्यकता दूर हो जायगी और इसके फलस्वरूप विशेष दमनात्मक मशीनरी एव न्यायिक तथा दण्डात्मक निकायो द्वारा सरक्षित विधि-सहिता की कोई जरूरत नही रह जायगी। राजकीय कमचारी का पेशा खत्म हो जायगा और समाज का हरेक सदस्य निदिष्ट समय के भीतर सामाजिक मामलो को निदेशित किया करेगा।

इस प्रकार कम्युनिज्म के अन्तगत वर्गों के विलुप्त हो जाने से अनिवायत राज्य विलुप्त हो जायगा। जैसा कि एगल्स ने लिखा है वह समय आयगा, जब समाज राज्य की पूरी मशीनरी को वही रख देगा, जहा उसका उपयुक्त स्थान होगा यानी चरखे और कासे की कुल्हाडी के साथ पुरातत्व सग्रहालय मे।

**कम्युनिज्म के अन्तगत व्यष्टि**

**कम्युनिज्म एक नये मानव का द्योतक है, जो बौद्धिक सम्पदा, नैतिक विशुद्धता और शारीरिक पूर्णता का समन्वय होगा।**

कम्युनिज्म के अन्तगत मनुष्य का सवतोमुखी सुसगत विकास होगा और उसकी योग्यता तथा प्रतिभा पूर्णत प्रकट और प्रदर्शित होगी। समाजवाद सबके लिए विकास शिक्षा और योग्यता के उपयोग के समान अवसर सुनिश्चित बनाने मे असमथ है। मिसाल के लिए स्त्रियो के प्रश्न को ही लीजिए। यह कोई छिपी बात नही है कि अधिकाश स्त्रियो को भारी बोझ उठाना पडता है काम के अतिरिक्त घरेलू कामकाज तथा बच्चो के पालन पोषण का भार भी उन्हे ही वहन करना पडता है।

इस स्थिति के कारण बहुत सी स्त्रियो को अध्ययन करने अपनी

ले रहे हैं। अर्थव्यवस्था तथा सस्कृति के निर्माण मे, राजनीतिक मसलो के निर्णय मे सार्वजनिक सगठनो की भूमिका सतत वढती जा रही है और समाजवादी जनवाद का प्रसार हो रहा है। समाजवाद के अन्तर्गत भी सभी नागरिक गर्व के साथ कह सकते हैं हम ही राज्य है। यह वात समझ मे आने लायक है, क्योकि समाजवाद के अन्तर्गत सर्वहारा अधिनायकत्व सम्पूर्ण जनता का राज्य और उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति वन जाता।

फिर भी समाजवाद के अन्तर्गत समाज का प्रत्येक सदस्य सामाजिक जीवन मे भाग नही लेता। कुछ के पास इसके लिए समय नही है, कुछ ने इस कार्य के लिए अभी तक अपेक्षित योग्यता हासिल नही की है और आज भी कुछ ऐसे हैं, जो राजनीतिक दृष्टि से पर्याप्त रूप मे चेतन नही हैं और इसी नियम से चिपके रहते हैं "मुझे तो अपने काम से काम!"

इसी कारण सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नये कार्यक्रम के अनुसार लाखो और लोगो को देश के प्रशासन मे खीचने का कार्यभार निर्धारित किया गया है। मिसाल के लिए, इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह परिकल्पना की गई है कि हर ग्राम चुनाव मे कम से कम एक तिहाई प्रतिनिधि नये होने चाहिए। प्राय सभी नागरिको को देश के प्रशासन मे खीचना है। यह अनिवार्य भी है, क्योकि कम्युनिस्ट समाज मे राज्य विलुप्त हो जायेगा और उसका स्थान कम्युनिस्ट सार्वजनिक स्वशासन ग्रहण करेगा।

निस्सन्देह, राज्य का विलोपन समाज को अव्यवस्थित नही कर देगा, क्योकि इस समय राज्य समाज के आर्थिक तथा सास्कृतिक जीवन को निदेशित करने का जो कार्य करता है, कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी उसके समान सामाजिक प्रशासन का कार्य जारी रहेगा। इसके अलावा, इस प्रकार का कार्य अधिक आसान हो जायेगा, क्योकि हरेक की अपनी योग्यतानुसार काम करने की आदत और कम्युनिस्ट समाज के नियमो का पालन करने से कोई टकराव नही होगा। फलत कम्युनिस्ट समाज श्रमिको का सुसगठित समाज होगा, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था मे अपने दायित्व को अच्छी तरह महसूस करेगा और पूर्ण सत्यनिष्ठा के साथ अपने कर्तव्य का पालन करेगा।

इसके साथ ही, समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की अपेक्षा कम्युनिज्म

के अन्तर्गत समाज के प्रशासन का स्वरूप और ढग भिन्न होगे। कम्युनिज्म की ओर विकास के दौरान ज्यो-ज्यो वर्ग विभेद मिटते जायेगे, त्यो-त्यो राज्य के प्रशासकीय निकाय क्रमश अपने **राजनीतिक, वर्ग स्वरूप** को खोते जायेगे। कम्युनिज्म के अन्तर्गत वर्गो के उन्मूलन के साथ ही ये राज्य के अभिकरण अततः सार्वजनिक सगठनो मे विलयित होकर सार्वजनिक स्वशासन के निकाय बन जायेगे, जिनके जरिये **समाज के सभी सदस्य** आर्थिक और सास्कृतिक जीवन को निदेशित करेगे। यह लोगो को प्रशासित करना नही, बल्कि चीजो की व्यवस्था और सामाजिक प्रक्रियाओ को लक्षित करना होगा। यह कार्य राजकीय अथवा राजनीतिक सगठनो द्वारा नही, बल्कि सार्वजनिक सगठनो द्वारा होगा। बल-प्रयोग की आवश्यकता दूर हो जायेगी और इसके फलस्वरूप विशेष दमनात्मक मशीनरी एव न्यायिक तथा दण्डात्मक निकायो द्वारा सरक्षित विधि-सहिता की कोई जरूरत नही रह जायेगी। राजकीय कर्मचारी का पेशा खत्म हो जायेगा और समाज का हरेक सदस्य निर्दिष्ट समय के भीतर सामाजिक मामलो को निदेशित किया करेगा।

इस प्रकार, कम्युनिज्म के अन्तर्गत वर्गो के विलुप्त हो जाने से अनिवार्यतः राज्य विलुप्त हो जायेगा। जैसा कि एगेल्स ने लिखा है, वह समय आयेगा, जब समाज राज्य की पूरी मशीनरी को वही रख देगा, जहा उसका उपयुक्त स्थान होगा, यानी चरखे और कासे की कुल्हाडी के साथ पुरातत्त्व सग्रहालय मे।

**कम्युनिज्म के अन्तर्गत व्यष्टि**

**कम्युनिज्म एक नये मानव का द्योतक है, जो बौद्धिक सम्पदा, नैतिक विशुद्धता और शारीरिक पूर्णता का समन्वय होगा।**

कम्युनिज्म के अन्तर्गत मनुष्य का सर्वतोमुखी सुसगत विकास होगा और उसकी योग्यता तथा प्रतिभा पूर्णत प्रकट और प्रदर्शित होगी। समाजवाद सबके लिए विकास, शिक्षा और योग्यता के उपयोग के समान अवसर सुनिश्चित बनाने मे असमर्थ ह। मिसाल के लिए, स्त्रिया के प्रश्न को ही लीजिए। यह कोई छिपी बात नही है कि अधिकाश स्त्रियो को भारी बोझ उठाना पडता है काम के अतिरिक्त घरेलू कामकाज तथा बच्चो के पालन-पोषण का भार भी उन्हे ही वहन करना पडता है।

इस स्थिति के कारण बहुत सी स्त्रियो को अध्ययन करने, अपनी

कुशलता बढाने और विश्राम एवं अवकाश करने की सीमित सभावनाए ही सुलभ है। कम्युनिज्म के अन्तर्गत समाज अधिकाश दैनिक दायित्वों को ग्रहण कर लेगा और छोटे-मोटे तथा थकाऊ कामकाजों से मुक्त होकर प्रत्येक स्त्री अपनी योग्यता तथा प्रतिभा को पूर्णत. प्रदर्शित कर सकेगी।

कम्युनिस्ट समाज के हरेक सदस्य को अपनी आम शिक्षा तथा व्यावसायिक योग्यता बढाने, विश्राम करने, कलात्मक कार्य मे संलग्न होने, बच्चो का पालन-पोषण करने, शारीरिक व्यायाम करने आदि के लिए पर्याप्त समय सुलभ होगा।

अवकाश का अधिक समय होने के साथ ही, तकनीक के विकास, यन्त्रीकरण और स्वसचालन से उत्पादन मे निर्दिष्ट काम करनेवाले मजदूर के व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास होगा, जो जटिलतम उत्पादन प्रक्रियाओ को निदेशित करेगा और प्रत्यक्षत बौद्धिक सपदा का भी निर्माण करेगा।

निस्सन्देह, कम्युनिज्म के अन्तर्गत भी कुछ हद तक श्रम का विभाजन होगा। ऐसी स्थिति की कल्पना करना असभव है, जिसमे समाज का प्रत्येक सदस्य सर्वज्ञाता हो, जो हर उत्पादक और मानसिक कार्य कर सकता हो आज वह डाक्टर, कल शिक्षक, फिर वैज्ञानिक, चित्रकार, इजीनियर आदि सब कुछ हो जाये। कम्युनिस्ट उत्पादन उच्च कोटि के सगठन, सुनिश्चितता और अनुशासन की अपेक्षा करता है। परन्तु लोगो को एक ही ढग के कार्यकलाप से बाध रखनेवाला सीमित, एकागी विशेषीकरण समाप्त हो जायेगा। लोगो के लिए स्वतन्त्रतापूर्वक अपना धन्धा बदलना और कई प्रकार के पेशो को अपनाना सभव हो जायेगा। अवकाश का समय सुलभ होने से उत्पादन के बाहर कार्यकलाप मे मनोनुकूल परिवर्तन करने मे सहायता प्राप्त होगी। कम्युनिस्ट व्यवस्था से बिना अपवाद के विज्ञान, कला और खेलकूद के क्षेत्र मे प्रविष्ट होने का द्वार सबके लिए पूर्ण रूप से उन्मुक्त हो जायेगा।

समाजवादी निर्माण तथा व्यापक शैक्षिक कार्य के फलस्वरूप समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत कम्युनिस्ट नैतिकता के सिद्धान्त लोगो के व्यावहारिक जीवन और कार्य के अभिन्न अग हो गये हैं। परन्तु समाजवाद के अन्तर्गत आज भी अतीत के अवशेष – परोपजीविता, चोरी, धनलोलुपता, शराबखोरी, गुडागर्दी और अन्य बुराइया – मौजूद हैं। कम्युनिज्म की ओर

सक्रमण के साथ सार्वजनिक प्रभाव से ये बुराइया दूर हो जायेगी और कम्युनिस्ट नैतिकता के उच्चादर्श सबकी आदत, व्यवहार के एकमात्र नियामक बन जायेंगे। उच्च कम्युनिस्ट चेतना, कर्मनिष्ठा, अनुशासन और समाज के हितो के प्रति निष्ठा कम्युनिस्ट समाज के प्रत्येक सदस्य के गुण होगे। कम्युनिस्ट उत्पादन के लिए अपेक्षित असाधारण व्यवस्था और सुतथ्यता दबाव के ज़रिये नही, बल्कि नागरिक कर्त्तव्य के प्रति गहरी चेतना से सुनिश्चित होगी।

कम्युनिज्म मानवजाति के दीर्घकालीन इतिहास मे महानतम क्रान्ति का द्योतक होगा और इससे प्रायः प्रत्येक क्षेत्र – उत्पादन, श्रम के स्वरूप एव परिस्थितियो, सामाजिक सम्बन्धो, सस्कृति, लोगो की जीवन-पद्धति, उनके विचारो तथा ख़यालो मे आमूल परिवर्तन होगे। कम्युनिज्म से हर मनुष्य की दिली आकाक्षाओ के सर्वथा अनुरूप रहन-सहन की परिस्थितिया सुनिश्चित हो जाती हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कहा गया है: "कम्युनिज्म वर्गहीन सामाजिक व्यवस्था है, जिसमे उत्पादन-साधनो का एक ही प्रकार का सार्वजनिक स्वामित्व, समाज के सभी सदस्यो मे पूरी सामाजिक समानता होगी; उसमे जनता के सर्वांगीण विकास के साथ ही विज्ञान और प्रविधि की निरतर प्रगति के आधार पर उत्पादक शक्तियो की बढ़ती होती रहेगी; सार्वजनिक सम्पदा के सभी स्रोत प्रचुरता से उमड़ते रहेगे और 'प्रत्येक से उसकी योग्यतानुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार' का महान सिद्धान्त क्रियान्वित होगा। कम्युनिज्म स्वतत्र, चेतनाशील मेहनतकश लोगो का सुसगठित समाज है, जिसमे सार्वजनिक स्वशासन स्थापित किया जायेगा, वह ऐसा समाज है, जिसमे समष्टि के भले के लिए मेहनत करना हरेक की मुख्य बुनियादी आवश्यकता बन जायेगा, एक ऐसी आवश्यकता, जिसे हर व्यक्ति समझेगा और मानेगा और प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता जनता के अधिक से अधिक भले के लिए काम मे लायी जायेगी।"

कम्युनिज्म एक महान ऐतिहासिक ध्येय को पूरा करता है. लोगो को सामाजिक असमानता, उत्पीड़न के सभी रूपो और युद्ध की विभीषिका से मुक्त करता है तथा पृथ्वी पर हर व्यक्ति को शान्ति, श्रम, सभी राष्ट्रो की स्वतत्रता, समानता, बन्धुत्व और सुख प्रदान करता है।

# २ समाजवाद स कम्युनिज्म की ग्रोर संक्रमण के मुख्य लक्षण

नये समाज की दो ग्रवस्थाग्रा के रूप म समाजवाद ग्रार कम्युनिज्म पर विचार करने क बाद ग्रब हम कम्युनिज्म की उच्चतम ग्रवस्था की कुछ विशषताग्रा का चर्चा करग।

कम्युनिज्म के विकास की प्रथम विशषता यह है कि समाजवाद के विपरीत जो पूजीवाद के ग्राधार पर प्रादुभूत होता ह ग्रार जिसपर उसके कुछ जन्मचिह्न होते हैं कम्युनिज्म **ग्रपने ही ग्राधार पर**, विकसित तथा शक्ति सम्पन्न समाजवाद के ग्राधार पर ग्राविभूत होता ह। फलत समाजवाद ग्रौर कम्युनिज्म क निर्माण के उपाया ग्रौर तरीको मे बुनियादी भिन्नता है। समाजवाद समाजवादी क्रान्ति के फलस्वरूप पूजीवाद के ग्राथिक, राजनीतिक ग्रौर बौद्धिक मुख्याधार के भग होने क परिणामस्वरूप कायम होता हे। कम्युनिज्म क निर्माण के लिए किसी क्रान्ति की ग्रावश्यकता नही होती। वह समाजवाद की ग्रथव्यवस्था, उसके सामाजिक सम्बन्धा ग्रौर उसकी सस्कृति के विकास ग्रौर सुधार के जरिये समाजवाद से सीध विकसित होता ह।

कम्युनिज्म का भौतिक ग्रौर तकनीकी ग्राधार समाजवादी उत्पादन के योजनावद्ध विस्तार तथा सुधार के द्वारा विकसित होता हे। एक ही कम्युनिस्ट स्वामित्व समाजवादी स्वामित्व के दो रूपो – राजकीय ग्रौर सहकारी – के विकास तथा क्रमिक सविलयन की परिणति है। कम्युनिस्ट स्वशासन समस्त जनता के समाजवादी राज्य ग्रादि से विकसित होता है।

समाजवाद ग्रौर कम्युनिज्म मे महत्त्वपूण गुणात्मक भद होने के कारण कम्युनिज्म के उभरने के दौरान समाजवादी समाज के कुछ लक्षण विलुप्त हो जायग ग्रौर उनका स्थान नये कम्युनिस्ट लक्षण ग्रहण कर लेग। परन्तु, समाजवाद के सिद्धाता के सुदृढीकरण ग्रौर व्यापक उपयोग के जरिय इन सिद्धातो मे ग्रन्तनिहित क्षमताग्रो के इस्तेमाल से ही कम्युनिस्ट तत्त्वो द्वारा समाजवादी तत्त्वो का स्थानग्रहण किया जा सकता है। मिसाल के लिए, वितरण का कम्युनिस्ट सिद्धान्त समाजवाद के श्रमानुसार वितरण के सिद्धात के पूण विकास तथा उपयोग क जरिये ही लागू किया जा सकता है जब

वह सिद्धान्त अपनी उपयोगिता पूरी कर देता है और अनावश्यक तथा निष्प्रयोजनीय रह जाता है।

समाजवादी समाज में ही कम्युनिज्म के कई ठोस लक्षण निहित रहते हैं। श्रम तथा उत्पादन-संगठन के कम्युनिस्ट रूप, जनता की भौतिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सामाजिक रूप आदि अधिकाधिक विकसित होते हैं। समाज ज्यों-ज्यों कम्युनिज्म की ओर अग्रसर होता जाता है, त्यों-त्यों प्रगामी विकास में अड़चन पैदा करनेवाले सभी तत्त्वों को दूर करते हुए ये नये लक्षण विकसित होते, तथा शक्ति ग्रहण करते जाते हैं।

दूसरा मुख्य लक्षण यह है कि समाजवादी समाज का कम्युनिज्म की ओर संक्रमण धीरे-धीरे, क्रमशः और उत्तरोत्तर होता है। समाजवाद का कम्युनिज्म में विकास तत्काल, एकसाथ तथा पूर्णतया नहीं, बल्कि क्रमिक रूप में होता है: समाजवाद के तत्त्व धीरे-धीरे विलुप्त होते जाते हैं और इसी प्रकार क्रमशः कम्युनिस्ट समाज के तत्त्व उनका स्थान ग्रहण करते जाते हैं।

मिसाल के लिए, आवश्यकतानुसार वितरण के कम्युनिस्ट सिद्धान्त की ओर संक्रमण सहसा, एक ही छलांग में नहीं, बल्कि धीरे-धीरे होता है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, यह संक्रमण श्रमानुसार वितरण के साथ ही समाज के सदस्यों में मुफ़्त में वितरित की जानेवाली सामाजिक निधि की सतत अभिवृद्धि के ज़रिये पूरा होता है।

कम्युनिज्म की ओर क्रमिक संक्रमण कम्युनिस्ट सिद्धान्तों को जल्दबाज़ी में, असमय लागू करने के अननुरूप है। ज्यों-ज्यों भौतिक तथा बौद्धिक पूर्वापेक्षाएं परिपक्व होती जाती हैं, त्यों-त्यों अर्थव्यवस्था, सामाजिक प्रणाली और जीवन-पद्धति के नये रूपों को सुनियोजित रूप में सतत लागू किया जाता है।

कम्युनिज्म की ओर संक्रमण का क्रमिक रूप नियम-नियंत्रित और सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप द्वारा निर्दिष्ट होता है। समाजवाद के अन्तर्गत समाज की कम्युनिज्म की ओर प्रगति का विरोध करनेवाली वर्ग शक्तियां नहीं होतीं। सामान्यतया, पार्टी और राज्य के चेतन, योजनाबद्ध कार्यकलाप से इस प्रगति के दौरान पैदा होनेवाले अंतर्विरोधों का उचित समय पर पता लगाना तथा उन्हें दूर करना सुनिश्चित हो जाता है। इससे सामाजिक

विप्लव, सामाजिक जीवन मे सहसा उथल-पुथल की स्थिति नही पैदा होती और अन्तर्बाधा तथा मन्दी आदि के बिना, जो पूजीवाद की खासियत है, विकास क्रमिक स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

क्रमबद्धता का मतलब किसी भी रूप मे मन्द विकास नही है। इसके विपरीत, कम्युनिज्म की ओर सक्रमण असाधारण रूप मे तीव्र आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास की प्रक्रिया है—यह इस महान प्रयास मे अधिकाधिक लोगो की सहभागिता से कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण की परिणति है।

## ३. कम्युनिज्म के विरोधियो का दिवालियापन

वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धान्त के शत्रु, पूजीवादी वैचारिक और सुधारवादी शुरू से ही कम्युनिज्म के उच्चादर्शों को कलकित करने और यह सिद्ध करने का प्रयास करते रहे है कि वे अव्यावहारिक है। परन्तु जब सोवियत सघ तथा बाद मे अन्य देशो ने नये समाज के निर्माण का काम शुरू किया, तो वे समाजवादी वास्तविकता की ही निन्दा करने लगे।

कम्युनिज्म की ओर से जनसमुदाय का ध्यान हटाने अथवा कम से कम उनपर कम्युनिस्ट विचारो का प्रभाव कम करने के लिए पूजीवादी वैचारिक कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की ओर लक्षित कम्युनिस्टा के प्रयासा को गलत ढग से प्रस्तुत करते है। चूकि कम्युनिस्ट-विरोधी हर प्रकार स पूजीवाद की सराहना करते है, इसलिए उनका लक्ष्य पूर्णत स्पष्ट है, अर्थात् वे चाहते है कि मेहनतकश लोग यह विश्वास करने लगें कि पूजीवादी व्यवस्था ही आदर्श सामाजिक प्रणाली है और इस कारण कम्युनिज्म के बारे मे सोचना या उसके लिए सघर्ष करना बेकार है।

जब मजदूर वर्ग पूजीपति वर्ग से सत्ता के लिए सघर्षरत ही था, कम्युनिज्म के आलोचका ने दावा कि ... वह अपन ... लक्ष्य का ... किसा ... राज्य प्राप्त नही कर सकता। परन्तु रूस ... की स्थापना हो जाने के बाद उन्हो ... नही रह सकता और शीघ्र ही

समाज के मामलो की व्यवस्था करने मे ग्रक्षम है ग्रौर समाज विशिष्ट वर्गों, ग्रर्थात् शोषक वर्गा द्वारा शासित होने पर ही सामान्य रूप से कार्य कर सकता है। वे निजी स्वामित्व, "मुक्त" पूजीवादी व्यवसाय को समाज की समृद्धि की ग्रपरिहार्य शर्त मानते थे। वे इस विचार को ग्रपने पास फटकने भी नही देते थे कि सार्वजनिक स्वामित्व का प्रभुत्व समाज की ग्रसाधारण रूप से विकसित सम्पूर्ण ग्रार्थिक, राजनीतिक ग्रौर सास्कृतिक जीवन-प्रणाली का ग्राधार बनेगा।

जब सोवियत सघ ने देशव्यापी पैमाने पर ग्रार्थिक ग्रौर सास्कृतिक विकास की योजनाए कार्यान्वित करने के ग्रपने इरादे की उद्घोषणा की, तो कम्युनिस्ट-विरोधियो ने उन्हे काल्पनिक बताया ग्रौर उनकी ग्रनिवार्य विफलता की भविष्यवाणी की। उनकी इस प्रकार की भविष्यवाणियो के कारण उचित भी लगते थे: नये समाज के निर्माण का काम एक ऐसे देश मे हाथ मे लिया गया था, जो ग्रार्थिक विकास मे विकसित पूजीवादी देशो से बहुत पीछे ग्रौर युद्धो तथा साम्राज्यवादी हस्तक्षेप से तबाह भी था।

परन्तु कम्युनिज्म के दुश्मनो की भविष्यवाणिया शीघ्र ही झूठी साबित हो गईं। मजदूर वर्ग, श्रमिक जनसाधारण द्वारा शासित सोवियत राज्य ने साम्राज्यवाद के उन्मत्त प्रहार का सामना ही नही किया, बल्कि ग्रपने देश मे नये समाज की प्रथम ग्रवस्था, समाजवाद, का निर्माण भी पूरा किया। सोवियत सघ की सफलताग्रो से निर्विवाद रूप मे सिद्ध हो गया कि मेहनतकश लोग सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के सचालन के बहुत ही जटिल कार्यभार को सम्पादित करने मे पूर्णतया समर्थ है, कि समाजवाद से प्रकाण्ड जन शक्ति पैदा होती हे ग्रौर जनसाधारण की प्रतिभा तथा योग्यता के विकास के लिए ग्रनुकूलतम परिस्थितिया पैदा होती हैं, जिन्हे पूजीवाद निर्ममता से कुचलता ग्रौर विकृत करता है।

ग्रपने सोवियत बन्धुग्रो की मिसाल का ग्रनुसरण करते हुए द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कई ग्रन्य देशो के मेहनतकश समाजवाद के पथ पर ग्रग्रसर हुए। विश्व समाजवादी प्रणाली ग्रस्तित्व मे ग्राई, कम्युनिस्ट-विरोधियो पर एक ग्रौर प्रबल प्रहार हुग्रा।

कम्युनिस्ट विचारो का खण्डन करने के लिए शत्रुग्रो को नये-नये तर्क गढ़ने पडते है। वे यह दावा करते जा रहे है कि कम्युनिज्म ग्रव्यावहारिक है,

क्योकि "मानवीय स्वभाव ' कम्युनिस्ट प्रणाली के प्रतिकूल है और अपने को इसके अनुरूप ढालने मे असमर्थ है। उनके मतानुसार, मनुष्य स्वभावत दुष्ट होता है, उसकी प्रवृत्तिया सहजत पाशविक हैं और इस कारण लोगो के बीच भाईचारे और दोस्ती की सच्ची भावना असभव है। उनका दावा है कि मनुष्य स्वभावत झगडालू और पाशविक प्रवृत्ति का होता है, फलत, कम्युनिज्म द्वारा दुनिया मे परिलक्षित चिरन्तन शान्ति अविश्वसनीय है। मनुष्य स्वभाव से आलसी है, फलत वह कभी भी स्वेच्छा से अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार काम नही करेगा। मनुष्य स्वार्थी और लालची होता है, उसकी जरूरते असीमित होती है और इस कारण उसमे युक्तिसगत एव उपयुक्त आवश्यकताओ की भावना न पैदा कर सकने के फलस्वरूप जरूरत के अनुसार वितरण का कम्युनिस्ट सिद्धान्त अव्यावहारिक है।

परन्तु विज्ञान और व्यावहारिक अनुभव से सिद्ध हो गया है कि स्वभाव से मनुष्य न पाशविक, न आलसी और न लालची है। कुछ लोगो मे ये दुर्गुण शोषक समाज, विशेष रूप से पूजीवादी समाज मे परिव्याप्त परिस्थितियो के प्रभाव से पैदा हुए। इस समाज मे धन, मुनाफा सबसे पूजनीय हैं और इसके लिए पूजीवाद नैतिकता के सर्वाधिक प्रारम्भिक सिद्धान्तो को भी अपने पैरो तले रौदता है तथा मनुष्य मे हीनतम आकाक्षाए पैदा करता है। समाजवादी समाज की स्थिति भिन्न है। यहा मानव की हैसियत उसकी पूजी द्वारा नही, बल्कि उसके श्रम द्वारा तथा उससे समाज को जो लाभ होता है, उसके आधार पर निर्धारित होती है। समाजवादी समाज, जिसमे निजी स्वामित्व और शोषण नही है तथा जो लिप्सा और धनलोलुपता से घृणा करता है, लोगो म उच्च, वास्तविक मानवीय गुण--सहयोग एव पारस्परिक सहायता, सामूहिकता, अन्य लोगो और राष्ट्रो के लिए स्नेह तथा सम्मान की भावना विकसित करता है। निस्सन्देह, इन गुणो का विकास तथा लोगो के विचारो से पूजीवादी अतीत के अवशेषो का उन्मूलन कोई आसान काम नही है और इसम काफी समय लगता है। परन्तु सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो के अनुभव से प्रमाणित हो गया है कि यह सर्वथा व्यावहारिक है। इन देशो म बहुत बडी सख्या म लोग अब अपन जीवन और श्रम म कम्युनिस्ट नैतिकता क सिद्धान्त से निदेशित होते है।

कम्युनिज्म के विरोधियो का यह भी दावा है कि कम्युनिस्ट समाज व्यक्तिगत हितो के ग्रननुरूप है, कि ग्रपने सारतत्व म यह ग्रमानवीय ह। वे स्वतन्त्रता के ग्रननुरूप, एक प्रकार की निरकुश प्रणाली क रूप म एक ऐसी प्रणाली के रूप म कम्युनिज्म का चित्र प्रस्तुत करन हैं, जिसम व्यक्तित्व को कुचला जाता है ग्रौर उसका समस्तरीकरण किया जाता हे। परन्तु, जैसा कि हम दिखा चुके है, समाजवादी, कम्युनिस्ट प्रणाली सबसे मानवीय प्रणाली है। इस प्रणाली का सर्वोच्च ध्येय ग्रौर लक्ष्य ह प्रचुर योग्यताग्रो, ग्रभिरुचियो तथा ग्रावश्यकताग्रो से युक्त सर्वतोमुखी रूप मे विकसित, नये मनुष्य को ढालना।

कम्युनिस्ट-विरोधी वैचारिको के दावे के विपरीत कम्युनिज्म के ग्रन्तगत मनुष्य के सामने उसके समस्तरीकरण ग्रथवा उसके व्यक्तित्व के विनाश का कोई खतरा नही रहता। कम्युनिज्म केवल पूजीवादी व्यक्तित्व के हितो, पूजीवादी स्वतन्त्रता, मेहनतकशो के श्रम के सहारे स्वत्वाधिकारियो के ग्रधिक धनी होते जाने की स्वतन्त्रता के विरुद्ध है। जहा तक व्यक्ति के वास्तविक मानवीय हितो का सम्बन्ध है, किसी भी ग्रन्य प्रणाली की ग्रपक्षा कम्युनिज्म इनकी कही ग्रधिक रक्षा करता है, उन्हे समाज के कल्याण मे परिलक्षित करता है ग्रौर इस प्रकार खुद व्यक्ति की ही भलाई होती है। कम्युनिज्म व्यक्तित्व के वास्तविक विकास, मनुष्य की सृजनात्मक क्षमताग्रो के बहुमुखी प्रस्फुटन को सुनिश्चित करता है।

सारी दुनिया मे कम्युनिज्म के विचारो की ग्रत्यधिक लोकप्रियता का यह एक मुख्य कारण है। कम्युनिज्म की भावी विश्वव्यापी विजय का भी यही मुख्य कारण होगा।

यह एक लाक्षणिक बात है कि हाल ने कम्युनिज्म के विरोधियो ने ग्रपने दावपेंचो मे फिर—न जाने कौनसी बार—परिवर्तन किया है। १९५६ मे हगरी मे हुई प्रतिक्रान्ति की पराजय से सिद्ध हो गया कि समाजवाद के विरुद्ध सशस्त्र ग्राक्रमण बेकार तथा बहुत ही खतरनाक काम है—सोवियत सघ ग्रौर ग्रन्य समाजवादी देश सशस्त्र हमलो को विफल बनाने के लिये पर्याप्त रूप से शक्तिशाली हैं।

शस्त्र-बल से समाजवाद को "कुचलने" ग्रथवा "समाप्त करने" मे ग्रसमर्थ कम्युनिज्म के शत्रुग्रो ने "प्रच्छन्न प्रतिक्राति" के दावपेच को ग्रपना लिया है, जिसमे वैचारिक सघर्ष की भूमिका प्रमुख हो जाती है। ग्रौर वह

भी कोई साधारण नही बल्कि बहुत ही धूर्त्ततापूर्ण एव मक्कारीभरा सघर्ष है। कम्युनिज्म के दुश्मन अब बहुधा क्रान्तिकारी, समाजवादी शब्दावली इस्तेमाल करते हैं, वे समाजवाद के रक्षक होने का ढोग रचते हैं और सबसे बढकर समाज के नेतृत्व से मजदूर वर्ग और उसके हरावल, कम्युनिस्ट पार्टी को हटाने के अभिप्राय से समाजवाद की "विकृतिया" को दूर करने, उसके "जनवादीकरण", "उदारीकरण" का नारा लगाते हैं। वे पूर्व और पश्चिम के बीच सौहार्द-स्थापन, पारस्परिक समझ की भावना विकसित करने के बहाने पश्चिम और पूर्व के बीच "पुलो" को निर्मित करने की वकालत करते हैं। परन्तु बारीकी से देखने पर पता चलता है कि कम्युनिज्म के शत्रुओ को गुप्त रूप से समाजवादी दुर्ग मे प्रविष्ट होने, उस पर पीछे से प्रहार करने और उसकी जड खोदने के लिए ही इन "पुलो" की आवश्यकता है।

साम्राज्यवादी समाजवादी देशो मे कम्युनिस्ट-विरोधी तोड-फोड की कार्रवाइया कराने के लिए प्रतिक्रान्तिकारी, सशोधनवादी अथवा घोर अपराधशील तत्त्वो का इस्तेमाल करते है। वे "स्वतत्रता" और "प्रभुसत्ता" सम्बन्धी धारणाओ के बारे मे ख्याली घोडे दौडाते हैं तथा लोगो के दिमाग से मजदूर वर्ग एव सभी मेहनतकश लोगो की अन्तर्राष्ट्रीय एकता के विचार निकालने और उसकी जगह राष्ट्रवाद, जातीय भेदभाव और अन्य राष्ट्रो के प्रति अविश्वास के विचार भरने की कोशिशें करते हैं। यह एक लाक्षणिक बात है कि यह सब घोर सोवियत-विरोध और सोवियत जनता एव उसकी कम्युनिस्ट पार्टी पर लाछना के साथ-साथ चलता है।

पूजीवादी राष्ट्रवाद—अन्य राष्ट्रो की तुलना मे कुछ राष्ट्रो की श्रेष्ठता की वैचारिकी, राष्ट्रीय असाधारणता और पृथक्ता की विचारधारा समाजवाद तथा कम्युनिज्म के लिए विशेष रूप से खतरनाक है। यह वैचारिकी विभिन्न रूप ग्रहण करती है। यह दावा किया जाता है कि समाजवाद, कम्युनिज्म कोई अन्तर्राष्ट्रीय नहीं, बल्कि केवल औद्योगिक और सास्कृतिक दृष्टि से पिछडे हुए देशो का राष्ट्रीय अनुलक्षण है। प्राय. यह राष्ट्रीय, क्षेत्रीय समाजवादो के विभिन्न सिद्धान्तो का रूप भी लेती है। मिसाल के लिए, समाजवाद के सोवियत, चीनी, युगोस्लाव और चेकोस्लोवाक "नमूनो" की चर्चा की जाती है। अन्तत इन सभी वक्तव्यो का लक्ष्य वैज्ञानिक समाजवाद और कम्युनिज्म के आम अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप का खण्डन करना है, व वैज्ञानिक समाजवाद का राष्ट्रीय, क्षेत्रीय टुकडो

मे खण्ड-खण्ड करने के प्रयास है, कुछ समाजवादी देशो को अन्य समाजवादी देशो के विरुद्ध उकसाने, समाजवादी शिविर को विभाजित करने, कई राष्ट्रो के समाजवादी अनुभव और सबसे अधिक सोवियत सघ के अनुभव को कलकित करने के साधन है। अन्तिम बात यह है कि इस कुचक्र का अभिप्राय वैज्ञानिक समाजवाद की जगह अवैज्ञानिक, निम्नपूजीवादी, आदिकालीन, त्यागमय अथवा "जनवादी" समाजवाद, मजदूर वर्ग एव उसकी मार्क्सवादी पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका से रहित समाजवाद, राष्ट्रवाद की स्थापना है।

वैज्ञानिक समाजवाद के अन्तर्राष्ट्रीय सारतत्त्व को नष्ट करने और उसकी जगह राष्ट्रवाद की स्थापना के इस घृणास्पद कार्य मे दक्षिणपथी तथा वामपथी–हर प्रकार के अवसरवादियो के कुचक्रो के साथ घोर कम्युनिस्ट-विरोधियो के कुप्रयास मिलकर एक हो जाते है।

परन्तु इतिहास के अनुभव से यह सिद्ध हो गया है कि मजदूर वर्ग की भाति उसकी वैचारिकी वैज्ञानिक समाजवाद का स्वरूप भी अन्तर्राष्ट्रीय है।

किसी भी देश मे समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण समाजवादी देशो के मेहनतकशो, विश्व मजदूर और कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन से सार्वभौमिक, अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के मुख्य नियमो के आधार पर होता है। १९६८ के अगस्त मे ब्रातिस्लावा मे हुए समाजवादी देशो की कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के सम्मेलन के वक्तव्य मे कहा गया है: "बिरादराना पार्टियो को इस बात का पूरा यकीन है कि समाजवादी समाज के निर्माण सम्बन्धी आम नियमो के अनुसार अपने आपको दृढ़तापूर्वक और अविचल रूप से निदेशित करते हुए और सबसे बढकर मजदूर वर्ग तथा उसके हरावल, कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका को सुदृढ बनाकर ही समाजवाद और कम्युनिज्म के पथ पर आगे बढा जा सकता है। प्रत्येक पार्टी समाजवादी विकास की आगामी समस्याओ के समाधान मे राष्ट्रीय विशेषताओ तथा परिस्थितियो को ध्यान मे रखती है।"

मजदूर वर्ग पूजीवादी राष्ट्रवाद की वैचारिकी के विरुद्ध सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, मजदूर वर्ग, सभी देशो की मेहनतकश जनता की अन्तर्राष्ट्रीय एकता एव पारस्परिक सहायता और समाजवादी देशो तथा सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर एव कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता की वैचारिकी

को प्रस्तुत करता है। दुनिया के कम्युनिस्ट ससार के प्रथम समाजवादी देश—सोवियत सघ के प्रति, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता के प्रति बन्धुत्वपूर्ण रुख को अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की सर्वोच्च कसौटी और अभिव्यक्ति मानते हैं। इस बात से कि अब आधी सदी से भी अधिक समय से जहा प्रत्येक सामाजिक क्रान्ति सोवियत सघ के प्रति मैत्री की भावना प्रकट करती रही है, वहीं हरेक प्रतिक्रान्ति सोवियत सघ को बदनाम करने की भावना से सम्बद्ध रही है, निर्विवाद रूप से प्रमाणित होता है कि यही वास्तविक कसौटी है।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के फरहरे के प्रति निष्ठावान होने का मतलब है दुनिया मे सर्वाधिक मानवीय और न्यायोचित समाज—कम्युनिज्म—के लिए अथक सघर्ष करना। **वैज्ञानिक कम्युनिज्म और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद अविभेद्य हैं।**

इतिहास कम्युनिज्म के विरोधियों की वैचारिकी के दिवालियापन तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद, वैज्ञानिक समाजवाद और कम्युनिज्म के विचारो की विजय को साबित करता है।

## ४. कम्युनिज्म—मानवजाति का उज्ज्वल भविष्य

कम्युनिज्म से मानव को शान्ति, श्रम, स्वतत्रता, समानता, बन्धुत्व और सुख प्राप्त होता है।

**शान्ति का समाज** पूजीवाद युद्ध का पोषक है। बीसवी सदी के पूर्वार्ध मे साम्राज्यवादियो ने मानवजाति को दो बार विश्वयुद्धो के विनाशकारी गर्त्त मे झोका। करोडो व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गए अथवा भुखमरी एव सक्रामक रोगो के शिकार हुए, कई करोड व्यक्ति पगु और अपाहिज हो गए, लाखो शहर और गाव बर्बाद हो गए—मानवजाति को साम्राज्यवादियो की दुस्साहसिक नीति के कारण ऐसा भारी मूल्य चुकाना पडा। इस समय साम्राज्यवादी प्रतिगामी शक्तिया नये, तापनाभिकीय विश्वयुद्ध की तैयारी मे लगी हुई हैं और यदि इसे शुरू करने मे उन्हे सफलता मिल गई, तो मानवजाति को अकल्पनीय कष्ट और आपदाए झेलनी पडेगी।

जहा पूजीवाद ने युद्ध को अपनी विदेश नीति का मुख्य साधन बना दिया है, वही समाजवाद ने जातियो और राज्यो के बीच सम्बन्धो के नये युग का, पारस्परिक विश्वास और सम्मान, प्रादेशिक अखण्डता, आर्थिक एव राजनीतिक स्वतन्त्रता और दूसरे देशो के आन्तरिक मामलो म अहस्तक्षेप के युग का शुभारम्भ किया है। समाजवाद अन्यायपूर्ण, लुटेरू युद्धो पर मानव जीवन की व्यर्थ बर्बादी, अपरिमित भौतिक सम्पदा के अपव्यय का अत करता है।

इस समय साम्राज्यवादियो द्वारा नया विश्वयुद्ध शुरू करन के कुप्रयास मे समाजवाद की भौतिक और राजनीतिक शक्ति प्रबल अवरोध है। कम्युनिज्म की ओर मानवजाति के सक्रमण से स्थिर शान्ति सुनिश्चित होगी और मानवजाति सदा के लिए अपन भविष्य की चिन्ता से मुक्त हो जायेगी।

**श्रम का समाज**

पूजीवाद मनुष्य को सृजनात्मक श्रम क सुख स वचित करता है। उसने श्रम को कष्टकर फज और आजीविका के साधन मे बदल दिया है। भुखमरी के भय स मजदूर अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति भर पूजीपति के लिए श्रम करन को विवश हो जाता है। पूजीवाद मजदूर को मशीन का हिस्सा बना देता है, उसकी मानसिक शक्ति को चूस लेता है और शारीरिक रूप म उसे बहुत ही कमजोर बना देता है। इसके अलावा, जैसा कि पूजीवादी दुनिया के करोडा बेकारो से प्रमाणित होता है, यह बहुधा श्रमजीवी को काम करने के अवसर से भी वचित रखता है।

समाजवाद से मेहनतकश लोगो को श्रम करने, मानवीय कार्यकलाप के किसी भी क्षेत्र मे सृजनात्मक श्रम करन का अधिकार प्राप्त होता है। समाजवाद के अन्तर्गत शोषण के सदा के लिए समाप्त हो जाने से जमीदार अथवा पूजीपति के लिए नही, बल्कि खुद अपने लिए, अपनी जनता, अपन समाज के निमित्त काम करना मनुष्य के लिए सभव हो जाता है। इससे खुद श्रम के स्वरूप म, श्रम के प्रति रवैये मे आमूल परिवर्तन हो जाता है। कम्युनिज्म के अन्तर्गत नवीनतम वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धिया पर आधारित श्रम वस्तुत मुक्त तथा सृजनात्मक श्रम हो जाता है, मनुष्य की मुख्य, सर्वावश्यक जरूरत बन जाता है और मानव के सर्वांगीण, सुसगत विकास का आधार बन जाता है।

हितों एवं आकाक्षाओ और उच्च सामाजिक आदर्शों के बीच सामजस्य स्थापित करने का ज्ञान प्राप्त करता है।

पूजीवाद जनवादी स्वतत्रताओं का शत्रु है। पूजीवादी जनवाद कुछ विशेषाधिकारप्राप्त लोगों, पूजीपतियो का जनवाद है; वह अल्पमत का, मुख्य रूप से धनिकों का जनवाद है। विकृत पूजीवादी जनवाद को भी परित्याग करने की प्रवृत्ति प्रकट करनेवाले साम्राज्यवाद की विशेषता है घोर प्रतिक्रियावादी नीति पर अमल करना। साम्राज्यवाद की जमीन पर ही जर्मन फासिस्टवाद और जापानी सैन्यवाद विकसित हुए, जिनसे मानवजाति को अपार यातनाए भोगनी पडी। इस समय पश्चिमी जर्मनी, सयुक्त राज्य अमरीका और कुछ अन्य देशो मे फासिस्टवाद के घातक अकुर पुन उग रहे हैं, जिनसे पूजीवाद के अन्तर्गत स्वतत्रता और जनवाद का वास्तविक मूल्य प्रदर्शित हो रहा है। यह स्वतत्रता थैलीशाहो की अपार शक्ति और श्रमजीवियो की अधिकारहीनता को छिपाने का आवरण मात्र है। पूजीवादी स्वतत्रता और पूजीवादी जनवाद का मतलब है पूजीवादी प्रणाली, निजी स्वामित्व और शोषण को सदा के लिए कायम रखना।

जहा साम्राज्यवाद स्वतत्रता का गला घोटता है, वही कम्युनिस्ट समाज उसकी अभूतपूर्व प्रगति को सुनिश्चित बनाता है। पूजीवादी शोषण तथा पूजीवादी श्रम-विभाजन के जुए से मुक्त व्यक्ति को कम्युनिज्म के अन्तर्गत अपने हितो और अपनी योग्यतानुसार स्वतत्रतापूर्वक तथा सृजनात्मक रूप मे काम करने और समाज के मामलो के प्रबध मे प्रत्यक्ष एव सक्रिय भाग लेने तथा उसकी आर्थिक और सास्कृतिक प्रगति को बढावा देने का अवसर प्राप्त होता है।

**समानता का समाज**

पूजीवाद असमानता का समाज है। उससे सर्वप्रथम गहरी आर्थिक असमानता पैदा होती है, जिसके कारण समाज के चन्द लोग कोई काम नही करते, जबकि उनके पास प्रचुर सम्पदा होती है और वे विलासमय जीवन व्यतीत करते हैं, इसके विपरीत अपने श्रम से दुनिया की सारी सम्पदा पैदा करनेवाले बहुसख्यक लोग गरीबी और अनभिज्ञता का जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं। अपार भौतिक और सास्कृतिक सम्पदा का निर्माण करते हुए भी पूजीवाद न्यायोचित रूप मे उसे वितरित करने, उसे सब की सम्पदा बनाने मे अपनी

श्रम और श्रमिको को गिरानेवाली पूजीवादी प्रणाली के विपरीत कम्युनिस्ट समाज श्रम तथा श्रमिक को उठाता है।

**कम्युनिज्म ही स्वतन्त्रता है**

पूजीवादी वैचारिक पूजीवादी समाज की स्वतन्त्रता के गुण गाये जाते है, इसका कारण यह है कि पूजीवाद के अन्तर्गत मनुष्य को मुक्त उद्यम, और मण्डी मे मुक्त प्रवेश का अधिकार प्राप्त है। एक व्यक्ति (उद्योगपति) अपनी फैक्टरी मे मजदूर द्वारा उत्पादित वस्तु को लेकर मण्डी मे आता है, दूसरा व्यक्ति (मजदूर) अपने पास कोई अन्य साधन न होने के कारण अपनी श्रम शक्ति को बेचने आता है। परन्तु दोनो मे से किसी को भी पहले से यह ज्ञात नही होता कि मण्डी मे माल अथवा श्रम शक्ति का क्या मूल्य लगेगा, उनकी माग होगी या नही, अपने माल की माग न होने पर उद्योगपति बर्बाद तो नही हो जायेगा और इसी प्रकार मजदूर की श्रम शक्ति की माग न होने पर कही वह भी बेकार तो नही हो जायगा। दूसरे शब्दो मे मण्डी मे मुक्त प्रवेश केवल भ्रम है, क्योकि उद्योगपति और मजदूर दोनो ही अन्ध अनिवायता—मुक्त उद्यमवाले समाज मे अन्तर्निहित अराजकता तथा होड के नियमो के बदी हो जाते है। इस समाज मे चेतन रूप मे माग और पूर्ति की पहले से कोई योजना नही बनाई जा सकती और इसके फलस्वरूप पूर्ण रूप से अवसर पर आश्रित मनुष्य को चयन करने की कोई स्वतन्त्रता प्राप्त नही होती। इस प्रकार पूजीवादी दुनिया अन्ध अनिवार्यता और अवसर की दुनिया है।

समाजवाद श्रमिको के लिए एतिहासिक अनिवायता पर प्रभुत्व पाने और सच्ची स्वाधीनता प्राप्त करने की वास्तविक सभावना पैदा करता है। समाजवादी क्रान्ति से सावजनिक स्वामित्व की प्रभुता कायम होती है और वर्ग विरोध दूर होते है। मण्डी का स्वत स्फूर्त रुख समाप्त हो जाता है और लोगो का चेतन रूप से समाज के आर्थिक, राजनीतिक तथा सास्कृतिक जीवन को निदेशित करने का अवसर प्राप्त होता है। समाजवाद की विजय स समाज लबी छलाग मारकर अनिवायता की दुनिया स स्वतन्त्रता की दुनिया मे पहुच जाता है, और ज्या ज्या समाज प्रगति करता जाता है, त्या-त्या मनुष्य की स्वतन्त्रता निरन्तर अधिकाधिक व्यापक और बहुविध होती जाती है। प्रकृति की शक्तिया और सामाजिक प्रक्रियाओ पर उसका नियन्त्रण बढ़ता जाता है। मनुष्य स्वेच्छा स तथा चेतन रूप म अपने निजो

हितो एव ग्राकाक्षाग्रो ग्रौर उच्च सामाजिक ग्रादर्शो के बीच सामजस्य स्थापित करने का ज्ञान प्राप्त करता है।

पूजीवाद जनवादी स्वतत्रताग्रो का शत्रु है। पूजीवादी जनवाद कुछ विशेषाधिकारप्राप्त लोगो, पूजीपतिया का जनवाद है, वह ग्रल्पमत का, मुख्य रूप से धनिको का जनवाद है। विकृत पूजीवादी जनवाद को भी परित्याग करने की प्रवृत्ति प्रकट करनेवाले साम्राज्यवाद की विशेषता है घोर प्रतिक्रियावादी नीति पर ग्रमल करना। साम्राज्यवाद की जमीन पर ही जर्मन फासिस्टवाद ग्रौर जापानी सैन्यवाद विकसित हुए, जिनसे मानवजाति को ग्रपार यातनाए भोगनी पडी। इस समय पश्चिमी जर्मनी, सयुक्त राज्य ग्रमरीका ग्रौर कुछ ग्रन्य देशो मे फासिस्टवाद के घातक ग्रकुर पुन उग रहे है, जिनसे पूजीवाद के ग्रन्तर्गत स्वतत्रता ग्रौर जनवाद का वास्तविक मूल्य प्रदर्शित हो रहा है। यह स्वतत्रता थैलीशाहो की ग्रपार शक्ति ग्रौर श्रमजीवियो की ग्रधिकारहीनता को छिपाने का ग्रावरण मात्र है। पूजीवादी स्वतत्रता ग्रौर पूजीवादी जनवाद का मतलब है पूजीवादी प्रणाली, निजी स्वामित्व ग्रौर शोषण को सदा के लिए कायम रखना।

जहा साम्राज्यवाद स्वतत्रता का गला घोटता है, वही कम्युनिस्ट समाज उसकी ग्रभूतपूर्व प्रगति को सुनिश्चित बनाता है। पूजीवादी शोषण तथा पूजीवादी श्रम-विभाजन के जुए से मुक्त व्यक्ति को कम्युनिज्म के ग्रन्तर्गत ग्रपने हितो ग्रौर ग्रपनी योग्यतानुसार स्वतत्रतापूर्वक तथा सृजनात्मक रूप मे काम करने ग्रौर समाज के मामलो के प्रबध मे प्रत्यक्ष एव सक्रिय भाग लेने तथा उसकी ग्रार्थिक ग्रौर सास्कृतिक प्रगति को बढावा देने का ग्रवसर प्राप्त होता है।

**समानता का समाज**

पूजीवाद ग्रसमानता का समाज है। उससे सर्वप्रथम गहरी ग्रार्थिक ग्रसमानता पैदा होती है, जिसके कारण समाज के चन्द लोग कोई काम नही करते, जबकि उनके पास प्रचुर सम्पदा होती है ग्रौर वे विलासमय जीवन व्यतीत करते है, इसके विपरीत ग्रपने श्रम से दुनिया की सारी सम्पदा पैदा करनेवाले बहुसख्यक लोग गरीबी ग्रौर ग्रनभिज्ञता का जीवन व्यतीत करने को विवश होते है। ग्रपार भौतिक ग्रौर सास्कृतिक सम्पदा का निर्माण करते हुए भी पूजीवाद न्यायोचित रूप म उसे वितरित करने, उसे सब की सम्पदा बनाने मे ग्रपनी

प्रकृति के कारण असमर्थ है। जिनके हाथो मे उत्पादन के साधन होते है, वे ही राजनीतिक सत्ता पर भी अपना नियत्रण कायम रखते है। वे सरकार मे स्थान प्राप्त करते हैं, करोडो लोगो के भविष्य का निर्णय करते है और कानून बनाते हैं। वे सार्वजनिक प्रचार के साधनो—प्रेस, रेडियो, टेलीविजन, साहित्य और कला पर भी अपना नियत्रण कायम रखते है। वे इन सभी साधनो का अपने आर्थिक प्रभुत्व और राजनीतिक सत्ता को कायम रखने के लिए उपयोग करते हैं। इसके साथ ही जनता की विशाल बहुसख्या को राजनीतिक अधिकारो से वचित रखा जाता है, उन्हे अपनी इच्छा प्रकट करने या अपने देश की गृह अथवा विदेश नीति को प्रभावित करने का कोई भी अवसर प्राप्त नही होता।

कम्युनिज्म पूर्ण आर्थिक और सामाजिक समानता लागू करता है। इस समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी योग्यतानुसार कार्य करेगा और आवश्यकतानुसार भौतिक तथा सास्कृतिक सुलाभ प्राप्त करेगा। उसे अध्ययन करने और विज्ञान तथा सस्कृति की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के अभूतपूर्व अवसर प्राप्त होगे। वह बौद्धिक सम्पदा का निर्माण भी करेगा और उसका भौतिक सुधार भी होगा। कम्युनिज्म के अन्तर्गत वर्गों का अस्तित्व नही रहेगा, समाज के सदस्य शारीरिक और मानसिक काम करनेवालो मे विभाजित नही रहेगे। राज्य का स्थान सार्वजनिक स्वशासन ग्रहण करेगा और समाज के मामलो, उसकी अर्थव्यवस्था और सस्कृति को निदेशित करने का समान अवसर सभी को प्राप्त होगा।

**बन्धुत्व का समाज**

पूजीवाद लोगो और राष्ट्रो के बीच बन्धुत्व की भावना अवरुद्ध करता है। इससे भिन्न बात हो भी नही सकती, क्योकि पूजीवाद निजी स्वामित्व पर आधारित होता है, जो लोगो को विभाजित करता है। मुनाफे के चक्कर मे पूजीपति मानवीय नैतिकता के सभी सिद्धातो को पैरो तले रौदता है। वह अपने इर्द-गिर्द के लोगो के भाग्य, देश, सम्पूर्ण समाज के भाग्य की नितान्त उपेक्षा करता है। वह एकमात्र अपने स्वार्थपूर्ण निजी हितो पर ध्यान देता है। पूजीवादी नैतिकता का बुनियादी सिद्धान्त है घोर व्यक्तिवाद। "एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए भेडिये के समान है"—पूजीवाद द्वारा लोगो म स्थापित सम्बन्धो का यह सारतत्त्व है, जो शत्रुतापूर्ण वर्गों मे समाज के विभाजन को कायम रखता है और उसे गहरा बनाता है।

मुनाफ़े के लिए पूजी न केवल अपने देश के, बल्कि अन्य राज्यो के लोगों को भी गुलाम बनाती है। पूजीवाद का इतिहास औपनिवेशिक लूट और मानवजाति के अधिकाश भाग के उत्पीडन का इतिहास है। अभी कुछ समय पहले तक दसियो एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमरीकी देश उपनिवेशवाद के भारी जुए से पीडित थे। इस समय भी करोडो व्यक्ति औपनिवेशिक शासन की विभीषिकाओ को बर्दाश्त कर रहे हैं। साम्राज्यवाद की धरती पर ही प्रतिक्रियावादी रग-भेद के सिद्धान्त अस्तित्व मे आये हैं, जिनके अनुसार कुछ जातियो की तुलना मे अन्य जातियो की श्रेष्ठता का दावा किया जाता है और साम्राज्यवादी आक्रमण तथा औपनिवेशिक नीति के सैद्धान्तिक समर्थन के लिए इनका इस्तेमाल किया जाता है।

कम्युनिज्म से मेहनतकशों मे बुनियादी रूप मे नये, सच्चे मानवीय सम्बन्ध, वास्तविक बन्धुत्व, सामूहिकता और बिरादराना आपसी सहायता के सम्बन्ध कायम होते हैं। इस नये समाज मे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शत्रु नही, बल्कि मित्र, साथी और भाई होता है। इस मे "व्यष्टि समष्टि के लिए और समष्टि व्यष्टि के लिए" का सिद्धान्त लागू होता है, और यह स्वाभाविक भी है, क्योकि कम्युनिस्ट समाज सार्वजनिक स्वामित्व पर आधारित होता है, जो लोगो को एकता के सूत्र मे आबद्ध करता है और सामाजिक जीवन की अत्यत भिन-भिन्न समस्याओ के समाधान मे उनकी सुसगत अन्योन्यक्रिया को सुनिश्चित बनाता है।

कम्युनिस्ट समाज का मानवतावाद केवल लोगो के बीच बिरादराना सम्बन्धो से ही नही, बल्कि सभी राष्ट्रो की बन्धुत्वपूर्ण एकता और छोटे-बड़े सभी राष्ट्रो के प्रति सम्मान की भावना से प्रकट होता है। कम्युनिज्म राष्ट्रवाद – राष्ट्रीय पृथकता और राष्ट्रो के बीच शत्रुता की विचारधारा के प्रतिकूल है। कम्युनिज्म मेहनतकश जनता के बीच दोस्ती तथा भाईचारे की भावना को जन्म देता है और राष्ट्रीय और नसली शत्रुता तथा श्रमिको के बीच फूट का दृढ विरोध करता है।

**सुख का समाज**

समाज के सभी सदस्यो को वास्तविक सुख प्रदान करने मे पूजीवाद असमर्थ है। निस्सन्देह, मालिक, शोषक अपने ढग से सुखी रहता है। परन्तु मालिक का सुख भी टिकाऊ नही होता, क्योकि जिस समाज का वह सदस्य है, वह स्वय अस्थिर और

ऐतिहासिक दृष्टि से अस्थायी है। इसके अलावा, मालिक का सुख बहुसख्या की मुसीबत पर आधारित होता है और इस कारण यह मूलत अमानवीय है। मनुष्य एक ऐसे समाज मे कभी भी सुखी नही रह सकता, जिसका भविष्य आशाप्रद न हो, जिस म कदम-कदम पर विफलता तथा अनिष्ट की आशका बनी रहती हो, जहा वह अनिश्चितता, निराशा और भविष्य के भय से सतत पीडित रहता हो। जिस समाज म भौतिक दृष्टि से उसके सभी सदस्यो को सुरक्षा प्राप्त न हो, जहा बेगार की प्रथा हावी हो और भौतिक तथा सास्कृतिक निधि का सुख उठाने, अपनी योग्यता को विकसित करने और अपने तथा समाज के कल्याण के लिए उनका उपयोग करने म बहुसख्या असमर्थ हो, वहा मनुष्य सुखी नही रह सकता।

यदि मनुष्य को अपने भविष्य के बारे मे विश्वास न हो, तो वह सुखी नही हो सकता। पूजीवाद के अन्तर्गत क्रान्तिकारी सघर्ष मे भाग लिये बिना उसमे भविष्य के बारे मे यह उज्ज्वल विचार नही पैदा हो सकता। जैसा कि अग्रेज लेखक जेम्स एल्ड्रिज ने लिखा है, पूजीवादी समाज मे जीवन भुथरी छुरी, जीर्ण पत्थर अथवा उस व्यक्ति की भाति होता है, जिसे न अपने वर्तमान की सुध है और न यही मालूम है कि वह कहा जा रहा है।

समाजवादी समाज मे मनुष्य अपने को भिन्न स्थिति मे पाता है। उसे यह अच्छी तरह ज्ञात है कि वह किस दिशा मे अग्रसर हो रहा है और इससे उसे सुख प्राप्त होता है। वह इस कारण सुखी है कि उसके हित और उसकी आवश्यकताए, उसका सर्वतोमुखी विकास और परिष्कार कम्युनिज्म का मुख्य एव एकमात्र ध्येय है। अपने तथा दूसरो के लिए काम करने, विश्व सास्कृतिक निधि मे अपना अधिकतम योगदान प्रस्तुत करने, अपने लिए उच्चादर्श निर्धारित करने और उसे प्राप्त करने की सभावना मे, भौतिक अभाव से मुक्त अपने भविष्य के बारे मे विश्वास की भावना मे, अपनी शारीरिक तथा मानसिक योग्यता के विकास की सभावना मे, स्वस्थ तथा उत्साहपूर्ण रहने मे, प्रकृति की तथा खुद अपनी शक्तियो पर पूर्ण नियत्रण कायम करने मे मनुष्य का सच्चा सुख निहित है।

कम्युनिज्म जनता के सर्वावश्यक हितो और आकाक्षाओ की पूर्ति करता है, वह सच्ची मानवीय सामाजिक व्यवस्था है। इसी कारण अधिकाधिक

लोगों के विचार और उनकी भावनाएं कम्युनिज़्म से प्रभावित होती जा रही है, इसी कारण दुनिया के सभी भागों में उसके समर्थकों की संख्या अधिकाधिक बढ़ती जा रही है।

इसी में कम्युनिज़्म की शक्ति निहित है और यही उसकी विश्वव्यापी विजय की गारंटी है।

कम्युनिज़्म – मानवजाति का उज्ज्वल भविष्य है।

## पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के बारे म आपके विचारा के लिए आपका अनुग्रहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त रके भी हमे वडी प्रसन्नता होगी। कृपया हम इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन,
ज़ूबोव्स्की बुलवार, २१,
मास्को, सोवियत सघ